1 और 2 थिस्सलुनीकियों
तथा
1 और 2 तीमुथियुस

थिस्सलुनीकियों और तीमुथियुस को लिखे पौलुस
के पत्रों पर एक भक्तिमय नजर

एफ वॉयन मेक लियोड

HARVEST MISSION PUBLICATIONS
V-82, SECTOR-12, NOIDA (U.P.)

1 & 2 Thessalonians
and
1 & 2 Timothy (Hindi)

Copyright @ F. Wayne Mac Leod

First Edition : November 2011

All Rights Reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in retrieval system, or transmitted any form or by any means, electronic,mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the publisher.

Published in Hindi by **Harvest Mission Publishers** with permission.

Contact Address:
V – 82 Sector- 12, NOIDA, UP- 201301
Tel : 0120- 2550213, 4264860, 6417828, 9811373357
bijujo@bijujohn.com, bijujohn@roadrunnerworldmission.com
website: www.harvestpublishers.org

Printed at : **New life Printers (P) Ltd,** New Delhi

विषय-सूची

	प्रस्तावना	5
1.	विश्वासियों के लिए एक आदर्श	7
2.	प्रेरितों की सेवकाई	12
3.	पौलुस का आनन्द	18
4.	तीमुथियुस की ओर से समाचार	23
5.	अधिक और अधिक	27
6.	पकड़ा जाना	33
7.	सदैव तैयार रहना	36
8.	समापन टिप्पणियाँ	41
9.	भावी विश्राम	48
10.	व्यवस्थाहीन व्यक्ति	53
11.	जो आलसी हैं उनसे सावधान रहें	59
12.	तीमुथियुस का कार्य	64
13.	पौलुस की गवाही	70
14.	ज़रूरत है : प्रार्थना करने वाले पुरुषों की	75
15.	स्त्रियों के लिए वचन	79
16.	अध्यक्ष	85
17.	डीकन	94
18.	भक्ति का भेद	99
19.	भरमानेवाली आत्माएं	103
20.	भक्त बनने का प्रशिक्षण	107
21.	विधवाएं	113
22.	प्राचीन	118
23.	दास	123
24.	झूठे शिक्षक	128
25.	तीमुथियुस के लिए एक शब्द	132

26.	लज्जित न हो	138
27.	सैनिक, खिलाड़ी, गृहस्थ	145
28.	सुसमाचार के लिए दुख उठाना	149
29.	उत्तम पात्र	154
30.	कठिन समय	160
31.	सताव और वचन	165
32.	तीमुथियुस के लिए एक कार्य	170
33.	मेरे पास आ	175

प्रस्तावना

पहली और दूसरी थिस्सलुनीकियों की पत्री को थिस्सुलनीके (आधुनिक समय के यूनान) की कलीसिया को सताव के समय में विश्वासियों को उत्साहित करने के लिए लिखा गया था। पौलुस ने उनके प्रभु की वापसी के संबन्ध में किये गए प्रश्नों को इसमें विशेष रूप से संबोधित किया है। संघर्षों के बावजूद यह कलीसिया अपने आस-पास के विश्वासियों के लिए आशा, विश्वास और प्रेम का आदर्श बन गई थी। पौलुस ने उनके इस आदर्श होने के लिए सराहना की परन्तु उसने उन्हें मसीह में परिपक्व होने की चुनौती भी दी। दूसरे पत्र में उसने विशिष्ट रूप से कलीसिया के उन व्यक्तियों को संबोधित किया है जिन्होंने काम करना बन्द कर दिया था तथा समाज में दूसरों को भी ऐसा ही करने को कह रहे थे, जिसका कारण उनका मसीह की वापसी की प्रतीक्षा था।

तीमुथियुस को लिखे पौलुस के पत्रों में वह उसे अपनी सेवकाई के युवा पास्टरों को उत्साहित और निर्देशित करने को कहता है। प्रेरित ने तीमुथियुस को इस तरह के कई विषयों पर सलाह दी है जैसे कलीसिया में प्राचीनों और अध्यक्षों (डीकन) की योग्यताएं, या निरंतर बढ़ती हुई विधवाओं की संख्या के लिए क्या कार्य करे। पौलुस ने एक पिता के समान तीमुथियुस को बल प्राप्त करने के तथा उस सत्य की चौकसी करने को प्रोत्साहित किया है जो उसे सिखाया गया है।

इस श्रृंखला की सभी पुस्तकों के समान, इस विवरण को एक ही बार में पढ़े जाने से अभिप्राय नहीं है। मैं प्रत्येक पाठक को इसको पढ़ने का समय निकालने की चुनौती देना चाहूंगा। परमेश्वर के आत्मा से मांगे कि वह आप से बोले तथा उसके वचन के सत्य को सीखने और कार्यान्वित करने में आपकी सहायता करे। यह विवरण केवल एक मार्गदर्शिका है। मैं विश्वास करता हूं कि यह न केवल सत्य में आपकी अगुवाई करेगी बल्कि उस सत्य को जीवन परिवर्तित करनेवाले ढंग से कार्यान्वित करने में भी आपकी सहायता करेगी। परमेश्वर आप पर अपने वचन को खोलने के द्वारा इस कार्य का प्रयोग कर प्रसन्न हो। पवित्रशास्त्र की इन महत्वपूर्ण पुस्तकों को पढ़ने के लिए जब आप समय निकालते हैं तब परमेश्वर आपको बहुतायत से आशीष देने पाए।

इस पुस्तक के शृंखला की अन्य पुस्तकों ने चालीस देशों के पास्टरों, मसीही कार्यकर्ताओं और साधारण विश्वासियों को हमारे प्रभु के लिए उनके द्वारा की जाने वाली सेवकाइयों के लिए आशीषित किया है। मेरे साथ प्रार्थना करें कि परमेश्वर इस पुस्तक का प्रयोग हर जगह पर अपनी इच्छानुसार राज्य को विस्तृत करने में करे।

एफ वॉयन मेक लियोड

1

विश्वासियों के लिए एक आदर्श

पढ़ें 1 थिस्सलुनीकियों 1:1–10

प्रेरितों के काम 17 में हम पढ़ते हैं कि प्रेरित पौलुस ने अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा में थिस्सलुनीके शहर में समय कैसे व्यतीत किया था। अपनी सेवकाई के प्रति उसे उपयुक्त समर्थन नहीं मिला था। उसके प्रचार ने उस शहर के विशासियों को इतना अधिक परेशानी में डाला था कि विश्वासियों को उसके जीवन को बचाने के लिए सहायता करनी पड़ी थी (प्रेरित. 17:1–10)। इस कठिन आरम्भ के बावजूद परमेश्वर का आत्मा कार्यरत् था और एक कलीसिया का जन्म हुआ तथा वह फलवन्त भी हुई।

परमेश्वर के मार्ग हमारे मार्गों के समान नहीं हैं। हमने कितनी बार अपने प्रयासों में असफलता का अनुभव किया है? प्रेरित पौलुस ने जो अनुभव किया था मैं तो केवल उसकी कल्पना ही कर सकता हूँ; उसके द्वारा प्रचार किये गए संदेश को अस्वीकार किये जाने पर जब वह थिस्सुलुनीके शहर से गया था। तौभी, परमेश्वर चीज़ों को भिन्न रूप से देखता है। जो हमारी दृष्टि में असफलता है, परमेश्वर उसी का प्रयोग किसी अच्छे कार्य को पूरा करने में कर सकता है। न केवल थिस्सुलुनीके में कलीसिया की स्थापना हुई बल्कि यह उस क्षेत्र का सबसे प्रभावी नमूना भी बनी।

यह पत्र पौलुस, सीलास ओर तीमुथियुस की ओर से है (पद 1)। उन्होंने थिस्सलुनीके की कलीसिया को इसे लिखा है। पद 1 में ध्यान दें कि पौलुस इस कलीसिया से बोलता है जो पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह में है। ये विश्वासी परमेश्वर के परिवार के एक भाग थे। उनका भरोसा पिता और उसके पुत्र यीशु मसीह के कार्यों में था।

पौलुस ने थिस्सलुनीके के लोगों को बताया कि वह उन्हें प्रार्थनाओं में स्मरण करते हुए हमेशा परमेश्वर को धन्यवाद देता था। पौलुस जिनके बीच सेवकाई करता था, उनके लिए प्रार्थना भी करता था; यह उसकी सेवकाई का एक

महत्वपूर्ण भाग था। चाहे वह कहीं भी क्यों न हो, वह इन विश्वासियों के लिए प्रार्थना करने में समर्थ था।

ध्यान दें कि पौलुस पद 2 में ''विषय में'' शब्द का प्रयोग करता है। एसे भी समय थे जब पौलुस ने बहुत भावपूर्ण ढंग से विश्वासियों के लिए प्रार्थना की थी। यहां पौलुस ने थिस्सलुनीकियों के विश्वासियों को बताया कि वह उनके लिए परमेश्वर का धन्यवाद करता था। इसका यह अर्थ नहीं था कि इन प्रार्थनाओं का महत्व कम था। हम भी कभी-कभी अपने मित्रों और प्रियजनों को स्मरण कर उनके लिए परमेश्वर को धन्यवाद करने के साथ-साथ उन्हें उसकी सुरक्षा में सौंप सकते हैं। परमेश्वर इन प्रार्थनाओं को भी सुनता है।

पौलुस थिस्सलुनीके के विश्वासियों में होनेवाले पवित्र आत्मा के कार्य के लिए परमेश्वर का बहुत ही धन्यवादी था। उसके पहले से पिता और प्रभु यीशु के कार्यों के में बताया था। वह उनके बीच परमेश्वर के आत्मा के कार्यों के बारे में भी बोलता है। पवित्र आत्मा का कार्य कई तरह से प्रमाणित हुआ था। आगे के पदों में पौलुस हमें बताता है कि थिस्सलुनीके की कलीसिया में परमेश्वर का आत्मा क्या कार्य कर रहा था।

उनके कार्य उनके विश्वास का फल थे (पद 3)

पौलुस थिस्सलुनीके के विश्वासियों को बताता है कि वह परमेश्वर के सामने उनके विश्वास से उत्पन्न कार्य को स्मरण करता है। सभी कार्य विश्वास का परिणाम नहीं होते। अधिकांश कार्य मानवीय प्रयास पर आधारित होते हैं न कि विश्वास पर। विश्वास से उत्पन्न होने वाला कार्य पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन और बुलाहट की आज्ञाकारिता से जुड़ा होता है। विश्वास के कार्यों को उत्पन्न करने वाले स्वयं के लिए तथा अपने स्वयं के विचारों और योजनाओं के लिए मर जाते हैं। वे परमेश्वर के नेतृत्व तथा उसके द्वारा समर्थ किये जाने पर भरोसा करते हैं। थिस्सलुनीके की कलीसिया इसे समझ गई थी। परमेश्वर उनका मार्गदर्शन करने के साथ-साथ उनमें कार्य कर रहा था। वे उसके नेतृत्व में चल रहे थे और उसकी शक्ति व बुद्धि पर निर्भर थे। परिणामस्वरूप उनके बीच महान चीज़ें घट रही थीं।

उनका परिश्रम प्रेम से पेरित था (पद 3)

थिस्सलुनीके के विश्वासियों के परिश्रम का प्रेरक प्रेम था। प्रभु यीशु के प्रेम में उमड़ने के कारण, वे अपने आस-पास के लोगों तक सेवा करने को पहुंचे थे। वे घमण्ड या स्वीकृति पाने की इच्छा से प्रेरित नहीं हुए थे। प्रभु यीशु का

प्रेम उनमें इतना मज़बूत रूप में था कि उन्होंने स्वयं को उन तक पहुंचने के लिए बाध्य पाया इस प्रेम के प्रेरक होने के कारण ही इसने कठिन समयों में उन्हें दृढ़ता प्रदान की थी।

उनकी आशा धीरज से प्रेरित थी (पद 3)

परमेश्वर की सेवा करना सदैव सरल नहीं होता। ऐसे बहुत से समय हुए होंगे जब इन विश्वासियों की त्याग देने की इच्छा हुई होगी। जिस समाज में वे रहते थे उन्हें सदैव वहां स्वीकार नहीं किया जाता होगा। उन पर शत्रुओं और यहूदियों और उनके आस–पास के लोगों के द्वारा प्रहार किये जाते रहे होंगे, परन्तु उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। उन्हें याद था कि प्रभु यीशु में उनके पास क्या था और वह क्यों आया था। वे समझ गए थे कि यह संसार वास्तव में उनका घर नहीं था और परमेश्वर उनके लिए किसी महान चीज़ की तैयारी कर रहा था। उन्हें स्मरण था कि मृत्यु केवल प्रभु यीशु की उपस्थिति में जाने का एक सीढ़ी था। वे सांसारिक सम्पत्ति की अभिलाषा में नहीं पड़े थे। उनकी आंखें प्रभु यीशु और स्वर्ग पर ही केन्द्रित थीं। इससे उन्हें कठिन समयों में भी आगे बढ़ने का साहस मिला था।

पद 4 में, पौलुस ने विश्वासियों को बताया कि वे चुने हुए तथा परमेश्वर के प्रिय थे। उसने उन्हें स्मरण कराया कि थिस्सलुनीके में उन तक सुसमाचार कैसे पहुंचा था। इसके पीछे पवित्र आत्मा की शक्ति थी जिसके परिणामस्वरूप वे कायल हुए थे। अन्य शब्दों में, जब सुसमाचार इस स्थान पर आया, परमेश्वर के आत्मा ने बहुत ही शक्तिशाली ढंग से कार्य किया। परमेश्वर के आत्मा को थिस्सलुनीके में कार्य करते हुए देखने पर वह जानता था कि परमेश्वर की उनके लिए एक विशेष योजना थी।

पौलुस ने पद 5–6 में थिस्सलुनीके के विश्वाससियों को प्रेरितों के जीवन से शिक्षा लेने की चुनौती दी। पद 6 से हम जान पाते हैं कि थिस्सलुनीके की कलीसिया गंभीर कष्ट का सामना कर रही थी परन्तु इसने उन्हें परमेश्वर की सेवा करने से रोककर नहीं रखा। दृढ़ बने रहकर उन्होंने अपनी आंखें प्रभु द्वारा उन्हें दी गई आशा पर केन्द्रित रखीं, जिसमें दो तरीकों से प्रेरितों की नकल करना आता है। उन्होंने सर्वप्रथम प्रेरितों के कष्ट में दृढ़ बने रहने की नकल की। थिस्सलुनीके की कलीसिया ने शहर द्वारा पौलुस को बाहर निकाले जाते हुए देखा था। वे आरम्भ से ही जान गए थे कि मसीही जीवन जीना सरल नहीं होगा। उन्होंने देखा कि पौलुस तथा अन्य प्रेरितों ने हिम्मत हारे बिना संकट का सामना कैसे किया था और उन्होंने उसका अनुसरण करने का चुनाव किया।

थिस्सलुनीके की कलीसिया ने प्रेरितों के जिस दूसरे उदाहरण का अनुसरण किया था वह आनन्द के साथ पवित्र आत्मा के संदेश को स्वीकार करने का था (पद 6)। उन्होंने न केवल परमेश्वर के वचन प्रचार का स्वागत किया बल्कि स्वयं को इसकी आज्ञाकारिता के लिए भी सौंप दिया था। परिणामस्वरूप वे अपने आस-पास की कठिनाइयों के बावजूद भी पवित्र आत्मा के आनन्द से भरे हुए थे।

मकिदुनिया और अखया क्षेत्र में थिस्सलुनीके के विश्वासियों ने सच्ची मसीहियत को प्रगट किया था। (पद 7)। वे विश्वास के कार्यों, प्रेम के परिश्रम और आशा की धीरता का उदाहरण थे। गंभीर और आशा की धीरता का उदाहरण थे। गंभीर कष्टों के बीच उन्होंने इसे किया था। आस-पास के लोगों ने उनके विश्वास के बारे में सुना था।

लोग इस बारे में बात कर रहे थे कि थिस्सलुनीके की कलीसिया ने किस तरह से प्रेरितों के लिए अपने मन को खोला और उनके संदेश को ग्रहण किया था। वे उस क्षेत्र में आनेवाले परिवर्तन के बारे में भी बोल रहे थे। उन्होंने देखा कि लोग मूर्तियों से हटकर जीवित और सच्चे परमेश्वर की ओर फिर रहे थे। (पद 9)। लोगों ने देखा कि विरोध के बावजूद उन्होंने अपने मन व मस्तिष्क को प्रभु यीशु की वापसी की ओर केन्द्रित किया था कि वह उन्हें भावी न्याय से बचाए।

पौलुस ने कहा कि उनके उदाहरण के कारण ही उसे उस क्षेत्र में प्रचार करने की अधिक आवश्यकता नहीं थी। उन्होंने अपने जीवनों के द्वारा सुसमाचार के समस्त संदेश को प्रगट किया था। पौलुस ने व्यावहारिक रूप से देखा कि परमेश्वर पापियों को किस तरह से बदल सकता है कैसे और उन्हें आनन्द व उद्देश्य से परिपूर्ण कर सकता है।

थिस्सलुनीके की कलीसिया के जीवन में हम कितने सामर्थशाली उदाहरण देखते हैं। आपके जीवन की ओर देखने पर क्या लोग सुसमाचार के संदेश को समझ पाएंगे? क्या वे आपके जीवन में यीशु द्वारा किये अद्‌भुत परिवर्तन को देख सकेंगे? क्या आपके शब्द यह बताते हैं कि चीज़ों के कठिन होने पर भी आप प्रभु यीशु पर भरोसा रखते हैं? हमारे जीवन सुसमाचार के सामर्थशाली उदाहरण हैं। बहुत से हैं जो सुसमाचार के संदेश से फिर गए हैं, क्योंकि वे यीशु द्वारा किये गए परिवर्तन को स्पष्टता से देख नहीं पाए हैं। काश कि थिस्सलुनीके के विश्वासियों के जीवनों के समान हमारे जीवन भी उद्धारकर्त्ता की मांगों को पूरा करने वाले हो सकें।

विचार करने के लिए :

- क्या आप कभी ऐसे समय से होकर गुज़रे हैं जब आपको यह अनुभव हुआ हो कि आप पूरी तरह से असफल हो गए हैं? इस सच्चाई से आपको क्या

प्रोत्साहन मिलता है कि थिस्सलुनीके की कलीसिया ने इस सच्चाई के बावजूद भी वृद्धि की कि पौलुस को शहर से बाहर निकाल दिया गया था।

- देह द्वारा उत्पन्न होने वाले कार्यों और विश्वास द्वारा उत्पन्न होनेवाले कार्यों में क्या भिन्नता है?
- मसीह में आपकी आशा ने आगे बढ़ने में आपकी किस तरह से सहायता की है? एक उदाहरण दें।
- परमेश्वर आप पर अपने प्रेम और समर्थन को कैसे प्रगट करता है?
- आप अन्य विश्वासियों के लिए कितने आदर्श बने हैं? आपके जीवन के किस क्षेत्र को आपको परमेश्वर को सौंपने की ज़रूरत है?

प्रार्थना के लिए :

- अपने आस-पास के लोगों के लिए एक आदर्श बनने के लिए परमेश्वर से सहायता मांगें।
- परमेश्वर से सेवा के क्षेत्र में आपकी प्रेरणा की जांच करने को कहें। उससे कहें कि वह आपकी सेवा का स्त्रोत उससे और उसके लोगों से प्रेम करने के रूप में आपको दे।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि वह उन चीज़ों का भी प्रयोग महान कार्य को पूरा करने में कर सकता है जों भले कामों को पूरा करने में असफल प्रतीत होते हैं।
- परमेश्वर द्वारा हमें अद्‌भुत आशा दिये जाने के लिए धन्यवाद दें। उससे कहें कि कठिन समयों में वह आपको अपनी प्रतिज्ञाओं को स्मरण कराए।

◀▶

2

प्रेरितों की सेवकाई

पढ़ें थिस्सलुनीकियों 2:1-12

हमने देखा कि थिस्सलुनीके की कलीसिया, अद्वितीय बाधाओं के बावजूद, अपने आस-पास के क्षेत्र के विश्वासियों के लिए एक अद्‌भुत उदाहरण बनी। पहली बार उस क्षेत्र में जाने पर पौलुस को वहां के सामान्य लोगों द्वारा अच्छी तरह से ग्रहण नहीं किया गया था। विरोध के कारण उस पर क्षेत्र को छोड़ने का दबाव डाला गया था। तौभी, परमेश्वर एक सामर्थशाली कार्य करने को प्रसन्न था, एक कलीसिया की स्थापना भी हुई।

पद 2 में पौलुस स्मरण कर रहा था कि उसने तथा उसके सहकर्मियों ने किस तरह से उनके बीच सेवा का कार्य किया थे। यह अध्याय इस बारे में कुछ महत्त्वपूर्ण चीज़ें बताता है कि मसीही अगुवों को सेवा कार्य किस तरह से करना चाहिए। पौलुस हमारी स्वयं की सेवकाइयों में अनुसरण करने हेतु एक उदाहरण देता है।

पौलुस कलीसिया को यह स्मरण कराते हुए आरम्भ करता है कि उनके साथ बिताया गया उसका समय बेकार नहीं गया था। यदि हम इस विवरण को पढ़ें कि पौलुस को किस तरह से शहर से निकाला गया था तब हम यह जान सकते हैं कि उसके द्वारा यह अनुभव किया जाना कितना सरल होता कि वह असफलता हुआ है। पौलुस ने चीज़ों को इस तरह से नहीं देखा। इसके विपरीत उसने अपनी आंखों को प्रभु पर केन्द्रित रखा। शहर से निकाले जाने की सच्चाई के बावजूद, पौलुस ने विश्वास किया कि जिस परमेश्वर ने उसे बुलाया है वह उस क्षेत्र में उसके द्वारा बिताए गए समय का प्रयोग अपनी महिमा के लिए करेगा। परमेश्वर गलती नहीं करता है। उसके द्वारा किये जानेवाले प्रत्येक कार्य में उसका एक उद्देश्य था। चीज़ें हमेशा वैसी नहीं होतीं जैसी वे दिखती हैं। जो चीज़ें असफल प्रतीत होती हैं परमेश्वर उनका प्रयोग भी महान कार्यों में करता है। अगुवों के रूप में इस पर केन्द्रित होने के द्वारा हम अच्छा ही करेंगे।

सुसमचार प्रचार सेवकाई में पौलुस ने प्रायः दुःख उठाने के साथ-साथ अपमान को भी सहा। उसके प्रचार को हर कोई समझ नहीं पाया था। कुछ ने उसके शब्दों के प्रतिउत्तर में हिंसा को दिखाया। थिस्सलुनीके पहुंचने से पुर्व फिलिप्पी में उसके साथ ऐसा ही हुआ था। वहां पौलुस और उसके सहकमियों को पीटा व बन्दी बनाया गया था। तथापि, विरोध के बावजूद, उन्होंने आशा नहीं छोड़ी थी। शहर को छोड़े जाने के बाद थिस्सलुनीके जाकर उन्होंने फिर से सुसमाचार प्रचार किया।

ध्यान दें कि पौलुस और उसके सहकर्मियों ने इसे अपने बल से नहीं किया था। पद 2 हमें बताता है कि ''हमारे परमेश्वर ने हमें ऐसा हियाव दिया, कि हम परमेश्वर का सुमाचार भारी विरोधों के होते हुए भी सुनाएं। परमेश्वर की सहायता से ही पौलुस और उसके सहकर्मी फिलिप्पी में इतना विरोध होने के बावजूद सुसमचार प्रचार को जारी रख सके। उनका मानव बल अपर्याप्त था। उन्होंने थिस्सलुनीके जाने के लिए परमेश्वर में बल को पाया था जहां पर उन्होंने उसे जारी रखा था जिसे परमेश्वर ने उनके मनों में डाला था।

पद 2 में ध्यान दें कि थिस्सलुनीके में ''भारी विरोध के होते हुए भी'' उन्होंने सुसमाचार प्रचार किया। प्रेरित जानते थे कि उन्हें सुसमाचार के लिए दुःख उठाना होगा। वे सुसमाचार का प्रचार की अपमान, सताव और विरोध सहने को भी तैयार थे। हम शत्रु से युद्ध करने को बुलाए गए हैं। युद्ध में सैनिक होने के कारण हमें इस सच्चाई का स्वीकार करना है, कि कुछ चीज़ों को करना कठिन होगा। हम इस कारण सुसमाचार को नहीं बांटते कि यह आसान होने वाला है। हम इसे इसलिए बांटते हैं क्योंकि लोग इसे सुनना चाहते हैं। हमें विरोध और कठिनाई का सामना करना होगा लेकिन हमें हतोत्साहित नहीं होना है। प्रेरित सुसमाचार को उन लोगों तक पहुंचाने के लिए विरोध सहने को भी तैयार थे जो इसे सुनना चाहते थे। इसकी शक्ति उन्हें प्रभु परमेश्वर से मिली थी। उसी तरह से उसकी शक्ति हमारे लिए भी उपलब्ध है।

पद 3 के अनुसार प्रेरित पौलुस का प्रचार भ्रम और गलत उद्देश्यों से नहीं आया था। स्वर्ग के राज्य में लाने के लिए पौलुस ने लोगों के साथ कोई चाल चलने का प्रयास नहीं किया था। पौलुस ने लोगों को यीशु का अनुसरण करने को बाध्य करने के लिए प्रश्नीय तकनीक को नहीं दिया था। प्रचार सभा में लोगों को प्रभु यीशु को ग्रहण करने हेतु आगे आने के लिए कहना था या अपने हाथ उठाने को कहना कितना सरल है। हम उनसे प्रभु यीशु के लिए समर्पण के कार्ड पर हस्ताक्षर करने को तथा बदले में अद्‌भुत आशीष पाने को कह सकते हैं। हम उनका मनोरंजन कर सकते या उन पर यह प्रयास डाल सकते हैं कि हम कितने मैत्रीपूर्ण हैं परन्तु केवल परमेश्वर ही जीवनों को बदल सकता है। केवल उसके

द्वारा किये जाने वाला कार्य ही अंतिम होता है। पौलुस सुसमाचार प्रचार पर केन्द्रित था। उन्हें जीतने के लिए उसके पास कोई कार्यक्रम या तकनीक नहीं थी। उसे विश्वास था कि केवल परमेश्वर का आत्मा ही मानव हृदयों को बदलने में सामर्थी है तथा सत्य को सुननेवालों को जीवन देता है। पौलुस के उद्देश्य शुद्ध थे। उसने राज्य में लाने के लिए लोगों के साथ कोई छल नहीं किया। पवित्र आत्मा की सेवकाई और सत्य का प्रचार करने को पौलुस का एक मज़बूत दृष्टिकोण था। विश्वासी होने के कारण आज हमें भी सत्य की घोषणा के द्वारा परमेश्वर के आत्मा की सेवकाई को नवीन रूप से देखने की ज़रूरत है। संपूर्ण इतिहास में अपने आत्म को प्रयोग होते हुए तथा जीवनों को बदलने के लिए वचन का प्रचार होते देख परमेश्वर प्रसन्न हैं। हमारे दिनों में भी वह इसे जारी रखेगा। सेवकाई में पौलुस का केन्द्र आत्मा और वचन पर था। इसके मिश्रण का उनके जीवन पर सामर्थी प्रभाव पड़ा जिन्होंने उसे बोलते हुए सुना था।

पौलुस उस व्यक्ति के रूप में बोला जिसे परमेश्वर की ओर से अनुमोदित किया गया था। (पद 4) अन्य शब्दों में, परमेश्वर ने इस उद्देश्य के लिए उसे अलग करके रखा था। और उसे विशिष्ट रूप से बुलाया भी था। पौलुस की सेवकाई की शक्ति का कारण केवल यही नहीं था कि वह वचन और आत्मा पर केन्द्रित था परन्तु इसलिए भी कि उसे अपने जीवन के लिए परमेश्वर की ओर से विशेष बुलाहट मिली थी। जो कुछ पौलुस ने किया उसके लिए परमेश्वर ने उसे चुना व स्वीकृति दी थी। उसने वही प्रचार किया जिसका प्रचार करने की बुलाहट उसे परमेश्वर ने दी थी। वह उस व्यक्ति के रूप में जीया तथा सेवकाई की जिसे परमेश्वर की ओर से अनुमोदित किया गया था। उसने लोगों को प्रसन्न करने को प्रचार नहीं किया बल्कि परमेश्वर को प्रसन्न करने को जिसने उसे अपने उद्देश्य के लिए अलग किया था।

लोग सदैव परमेश्वर के वचनों को स्वीकार नहीं करते हैं। कई बार वे उससे दूर जाते या उसके बारे में बुरा बोलते हैं। कई बार वे शारीरिक रूप में उस पर प्रहार करते हैं। यीशु को भी अस्वीकृत किया गया था। प्रेरितों को संदेश का प्रचार करने के कारण पीटा व उन पर पत्थरवाह किया गया थ। तथापि, उन्होंने यही अपना लक्ष्य बनाया कि चाहे कुछ भी हो जाए, वे परमेश्वर की स्वीकृति को चाहेंगे न कि मनुष्यों की।

पौलुस ने अपने प्रचार में लुभानेवाली बातों को नहीं रखा था। लुभानेवाली बातें बोलने पर हम कपटपूर्ण सराहना के बारे में बोलते हैं। चापलूसी करनेवाला लोगों को अपने लिए जीतने को सब प्रकार की अच्छी बातें कहता है। पौलुस ने चापलूसी नहीं की। उसने केवल सत्य ही बोला। उसने चाहा कि उसकी सुननेवालों के जीवनों में आत्मा कार्य करे। कई बार लोग इस कारण से हमारे

पीछे आते हैं क्योंकि हम उन्हें वह बताते हैं जो वे सुनना चाहते हैं। वह चाहता था कि परमेश्वर का आत्मा उसके श्रोताओं के जीवनों में वास्तविक परिवर्तन को लाने के द्वारा कार्य करे।

पौलुस ने लोभ को ढांपने के लिए उस पर कोई आवरण नहीं डाला (पद 5-6)। उसकी धन बनाने में रुचि नहीं थी। उसने सुसमाचार का प्रचार इसलिए किया क्योंकि परमेश्वर उसे उन टूटे हृदयों वालों के पास लेकर जा रहा था जिन्हें उसने अपने आस-पास आवश्यकता में पढ़ें देखा था। चाहे उसके प्रचार को सुनने वाला उसे धन दे या न दे, उसे प्रचार करना था। उसने अपने श्रोताओं से किसी तरह की सहानुभूति को पाने का प्रयास नहीं किया उसने धन की कोई मांग नहीं की। उसे परमेश्वर द्वारा बुलाया गया था और वह जानता था कि परमेश्वर ही प्रबन्ध करेगा।

मसीही कर्मियों के लिए लालच एक समस्या हो सकती है। पौलुस के दिनों में, यात्री प्रचारक और भविष्यद्वक्ता-परमेश्वर के लोगों के दानों पर आश्रित थे। उनके लिए लालची बनना तथा उस पर केन्द्रित होना अधिक आसान था जिसे वे पा सकते थे। हमारे लिये चुनौती सुसमाचार का प्रचार करने में अपने उद्देश्यों की जांच करना है। क्या हम इसलिए प्रचार कर रहे हैं कि हम इससे अपने लिए धन (धन, समर्थन या ध्यान) पा सकते हैं? क्या हम अपने स्त्रोतों के लिए परमेश्वर पर भरोसा करते हैं या हम परमेश्वर के लोगों के दानों और समर्थन को पाने के लिए हर तरह की तकनीक का प्रयोग कर रहे हैं?

पद 6 में पौलुस ने लिखा कि वह कलीसिया के लिए बोझ नहीं बनना चाहता। उसने उनके बीच स्वतंत्रतापूर्वक प्रचार और सेवा करने का चुनाव किया वह उनकी ओर से किसी भी आर्थिक आशीष को पाए बिना वहां से जाने को तैयार था। जहां परमेश्वर आपको जाने के लिए कहता है क्या वहां जाने को आप अपने वेतन में कोई कटौती कराना चाहेंगे? आपके लिए कोई वित्तीय प्रबन्ध न होने पर भी क्या आप परमेश्वर की बुलाहट के पीछे जाना चाहेंगे? क्या धन सेवकाई से अधिक महत्त्वपूर्ण है? पौलुस का उद्देश्य सुसमाचार प्रचार करना था। वह इसे स्वतंत्रता व त्याग के साथ करना चाहता था।

पौलुस ने अपनी सेवकाई की तुलना एक माँ द्वारा अपने छोटे बच्चों की देखभाल किये जाने से की है। एक माँ के समान पौलुस ने कलीसिया के लिए स्वेच्छा से त्याग किया। माँ अपने बच्चों का पालन पोषण करने के बदले में क्या पाना चाहती है? एक माँ का हृदय अपने बच्चे को बढ़ते व परिपक्व होते देखना चाहता है। वह नरमी और करुणा से स्वतंत्रता के साथ अपने बच्चों का पालन-पोषण करती है। वह अपने बच्चों के लिए अपने आराम का भी त्याग

करने को तैयार रहती है। जैसा पौलुस पद 8 में भी कहता है कि वे थिस्सलुनीके के विश्वासियों के लिए अपने जीवन दे देने को भी तैयार थे। क्योंकि वे उनके अतिप्रिय हो गए थे।

पद 9 प्रेरितों के इस माँ समान होने के चित्र के साथ साथ अन्य आयाम को भी जोड़ता है। माँ के समान उन्होंने थिस्सलुनीके के लोगों के लिए दिन और रात कठिन श्रम किया। उन्होंने अथक प्रयास किये थे। अपनी आत्मिक संतानों के प्रति प्रेम होने के कारण ही वे आगे बढ़ते रहे थे। उन्होंने उनकी देखभाल करने के लिए अपनी रुचियों और आराम की भी परवाह नहीं की थी।

सुसमाचार के सत्य का प्रचार करना ही पर्याप्त नहीं था। प्रेरितों ने इसे अपने जीवनों के द्वारा भी प्रगट किया था। उन्होंने थिस्सलुनीके के लोगों के बीच पवित्र, धर्मी और दोष रहित जीवन जीया (पद 10)। वे स्वयं अपने प्रचार का उदाहरण थे। हम जो प्रचार करते हैं यदि हम स्वयं उसके अनुसार न जीयें तो प्रचार करने का कोई लाभ नहीं है। थिस्सलुनीके के लोगों ने प्रेरितों में अनुसरण किये जाने योग्य उदाहरण को देखा था।

पौलुस ने प्रेरितों की सेवकाई की तुलना पिता से भी की थी। उन्होंने आत्मिक संतानों के साथ उसी तरह का व्यवहार किया जैसा एक पिता अपने बच्चों के साथ करता है, कठिन समयों में उन्हें आगे बढ़ने को प्रोत्साहित करते हुए। ऐसे भी समय होते थे जब विश्वासियों को छोटे बच्चों के समान रोने के लिए बड़े कंधों की आवश्यकता होती थी। ऐसे भी समय होते थे जब उन्हें बड़ी बाहों की ज़रूरत होती थी कि वह उन्हें चारों ओर से घेर सके, हानि से उनकी सुरक्षा करते हुए उन्हें आराम दे सके। प्रेरितों ने यही उनके साथ किया था। पिताओं की भांति, प्रेरितों ने थिस्सलुनीके के विश्वासियों को परमेश्वर के योग्य जीवन जीने को प्रोत्साहित किया जिसने उन्हें अपने राज्य में बुलाया था। मसीह में वे जो कुछ हो सकते हैं वैसे होने के लिए उन्होंने अपनी संतानों को प्रेरित किया व चुनौती दी।

परमेश्वर के लोगों की सेवकाई करना न तो सरल कार्य होगा और न ही हमेशा इसे सराहा जाएगा। पौलुस दो चीज़ों को हमारी सेवकाइयों में प्रमुख स्थान पर रखने की चुनौती हमें देता है।

सर्वप्रथम, हमें पवित्र आत्मा की सामर्थ से सत्य का प्रचार करने पर केन्द्रित होना है, चाहे इसके लिए कोई भी कीमत क्यों न चुकानी पड़े। हमें स्वीकृति पाने या मानव तकनीक का सहारा लेते हुए स्त्री पुरुषों को मसीह के लिए जीतने की खोज में नहीं रहना चाहिए। इसके विपरीत हमें पवित्र आत्मा पर विश्वास

तथा भरोसा रखना चाहिए कि वह अपनी इच्छानुसार लोगों को बाध्य कर परिवर्तन लाएगा।

दूसरा, हमें परमेश्वर की संतान की एक माँ व पिता को समान सेवा करने को स्वयं को सौंपना चाहिए।

हमें बड़े त्याग करने को तैयार रहना चाहिए। दीनता, करुणा और व्यक्तिगत उदाहरण के साथ हमें केवल परमेश्वर की स्वीकति को पाने के प्रयास में देह का निर्माण करने को स्वयं को दे देना चाहिए।

विचार करने के लिए :

- क्या आप सुसमाचार को फैलाने के लिए विरोध का सामना करने को तैयार हैं?
- क्या आपने कभी स्वयं को पवित्र आत्मा की तुलना में स्वयं की तकनीकों, कार्यक्रमों, व्यक्तित्व या वरदानों पर भरोसा करते पाया है?
- क्या आपने कभी स्वयं को अपनी सेवकाई में लोगों को प्रसन्न करने का प्रयास करते हुए पाया है? यह परमेश्वर के राज्य में आगे बढ़ने में कैसे बाधक है?
- एक पिता और माता की क्या विशेषताएं हैं? हम मसीह की देह में और उसके लिए अपनी सेवकाई में इन विशेषताओं को कैसे दिखा सकते हैं?

प्रार्थना के लिए :

- परमेश्वर से आपकी सेवकाई की जांच करने और आपको किसी भी तरह से यह दिखाने को कहें कि आप उसके पवित्र आत्मा पर भरोसा नहीं कर रहे हैं।
- क्या आपका कभी कोई आत्मिक माता या पिता रहा है? वे आपको कैसे प्रोत्साहित व आशीष देते हैं? इन व्यक्तियों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें। परमेश्वर से कहें कि वह आपको आपके आस-पास के लोगों के लिए पिता और माता बनने का अनुग्रह दे।
- स्वयं को अपनी सेवकाई में परमेश्वर की स्वीकृति पानेवाले के रूप में समर्पित करें। परमेश्वर से कहें कि वह आप में पाई जानेवाली लोगों की स्वीकृति पाने की किसी भी इच्छा को तोड़े।

◀▶

3

पौलुस का आनन्द

पढ़ें 1थिस्सलुनीकियों 2:13–20

पौलुस थिस्सलुनीकेवासियों के लिए माँ और पिता समान था। जबकि उसे समाज में अच्छी तरह से ग्रहण नहीं किया गया था, तौभी कुछ लोगों ने उसके संदेश को ग्रहण किया था। पौलुस ने उन लोगों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दिया था। (पद 13)।

पद 13 में ध्यान दें कि थिस्सलुनीके के लोगों ने वचन को मनुष्यों के वचन के रूप में ग्रहण नहीं किया था बल्कि परमेश्वर के वचन के रूप में और उस पर विश्वास भी किया था। परमेश्वर के आत्मा ने उनके हृदयों को बाध्य किया कि वे परमेश्वर की ओर से क्या सुन रहे थे। पौलुस ने इसके लिए परमेश्वर की स्तुति की।

इस पर भी ध्यान दें कि विश्वास करनेवालों में इस वचन ने कार्य किया था। परमेश्वर का वचन जीवित है। इसमें उन लोगों के जीवनों को बदलने और परिवर्तित करने की सामर्थ है जो इस पर विश्वास करते, और इसे ग्रहण करते हैं। इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण कि बाइबल परमेश्वर का जीवित वचन है इसमें मिलता है कि यह किस तरह से जीवनों और हृदयों को बदलती है। शत्रु परमेश्वर के वचन की परिवर्तित करने और चंगा करने की सामर्थ को जानता है। पौलुस ने थिस्सलुनीकेवासियों को जिस वचन का प्रचार किया था वह आज भी जीवनों को परिवर्तित करता है। यह सिद्धांतों और विधियों की सूची से कहीं बढ़कर है। जो लोग बाइबल को केवल सिद्धान्त के रूप में देखते हैं वे किसी शक्तिशाली चीज़ से चूक जाते हैं। बाइबल जीवित और सक्रिय है। इसमें उन लोगों के जीवनों को बदलने और परिवर्तित करने की सामर्थ है जो इसके सत्य को सुनते और इसकी आज्ञा का पालन करते हैं। थिस्सलुनीके की कलीसिया में यही हो रहा था।

थिस्सलुनीकेवासियों के जीवनों में वचन के सक्रिय होने पर भी इसने उन्हें व्यक्तिगत परीक्षाओं और दुखों से बचाए नहीं रखा था। वास्तव में, इतिहास में इस स्थान पर, परमेश्वर के वचन पर विश्वास करने पर दुख उठाना पड़ता था। पद 14 हमें बताता है कि थिस्सलुनीकेवासियों को उनके स्वयं के देशी लोगों द्वारा संताया गया था।

पौलुस जानता था कि इस सताव का अनुभव किसके समान था। उसने अपने साथी यहूदियों द्वारा दुःख उठाया था। उन्होंने प्रभु यीशु को ग्रहण करने से इंकार कर दिया था तथा यीशु की मसीहा के रूप में घोषणा करने वालों के वे शत्रु बन गए थे (पद 15)।

यहूदियों के लिए इस पर विश्वास करना बहुत कठिन था कि परमेश्वर अन्यजतियों तक जाकर उन्हें ग्रहण करेगा। उनके दृष्टिकोण से अन्यजाति परमेश्वर के अनुग्रह को पाने के योग्य नहीं था। पद 16 के अनुसार, यहूदियों ने प्रेरितों को अन्यजातियों से बातचीत करने से दूर रखने का हर संभव प्रयास किया ताकि वे बचाए जा सकें। पौलुस के अनुसार अन्य-जातियों तक सुसमाचार पहुंचाने में बाधा बनने के द्वारा यहूदी पापों का ढेर लगा रहे थे। निश्चय ही यह एक गंभीर विषय था।

आज कई तरह से हम सुसमाचार प्रचार में बाधक बन सकते हैं। हम ऐसा अपने बुरे उदाहरण के द्वारा कर सकते हैं। जिन्हें परमेश्वर हमारे मार्ग में लेकर आता है उन तक सुसमाचार को न बांटकर हम इसमें बाधक बन सकते हैं। जिनके आगे जाने की बुलाहट मिली है उन्हें प्रोत्साहित करने व उनकी सहायता करने को अपने स्त्रोतों का प्रयोग न करते हुए हम सुसमाचार प्रचार में बाधक बन सकते हैं। पौलुस हमें बताता है कि सुसमाचार में बाधक बनना पाप का ढेर लगाना है। यदि हम किसी पाप के दोषी है, हमें उसका अंगीकार करने की ज़रूरत है। परमेश्वर ने यहूदियों का न्याय पहले से ही कर दिया था (देखें पद 16)। काश कि हमारे साथ ऐसा न हो।

थिस्सलुनीके में पौलुस पर उसके विरुद्ध होने वाले सतावा के कारण वहां से चले जाने का दबाव पड़ा। पद 17 में उसने विश्वासियों को बताया कि उनसे अलग हो जाने पर भी उसने उनके पास आने का हर संभव प्रयास किया। व्यक्तिगत रूप से उनसे अलग हो जाने पर भी उसके विचार और प्रार्थनाएं उनके साथ थे। उसे उनकी तथा उनके आत्मिक चलन की बहुत चिन्ता थी। जिस परिस्थिति में वे रह रहे थे वह उसे जानता था। उसने स्वयं सुसमाचार प्रचार में सामाजिक विरोध का सामना किया था और इसी कारण वह उस क्षेत्र के विश्वासियों की सुरक्षा और विकास को लेकर चिन्तित था।

यह ध्यान देना रोचक है कि जहां कहीं भी पौलुस ने सुसमाचार प्रचार किया उस पर प्राय: वहां से चले जाने का दबाव पड़ा। उन समुदायों के विश्वासियों के लिए उसमें असीम बोझ था लेकिन परमेश्वर ने उसे उनके साथ अधिक समय तक रहने की अनुमति नही दी। हमें यह समझने की ज़रूरत है कि परमेश्वर ने पौलुस को इसलिए बुलाया था कि वह अधिक से अधिक लोगों तक सुसमाचार प्रचार करे। परन्तु परमेश्वर की योजना में नहीं था कि पौलुस किसी क्षेत्र में अधिक समय तक रहे।

तथापि, पौलुस ने पौलुस ने प्रेरित के रूप में अपनी भूमिका को गंभीरता से लिया और परमेश्वर के लोगों को उनके विश्वास में पोषित व प्रोत्साहित करने को प्रत्येक प्रयास किया। पद 18 में ध्यान दें कि जबकि पौलुस वापस आकर थिस्सलुनीके के विश्वासियों से मिलना चाहता था, शैतान ने उसे रोका। वह परमेश्वर का आत्मा से भरा व्यक्ति था। पौलुस ने दुष्ट आत्माओं को निकाला तथा उसने परमेश्वर को अपने जीवन के द्वारा सामर्थी कार्य करते देखा था, लेकिन यहां शैतान उसे रोक रहा था।

अपनी सेवकाई में पौलुस को अक्सर शैतान से संघर्ष करना पड़ा। 2कुरिन्थियों 12:7-9 में वह दैनिक आधार पर शैतान के साथ अपने संघर्ष के विषय में बताता है:

> और इसलिये कि मैं प्रकाशों की बहुतायत से फूल न जाऊँ, मेरे शरीर में एक कांटा चुभाया गया अर्थात् शैतान का एक दूत कि मुझे घूसे मारे ताकि मैं फूल न जाऊँ। इसके विषय में मैंने प्रभु से तीन बार बिनती की कि मुझ से यह दूर हो जाए और उसने मुझे से कहा, मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत हैं; क्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है; इसलिये मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा कि मसीह की सामर्थ मुझ पर छाया करती रहे।

पौलुस ''शैतान के दूत'' की ओर से पीड़ा उठा रहा था। जब उसने इस बारे में प्रार्थना की, तब परमेश्वर ने उसकी ''देह से इस कांटे'' को दूर नहीं किया। यहां इस परिच्छेद में हम देखते हैं कि थिस्सलुनीके के विश्वासियों को प्रेरित करने के लिए पौलुस के वहां जाने को शैतान उसे कैसे रोके रहा।

हमें इससे दो चीज़ों को समझने की ज़रूरत है। सर्वप्रथम यद्यपि शैतान बहुत सक्रिय था, परमेश्वर ने पौलुस की परिस्थिति को नियंत्रण में कर रखा था। हमें अय्यूब का स्मरण कराया गया है कि किस तरह से शैतान ने उससे उसकी प्रिय चीज़ों को छीन लिया था। शैतान ने अपना उच्चतम् किया, परन्तु अन्त में जय प्रभु की ही हुई। अय्यूब परीक्षाओं में से गुज़रा और अन्त में उसे सब चीज़ बड़ी

आशीष के साथ लौटा दी गई। परमेश्वर अपनी महिमा के लिए शैतान का भी प्रयोग कर सकता है। ऐसा ही उसने पौलुस की ''देह के कांटे'' के साथ किया था। परमेश्वर ने पौलुस से कहा कि उसने शैतान के दूत को उसे पीड़ा देने की अनुमति दी है लेकिन वह उस दूत का प्रयोग अपनी शक्ति को प्रगट करने के लिए करेगा। पौलुस को थिस्सलुनीके जाने के लिए शैतान द्वारा रोका गया था लेकिन इसका अर्थ यह नहीं था कि शैतान का नियंत्रण था। जो कुछ शैतान कर रहा था परमेश्वर उसका भी प्रयोग अपनी महिमा के लिए करनेवाला था। पौलुस के थिस्सलुनीके के विश्वासियों से न मिलने पर भी वहां की कलीसिया बढ़ रही थी। वे अपने चारों ओर के लोगों के लिए आदर्श बन गए थे। परमेश्वर ने उनकी परीक्षाओं का प्रयोग उन्हें पौलुस के बिना ही परिपक्व होने में किया।

जिस दूसरी चीज़ को हमें यहां समझने की ज़रूरत है वह यह कि परमेश्वर की विजय सदैव हमारी विजय के समान नहीं दिखती है। हम प्राय: पूरा चित्र नहीं देख पाते हैं। पौलुस को जीवन भर ''देह में कांटे'' का अनुभव करना पड़ा। कांटे के बावजूद सुसमाचार बढ़ता गया। क्या पौलुस को अन्त में शैतान पर विजय प्राप्त हुई? निश्चय ही उसे विजय मिली। शैतान ने पौलुस को थिस्सलुनीके जाने से रोका, परन्तु तौभी परमेश्वर ने कार्य को आशीषित किया। शैतान के प्रयास परास्त हो गए थे।

पौलुस विश्वासियों को यह स्मरण कराते हुए इस अध्याय का समापन करता है कि वे उसकी आशा, आनन्द और मुकुट थे। परमेश्वर की उपस्थिति में वह उनमें बड़ाई पाएगा।

पौलुस थिस्सलुनीके के विश्वासियों के लिए आनन्द से भरा था। वह इस बात से रोमांचित था कि कठिनाइयों के बावजूद वे परमेश्वर को जान गए थे। वह इस बात से खुश था कि उनके मसीह में आने का एक भाग उसने उसे बनाया था। वह इसलिए भी आनन्दित था क्योंकि शहर में अद्वितीय बाधाओं का सामना करने के बावजूद वे परिपक्व हो रहे थे।

थिस्सलुनीके के विश्वासी पौलुस का मुकुट थे। पवित्रशास्त्र में मुकुट को विश्वासी द्वारा विश्वासयोग्य सेवकाई पश्चात् प्राप्त करनेवाला प्रतिफल कहा गया है। 1कुरिन्थियों 9:24-25 में पौलुस इस मुकुट के बारे में बताता है।

> ''क्या तुम नहीं जानते, कि दौड़ में तो दौड़ते सब ही हैं, परन्तु इनाम एक ही ले जाता है। तुम वैसे ही दौड़ो कि जीतो। और हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम करता है, वे तो एक मुरझाने वाले मुकुट को पाने के लिए यह सब करते हैं; परन्तु हम तो उस मुकुट के लिए करते हैं, जो मुरझाने का नहीं।''

पौलुस इनाम जीतना चाहता था। उसने अपना जीवन परमेश्वर को प्रसन्न करने तथा विश्वासयोग्य सेवा के लिए मुकुट पाने के लिए जीया। थिस्सलुनीके के विश्वासी उसके मुकुट का भाग थे। वे उसके इस परिश्रम का फल थे जिसके लिए उसे स्वर्ग में इनाम मिलता।

प्रेरित ने थिस्सलुनीके के विश्वासियों को बताया कि वापस आने पर प्रभु की उपस्थिति में उसे बड़ाई प्राप्त होगी। उसे उन पर गर्व था। प्रभु की वापसी पर उसे उनके कारण शर्मिन्दा नहीं होना पड़ेगा। वह प्रभु के सम्मुख उन्हें विश्वासयोग्य सेवा के फल के रूप में प्रस्तुत कर सकेगा।

विचार करने के लिए:

- वचन पर विश्वास करने तथा वचन की आज्ञाकारिता में रहने का क्या अर्थ है? यदि हम इसका आज्ञा पालन करने को तैयार न हों तो क्या हम कह सकते हैं कि हम इस पर विश्वास करते हैं?
- परमेश्वर का वचन आपके जीवन को कैसे बदल रहा है?
- सुसमाचार प्रचार हम किस तरह से बाधक हो सकते हैं?
- परमेश्वर शैतान का प्रयोग अपनी महिमा के लिए कैसे कर सकता है? इससे आपको क्या प्रोत्साहन मिलता है?
- विश्वासयोग्य सेवा के लिए इनाम पाने में क्या कोई बुराई है। पौलुस इस अध्याय में हमें क्या बताता है?
- पौलुस को थिस्सलुनीके के विश्वासियों को प्रभु के सम्मुख अपने सेवा के फल के रूप में प्रस्तुत करना था। आपके पास परमेश्वर को प्रस्तुत करने को क्या है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि उसका वचन सत्य है और इसलिए भी कि हम पूरी तरह से इस पर आश्रित हो सकते हैं।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि शैतान के हम पर प्रहार करने या हमें पीड़ा देने पर भी हम उसके नाम में विजयी हो सकते हैं।
- परमेश्वर से कहें कि सुसमाचार संदेश के लिए किसी भी तरह से बाधा बनने में वह आपको रोके।
- परमेश्वर को उन प्रतिफलों के लिए धन्यवाद दें जिनकी प्रतिज्ञा उसने उन्हें देने को की है जो विश्वासयोग्यता के साथ उसकी सेवा करते हैं।
- परमेश्वर से कहें कि यहां किये गए आपके परिश्रम के लिए वह आपको बड़ा इनाम दे।

4

तीमुथियुस की ओर से समाचार

पढ़ें 1 थिस्सलुनीकियों 3:1-13

अन्तिम अध्याय में पौलुस ने थिस्सलुनीकेवासियों को स्मरण कराया कि वे उसका आनन्द और मुकुट थे। प्रभु के आगमन के लिए वह उनके प्रति उत्तरदायी था कि वे उसके साथ संबन्धों में लगातार बढ़ते रहें। प्रभु यीशु के प्रति अपनी वचनबद्धता के कारण थिस्सलुनीके की कलीसिया को बहुत दुख उठाना पड़ा था। जिससे होकर वे गुज़र रहे थे, पौलुस उसे जानता था।

पद 1 में पौलुस ने विश्वासियों को बताया कि जब उससे रहा नहीं गया तो जिस समय वह एथेन्स में था उसने तीमुथियुस को उन्हें उनके विश्वास में बढ़ाने और प्रोत्साहित करने को भेजा अन्तिम अध्याय में हमने देखा कि शैतान ने पौलुस के स्वयं थिस्सलुनीके जाकर विश्वासियों को देखने में बाधा उत्पन्न की। पौलुस इस कलीसिया को उसके सातव में सांत्वना और प्रोत्साहन देना चाहता था इसलिए उसने इस आवश्यकता के समय में अपने स्थान पर तीमुथियुस को उन्हें बल देने के लिए भेजा।

इन विश्वासियों के लिए यह देखना कितना ही प्रोत्साहन रहा होगा कि पौलुस को उनकी कितनी अधिक चिंता थी। इस पर ध्यान दें कि तीमुथियुस को उनके विश्वास में बल प्रदान करने और प्रोत्साहित करने को भेजा गया था। (पद 2) ताकि कोई भी अपनी परीक्षाओं में ''अस्थिर'' न रहने पाए। पौलुस यह जान गया था कि ये विश्वासी जिन समस्याओं का सामना कर रहे थे उनके कारण कुछ के विश्वास को लेकर प्रश्न उठने लगे थे। उनके इन प्रश्नों के जवाब देने को पौलुस ने तीमुथिसुस को भेजने का निर्णय लिया।

इन पदों में हम मसीह की देह के महत्व को देखते हैं। थिस्सलुनीके की कलीसिया को उस समय में धर्मी आत्मिक अगुवों के समर्थन और प्रोत्साहन की ज़रूरत थी। परमेश्वर प्राय: अपने लोगों को एक दूसरे को प्रोत्साहित करने के लिए पवित्र आत्मा से समर्थ करता है। इस कलीसिया को प्रोत्साहित करने के लिए तीमुथियुस निश्चय ही परमेश्वर द्वारा चुना हुआ जन था।

प्रेरित पौलुस थिस्सलुनीके में सुसमाचार के विरोध को जानता था। उसे इससे आश्चर्य नहीं हुआ था कि विश्वासियों को उनके विश्वास के कारण सताया जा रहा था, और उसे उनकी बहुत चिन्ता थी। वह जानना चाहता था कि वे क्या कर रहे थे। वह जानता था कि शैतान उन्हें प्रलोभन में डालेगा और उन्हें उनके विश्वास से फेरने के प्रयास करेगा। पौलुस ने तीमुथियुस को परीक्षाओं और सताव का सामना करनेवाले विश्वासियों को प्रोत्साहित करने के बड़े कार्य के साथ भेजा।

जब तीमुथियुस थिस्सलुनीके के समाचार को पौलुस के पास लेकर आया तो यह पौलुस के लिए बहुत आशीष की बात थी। उसने पौलुस को उस प्रेम व विश्वास के बारे में बताया जिसे उसने थिस्सलुनीके के विश्वासियों में देखा था। (पद 6) उसने उसे यह भी बताया कि थिस्सलुनीकेवासियों को उसकी तथा उसके सहकर्मियों की स्मृति अभी तक बनी हुई है। जितना पौलुस उनसे मिलने की इच्छा रखता है उतना ही वे भी उससे मिलना चाहते हैं। पौलुस के लिए यह एक शुभ समाचार था। वह यह जानकर प्रोत्साहित हुआ था कि थिस्सलुनीके वासी अपने विश्वास से हटे नहीं थे। पद 8 में वह कहता है, ''क्योंकि अब यदि तुम प्रभु में स्थिर रहो तो हम जीवित हैं।''

यह समाचार कि पौलुस ने थिस्सलुनीके में जो परिश्रम किया था वह बेकार नहीं गया था, इससे उसे प्रोत्साहन और जोश मिला था। हम सभी को अपनी सेवकाई में इसकी ज़रूरत है। हममें से प्रत्येक के लिए परमेश्वर खिड़की को खोलकर हमें अपने परिश्रम के फल को देखने की अनुमति देगा। इससे हमें बने रहने की ताज़ा शक्ति मिलती है। तीमुथियुस ने जो समाचार उसे दिया था उससे पौलुस का हृदय परमेश्वर के प्रति धन्यवाद से उमड़ रहा था। थिस्सलुनीकियों से वह पूछता है, ''और जैसा आनन्द हमें तुम्हारे कारण अपने परमेश्वर के सामने है, उसके बदले तुम्हारे विषय में हम किस रीति से परमेश्वर का धन्यवाद करें?'' इसने पौलुस को और भी अधिक प्रार्थना करने को प्रोत्साहित किया कि उसे उनकी सेवा करने का फिर से अवसर मिले (पद 10)।

पौलुस ने इस अध्याय का समापन थिस्सलुनीकेवासियों के लिए तीन प्रार्थनाओं को करने के द्वारा किया। उसकी पहली प्रार्थना थी कि परमेश्वर उनसे मिलने के उसके मार्ग को साफ करे (पद11)। वह उनके साथ रहकर उनकी सेवा करना चाहता था तथा उन्हें व्यक्तिगत रूप से प्रोत्साहित करना चाहता था।

पौलुस की दूसरी प्रार्थना थी कि परमेश्वर उनके प्रेम में वृद्धि करे और वह उनमें से उमड़ने पाए। किसी चीज़ के उमड़ने के लिए ज़रूरी है कि पहले उससे भरा जाए। परमेश्वर का प्रेम आप में तब तक नहीं उमड़ सकता जब तक कि

आप स्वयं उस प्रेम को न जानते हो। आप शून्य में से किसी को कुछ नहीं दे सकते। परमेश्वर हमें अपने प्रेम से भरे जाने के लिए बुला रहा है कि आप न केवल उससे भरे जाएं बल्कि वह आपमें से उमड़ने भी पाए।

जिस पहले स्थान से इस प्रेम को उमड़ना है वह परमेश्वर का परिवार है। कितने ही लोग परमेश्वर से इस कारण फिर गए हैं, क्योंकि उन्होंने ऐसे मसीहियों को देखा है जिनमें एक दूसरे के लिए प्रेम नहीं उमड़ता। यदि हम सर्वप्रथम एक दूसरे से प्रेम न करें तो हम अपने आस-पास के संसार के लिए गवाह कैसे बन सकते हैं? हम अविश्वासी को परमेश्वर के प्रेम के बारे में कैसे बता सकते हैं। यदि हम इसे सर्वप्रथम अपने हृदय में मसीह में अपने भाई-बहनों के लिए नहीं पाते?

थिस्सलुनीकेवासियों के परमेश्वर के प्रेम से भरे जाने और एक दूसरे के लिए उसके उमड़ने के पश्चात् अगला चरण किसी और के साथ इसे बांटने का था। इसमें अविश्वासी और कलीसिया के बाहर के लोग आते थे। वे इस प्रेम को केवल तब ही बांट सकते थे, यदि उन्होंने सर्वप्रथम स्वयं इसका अनुभव किया था, और वे इसे एक दूसरे को दिखा रहे थे। ऐसा होने पर वे अपने आस-पास के लोगों के प्रति भी उमड़ सकते हैं।

थिस्सलुनीकेवासियों के लिए पौलुस की तीसरी प्रार्थना यह थी कि परमेश्वर उनके हृदयों को इतना दृढ़ करे कि वे निदोर्ष व पवित्र बनें। ध्यान दें कि वह यह प्रार्थना नहीं करता कि परीक्षाएं चली जाएं। पौलुस ने थिस्सलुनीकेवासियों को बताया कि उन्हें परीक्षाओं का सामना करना था। उसने आशा की थी कि परमेश्वर उन्हें उनकी परीक्षाओं के द्वारा निर्दोष व पवित्र बनाएगा। ये परीक्षाएं एक तेज़ भट्ठी के समान सारी अशुद्धताओं को जला देगी और उन्हें प्रभु के निकट लेकर आएगी। हम प्राय: अपनी परीक्षाओं और संघर्षों से भागने का प्रयास करते हैं, बजाय इसके कि परमेश्वर को उनका प्रयोग करने के द्वारा हमें शुद्ध करने की अनुमति दें। इस जीवन में हमें कठिनाइयों का सामना करना होगा। परमेश्वर जिन कठिनाइयों को हमारे जीवन में आने देता है प्राय: हम उनके द्वारा शुद्ध किये जाते हैं।

इस विभाग में हम देखते हैं कि थिस्सलुनीकेवासियों के लिए सुसमाचार हेतु दुख उठाना आवश्यक था। पौलुस ने प्रार्थना की कि परमेश्वर उनके दुखों के बीच में भी उन्हें एक दूसरे के लिए व अपने समुदाय के लिए उमड़ने वाले प्रेम से भरे। उसने स्मरण कराया कि परमेश्वर उनकी परीक्षाओं का प्रयोग उन्हें शुद्ध करने में तथा उन्हें अपने निकट लाने के लिए करेगा। इन परीक्षाओं के द्वारा परमेश्वर थिस्सलुनीके की कलीसिया को मज़बूत कर

रहा था, और वे अपने आस–पास के क्षेत्र के अन्य विश्वासियों के लिए एक सामर्थशाली आदर्श बन गए थे।

विचार करने के लिए

- थिस्सलुनीकेवासियों के लिए पौलुस की चिन्ता के बारे में यह परिच्छेद हमें क्या बताता है?
- मसीह की देह में एक दूसरे को सहारा और समर्थन देने के बारे में क्या सीखते हैं? क्या आपको किसी प्रोत्साहन देनेवाले की ज़रूरत है?
- क्या मसीहियों को इस जीवन में दुख उठाना है? सताव हममें किस चीज़ को पूरा करता है?
- परमेश्वर हमारी परीक्षाओं का प्रयोग हमें शुद्ध करने के लिए करता है। क्या आपने कभी परमेश्वर को शुद्ध करनेवाली आग को दूर करने के लिए कहा है?
- यदि हम परमेश्वर के प्रेम को दूसरों के साथ बांटना चाहते हैं तो इसके लिए हमारा उससे भरा जाना महत्वपूर्ण क्यों है? जिसका अनुभव हम स्वयं न कर रहे हों क्या हम उसके बारे में दूसरों को बता सकते हैं?
- यदि हम स्वयं मसीह की देह में एक दूसरे को प्रेम न करते हों तो क्या हम एक अविश्वासी के साथ मसीह के प्रेम को बांट सकते हैं? स्पष्ट करें।
- परमेश्वर ने आपको आकार देने व शुद्ध करने के लिए आपके जीवन में परीक्षाओं और दुखों से आपको क्या शिक्षा मिला?

प्रार्थना के लिए:

- क्या आप ठीक इसी समय किसी विशिष्ट समस्या का सामना कर रहे हैं? परमेश्वर से कहें कि वह इससे आपको सिखाए और इसके द्वारा आपको शुद्ध करे। परमेश्वर के नियंत्रण में होने के लिए उसे धन्यवाद दें।
- परमेश्वर से कहें कि वह आपके आस–पास की मसीह की देह की आवश्यकताओं के लिए आपकी आंखों को खोले। उससे कहें कि वह आप पर ऐसे व्यावहारिक मार्गों को प्रगट करे जिसके द्वारा आप अपने आस–पास के लोगों में मसीह के प्रेम को बांट सकते हैं।
- क्या आपके आस–पास ऐसे कुछ लोग हैं, जो संघर्ष कर रहे हैं या परीक्षाओं में से होकर जा रहे हैं? परमेश्वर से कहें कि वह इसके द्वारा उन पर प्रगट करे कि आप किस तरह से उनके लिए प्रोत्साहन और समर्थन का उपकरण बन सकते हैं।

◀▶

5

अधिक और अधिक

पढ़ें 1 थिस्सलुनीकियों 4:1-12

इस पत्री में थिस्सलुनीकेवासियों के लिए अच्छा कहने को पौलुस के पास बहुत कुछ है। इसका अर्थ यह नहीं कि उनमें कोई कमी नहीं थी। अपने आस-पास के लोगों के सम्मुख उनके उदाहरण बनने पर पौलुस ने उन्हें प्रभु में बढ़ते रहने को प्रोत्साहित किया। हम सभी परमेश्वर के साथ अपने संबन्धों में एक स्थान पर पहुंचकर बढ़ना बंद कर देते हैं। जहां हम होते हैं हमें उसमें ही संतोष होता है। हमारे लिए इस परिच्छेद में चुनौती बढ़ने में न रुकने की है। परमेश्वर के बारे में अनुभव करने को बहुत कुछ है। पौलुस की चुनौती परमेश्वर के बारे में अधिक अनुभव करने और बढ़ने की है।

पद 1 में हम देखते हैं कि पौलुस ने इस बारे में पहले से ही निर्देश दिया है कि परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए कैसे जीवन जीना है। जिस निर्देश को अभ्यास में नहीं लाया जाता उसका बहुत कम ही प्रयोग होता है। इस कलीसिया ने न केवल पौलुस के निर्देश को सुना, परन्तु जो कुछ उन्हें सिखाया गया था वे उस पर अभ्यास भी कर रहे थे (पद 1)। पौलुस निश्चय ही इसके लिए धन्यवादी था।

पौलुस अब, उन्हें उन निर्देशों पर अधिक से अधिक चलने को उत्साहित करता है जो उसने उन्हें दिये थे। उन्हें परमेश्वर और उसके उद्देश्यों को जानना था। हम बहुत कम में भी संतुष्ट हो सकते हैं। क्या आप परमेश्वर पर भरोसा करते रहे हैं? उस पर और अधिक भरोसा करें। क्या आपने देखा कि परमेश्वर आपका प्रयोग करता है? उससे और अधिक की मांग करें। अपने जीवन में क्या आपने किसी विशिष्ट पाप पर जय पाई? उससे इस तरह की और अधिक विजयों के लिए कहें। कलीसिया के लिए पौलुस का प्रोत्साहन यह था कि जो कुछ वे कर रहे थे उसे करते रहें, परन्तु उसे एक बड़े माप में करें।

पद 2 में पौलुस विश्वासियों को बताता है कि उन्हें इस कारण उसके निर्देशों में बने रहना था क्योंकि इन निर्देशों को मसीह के अधिकार में होकर दिया गया

था। पौलुस ने उन्हें केवल अपनी इच्छा से ही नहीं सिखाया था। यह परमेश्वर की उनके लिए योजना थी। उन्हें उसके द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन करना था, क्योंकि वे स्वयं प्रभु यीशु की ओर से आए थे। विशिष्ट रूप में, पौलुस कलीसिया को तीन प्रमुख क्षेत्रों के बारे में बताता है।

यौन अनैतिकता

पद 3 में पौलुस ने थिस्सलुनीकेवासियों को स्मरण कराया कि परमेश्वर की उनके लिए यह इच्छा है कि वे पवित्र बने रहें। पवित्र शब्द एक पवित्र या धार्मिक उद्देश्य के लिए अलग किये जाने के लिए प्रयुक्त होता है। परमेश्वर उन्हें एक ओर रखकर अपने लिए प्रयोग करना चाहता था। यह उसका उद्देश्य था कि वे पवित्र और शुद्ध बनें।

पौलुस आगे कहता है कि चूंकि यह परमेश्वर की इच्छा है कि वे पवित्र जीवन जीने के लिए अलग किये जाएं, इसके लिए उन्हें सभी यौन अनैतिकता अथवा भ्रष्टता से बचने की ज़रूरत है। यौन भ्रष्टता के द्वारा वे स्वयं को प्रभु के सम्मुख दूषित करते हैं। जिस संसार में थिस्सलुनीकेवासी रहते थे वह हमारे संसार के समान ही था, जो कि यौन भ्रष्टता से भरपूर था। परमेश्वर उन्हें कुछ भिन्न होने के लिए बुला रहा था।

हमारे दिनों का प्रलोभन भी बहुत वास्तविक है। हम अपने चारों ओर विज्ञापनों फिल्मों और पुस्तकों में भ्रष्टता को देखते हैं। यह हमारे कार्य स्थल के वार्तालाप में भी भरपूरी से व्याप्त है। इस संसार का नैतिक रूप से स्वीकृत मानदण्ड परमेश्वर के मानदण्ड से बिल्कुल भिन्न है।

पद 4 में पौलुस स्पष्ट करता है कि यदि हम यौन भ्रष्टता से बचना चाहते हैं तो इसके लिए हमें अपनी देहों पर नियंत्रण करना सीखना होगा। परमेश्वर के आत्मा के फलों में संयम बिना किसी कारण से नहीं है। क्या आपने यौन पापों से कभी संघर्ष किया है? आपको संयम को इस फल के प्रगटीकरण के लिए प्रार्थना करने की ज़रूरत है। परीक्षा की स्थिति में संयम नहीं रह पाएगा। संयम या तो अपनी आँखें बन्द कर लेगा या अपना सिर घुमा लेगा। कई बार लोगों को लगता है कि परमेश्वर उनसे इच्छा को छीन रहा है और वे पाप करना चाहते भी नहीं है। हमेशा ऐसा नहीं होता है। ऐसे भी समय होंगे जब हमें पाप के साथ गहन संघर्ष करना पड़ेगा। हमें परमेश्वर की ज़रूरत होगी कि वह हमारी देहों को लड़ने व नियंत्रण करने के योग्य करे जिससे हम भ्रष्टता के पाप में न पड़े।

थिस्सलुनीके में कुछ ऐसे अन्यजाति थे जो संयम को व्यवहार में नहीं लाते थे। इन लोगों ने स्वयं को लालसा और आवेग के प्रति सौंप दिया था। इन्होंने

अपनी शारीरिक भूख को अपने कार्यों पर नियंत्रण करने की शक्ति दे दी थी। वे शरीर की इच्छा को पूरा करने में लगे रहते थे। उनपर भक्ति या नैतिकता कोई प्रभुत्व नहीं था। वे अपनी शारीरिक भूख के पीछे-पीछे चले। (पद 5) हमारे दिनों में भी इसी तरह के लोग पाए जाते हैं।

प्रेरित ने पद 6 में अपने पाठकों को स्मरण कराया कि यौन पाप करने पर वे न केवल स्वयं को दूषित करते हैं बल्कि उसे भी जिसके साथ वे इस पाप को करते हैं। उसने उन्हें स्मरण कराया कि यौन भ्रष्टता करनेवालों को परमेश्वर दण्ड देगा। परमेश्वर ने उन्हें एक पवित्र जीवन जीने के लिए बुलाया है (पद 7)। यौन भ्रष्टता परमेश्वर की पवित्रता की मांग की परस्पर विरोधी है।

विश्वासी होने के कारण, थिस्सलुनीकेवासी परमेश्वर के आत्मा के मन्दिर थे। इन मन्दिरों को दूषित करने का अर्थ पवित्र आत्मा के विरोध में पाप करना था। परमेश्वर के मंदिर का प्रयोग यौन भ्रष्टता के लिए करना कितना भयानक होगा। पौलुस विश्वासियों को परमेश्वर के मंदिर शुद्ध और पवित्र बनाए रखने की चुनौती देता है।

पौलुस थिस्सलुनीके के विश्वासियों को मसीह के सम्मुख शुद्ध और निर्दोष प्रस्तुत करना चाहता था। इसी कारण वह उन्हें यौन भ्रष्टता के सभी रूपों से स्वतंत्र होकर शुद्ध और पवित्र जीवन जीने को प्रेरित करता है।

भाईचारे का प्रेम

पौलुस जिस दूसरे क्षेत्र को संबोधित करना चाहता था वह भाईचारे का प्रेम का था। पद 9 में पौलुस जान गया था कि थिस्सलुनीकेवासी पहले से ही इसे कर रहे थे। परमेश्वर उन्हें एक दूसरे से प्रेम करना सिखा रहा था। उनका प्रेम उनकी कलीसिया से बाहर मकिदुनिया क्षेत्र के भाइयों तक फैल गया था। पौलुस थिस्सलुनीके वासियों तक फैल गया था। पौलुस थिस्सलुनीकेवासियों स्मरण नहीं कराता कि उनमें इसकी कमी थी लेकिन इसलिए क्योंकि यह चाहता था कि वे इसमें और भी अधिक से अधिक बढ़ें।

हमें यह समझने की ज़रूरत है कि यहां पौलुस ने जिस प्रेम के बारे में बताया उसे बढ़ने और विकसित होने की ज़रूरत थी। प्राय: हम सभी परमेश्वर की ओर से हमारे बदले जाने की प्रतीक्षा करते हैं, परन्तु हम स्वयं इसके लिए कदम नहीं उठाते। हम चाहते हैं कि परमेश्वर हमें अधिक प्रेम दे लेकिन हम यह नहीं जानते कि उसने जो हमें दिया है उसी में हम स्वयं को विश्वायोग्य प्रमाणित करें ताकि वह हमें अधिक सौंपे। पौलुस थिस्सलुनीकेवासियों को प्रेम के उमड़ने की अधिक से अधिक चुनौतियों की ओर देखने को कहता है।

थिस्सलुनीके की कलीसिया में अच्छी चीज़ें हो रही थीं लेकिन पौलुस उनसे महान चीज़ों को करने के लिए कहता है। पौलुस उनसे पवित्र संतुष्टि रखने को कहता है। वह हमसे हमारे विश्वास को फैलाने में और अप्राधिकृत क्षेत्र में प्रवेश करने को कहता है। मसीही जीवन की एक सबसे शर्मनाक बात यह है कि हम कभी भी अपनी पूर्ण संभावना नहीं तक पहुंचते और उस चीज़ से कुछ आगे निर्धारण नहीं करते जो परमेश्वर ने हमारे लिए रखी होती है। पौलुस थिस्सलुनीकेवासियों को सीमाओं को फैलाने और भाइचारे के प्रेम में अधिक से अधिक बढ़ने की चुनौती देता है।

शांत जीवन

इस विभाग में पौलुस इस अंतिम विषय को कलीसिया की दृष्टि में लाता है। पद 11 में वह विश्वासियों को एक शांत जीवन का नेतृत्व करने की इच्छा को अपनाने को कहता है।

इस शांत जीवन को उन्हें अपने काम काज और हाथ से कमाने का प्रयत्न करने के द्वारा प्रगट करना था।

पद 11 में इस वाक्यांश पर ध्यान दें ''प्रयत्न करें।'' अन्य शब्दों में शांत जीवन जीने का यह विषय अनुशासित रूप से केन्द्रित होने के साथ-साथ उनके जीवन में प्राथमिक स्थान पर भी होना था।

पौलुस द्वारा इस शांत जीवन के लिए ज़रूरी था कि हर विश्वासी अपना अपना काम काज करे जिस समय पौलुस ने थिस्सलुनीके वासियों को यह बताया कि अपना अपना काम काज करे, वह उनसे यह कह रहा था कि अपने परिवारों की ज़रूरतों को पूरा करते हुए वे स्वयं अपनी आवश्कयताओं की चिंता करें। उन्हें ऐसा इसलिए करना ताकि उन्हें अपने प्रतिदिन के जीवन में बाहर बलों से आदर मिले। थिस्सलुनीकेवासी प्रभु की चीज़ों को लेकर बहुत उत्तेजित थे। वे प्रभु के किसी भी समय में आने की आशा कर रहे थे। कुछ के द्वारा यह विश्वास करना अधिक संभव हो सकता है कि परमेश्वर उनके जीवन काल में ही आ रहा था। इसी कारण उन्होंने अपने कार्य और अपने परिवारों को उपेक्षा कर प्रभु की सेवा करना आरम्भ कर दिया था। पौलुस ने उनसे कहा कि प्रभु के आगमन की प्रतीक्षा करते हुए भी उन्हें अपने कार्य को जारी रखना था। (पद 11) उन्हें किसी पर निर्भर नहीं होना था।

हमें अपने जीवनों को इस तरह से जीना है कि यदि हम यह जानते हों कि यीशु कल आनेवाला है, तौभी कुछ नहीं बदलेगा। हम जो करते हैं हमें उसे करना है क्योंकि हम यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने इसे करने को हमें बुलाया है।

आप एक फैक्टरी में इसलिए कार्य करते हैं क्योंकि परमेश्वर ने आपको वहां रखा है। आप स्कूल इसलिए जा रहे हैं क्योंकि स्वर्गीय पिता की आपके लिए यही इच्छा है। आप अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ही किसी भी क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं क्योंकि परमेश्वर आपसे ऐसा ही करने की आशा करता है। उसकी वापसी पर आप वह करते रहना चाहेंगे जिसके लिए उसने आपको बुलाया है। थिस्सलुनीके के कुछ विश्वासी अपने इस विश्वास के कारण कि यीशु शीघ्र ही आनेवाला है अपने उत्तरदायित्वों की उपेक्षा कर रहे थे। उनके इस कार्य ने दूसरों पर इस दायित्व के बोझ को डाल दिया था। अपने परिवारों के लिए चूंकि वे कोई कार्य नहीं कर रहे थे। इस कारण उनके परिवारों को दुख उठाना पड़ रहा था। पौलुस ने उन्हें उनके परिवारों की चिन्ता करने को प्रोत्साहित किया। प्रभु के लिए उनका प्रेम और उसके आने की इच्छा करने का अर्थ यह नहीं था कि वे अपने परिवारों की आवश्यकताओं की उपेक्षा करें। उन्हें इस तरह से अपने कामकाज को करना था कि वे अपने कामकाज की चिन्ता करने के साथ-साथ उनकी आवश्यकताओं की भी पूर्ति करें जो उनके अधीन हैं।

पौलुस थिस्सलुनीकेवासियों को परमेश्वर के साथ अपने संबन्ध में बढ़ने, यौन भ्रष्टता की परीक्षा का सामना करने, भाईचारे के प्रेम में बढ़ने और अपने परिवारों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपने हाथों से कामकाज करने की चुनौती देता है। ऐसा करते हुए वे अपने समाज में आदर पाने के साथ-साथ परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले भी होंगे।

विचार करने के लिए:

- परमेश्वर आप से जिस चीज़ की अपेक्षा करता है क्या आप उससे कम में संतुष्ट होते रहे हैं? स्पष्ट करें।
- आपके समाज में यौन भ्रष्टता की परीक्षा कितनी मज़बूत है? यह कलीसिया को कैसे प्रभावित करती है?
- संयम क्या है? आपको यह जानकर कितनी सांत्वना मिलती है कि यह आत्मा का एक फल है? यह हमें पाप में गिरने से कैसे बचाकर रखता है?
- यदि आप यह जान लें कि यीशु कल आनेवाला है तो आप में क्या परिवर्तन होगा?
- यह परिच्छेद हमें हमारे परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने के बारे में क्या बताता है? यह हमें परमेश्वर द्वारा परिवारों को दिये जाने वाले महत्त्व के बारे में क्या बताता है? क्या मसीही सेवा में अपने परिवारों की उपेक्षा करना संभव है?

प्रार्थना के लिए :

- प्रभु से कहें कि वह आपको अपने विश्वास और सेवा में अधिक से अधिक बढ़ाए।
- प्रभु से कहें कि आपके आस-पास की परीक्षाओं पर जय पाने के लिए वह आपको अधिक से अधिक संयम का फल दे।
- प्रभु से कहें कि आपके आस-पास के लोगों से प्रेम करने को वह आपकी आंखों को खोले।
- प्रभु से कहें कि जिन चीज़ों को करने के लिए उसने आपको बुलाया है उनके प्रति आपको विश्वासयोग्य बनाए रखे।
- प्रभु से उन समयों के लिए क्षमा मांगें जब आप प्रभु की अपेक्षा से कम पर संतुष्ट रहते थे।
- अपने परिवार के लिए प्रभु को धन्यवाद दें। उससे कहें कि उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने में वह आपकी सहायता करे।

◀▶

6

पकड़ा जाना

पढ़ें 1 थिस्सलुनीकियों 4:13–18

थिस्सलुनीके की कलीसिया को मसीह की वापसी के संबन्ध में कुछ निर्देशों की ज़रूरत थी। जैसा हम पहले भी देख चुके हैं, ये विश्वासी अपने जीवनकाल में ही मसीह की वापसी की आशा कर रहे थे। बहुतों ने उसकी वापसी को लेकर प्रश्न किये थे। इस विभाग में, पौलुस उनके कुछ प्रश्नों के जवाब देता है।

जिस पहले प्रश्न के संबन्ध में पौलुस बोला वह उन मसीहियों के संबन्ध में था जिनकी मृत्यु हो चुकी थी। पद 13 में पौलुस ने बताया कि उन्हें अपने प्रियजन की मृत्यु होने पर अन्य सांसारिक लोगों के समान शोकित होने की ज़रूरत नहीं है। जिस तरह से यीशु मृतकों में से जी उठा था उसी तरह से परमेश्वर उनके संबन्धियों को भी जिलाएगा (पद 14)। अपनी मृत्यु के द्वारा यीशु ने पापों के दाम को चुकाकर कब्र की सामर्थ को तोड़ा था। प्रभु यीशु से संबन्ध रखनेवालों के लिए मृत्यु कोई अन्त नहीं है।

पद 15–16 में पौलुस आगे कहता है कि यीशु की वापसी का दिन आ रहा था। वह एक तीव्र ललकार के साथ आएगा। यह मिलिट्री के कमांडर के चित्र को चित्रित करता है जिसकी सेना उसकी आज्ञा की प्रतीक्षा में है। एक ललकार के साथ, संसार के भाग्य पर मुहर कर दी जाएगी। एक शब्द से ही पृथ्वी पर स्वर्ग की सेना फैल जाएगी। उस ललकार (आज्ञा) के दिये जाने का दिन आ रहा है। कुछ के लिए यह विजय के चिह्न के रूप में होगा और कुछ के लिए इसका अर्थ पराजय के रूप में होगा।

पौलुस ने विश्वासियों को यह भी बताया कि प्रभु प्रधान दूत के शब्द के साथ लौटेगा (पद 16)। प्रधान दूत स्वर्ग का सबसे ऊंचे स्तर का दूत है। यहूदा 1:9 से हम जान पाते हैं कि इस प्रधान दूत का नाम मीकाईल है। पवित्रशास्त्र में प्रधान दूत मीकाईल के बारे में कई संदर्भ दिये गए हैं। प्रकाशितवाक्य 12:7–9 से हम जान पाते हैं कि मीकाईल ने ही शैतान को स्वर्ग से बाहर निकाला था:

फिर स्वर्ग पर लड़ाई हुई, मीकाईल और उसके स्वर्गदूत अजगर से लड़ने को निकले और अजगर और उसके दूत उस से लड़े। परन्तु प्रबल न हुए, और स्वर्ग में उसके लिए जगह न रही। और वह बड़ा अजगर अर्थात् वही पुराना सांप जो इबलीस और शैतान कहलाता है, और सारे संसार का भरमाने वाला है, पृथ्वी पर गिरा दिया गया; और उसके दूत उसके साथ गिरा दिये गए।''

दानिय्येल की पुस्तक में भी हम मीकाईल से मिलते हैं। वहां वह फारस क्षेत्र पर शासन करनेवाली दुष्ट सेना को दूर हटाने के लिए लड़ता रहा। (दानि. 10:13)। दानिय्येल 12:1 में उसे परमेश्वर के लोगों के रक्षक के रूप में बताया गया है।

हमें यहां यह जानने की ज़रूरत है कि प्रभु यीशु प्रधान दूत मीकाईल और उसकी सेना के साथ वापस आएगा। वे दुष्टता की सेना के विरुद्ध युद्ध करने को आएंगे और उनका अन्त कर डालेंगे।

पद 16 में पौलुस ने थिस्सलुनीकेवासियों को यह भी बताया कि प्रभु तुरही की ध्वनि के साथ आएगा। तुरही का प्रयोग युद्ध की घोषणा करने के लिए किया जाता था। इसका प्रयोग एक महान राजा के आगमन की घोषणा के लिए भी किया जाता था। यीशु ही वह महान राजा है जो युद्ध के लिए आ रहा है।

प्रभु यीशु के आने पर मृतक विश्वासी यीशु से हवा में मिलने को जी उठेंगे (पद 17)। इस सच्चाई को मानने में कोई गलती नहीं होगी कि यह वास्तव में यीशु ही है। इसके स्पष्ट चिह्न होंगे। इन सब चीज़ों के होने पर ही वे जो जीवित रहेंगे प्रभु की उपस्थिति में बादलों पर उठा लिये जाएंगे। विश्वासी को प्रभु के साथ सदा तक रहने को उठा लिया जाएगा।

पौलुस थिस्सलुनीकेवासियों को इस शिक्षा से एक दूसरे को प्रोत्साहित करने की चुनौती देता है। (पद 18) विश्वासी होने के कारण वे गंभीर दुखों का सामना कर रहे थे। कुछ प्रभु यीशु के प्रति अपने समर्पण के कारण मर भी गए थे। उनकी मृत्यु अन्त नहीं था। वह दिन आ रहा था जब वे प्राण प्रभु की पुकार को सुनकर हवा में प्रभु से मिलने को जी उठेंगे। इसी कारण उन्हें उनके समान शोक करने की आवश्यकता नहीं थी जो अपने पापों में भटके हुए थे। मृत्यु उनके लिए अन्त नहीं थी। यह उनके प्रभु और उद्धारकर्त्ता की उपस्थिति में केवल एक अनन्तकाल का आरम्भ ही था।

अपने विश्वास के लिए दुख उसने पर यह स्मारिका वास्तव में उनके लिए प्रोत्साहन देनेवाली रही होगी। इस पृथ्वी पर उनके लिए जीवन सरल नहीं था। परन्तु अनन्तकाल में प्रभु परमेश्वर की उपस्थिति में उनके लिए एक उज्ज्वल

आशा थी। अपने प्रभु के साथ अनन्तता के आश्वासन ने उन्हें इस पृथ्वी पर उनकी परीक्षाओं का सामना करने का साहस दिया होगा।

विचार करने के लिए:

- मसीह में हमारी आशा हमारे मृत्यु को देखने में कैसे परिवर्तन लाती है?
- आप इस बात से कैसे आश्वस्त हो सकते हैं कि आप प्रभु से मिलने को तैयार हैं?
- प्रभु की वापसी पर विश्वासियों का क्या होगा?
- मीकाईल कौन है? उसकी क्या भूमिका है?
- विश्वासी की भावी आशा के बारे में पौलुस की शिक्षा से आपको क्या विशिष्ट प्रोत्साहन मिलता है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु को कब्र की सामर्थ को तोड़ने के लिए धन्यवाद दें
- प्रभु द्वारा हमारे लिए वापस आने की प्रतिज्ञा किये जाने को धन्यवाद दें।
- क्या आप किसी ऐसे को जानते हैं जो अब तक प्रभु की वापसी के लिए तैयार नहीं है? कुछ समय उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करें।
- परमेश्वर से कहें कि वह उसके साथ हमेशा तक अनन्तता में रहने की आशा में रखने के लिए आपकी सहायता करे।

◀▶

7

सदैव तैयार रहना

पढ़ें 1थिस्सलुनीकियों 5:1–11

पौलुस प्रभु की वापसी के बारे में बोल रहा है। उसने बताया कि प्रभु अपने लोगों के लिए वापस आएगा और वे उससे हवा में मिलेंगे। उन्हें इस आशा से एक दूसरे को प्रोत्साहित करना था। उस दिन प्रभु के लोग जो मर चुके हैं वे पहले जी उठेंगे। तब वे जो जीवित हैं, प्रभु से मिलेंगे। वे सदा तक प्रभु के साथ रहेंगे।

इन सभी विचार–विमर्शों से यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि यीशु की वापसी कब होगी? पौलुस ने थिस्सलुनीकेवासियों को बताया कि यीशु रात्रि में आने वाले एक चोर के समान लौटेगा (पद 2)। कोई भी चोर के आने के बारे में नहीं जानता। हमारे बहुत कम अपेक्षा करने पर ही चोर आता है। इसी तरह से प्रभु का आना भी होगा। वह किसी भी क्षण आ सकता है। प्रभु के पास इस प्रश्न का कोई जवाब नहीं था कि प्रभु का आगमन कब होगा। उसने थिस्सलुनीकेवासियों को केवल सभी समयों में तैयार रहने को कहा।

यद्यपि यीशु ने हमें बताया है कि वह वापस आएगा, तौभी ऐसे बहुत से लोग हैं जो तैयार नहीं होंगे। पौलुस ने कहा कि अन्तिम दिनों में लोग शांति और सुरक्षा के बारे में बोलेंगे, लेकिन उनपर बड़ा विनाश आएगा। प्रभु की वापसी पर लोग शांति और सुरक्षा के एक झूठे भाव के साथ रह रहे होंगे। उनका भरोसा परमेश्वर पर नहीं बल्कि पृथ्वी पर राष्ट्रों के बीच शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए स्वयं की योग्यता पर ही होगा। उनकी सुरक्षा के सभी परिमापों और शांति की बातचीत का कोई लाभ न होगा। प्रभु का दिन उन पर अचानक से उस तरह से आ पड़ेगा जिस तरह से एक गर्भ धारण करनेवाली स्त्री को अचानक से जच्चा की पीड़ा उठने लगती है। अपनी बातचीत में वे सबसे महत्वपूर्ण उपाय – परमेश्वर की शांति को भूल जाएंगे। उस दिन वे उस पवित्र परमेश्वर के सम्मुख खड़े होंगे जिसके साथ उन्होंने कभी शांति नहीं बनाई थी। वह क्या ही भयंकर दिन होगा। परमेश्वर के साथ शांति न होने पर हमें सच्ची शांति नहीं मिल सकती।

कोई भी प्रभु यीशु के वापसी के दिन की भविष्यवाणी नहीं कर सकता। प्रत्येक पीढ़ी के लोगों ने अपने जीवनकाल में प्रभु के आने की आशा की है। सच्ची बात तो यह है कि हम इस बारे में नहीं जानते। परमेश्वर की सारणी हमारे अनुसार नहीं है। संसार के साथ अपने उद्देश्य को पूरा करने के बाद ही, वह आकर हमें अपने साथ ले जाएगा। कोई नहीं जानता कि ऐसा कब होगा, परन्तु हमें सभी समयों में तैयार रहना है।

पौलुस को इस बात का पूरा भरोसा था कि थिस्सलुनीकेवासी पाप के अंधकार में रहनेवालों के समान नहीं थे। प्रभु की वापसी के दिन पर ऐसा नहीं होगा कि थिस्सलुनीकेवासी तैयार न हों। वे ज्योति में रह रहे थे। उसकी वापसी पर उन्हें किसी भी बात से लज्जित होना न पड़ेगा।

पद 6 में पौलुस ने थिस्सलुनीके के विश्वासियों को उनके समान न होने की चुनौती दी जो सोते हैं। चोर प्रायः हमारे सो जाने के बाद ही आता है। पौलुस ने थिस्सलुनीकेवासियों को बताया कि ऐसे बहुत से लोग थे जो आत्मिक रूप से सोए हुए थे। वे प्रभु की सेवा नहीं कर रहे थे। वे परमेश्वर के साथ अपने संबन्ध में नहीं बढ़ रहे थे। वे अपने जीवनों में पाप से नहीं निपट रहे थे। वे परमेश्वर द्वारा उन्हें दिए गए दानों का प्रयोग नहीं कर रहे थे। वे आत्मिक रूप में आलसी थे। प्रभु की वापसी के दिन पर इन लोगों के पास परमेश्वर को देने के लिए कोई जवाब नहीं होगा। वे अपने जीवन को व्यर्थ गंवा रहे थे। वे लाभ न पाने वाले सेवक थे।

इसे समझा जा सकता है कि यह केवल अविश्वासी ही नहीं है जो प्रभु की वापसी के लिए तैयार नहीं है। मसीही भी प्रभु की वापसी के लिए तैयार नहीं कर रहे हैं और उसके द्वारा दिए गए दानों का प्रयोग नहीं कर रहे हैं तो आप उसका सामना करने को तैयार नहीं हैं। यदि पाप ने आप पर विजय पाई है तो यदि आप जाने के लिए तैयार होना चाहते हैं आपको उस पाप से अलग होना होगा।

प्रभु की वापसी के लिए तैयार रहने को उपयुक्त प्रयासों की ज़रूरत होगी। पौलुस ने थिस्सलुनीकेवासियों को बताया कि उन्हें सावधान रहने और संयमित रहने की ज़रूरत होगी (पद 6)। सावधान रहने से अभिप्राय है– अपने चारों ओर के प्रभाव के प्रति आंखें खुली रखना, अपनी आंखों और मन के चारों ओर एक सुरक्षा को बनाए रखना और शत्रु की चालबाज़ियों और अपनी स्वयं की देह की कमज़ोरियों से सजग रहना सुरक्षाकर्मी आनेवाले खतरे को देखकर आवश्यक कदम उठाता है। यदि हम प्रभु यीशु की वापसी के लिए तैयार होने जा रहे हैं तो हमें कभी भी अपने सुरक्षाकर्मी को विश्राम करने नहीं देना है। हमें अपनी आत्मिक चलन में निष्ठा रखते हुए शत्रु के सभी प्रयासों के प्रति सतर्क बने रहना है।

पौलुस ने विश्वासियों को यह भी बताया कि उन्हें संयमित होने की, ज़रूरत है। संयम आत्मा का एक फल है। बहुत से लोग हैं जो यह जानते हैं कि उन्हें क्या करना है, लेकिन वे कभी भी इसे करने योग्य प्रतीत नहीं होते। संयम सही कार्य करनेवाली सामग्री को उपलब्ध कराता है। आत्मिक सतर्कता ही पर्याप्त नहीं है, हमें आज्ञा पालन करने की भी ज़रूरत है। इसके लिए संयम और अनुशासन का होना ज़रूरी है। इसका अभिप्राय कठिन श्रम और प्रयास से है। इसके लिए ज़रूरी है कि हम सही काम करने के लिए स्वयं का इन्कार करें। हमारे सामने एक युद्ध है। सिपाहियों के रूप में युद्ध का सामना करने और मसीह के सच्चे और पवित्र सिपाहियों के रूप में चलने के लिए हमें अपने शरीरों और मनों को अनुशासित करना ज़रूरी है।

यदि विश्वासी को मसीह की वापसी के लिए तैयार होना है तो उसे स्वयं को विश्वास के वस्त्रों से ढांकना है। (पद 8) विश्वास हमें परमेश्वर के सत्य का आश्वासन देता है। परीक्षाओं और तनाव के बीच दृढ़ बने रहने को यह हमें साहस और शक्ति देता है। जिस विश्वास के बारे में यीशु ने कहा वह एक विश्वासी को किसी भी कीमत पर आज्ञाकारी और विश्वासयोग्य बनाए रखता है। विश्वास परमेश्वर के वचन पर भरोसा करता तथा परमेश्वर द्वारा कही जानेवाली बातों पर विश्वास करता है। चीज़ों का कोई अर्थ न होने पर भी विश्वास भरोसा करता है। प्रभु के दिन के निकट आने पर विश्वासी के विश्वास की निश्चय ही जांच होगी। विश्वासी को ठोकर खिलाने के लिए शैतान अपने प्रयासों को बढ़ाएगा। प्रभु की वापसी की प्रतीक्षा करने पर विश्वास ही हमें मज़बूत बनाए रखेगा।

पौलुस ने थिस्सलुनीकेवासियों को बताया कि प्रभु की वापसी की प्रतीक्षा करते हुए उन्हें प्रेम को धारण करने की भी आवश्यकता होगी। प्रेम के बिना सेवा करके हम प्रभु को आदर नहीं दे सकते। प्रभु से प्रेम किये बिना हम उसे आदर नहीं दे सकते। हमारे सभी कार्य और व्यवहार प्रेम द्वारा ही प्रेरित किये जाने चाहिए। परमेश्वर हृदयरहित आज्ञाकरिता से कहीं अधिक की खोज में है। कई तरह से हम प्रभु की सेवा कर सकते हैं। कुछ लोग परम्परा के अनुसार प्रभु की सेवा करते हैं। वे कलीसिया जाते या कलीसिया की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं क्योंकि इसी तरह से उनका पालन पोषण किया गया है। उनका परमशेवर के साथ कोई व्यक्तिगत संबन्ध नहीं होता, परन्तु वे विश्वासयोग्यता से कलीसिया में जाते तथा उदारता से देते हैं। अन्य भय और विवशता से सेवा करते हैं। इन लोगों को यह भय होता है कि यदि वे सेवा न करें या किसी चीज़ की आज्ञा न मानें तो उनके साथ कुछ बुरा हो सकता है। उन्हें परमेश्वर के न्याय का भय होता है और वे उसके समर्थन को पाने के लिए वे सब करते हैं जो वे कर सकते

हैं। अन्त में, कुछ ऐसे भी हैं जो इस कारण उसकी सेवा करते हैं क्योंकि वे उससे अपने पूरे मन से प्रेम करते हैं। इन विश्वासियों की सेवा प्रभु के सम्मुख सुगन्धदायक भेंट के रूप में पहुंचती है। वह इन भेटों से इसलिए प्रसन्न होता है क्योंकि इनमें उसके प्रति प्रेम और सच्ची आराधना का मिश्रण होता है। पौलुस थिस्सलुनीकेवासियों को यह बता रहा है कि यदि उन्हें प्रभु से प्रेम करने वाले लोग बनना है तो उनके कार्य और सेवा प्रेम से परिपूर्ण होने चाहिए। सेवा का केवल यही एक सच्चा प्रेरक है। परमेश्वर उन लोगों को खोज रहा है जो उससे अपने पूरे हृदय से प्रेम करते हैं।

पद 8 में पौलुस थिस्सलुनीकेवासियों को बता रहा है कि उन्हें उद्धार की आशा के टोप को पहनने की ज़रूरत है। आशा के बारे में बोलते हुए हम अपने इच्छापूर्ण विचारों के बारे में नहीं बोल रहे हैं। यहां बताई गई आशा एक दृढ़ अभिशस्ति है। पौलुस हमें बता रहा है कि यदि हम प्रभु के लिए तैयार होने जा रहे हैं तो हमें अपने उद्धार पर दृढ़ भरोसा करने की ज़रूरत है। अन्य शब्दों में, प्रभु यीशु ने जिस पर होकर हमारे उद्धार को संभव बनाया है हमें उस पर ठोस धारणा को बनाए रखने की ज़रूरत है। हमारी आशा और भरोसा उसमें और क्रूस पर उसके कार्य में ठोस रूप में रोपे जाएं।

परमेश्वर के लोगों को मसीह के कार्य द्वारा न्याय से उसके उद्धार को पाने के लिए उसके उनके लिए इसलिए मारे गए ताकि वे हमेशा के लिए उसकी उपस्थिति में रह सकें। (पद 10) वह अपने कार्य को उनमें पूरा करने के लिए विश्वासयोग्य बना रहेगा। यह आशा उनके द्वारा की गई किसी चीज़ पर आधारित नहीं है। यह उनके लिए प्रभु यीशु मसीह द्वारा किये गए निश्चित कार्य पर आधारित है। चूंकि उद्धार मसीह के निश्चित कार्य पर आधारित है, इस कारण यह असफल नहीं हो सकता। प्रभु की वापसी के लिए तैयार रहने को, एक व्यक्ति को यह आश्वासन रखने की ज़रूरत है कि उन्होंने अपने लिए ही मसीह पर भरोसा करने के साथ-साथ उसके कार्य को ग्रहण किया है।

यहां हमें एक और चीज़ को देखने की ज़रूरत है। पौलुस ने थिस्सलुनीकेवासियों को बताया कि प्रभु की वापसी के लिए तैयार होने को उन्हें एक दूसरे को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ एक दूसरे का निर्माण भी करना है। (पद 11) प्रभु की वापसी के लिए तैयार होने का कार्य ऐसा कोई विषय नहीं है जिससे हमें स्वयं करना है। परमेश्वर ने हमारी रचना इस तरह से की है कि हमें एक दूसरे की आवश्यकता है। हमें मसीह में अपने भाइयों और बहनों से प्रोत्साहन पाने की ज़रूरत है। हमें उनके दानों और प्रतिभाओं की ज़रूरत है। प्रभु की वापसी के लिए तैयार होने को उन्हें मेरी आशीष और प्रोत्साहन की भी ज़रूरत है।

इस विभाग में पौलुस थिस्सलुनीकेवासियों की यह समझने में सहायता करता है कि वे प्रभु की वापसी के लिए कैसे तैयार हो सकते हैं। वह उन्हें स्मरण कराता है कि उन्हें इस कारण से सावधान रहने की ज़रूरत होगी, क्योंकि वे विरोध का सामना करने की अपेक्षा कर सकते हैं। वह उन्हें संयमित होने, स्वयं को विश्वास, प्रेम और प्रभु के उद्धार के वस्त्रों से ढांकने की चुनौती देता है। प्रभु के दूसरे आगमन के लिए तैयार होने को उन्हें एक दूसरे को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ एक दूसरे के साथ खड़ा भी होना है।

विचार करने के लिए :

- क्या कोई भी वास्तव में यह जानता है कि प्रभु यीशु का आना कब होगा?
- पौलुस यहां सोए हुओं के बारे में बताता है। मसीही आत्मिक रूप से कैसे सो सकते हैं?
- संयम क्या है और हमें प्रभु की वापसी के लिए तैयार करने में इसकी क्या भूमिका है?
- विश्वास दृढ़ बने रहने और प्रभु की वापसी के लिए तैयार रहने को हमें कैसे प्रेरित करता है?
- प्रभु की वापसी के लिए तैयार होने के इस प्रयास में देह एक दूसरे के प्रति क्या भूमिका अदा करती है? परमेश्वर दूसरों को तैयार करने में आपका प्रयोग कैसे करना चाहता है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर से कहें कि वह आपको दिखाए कि आप आत्मिक रूप से कैसे सोए हुए हैं।
- उससे कहें कि वह आपको दिखाए कि आप अपने आस-पास के लोगों को मसीह की वापसी के लिए तैयार होने को कैसे प्रोत्साहित कर सकते हैं।
- प्रभु से कहें कि शत्रु के प्रहारों के प्रति वह आपको और भी सतर्क बनाए।

8

समापन टिप्पणियाँ

पढ़ें 1 थिस्सलुनीकियों 5:12-28

इस पत्र के इस अन्तिम विभाग में, पौलुस चुनौतियों की एक शृंखला को लाता है, जिसमें कई विषयों का स्पर्श किया गया है।

आत्मिक अगुवों के लिए आदर (पद 12-13)

पौलुस उन लोगों का आदर, करने की चुनौती के साथ आरम्भ करता है जो उनके बीच कठोर श्रम कर रहे थे, विशिष्ट रूप से उनके अत्मिक अगुवे। पद 12 में ध्यान दें कि ये अगुवे उन्हें शिक्षा दे रहे थे। शिक्षा देने से अभिप्राय चेतावनी देने या सावधान करने से है। ये अगुवे विश्वासियों की भलाई को देख रहे थे। ऐसे भी समय थे जब उन्हें ऐसी चीज़ें कहनी होती थीं जिन्हें कलीसिया सुनना नहीं चाहती थी। कई बार कलीसिया को सही किये जाने व झिड़के जाने की ज़रूरत होती थी। यह सब कुछ उनकी आत्मिक भलाई के लिया था।

पौलुस ने कलीसिया को अपने आत्मिक अगुवों को प्रेम करने तथा बहुत ही आदर देने को कहा (पद 13)। ध्यान दें कि वे ऐसा उस कार्य के लिए कर रहे थे जिसे करने के लिए उन्हें बुलाया गया था। ये लोग प्रभु तथा उसके उद्देश्यों को प्रगट कर रहे थे। परमेश्वर के बुलाए हुओं का विरोध करना उनके लिए परमेश्वर के उद्देश्यों का विरोध करना था। थिस्सलुनीके की कलीसिया को इसके लिए परमेश्वर को जवाब देना था। ऐसे बहुत से तरीके हैं जिनके द्वारा हम अपने आत्मिक अगुवों के लिए आदर की कमी को प्रगट कर सकते हैं। अपने आत्मिक अगुवों के बारे में तथा उनके द्वारा चीज़ों को किये जाने के ढंग के बारे में शिकायत करना कितना आसान है। पौलुस हमें अपने आत्मिक अगुवों के लिए अधिक आदर रखने को कहता है।

आपस में मेल-मिलाप के साथ रहना (पद 13)

कलीसियाएं सामंजस्य के सिद्धान्त पर कार्य करती है। वे चाहती हैं कि कलीसिया में हर कोई इसी चीज़ पर विश्वास करे, एक ही तरह से आराधना

करे और एक समान जीवन-शैली का अनुसरण करे। प्रायः उन्हें उस प्रत्येक व्यक्ति से कठिनाई होती है जो उनके समान ही चीज़ों को नहीं करते हैं और इस तरह की बहुत सी कलीसियाएं उस प्रत्येक व्यक्ति के साथ सहभागिता करने से इन्कार कर देती हैं जो भिन्न होता है। तथापि, विषय की वास्तविकता यह है कि मसीह की देह में बहुत विविधता है। हम सभी एक ही तरीके से आराधना नहीं करते हैं। छोटे सिद्धान्तों को लेकर भिन्न विचार होते हैं। इन विभिन्नताओं के बावजूद हमें एक दूसरे के साथ मेल-मिलाप से रहना है। पौलुस ने प्रत्येक थिस्सलुनीकेवासी को एक दूसरे के साथ मेल-मिलाप से रहने को कहा (पद 13)। इसका अर्थ यह नहीं कि हमें सभी चीज़ों में एक दूसरे के साथ सहमत होना है। कुछ विषयों में भिन्न विचारधारा रखकर भी मेल-मिलाप को बनाए रखा जा सकता है।

> यदि आप गायन मण्डली में रहे हों तो आप एक स्वर तथा मेल से गाने के बीच के अन्तर को समझ सकते हैं। हमारे एक स्वर में गाने पर हर कोई उसी स्वर में गाता है। मेल से गाना भिन्न है। मेल से गाने वाले भिन्न-स्वर में गाते हैं परन्तु ये सभी स्वर मिलकर एक बहुत ही मिलवाटी आवाज़ की रचना करते हैं।

ऐसे विश्वासी भी हैं जिन्हें अपनी विभिन्नताओं के बावजूद कुछ सहयोग देना होता हैं। जब हम एक दूसरे की भिन्नताओं को ग्रहण करते तथा उन्हें देह में प्रेमी ढंग से व्यक्त करते हैं तब हमारे लिए मेल से रहना संभव हो जाता है।

ऐसे भी हैं जिनका मानना है कि झगड़े की अनुपस्थिति में ही मेल से रहा जाता है। उनका मानना है कि एक दूसरे की अपेक्षा करने पर ही वे शांति में होते हैं। एक ऐसे परिवार की कल्पना करें जहां लोग इस कारण से एक दूसरे की उपेक्षा करते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि एक दूसरे के साथ होने पर उनमें झगड़ा होगा। क्या हम कह सकते हैं कि यह परिवार एक दूसरे के साथ मेल में है? ऐसे समय भी होंगे जब हमें मसीह की देह में भिन्नताओं का खण्ड करना होगा। मेल से रहने का अर्थ यह है कि हमें समय समय पर संघर्ष या झगड़े नहीं करने हैं। तौभी, इसका अर्थ यह नहीं कि हम उन बाहर की चीज़ों के साथ कार्य करने तथा एक दूसरे की भिन्नताओं का आदर करने को तैयार हैं।

आलसियों को चिताना (पद 14)

थिस्सलुनीके में ऐसे विश्वासी थे जो आलसी थे। कुछ विश्वासियों का यह मानना था कि प्रभु उनके जीवन काल में ही लौटनेवाला था। उन्होंने इस कारण से कार्य करना बन्द कर दिया था क्योंकि उनका यह मानना था कि

यीशु जल्द ही आनेवाला है। इसने समस्या को उत्पन्न किया। ये लोग अपने परिवारों की देखभाल नहीं कर रहे थे। उनकी गवाही इस कारण से खराब हो गई थी क्योंकि वे अपने परिवारों की ज़रूरतों को पूरा न कर समाज के लिए बोझ बन गए थे। पौलुस ने प्रत्येक विश्वासी की समाज के लिए उत्पादक होने की आशा की थी। समस्याओं का कारण केवल आलसीपन था। पौलुस ने अनुभव किया कि जो लोग आलसी थे वे अपने समय और वरदानों को गंवा रहे हैं और इसके लिए उन्हें एक दिन परमेश्वर को जवाब देना होगा। वे परमेश्वर के स्रोतों को बर्बाद करते हुए शेष कलीसिया के लिए एक अनावश्यक बोझ बने हुए थे। पौलुस ने उनसे प्रभु की वापसी की प्रतीक्षा करते हुए अपने परिवारों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कठिन श्रम करने को प्रोत्साहित किया।

कायरों को ढाढ़स देना और निर्बलों को संभालना (पद 14)

कलीसिया को उन्हें भी बल देना था जो कायर और निर्बल थे। उन्हें इन लोगों के साथ आकर उन्हें बड़े जोश के साथ ऊपर उठाना था। कायरता और निर्बलता ने उनमें से कुछ विश्वासियों को राज्य के लिए प्रयुक्त होने से दूर रखा था। परमेश्वर चाहता है कि कलीसिया का प्रत्येक सदस्य फल उत्पन्न करने वाला हो।

शायद आपको कायर के रूप में जाना जाता हो। आप अपनी ओर देखकर आश्चर्य में पड़ सकते हैं कि क्या परमेश्वर कभी आपका प्रयोग करेगा। आपका विश्वास संभवतः कमज़ोर हो और आपको हैरानी हो सकती है कि आपके पास कौन से आत्मिक दान हैं। पौलुस हमें स्मरण कराता है कि प्रत्येक विश्वासी के लिए परमेश्वर का एक उद्देश्य है। एक निर्बल और कायर को भी अपनी भूमिका को पूरा करना है। पौलुस ने थिस्सलुनीकेवासियों को निर्बलों और कायरों को प्रोत्साहित करने की चुनौती दी थी जिससे वे राज्य के महान कार्य में अपने स्थान और उद्देश्य को समझें।

दया दिखाना (पद 15)

मसीह की देह में चीज़ें सदैव आराम से नहीं होती हैं। ऐसे भी समय होते हैं जब लोग हमारे विरोध में चीज़ों को करते व कहते हैं। पौलुस ने थिस्सुलीके के विश्वासियों को बताया कि उन्हें कभी भी गलत का बदला गलत से नहीं देना है। इसके विपरीत उन्हें अपने से गलत करनेवालों के प्रति दया दिखानी है। ध्यान दें कि यह दया न केवल मसीह की देह में दिखानी थी परन्तु कलीसिया से बाहर वालों को भी। मसीहियों को अपने बीच में या समाज में एक दूसरे के प्रति दया दिखानेवालों के रूप में जाना जाना चाहिए।

आनन्दित रहना (पद 16)

पौलुस ने थिस्सलुनीकेवासियों को सदा आनन्दित रहने को कहा। स्मरण रखें कि थिस्सलुनीकेवासी प्रभु के कारण दुख उठा रहे थे। सब कुछ सही होने पर आनन्दित रहना एक चीज़ है और चीज़ों के कठिन होने पर आनन्दित रहना दूसरी चीज़ है। पौलुस ने भले समयों और बुर समयों के बीच कोई अन्तर नहीं किया। उसने उनसे सदैव आनन्दित रहने को कहा।

परीक्षाओं के बीच भी आनन्दित रहना संभव है। इसका अर्थ यह नहीं है कि हम दर्द व हानि का आनन्द लें। हमारा आनन्द प्रभु की ओर से आता है कि वह कभी भी हमें नहीं छोड़ेगा। वह हमारे द्वारा सामना की जानेवाली स्थिति का प्रयोग हमारी भलाई के लिए करने की प्रतिज्ञा करता है। प्रत्येक धावक जानता है कि दर्द और आनन्द साथ साथ चलते हैं। एक दौड़ को पूरा करने वाले धावक की कल्पना करें। वह अपनी पूरी शक्ति के साथ दौड़ता है। उसके दौड़ने पर, उसके फेफड़ों और पैरों में दर्द होना संभव है। वह अपनी देह को सीमा से बाहर की ओर धकेलता है। समापन रेखा पर पहुंचने पर वह तनाव और दुख में होता है। उसके दर्द का अर्थ यह नहीं कि वह दौड़ते समय आनन्द का अनुभव नहीं कर रहा होता है। यह दर्द आनन्द के समान ही वास्तविक है। मसीही जीवन में भी ऐसा ही होता है। पौलुस ने थिस्सलुनीकेवासियों को अपने प्रभु परमेश्वर पर कभी भी अपने आनन्द और भरोसे को न खोने की चुनौती दी।

निरन्तर प्रार्थना करना (पद 17)

मसीही जीवन में बाधाएं आ रही जाती हैं। इन बाधाओं के विरोध में आने पर हमें उन्हें परमेश्वर को सौंपना है। चीज़ों के कठिन होने तथा आपके आनन्द के फीके पड़ जाने पर, उन समस्याओं को प्रार्थना में प्रभु के निकट लाएं। वह उन्हें उठाने तथा हमारे लिए उन्हें लेने की प्रतिज्ञा करता है। हमारे प्रार्थना करने पर प्रभु नेतृत्व करता, सांत्वना देता और मार्गदर्शन करता है। प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर के भण्डारगृह उन्मुक्त हो जाते हैं और हम अपने आगे पड़े कार्य के लिए शक्ति प्राप्त कर लेते हैं।

हर बात में धन्यवाद करना (पद 18)

न कवेल हमें प्रार्थना में प्रभु को अपनी सारी समस्याओं को सौंपने की ज़रूरत है परन्तु हमें उनमें धन्यवाद देने की भी ज़रूरत है। यदि आप परमेश्वर पर भरोसा नहीं रख सकते हैं तो आप सच्चे आनन्द और धन्यवादिता का भी अनुभव नहीं कर सकते हैं। आप उस समय ही धन्यवादी हो सकते हैं जब आप यह स्वीकार कर लें कि परमेश्वर जो कुछ भी करता है उसमें उसकी कोई योजना होती है। धन्यवादिता और परमेश्वर में भरोसा एक दूसरे से जुड़े हैं। पौलुस

थिस्सलुनीके के विश्वासियों को चुनौती देता है कि बुरे और भले दोनों ही समयों में धन्यवाद देना कैसे सीखें, यह जानते हुए कि वह सभी चीज़ों का प्रयोग उनके जीवनों में अपने महान उद्देश्यों को पूरा करने के लिए करेगा।

आत्मा को न बुझाओ (पद 19)

पौलुस ने थिस्सलुनीकेवासियों को आत्मा की आग को बुझाने के बारे में सावधान किया। परमेश्वर का आत्मा उनमें कार्य कर रहा था। उनके द्वारा सहन किये जा रहे दर्द और सताव का प्रयोग वह कलीसिया में विकास और परिपक्वता को लाने लिए कर रहा था। तथापि, आत्मा के कार्य का विरोध करना संभव है।

हम कई तरह से आत्मा के कार्य का विरोध कर सकते हैं। हम ऐसा अनाज्ञाकारिता के द्वारा कर सकते हैं। 1थिस्सलुनीकियों 4:17 में पौलुस थिस्सलुनीके के रहनेवालों को आज्ञाकारिता में रहने की चुनौती देता है। जो कुछ भी परमेश्वर हमारे मार्ग में लेकर आता है उसको स्वीकार न करने के द्वारा हम उसके कार्य का विरोध करते हैं। कई बार परमेश्वर हमें शुद्ध करने के लिए दुख और पीड़ा में से जाने देता है। ठीक यही वह थिस्सलुनीके की कलीसिया में कर रहा था। (देखें 1थिस्स. 3:2-4) तथापि, प्रायः जो कुछ भी परमेश्वर करता हम है उसकी शिकायत करते व उस पर कुड़कुड़ाते हैं। हम धन्यवादी न होने और भरोसा न करने के द्वारा परमेश्वर के आत्मा की आग को बुझाते हैं। हम अपनी समझ पर भरोसा करने तथा उसके मार्ग दर्शन व नेतृत्व की खोज न करने के द्वारा भी उसे बुझा सकते हैं।

हमें अपने बीच में पवित्र आत्मा की सेवकाई की ज़रूरत है। आत्मा की सेवकाई के बिना, कोई भी चीज़ पूरी नहीं हो पाएगी। हमें उसकी उपस्थिति का आदर करने और उसके नेतृत्व के प्रति समर्थन करनेवाले लोग बनना होगा। उसे शोकित करना और उसे बुझाना परमेश्वर द्वारा किये जाने वाले कार्य में बाधा उत्पन्न करना है।

भविष्यवाणियों को तुच्छ न जानना (पद 20)

आत्मा को बुझाना भविष्यवाणियों को तुच्छ जानने का ही एक भाग है। भविष्यद्वक्ता परमेश्वर की ओर से लोगों से बोलते थे। उस क्षेत्र में कई झूठे भविष्यद्वक्ता भी घूम रहे थे। जो कुछ भविष्यद्वक्ता करता था कई बार उसकी पुष्टि करना कठिन हो जाता था। इसी कारण पौलुस ने थिस्सलुनीकेवासियों को प्रत्येक चीज़ को परखने के लिए कहा, कि भली चीज़ों को पकड़ें और बुरी से बचें (पद 21)। परखे बिना किसी भी भविष्यवाणी को ग्रहण नहीं करना था। तौभी, सेवकाई को हल्के रूप से नहीं लेना था। इसके विपरीत, उन्हें इसका स्वागत करना था तथा परमेश्वर को उसके सवेकों द्वारा उनके सुधार, आशीष व बल पाने के लिए बोलना था।

अन्तिम आशीर्वचन

पौलुस कलीसिया को आशीष देने के द्वारा इस प्रथम पत्री का समापन करता है। पद 23 में ध्यान दें कि उसकी इच्छा यह है कि शांति का पिता उन्हें पूरी तरह से शुद्ध करे। पौलुस ऐसा थिस्सलुनीके की कलीसिया के लिए चाहता था। वह चाहता था कि परमेश्वर उन्हें एक पवित्र उद्देश्य हेतु अलग करे। उसने इस पत्र में उन्हें निर्देश दिये थे, परन्तु वह जानता था कि उन्हें अधिक से अधिक पवित्र बनाने का कार्य परमेश्वर के आत्मा का था।

पौलुस यह भी चाहता था कि वे देह, प्राण और आत्मा में निर्दोष रहें। वह चाहता था वे ''पूरे-पूरे'' पवित्र बनें। यह जीवनपर्यन्त चलने वालों प्रक्रिया थी। वह चाहता था कि विश्वासी परमेश्वर के साथ संबन्ध में बढ़ते रहें। उसने पद 24 में उन्हें स्मरण कराया कि प्रभु उन्हें अपनी वापसी तक बुलाने में सच्चा है।

पौलुस पद 25-28 में थिस्सलुनीके के रहनेवालों को उनके (प्रेरितों के) लिए प्रार्थना करने को कहते हुए समापन करता है। वह उन्हें पवित्र चुंबन से एक दूसरे को अभिवादन करने और इस पत्री को सभी भाइयों को पढ़कर सुनाने के लिए कहता है।

विचार करने के लिए

- परमेश्वर ने जिन्हें हमारे ऊपर रखा है हम उनके प्रति अनादर किस तरह से दिखा सकते हैं? क्या आपको कभी इस बारे में दोषभावना का अनुभव हुआ है?
- यदि आप किसी के साथ प्रत्येक विषय में सहमत नहीं हैं तो क्या आप उनके साथ शांति से रह सकते हैं?
- आलस कैसे एक पाप है? क्या आप कभी आलसी रहें हैं? परमेश्वर आपके समय का प्रयोग करते हुए आपको अधिक बुद्धिमानी के साथ कैसे प्रयोग करेगा?
- क्या आपने कभी इस तरह से प्रतिक्रिया दी जो मसीह में एक भाई या बहन के प्रति दयालु बनने से कम था? आपको उस स्थिति में कैसी प्रतिक्रिया देनी चाहिए थी?
- क्या कठिन परिस्थितियों में आनन्दित रहना संभव है? हमारे आनन्द का स्रोत क्या है?
- हम आत्मा को कैसे बुझा सकते हैं? क्या आप कभी ऐसा करने के दोषी रहे हैं?
- एक भाई या बहन के द्वारा परमेश्वर के आपसे बोलने पर क्या आपने कभी उसके वचनों का विरोध किया? इस विषय में यह परिच्छेद आपको क्या चुनौती देता है?

प्रार्थना के लिए :

- परमेश्वर से उन समयों के लिए आपको क्षमा करने को कहें जब आपने उसके सेवकों को आदर नहीं किया था।
- परमेश्वर से उन लोगों के साथ कार्य करने और उनसे प्रेम करने को आपको बड़ा अनुग्रह देने को कहें जो चीज़ों को आपसे भिन्न तरह से देखते हैं।
- इस सप्ताह जिन लोगों से आपका सामना होना है उनके साथ व्यवहार करने में दयालु बनने को परमेश्वर से सहायता मांगें।
- परमेश्वर को उन परीक्षाओं के लिए धन्यवाद दें जिन्हें उसने आपके मार्ग पर भेजा। इन परीक्षाओं में उससे आपको आनन्द देने के लिए कहें।
- प्रभु से आपके हृदय को उसके आत्मा के कार्य और सेवकाई के लिए अधिक से अधिक खोलने को कहें।

9

भावी विश्राम

पढ़ें 2 थिस्सलुनीकियों 1:1–12

यह थिस्सलुनीकियों के नाम पौलुस का दूसरा पत्र है। प्रथम पत्र में पौलुस ने इन विश्वासियों को प्रभु के साथ अपने संबन्ध में बढ़ने की चुनौती दी। जबकि उस क्षण वे दुख उठा रहे थे, पौलुस ने उन्हें स्मरण कराया कि वह दिन आ रहा था जब प्रभु यीशु उन्हें सदा के लिए अपने साथ ले जाने को लौटेगा। इस प्रथम अध्याय में हम देखते हैं कि कलीसिया ने पौलुस के निर्देश को गंभीरता से लिया था।

अपने पत्र का आरम्भ पौलुस एक आशीष से करता है। उसकी इच्छा थी कि परमेश्वर और प्रभु यीशु का अनुग्रह और शांति थिस्सलुनीके के विश्वासियों पर बनी रहे। अनुग्रह प्रभु का अनर्जित समर्थन है। इस समर्थन के बिना हम कहां होंगे? हम अक्सर परमेश्वर की मांगों को पूरा करने से चूक जाते हैं। अपनी करुणा में, परमेश्वर अपने साथ हमारी सहभागिता को स्थापित करते हुए हमें क्षमा करता है। प्रत्येक दिन हमें उसकी क्षमा, अनुग्रह और करुणा के ताज़े रूप की ज़रूरत है। चूंकि उसका अनुग्रह असीमित है इसी कारण हमें उसे कितना अधिक धन्यवाद देने की ज़रूरत है।

परमेश्वर की शांति विशिष्ट रूप से थिस्सलुनीके वासियों के लिए ज़रूरी थी। वे प्रभु यीशु के कारण बहुत अधिक दुख उठा रहे थे। शत्रु से घिरा होने पर उन्हें कष्ट देना तथा उनसे यह प्रश्न करना सरल हो गया था कि उनके इस दर्द में परमेश्वर कहां था। पौलुस की उनके लिए इच्छा यह थी कि वे इन संकट देनेवाली परिस्थितियों में भी अपने मनों और जीवनों में परमेश्वर की अद्‌भुत शांति का अनुभव करें। यही शांति परीक्षाओं में उन्हें सुरक्षित रखेगी।

अपनी पहली पत्री के समान प्रेरित पौलुस ने थिस्सलुनीकेवासियों को स्मरण कराया कि उनके विश्वास के कारण उसने प्रार्थना में उनके लिए धन्यवाद दिया था। उनका विश्वास अधिक से अधिक बढ़ रहा था। न केवल उनका विश्वास बढ़ रहा था परन्तु एक दूसरे के प्रति उनका प्रेम भी। पौलुस ने 1थिस्सलुनीकियों 4:10 थिस्सलुनीके के लोगों को अपने प्रेम में बढ़ते रहने को प्रोत्साहित किया

था। इस दूसरे पत्र को लिखते हुए, वह यह देखकर प्रोत्साहित हुआ था कि वे उसी तरह से कर भी रहे थे।

अपनी परीक्षाओं के बावजूद ये विश्वासी परमेश्वर के साथ अपने संबन्ध में बढ़ व परिपक्व हो रहे थे। पौलुस ने जिन कलीसियाओं में सेवा की थी वहां उनके दृढ़ बने रहने पर उसे गर्व हुआ था। कई बार महान विकास परीक्षाओं और संकटों से होकर आता है इन परीक्षाओं की प्रवृत्ति हमें परमेश्वर के साथ सही प्राथमिकताओं को स्थापित करने में सहायता करने की होती है। तौभी, सामान्यता हम अपनी परीक्षाओं से भागना चाहते हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर बढ़ने में हमारी सहायता करे और तौभी कठिनाई के छोटे से चिन्ह को देखते ही हम भाग जाना चाहते हैं। संघर्ष और दर्द के बिना मसीह में परिपक्वता को नहीं पाया जा सकता।

पद 5 में पौलुस ने थिस्सलुनीकेवासियों को बताया कि उनकी दृढ़ता ने प्रमाणित कर दिया था कि परमशेवर का न्याय सही था। अन्य शब्दों में, जिन परीक्षाओं का सामाना, वे कर रहे थे, उनके द्वारा परमेश्वर अपने उद्देश्यों को पूरा कर रहा था। क्या हमारे जीवनों में ऐसे समय नहीं आते जब हम आश्चर्य करते हैं कि जिन चीज़ों से परमेश्वर हमें निकाल रहा है उन्हें हमारे लिए सहना कठिन है? पौलुस ने उन्हें याद दिलाया कि प्रभु ठीक जानता था कि वह क्या कर रहा था। वह हम पर हमारे सहने से अधिक दुख कभी नहीं डालेगा। हमारे द्वारा सामना किये जाने वाले दर्द व परीक्षाएं अन्त में हमारे भले के लिए ही होंगी। हम भरोसा कर सकते हैं कि उसके न्याय सही हैं।

यह कलीसिया परमेश्वर की अनुमति से आने वाली परीक्षाओं के द्वारा उसी तरह से परखे गए थे, जैसे धातु को भट्टी में परखा जाता है। अन्त में वे परमेश्वर के राज्य के योग्य साबित होंगे।

परमेश्वर अपनी संतान द्वारा उठाए जाने वाले दुख से अंधा नहीं हुआ था। जबकि उसने उन्हें इन कठिनाइयों को सहन करने दिया था, उन्हें संकट देनेवालों को उनके कार्यों के लिए वही उत्तरदायी ठहराएगा (देखें पद 6)। परमेश्वर हमें सदैव संकट में नहीं रखेगा। कई बार वह हमें संकटों में रखने का चुनाव करता है और इसका प्रयोग हमें हमारे विश्वास में परिपक्व होन व बढ़ने के लिए करता है। तौभी वह दिन आ रहा था, जब प्रभु परमेश्वर उन लोगों को बुलाएगा जिन्होंने इन लोगों को कष्ट दिया था कि उनके कार्यों का उत्तरदायी उन्हें ठहराए।

समय आने पर, परमेश्वर परीक्षाओं से विश्राम देगा। दुख सदा तक के लिए नहीं होंगे, परन्तु प्रभु यीशु के वापस आने पर समाप्त हो जाएंगे। वह अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा (पद 7) यहां पौलुस जिस आग के बारे में बता रहा है वह न्याय की आग है। उस दिन, प्रभु अपने

लोगों के लिए पूर्ण विश्राम; और शैतान तथा उसकी दुष्ट आत्माओं के लिए अन्तिम हार को लाएगा। पाप और मृत्यु पर जय पा ली जाएगी तथा विश्वासी पूर्ण विजय में रहेंगे। प्रभु की वापसी पर विश्राम आएगा। हमारे वर्तमान दुख हमें निराश न करने पाएं। इसके विपरीत, हमें अपनी आंखें लक्ष्य पर रखकर भरोसे के साथ इन परीक्षाओं का सामना करना है। संघर्ष बड़े हो सकते हैं परन्तु प्रतिफल उससे भी बड़ा होगा।

जो लोग प्रभु यीशु के हैं उनके लिए एक अद्‌भुत आशा है। इस जीवन में अत्यधिक दुख उठाने पर भी, परमेश्वर की उपस्थिति में उनके लिए अनन्तकाल की आशा है, जहां वे अपने सभी दर्द से विश्राम पाएंगे। अविश्वासियों के साथ ऐसा नहीं है। पद 8 में पौलुस कहता है कि परमेश्वर उन्हें दण्ड देगा जो उससे नहीं जानते और उसके पुत्र प्रभु यीश के सुसमाचार का पालन नहीं करते हैं। जबकि विश्वासी के लिए एक बड़ी आशा है, केवल सुसमाचार का इनकार करने वालों के लिए ही न्याय और दण्ड है। पौलुस स्पष्ट करता है कि सुसमाचार के संदेश को अस्वीकृत करनेवाले अनन्तकाल के विनाश के लिए दण्डित किये जाएंगे। इस पर ध्यान दें कि उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति, उसके प्रताप और उसकी सामर्थ से बाहर कर दिया जाएगा। परमेश्वर की उपस्थिति से बाहर का जीवन कैसा होगा? जबकि परमेश्वर एक न्यायी परमेश्वर है, वह प्रेमी, दयालु और भला भी है। इस संसार में उसकी उपस्थिति शत्रु की सेना को रोक रखती है। यदि परमेश्वर अपनी उपस्थिति, प्रताप और सामर्थ को हटा ले इस पृथ्वी का क्या होगा? परमेश्वर की उपस्थिति के बिना बुराई, क्रोध, लालसा, ईर्ष्या और कड़वाहट का राज्य होगा। पृथ्वी आत्मिक अंधकार में डूब जाएगी। प्रत्येक व्यक्ति अपनी देह से स्वाभाविक रूप से आने के अनुसार कार्य करेगा। हम केवल उस अव्यवस्था की कल्पना ही कर सकते हैं जो परमेश्वर के बुराई की सेना पर नियंत्रण न रखने पर राज्य करेगी। जबकि आज हम अपने संसार में बुराई के प्रमाण को देख सकते हैं, तो यह उसका केवल एक छोटा सा ही भाग है जो बुरा व्यक्ति परमेश्वर के द्वारा नियंत्रित किये जाने पर करता है, परन्तु नियंत्रित न किये जाने पर वह क्या करेगा। अनन्तकाल के लिए परमेश्वर की उपस्थिति से निकाले गए लोगों के साथ आनन्दायक नहीं होगा। एक ऐसे संसार की कल्पना करें जो बुरे मन व इच्छा रखनेवाले लोगों से भरा हो। परमेश्वर की उपस्थिति और उसकी सामर्थ से सदा के लिए निकाले जाना इसी तरह का होगा।

परमेश्वर से प्रेम रखनेवालों के लिए यह कितना भिन्न होगा। प्रभु यीशु के वापस आने पर वह विश्वास करनेवालों के बीच महिमान्वित होगा। हम केवल इसकी कल्पना ही कर सकते हैं कि वह दिन कैसा होगा। उसे देखनेवाले ऊंची आवाज़ में स्तुति और धन्यवाद करेंगे। वे उसकी उपस्थिति की अद्वितीयता में

खड़े होंगे। उनका विश्राम आ गया है। सारा दर्द और दुख समाप्त हो जाएगा। उनके शत्रुओं का न्याय होगा और सत्य प्रबल होगा।

मसीह के लिए दुख उठानेवाले थिस्सलुनीकेवासियों के लिए पौलुस की प्रार्थना यह थी कि परमेश्वर ही उन्हें अपनी बुलाहट के योग्य ठहराएगा। अन्य शब्दों में, परमेश्वर उन्हें दृढ़ बने रहने के लिए आवश्यक बल को देने के द्वारा अनन्त तक सुरक्षित रखेगा ताकि वे संघर्षों का सामना इस तरह से कर सकें कि उसकी वापसी के दिन पर उन्हें लज्जित न होना पड़े।

पद 11 में पौलुस यह भी प्रार्थना करता है कि परमेश्वर के उद्देश्यों और विश्वास द्वारा प्रेरित प्रत्येक कार्य को करने के लिए इन विश्वासियों को सामर्थ से भरपूर होना होगा। ये वे कार्य हैं जो परमेश्वर के आत्मा द्वारा प्रेरित होते हैं। परमेश्वर अपने लोगों का नेतृत्व करना चाहता है। पौलुस की प्रार्थना यह थी कि थिस्सलुनीके के लोग अपने आप को उन सब चीज़ों के लिए खोलें जो परमेश्वर उन्हें देना चाहता था और परमेश्वर जो कुछ भी उनके मनों में करने के लिए डाल रहा था, वे उसे करने को आज्ञाकारी बनें।

पौलुस ने यह प्रार्थना करते हुए समापन किया कि उनके बाधाओं और परीक्षाओं का सामना किये जाने के बावजूद यदि वे विश्वास और आज्ञाकारिता में दृढ़ बने रहें तो इससे इस कलीसिया में प्रभु के नाम को महिमा मिलेगी। उसके नाम में फल उत्पन्न करने के द्वारा वे उसके नाम को महिमा देंगे और शत्रु के प्रहारों के विरुद्ध दृढ़ होकर खड़े रहने तथा उसके नाम को ऊंचा उठाए जाने पर भी।

तथापि इस पर ध्यान दें कि पौलुस ने यह प्रार्थना भी की कि थिस्सलुनीकेवासी मसीह में महिमान्ति हों। उनके लिए मसीह को महिमा देनी एक चीज़ थी और मसीह का उन्हें महिमा देना दूसरी चीज़। क्या आपको इससे आश्चर्य होता है कि प्रभु यीशु आपको महिमा देना चाहता है? महिमा देने का अर्थ है ऊँचा उठना। वह दिन आ रहा है जब प्रभु यीशु हमें ऊंचा उठाएंगे। उस दिन, हमें हमारी विश्वासयोग्य सेवा के लिए पुरस्कृत किया जाएगा। हमें नई महिमावान देह दी जाएगी, जो न तो कभी मरेगी और न ही उन पर पाप का कभी कोई प्रभाव होगा। वह हमें आदर देगा।

जबकि हम इस जीवन में अत्यधिक दुख और दर्द झेलने की आशा कर सकते हैं, हमें अपनी आंखें प्रभु और उसकी प्रतिज्ञाओं पर भी लगानी हैं। परमेश्वर हमें विश्राम देने और इस पृथ्वी पर हमारा न्याय करने को आएगा। उस समय तक, हमें यह जानने की ज़रूरत है कि जबकि वह हमें कुछ समय तक दुख

उठाने की अनुमति दे सकता है, तौभी वह उन दुखों का प्रयोग हमारे द्वारा उन अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए भी करेगा।

विचार करने के लिए:

- क्या आपने कभी परमेश्वर के न्याय पर प्रश्न किया है कि इस जीवन में वह आपको किन चीज़ों से होकर जाने देता है? स्पष्ट करें।
- दर्द और दुख के द्वारा परमेश्वर ने आपको क्या शिक्षा दी है?
- क्या मसीहियों को पौलुस के कहे अनुसार एक संकट रहित जीवन जीने की आशा करनी चाहिए?
- मसीह को अस्वीकृत करनेवालों के भाग्य के बारे में हम क्या सीखते हैं?
- मसीह के हमें महिमा देने का क्या अर्थ हैं? जबकि अन्ततः यह महिमा आने वाले संसार में पूरी होगी? क्या ऐसा कोई भाव है जिसमें हम अपने वर्तमान जीवनों में परमेश्वर की महिमा का अनुभव करते हैं?

प्रार्थना के लिए

- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि वह सभी शत्रुओं को हमारी ओर फेकर उनका प्रयोग हमें शिक्षा देने और हमें अपने अधिक निकट लाने के लिए कर सकता है।
- परमेश्वर से आपको वह शिक्षा देने को कहें जिसे वह आपको आपके दर्द के द्वारा सिखाना चाहता है।
- परमेश्वर से अपने हृदय को उस संभावना तक खोलने को कहें जो कि आपमें उसके राज्य के लिए है।
- कुछ क्षण उस किसी के लिए प्रार्थना करने को निकालें जिसने कभी भी परमेश्वर को ग्रहण नहीं किया था। परमेश्वर से उन्हें इस परिच्छेद में बताए गए न्याय से बचाए रखने को कहें।

10

व्यवस्थाहीन व्यक्ति

पढ़ें 2 थिस्सलुनीकियों 2:1–17

थिस्सलुनीके में कलीसिया को प्रभु के लौटने में रुचि थी। वे उत्सुकता से उसके वापस आने की आशा कर रहे थे। तथापि, ऐसा लगता है कि उनके बीच में ऐसे झूठे शिक्षक थे जो प्रभु के द्वितीय आगमन को लेकर भ्रम उत्पन्न कर रहे थे। पौलुस ने इस विषय को संबोधित करने को स्वयं को बाध्य पाया।

पद 1–2 में म देखते हैं कि थिस्सलुनीके में प्रेरितों की ओर से कही जाने वाली एक भविष्यद्वाणी प्रचलित थी (संभवतः पत्र के रूप में) कि प्रभु का दिन आ चुका है। इसके लिए कौन उत्तरदायी था, हमें इस बारे में बताया नहीं गया है। तथापि, यह स्पष्ट है कि यह प्रेरितों की ओर से नहीं था। किसी ने अपने झूठे विचारों का प्रचार करने को प्रेरितों के नाम का प्रयोग किया था।

प्रभु के पहले से ही आ जाने का विचार थिस्सलुनीके में कई लोगों को संकट में डालनेवाला था। यह विशेषकर इस कारण से भी संकट में डालनेवाला था, क्योंकि इस पत्र को प्रेरितों की ओर से लिखा गया था। शैतान लोगों को सत्य से दूर रखने के लिए किसी भी चीज़ का प्रयोग करने से नहीं हिचकिचाता। लोगों को सत्य से दूर ले जाने को वह प्रत्येक झूठ व धोखे का भी प्रयोग करता है। जो कुछ भी हम सुनते हैं उसकी जांच करने के लिए हमें अधिक सावधान रहने की ज़रूरत है।

हम इस पत्र के द्वारा कलीसिया में उत्पन्न होनेवाले संकट की केवल कल्पना ही कर सकते हैं। क्या वे प्रभु की वापसी से चूक गए थे? क्या उसने उन्हें अपने लोगों के रूप में स्वीकार नहीं किया था? वे निश्चित रूप से कुछ समझ नहीं पा रहे थे।

पौलुस ने सीधे ही इस विषय पर लिखा। उसने विश्वासियों को आश्वासन दिया कि प्रश्नीय पत्र को प्रेरितों द्वारा नहीं लिखा गया था, इसी कारण उन्हें सचेत रहने की ज़रूरत नहीं थी। पद 3 में पौलुस ने थिस्सलुनीके के लोगों को बताया

कि बड़े विद्रोह और व्यवस्थाहीन मनुष्य के प्रगट न होने तक प्रभु नहीं लौटेगा हमें इस पर अधिक विवरण के साथ जांच करने की ज़रूरत है।

पौलुस ने थिस्सलुनीके के लोगों को बताया कि प्रभु यीशु के लौटने से पूर्व कुछ चीज़ों का होना ज़रूरी है। सबसे पहले पृथ्वी पर एक बड़े विद्रोह का समय होगा। दूसरे, ''व्यवस्थाहीन पुरुष'' दिखाई देगा। यीशु इस पर भी स्पष्ट रूप से बोला। मत्ती 2 : 10-13 में उसने अन्तिम दिनों के बारे में जो सिखाया उसे सुनें:

तब बहुतेरे ठोकर खाएंगे, और एक दूसरे को पकड़वाएंगे और एक दूसरे से बैर रखेंगे। और बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बहुतों को भरमाएंगे। और अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठण्डा हो जाएगा। प्ररन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।

अन्तिम दिनों में लोग परमेश्वर से फिर जाएंगे और पृथ्वी पर एक बड़ा विद्रोह होगा।

पौलुस प्रगट होने वाले ''व्यवस्थाहीन पुरुष के बारे में उसी तरह से बताता है। जैसे प्रेरित यूहन्ना भी। यूहन्ना 2:18 में यह कहते हुए इस व्यक्ति के बारे में बोलता है:

हे लड़को यह अन्तिम समय है, और जैसा तुमने सुना है, कि मसीह का विरोधी आनेवाला है, उसके अनुसार अब भी बहुत से मसीह के विरोधी उठे हैं; इससे हम जानते हैं, कि यह अन्तिम समय है।

संसार के पूरे इतिहास में ऐसे लोग भी रहे हैं जो मसीह विरोधी रहे हैं। उन्होंने मसीह यीशु से घृणा करते हुए कलीसिया के विनाश का अत्यधिक कार्य किया। ये लोग वह मसीह विरोधी नहीं हैं जिसके बारे में पौलुस यहां बता रहा है। हमें अभी इस मसीह विरोधी को देखना है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में यूहन्ना इसके बारे में अधिक बताता है। उसका यहां पशु के रूप में उल्लेख किया गया है:

और जो पशु मैंने देखा, वह चीते की नाईं था; और उस अजगर ने अपनी सामर्थ, और अपना सिंहासन और बड़ा अधिकार उसे दे दिया। और मैंने उसके सिरों में से एक पर ऐसा भारी घाव लगा देखा, मानो वह मरने पर है; फिर उसका प्राणघातक घाव अच्छा हो गया, और सारी पृथ्वी के लोग उस पशु के पीछे-पीछे अचम्भा करते हुए चले। और उन्होंने अजगर की पूजा की, क्योंकि उसने पशु को अपना अधिकार दे दिया था और यह कहकर पशु की पूजा की कि ''इस पशु के समान कौन है? कौन उससे लड़ सकता है?'' और बड़े बोल बोलने और निन्दा करने के लिए उसे एक मुंह दिया गया, और उसे बयालीस महीने तक

काम करने का अधिकार दिया गया और उसने परमेश्वर की निन्दा करने के लिए मुंह खोला कि उसके नाम और उसके तम्बू अर्थात् स्वर्ग के रहनेवालों की निन्दा करे और उसे यह अधिकार दिया गया, कि पवित्र लोगों से लड़े, और उन पर जय पाए और उसे हर एक कुल और लोग, और भाषा, और जाति पर अधिकार दिया गया। और पृथ्वी के वे सब रहने वाले जिनके नाम उस मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं गए, जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है, उस पशु की पूजा करेंगे (प्रका. 13:2–8)।

इस व्यवस्थाहीन पुरुष को अन्ततः जब दण्डित किया जाएगा, वह कलीसिया के लिए बड़े संकट को उत्पन्न करेगा। पद 4 हमें बताता है कि वह परमेश्वर का विरोध करते हुए स्वयं को उससे ऊंचा उठाएगा। वह आराधना की मांग करेगा, यह आशा करते हुए कि हर कोई उसके सामने झुके। परमेश्वर के लोगों के इतिहास में, ऐसे लोग भी रहे हैं जिन्होंने इस तरह से स्वयं को ऊंचा उठाया है। तथापि, पौलुस ने थिस्सलुनीके के लोगों को स्मरण कराया कि वह दिन आ रहा था, जब एक बड़ा मसीह विरोधी आएगा। ये सभी छोटे मसीह विरोधी हमें उस ओर संकेत करते हैं जो अन्त के दिनों में हमें देखेंगे।

उस समय के लिए ''इस'' व्यस्थाहीन पुरुष'' को रोककर रखा गया था। यह सत्य है कि व्यवस्थाहीन होने की शक्ति इस संसार में पहले से ही कार्यरत थी (पद 7), परन्तु चीज़ें और भी बुरी होने वाली थीं। परमेश्वर ने उस समय तक के लिए व्यवस्थाहीन पुरुष को रोककर रखा है जब तक कि सुसमाचार का संदेश समस्त संसार तक न पहुंच जाए। यीशु ने सिखाया कि केवल उन सभी तक सुसमाचार का प्रचार करने पर जिन्हें सुनने की ज़रूरत है, अन्त आ आएगाः

और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा। (मत्ती 24:14)।

यह सुसमाचार का समय है। हमारे लिए सुसमाचार के संदेश पर प्रतिक्रिया देने का समय है। परमेश्वर का आत्मा इस सारे संसार में स्त्री और पुरुषों को उद्धार व पवित्रता के निकट लाने का कार्य कर रहा है। बुराई और व्यवस्थाहीन होने की शक्ति अभी भी व्याप्त है, परन्तु इसे तब तक के लिए नियंत्रित किया गया है जब तक कि मसीह के निकट आनेवाले उसे ग्रहण नहीं कर लेते।

वह दिन का आ रहा है जब परमेश्वर इस बुरे जन को रोके न रहेगा। शैतान को उसकी जंज़ीरों से मुक्त किया जाएगा। शैतान इस व्यवस्थाहीन पुरुष के द्वारा कार्य करेगा तथा कलीसिया की निन्दा करेगा। प्रकाशितवाक्य 20:7–9 की यह स्पष्ट शिक्षा हैः–

> और जब हज़ार वर्ष पूरे हो चुकेंगे; तो शैतान कैद से छोड़ दिया जाएगा और उन जातियों को जो पृथ्वी के चारों ओर होंगी, अर्थात् याजूज और माजूज को जिनकी गिनती समुद्र की बालू के बराबर होगी, भरमाकर लड़ाई के लिए इकट्ठे करने को निकलेगा। और वे सारी पृथ्वी पर फैल जाएंगी और पवित्र लोगों की छावनी और प्रिय नगर को घेर लेंगी।

शैतान के छोड़े जाने पर पृथ्वी पर भयानक चीज़ें घटेंगी। हम व्यवस्थाहीन के शासन करने की अपेक्षा कर सकते हैं। यह सदा के लिए नहीं होगा। प्रभु परमेश्वर अपने मुँह की श्वास से इस व्यवस्थाहीन पुरुष को दूर फेंक देगा।

यह मसीह विरोधी बड़े चिन्हों के साथ आएगा। वह बड़े चमत्कार करने के योग्य होगा। उसे शैतान द्वारा अधिक से अधिक लोगों को धोखा देने हेतु शक्ति दी जाएगी। वे उसके जाल में फंसकर उससे हार जाएंगे। पौलुस ने थिस्सलुनीके के लोगों को बताया कि सत्य से प्रेम न करने के कारण ये लोग नाश होंगे। इसके विपरीत, वे मसीह विरोधी के प्रलोभनों और उसके चमत्कारों व चिन्हों में गिर जाएंगे।

परमेश्वर का वचन कभी बदलता नहीं है। जिस वचन का आप इस समय अध्ययन कर रहे हैं वह सत्य में आपकी अगुवाई करने वाला है। यदि कोई हमारे पास उन चमत्कारों, चिन्हों और अद्भुत कार्यों के साथ आए जो इस वचन के सत्य की पृष्टि न करते हों तो हमें उसे स्वीकार नहीं करना चाहिए। परमेश्वर ने हमें अपना वचन इसलिए दिया है जिससे हम झूठे भविष्यद्वक्ताओं और उनके सामर्थी चिन्हों के धोखे में न आएं।

पद 11 में ध्यान दें कि चूंकि इन लोगों ने परमेश्वर और उसके वचन से मुंह फेर लिया था, इसी कारण परमेश्वर ने उन्हें उनकी समझ पर छोड़ दिया था। परमेश्वर ऐसा उनसे अलग होने के द्वारा करता है। परमेश्वर से विरोध करने के कारण परमेश्वर ने उनसे बुराई को नहीं रोका है। वे परास्त किये गए और जीत लिये गए हैं। स्वयं पर छोड़ दिये जाने के कारण उन्होंने अधिक से अधिक बुराई में जाकर अपने दण्ड पर मुहर लगा दी है। सत्य को अस्वीकार किये जाने के कारण वे स्वयं पर इसे लेकर आए हैं।

यदि परमेश्वर ने हमें परास्त करने की मंशा रखनेवाली दुष्ट की सेना पर नियंत्रण करना रोक दिया होता, तो आज हम कहां होते? यदि परमेश्वर ने हमें अपने स्वयं के विचारों और इच्छाओं पर छोड़ दिया होता, तो आज हम कहां होते? परमेश्वर जिस तरह से हमारी देखभाल करता और हमें सुरक्षा देता है उसके लिए हमें परमेश्वर को कितना अधिक धन्यवाद देने की ज़रूरत है।

पौलुस प्रोत्साहन के एक वचन के साथ इस विभाग का अन्त करता है। थिस्सलुनीकेवासियों ने अन्यों के समान परमेश्वर से मुंह नहीं फेरा था। परमेश्वर

ने उनसे गहरा प्रेम किया था (पद 13)। वे उसकी संतान थे तथा वह उनकी चिन्ता करता था। परमेश्वर ने आरंभ से ही उन्हें चुना था और उनका मार्गदर्शन करने व उनकी देखरेख करने को अपना पवित्र आत्मा दिया था। वे आत्मा और वचन के द्वारा पवित्र किये जाएंगे। (परमेश्वर की महिमा के अतिरिक्त)।

परमेश्वर ने इन दो उपकरणों को हमें हमारी देखरेख करने और हमें अधिक से अधिक मसीह के समान बनने को दिया है। उसका पवित्र आत्मा सामर्थ व बुद्धि देगा। उसका वचन हमारा मार्गदर्शक, सांत्वनादाता और निर्देशक होगा। अन्तिम दिनों के निकट आने पर हमें ऐसे लोग होने की ज़रूरत है जो परमेश्वर के वचन के सत्य और पवित्र आत्मा की सेवकाई पर आश्रित रहते हैं।

पौलुस ने अपने पाठकों को स्मरण कराया कि प्रभु परमेश्वर ने सुसमाचार द्वारा मसीह की महिमा बांटने को उन्हें बुलाया है। परमेश्वर की संतान होने के कारण यही उनका भाग्य था। और अब भी उस पर तथा अपने जीवनों में उसके कार्य पर भरोसा किये जाने से वे उसकी महिमा के सहभागी होंगे।

प्रभु के लौटने से पहले कठिन समय होंगे। व्यवस्थाहीन पुरुष को पृथ्वी पर छोड़ा जाएगा। परीक्षाएं और संकट होने पर भी प्रभु यीशु का उनके लिए एक अद्‌भुत उद्देश्य था। पौलुस ने उनमें इस शिक्षा को अपने मन में रखने और इस पर दृढ़ बने रहने की चुनौती दी थी। पद 16-17 में उसने प्रार्थना की कि प्रभु यीशु उनके हृदयों को प्रोत्साहित करे और उन्हें उस कार्य को करने का बल दे जिसे करने के लिए उसने उन्हें बुलाया था। उन्हें आशा और साहस को खोना नहीं था।

विश्वासियों को उस झूठे पत्र से धोखे में नहीं आना था जिसे उनके बीच वितरित किया जा रहा था। वे प्रभु की वापसी से चूके नहीं थे। इसी बीच उन्हें आत्मा की शक्ति के साथ साथ उसके वचन में भी दृढ़ होना था। उस समय तक परमेश्वर उन पर स्वयं को प्रगट करता तथा वे उसके साथ सदा के लिए रहनेवाले थे।

विचार करने के लिए:

- कौन सी झूठी शिक्षा आज की कलीसिया में पाई जाती है?
- अन्त के दिनों के निकट आने पर पौलुस हमसे किसकी की आशा करने को कहता है?
- इस परिच्छेद में ''व्यवस्थाहीन व्यक्ति'' कौन है? पवित्रशास्त्र उसके अन्त के बारे में क्या बताता है?
- क्या चमत्कार, चिन्ह, और अद्‌भुत कार्य शैतान की ओर से आ सकते हैं?
- यह परिच्छेद हमें परमेश्वर के वचन के महत्व के बारे में क्या सिखाता है?

यह उन दिनों में शत्रु द्वारा धोखा दिये जाने में हमारा मार्गदर्शन कैसे करेगा?

- हम इस परिच्छेद में इस बारे में क्या सीखते हैं कि परमेश्वर इस संसार में बुराई को कैसे नियंत्रित करता है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर को उसके उस तरीके के लिए धन्यवाद दें जिस तरह से उसने आपको पाप की बाधा बनने से बचाए रखा तथा आपके जीवन पर पड़नेवाले इसके प्रभावों से भी। इस एक उदाहरण पर विचार करें कि परमेश्वर ने आपको पाप और विद्रोह में गिरने से कैसे बचाए रखा है।
- प्रभु परमेश्वर के लिए अपने हृदय को खोलकर उससे किसी भी ऐसी चीज़ को प्रगट करने के लिए कहें जिससे वह आपके जीवन में निपटना चाहता है। उसके प्रति समर्पण करें और आत्मा को आपमें इस कार्य को करने दें।
- परमेश्वर से आपकी सहायता करने को कहें कि आप शत्रु की झूठी शिक्षा से धोखा न खाएं। उसके वचन के लिए उसे धन्यवाद दें जो सभी सत्य में हमारा मार्गदर्शक है।
- परमेश्वर से आपको पवित्र आत्मा की सेवकाई और भूमिका के बारे में अधिक से अधिक सिखाने को कहें।

11

जो आलसी हैं उनसे सावधान रहें

थिस्सलुनीके के लोगों को लिखे इस पत्र का समापन करने पर पौलुस ने उनसे उसके लिए प्रार्थना करने का कहा। पौलुस के कुछ विशिष्ट प्रार्थना निवेदन थे।

कि संदेश शीघ्रता से फैले (पद 1)

पौलुस का पहला निवेदन था कि सुसमाचार का संदेश शीघ्रता से फैले। इस निवेदन में अत्यावश्यकता का एक भाव दिखता है। पौलुस ने इस संदेश को जितना अधिक हो सके बाहर पहुंचाने के लिए स्वयं को विवश पाया। ऐसा होने के लिए, सुसमाचार के मार्ग में आने वाली बाधाओं को हटाने की ज़रूरत थी। शैतान पौलुस के प्रचार में बाधा उत्पन्न करने का भरसक प्रयास कर रहा था। पौलुस विश्वासियों से उन बाधाओं को तोड़ने के लिए प्रार्थना करने को कह रहा है। उसके लिये यह महत्वपूर्ण था कि जितने अधिक लोगों में हो सके, बिना किसी देरी के सुसमाचार का प्रचार किया जाए।

कि संदेश को आदर मिले (पद 1)

पौलुस का दूसरा प्रार्थना निवेदन यह था कि सुसमाचार के संदेश को इससे सुननेवालों के द्वारा उसी तरह से आदर मिले जैसा इसे थिस्सलुनीके के विश्वासियों से मिला था। जब पौलुस पहली बार उनके पास सुसमाचार के संदेश को लेकर आया था, उन्होंने संदेश को ग्रहण कर अपने जीवन प्रभु यीशु को सौंप दिये थे। पौलुस ने प्रार्थना करने को कहा कि उसके द्वारा प्रचार किया संदेश इसके सुननेवालों में इसी तरह से ग्रहण किया जाए।

कि हम दुष्ट मनुष्यों से बचे रहे (पद 2)

पौलुस जानता था कि उसके सुसमाचार प्रचार किये जाने पर इसे हर कोई ग्रहण नहीं कर लेगा। कुछ ऐसे दुष्ट लोग भी होंगे जो उसके प्रचार को सुनना पसंद न करने के कारण इसे हानि पहुंचाना चाहेंगे। पौलुस ने अपने लिए प्रार्थना करने को कहा कि वह उन लोगों से बचे व सुरक्षित रहे जो उसके प्रचार को रोकना चाहते थे।

हमें भी उन लोगों के विरोध का सामना करने को तैयार रहने की ज़रूरत जो प्रभु यीशु से घृणा करते हैं। पौलुस समझ गया था कि सुसमाचार का प्रचार किये जाने पर उसका विरोध होगा। वह यह भी जानता था कि मनुष्य द्वारा विरोध किये जाने पर भी परमेश्वर विश्वास योग्य बना रहेगा। वह परमेश्वर के लोगों द्वारा उसके लिए प्रार्थना किये जाने पर उसे बल व सुरक्षा प्रदान करेगा।

पौलुस यह भी जान गया था कि थिस्सलुनीके के लोगों का भी विरोध होना था। उसने उन्हें स्मरण कराया कि परमेश्वर उन्हें नहीं छोड़ेगा। वह उन्हें बल देने के साथ-साथ बुराई से भी बचाकर रखेगा (पद 3)। इस पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि बचाकर रखने का अर्थ यह नहीं है कि शत्रु उनका विरोध नहीं करेगा। पौलुस यह समझ गया था कि इस मार्ग में कठिनाइयां परीक्षाएं होंगी। शत्रु उन्हें रोकने का भरसक प्रयास करेगा। थिस्सलुनीके के लोगों के लिए जीवन सरल नहीं होगा, लेकिन उसी तरह से प्रभु की सुरक्षा भी उन्हें मिलेगी।

पद 4 में पौलुस ने उस प्रत्येक भरोसे को व्यक्त किया जो उसके द्वारा थिस्सलुनीके के लोगों को दी जाने वाली शिक्षा के कारण वे उसमें दृढ़ बने रहेंगे। उसने माना कि बेशक वे परीक्षाओं का सामना कर रहे थे, तौभी परमेश्वर विश्वासयोग्य होने के कारण उन्हें सुरक्षित रखेगा। वह उन्हें अंत तक दृढ़ बने रहने की आवश्यक शक्ति देगा। उनके लिए उसकी प्रार्थना यह थी कि परमेश्वर के प्रेम और मसीह के धीरज की ओर प्रभु उनके मन की अगुवाई करे (पद 5)।

पौलुस के लिए यह महत्वपूर्ण था कि थिस्सलुनीके के लोग परमेश्वर के प्रेम को समझते हैं। यही उन्हें सुरक्षित रखेगा। परमेश्वर के प्रेम से उनके मन के भरे जाने पर वे किसी भी कीमत पर दृढ़ बने रहेंगे। उसके प्रति प्रेम होने के कारण वे किसी भी तरह से उसका अनादर करने के बजाए उसके लिए अपने जीवन को भी न्योछावर कर देंगे। उसके लिए अपने लिए परमेश्वर के प्रेम को जानना उनकी वही परीक्षाओं में भी उन्हें प्रोत्साहन और समर्थन प्रदान करने वाला था। पौलुस ने थिस्सलुनीकेवासियों के लिए मसीह में दृढ़ बने रहने के लिए भी प्रार्थना की। प्रभु यीशु ने हम पर प्रगट किया कि दृढ़ बने रहने का क्या अर्थ था। वह मृत्यु होने तक विश्वासयोग्य था यद्यपि वह हर तरह के अपराध से अनजान या, तौभी उसने स्वेच्छा से अपने लोगों के लिए अपने जीवन को सौंप दिया था। अपने पिता के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता में होकर उसने एक सिद्ध जीवन जीया। वह परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्य की विश्वासयोग्यता में होकर क्रूस तक गया। थिस्सलुनीके के लोगों के लिए पौलुस की प्रार्थना यह थी कि उनमें भी इसी तरह का धीरज़ पाया जाए। उसने यह प्रार्थना नहीं की कि परमेश्वर उन्हें परीक्षाओं से बचाए। उसने प्रार्थना की परमेश्वर उनके मार्ग में आनेवाली परीक्षाओं से उन्हें बचाने में विश्वासयोग्य है।

इस अध्याय के शेष भाग में पौलुस ने थिस्सलुनीके की कलीसिया में आलसी विश्वासियों के विषय को संबोधित किया। यह संभव है कि ये विश्वासी जिन्होंने यह मान लिया था कि परमेश्वर उनके जीवन काल में ही लौटने वाला था, इसी कारण वे कोई कार्य करना नहीं चाहते थे। अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु उनके लिए कार्य करने के बजाय, वे कलीसिया के लिये एक बोझ बन गए थे और साथ ही समाज के लिए एक बेकार का उदाहरण भी।

पौलुस ने 1 थिस्सलुनीकियों में इस विषय को संबोधित किया था, लेकिन अब वह बल देकर कह रहा था। उसने थिस्सलुनीकेवासियों को बताया कि उन्हें उन लोगों से निपटना था जो काम करने से इन्कार कर रहे थे। पौलुस का सुझाव यह था कि उन्हें उन विश्वासियों से दूर रहना है जो काम करना नहीं चाहते थे (पद 6)।

संभवतः इन विश्वासियों ने यह सोचा हो कि वे अपने भाई बहनों से अधिक आत्मिक हैं। हो सकता है कि उन्होंने इस कारण से कार्य करना बन्द कर दिया था क्योंकि वे प्रभु की वापसी की प्रतीक्षा कर रहे थे। तौभी, पौलुस उन्हें बताता है, कि जो कुछ भी वे कर रहे थे वह आत्मिक नहीं था, परन्तु सुसमाचार के लिए बाधक था।

पौलुस ने उन्हें अपने ही उदाहरण को स्मरण कराया जब वह उनके साथ था। जिस समय वह थिस्सलुनीके में था उसने कठिन श्रम किया था। वास्तव में, प्रेरितों ने अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु कार्य किया था जिससे वे कलीसिया पर बोझ न बनने पाएं (पद 7-8)। पद 9 में पौलुस ने थिस्सलुनीके के लोगों को बताया कि जबकि उन्हें परमेश्वर के समक्ष सहायता पाने का अधिकार था तौभी उस क्षेत्र में विश्वासियों पर बोझ न बनने को उन्होंने अपने इस अधिकार को एक ओर रख दिया था। वे उनके अनुसरण करने हेतु एक उदाहरण भी रखना चाहते थे।

पौलुस के लिए यह महत्वपूर्ण था कि प्रत्येक विश्वासी परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिए अपने भाग को पूरा करे। इस राज्य में आलस के लिए कोई जगह नहीं थी। एक विश्वासी के लिए यह उचित नहीं था कि जबकि वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं कर सकता है तो वह दूसरे पर पूरी तरह से निर्भर रहेः यदि कोई काम करना न चाहे तो खाने भी न पाए'' (पद 10)।

हमें यहां यह देखने की ज़रूरत है कि पिता की इच्छा और उद्देश्य यह है कि उसने जो दान व प्रतिभा हमें दी है, हम उसका प्रयोग करें। स्मरण रखें कि पौलुस ने थिस्सलुनीके के विश्वासियों को यह प्रार्थना करने को कहा कि

सुसमाचार तीव्रता से फैले। पौलुस की सेवकाई में इसकी अत्यावश्यकता थी। पौलुस के लिए परमेश्वर के राज्य में अधिकार पाने का कोई कारण नहीं था। परमेश्वर की इच्छा से ही हम यह जान पाते हैं कि उसने हमें क्या करने को बुलाया है तथा हम स्वयं को उस स्थान पर रखते हैं। परमेश्वर ने आपको क्या करने के लिए बुलाया है? अपनी वापसी पर क्या वह आपको उस कार्य को करते पाएगा?

थिस्सलुनीके में ऐसे लोग थे जो कि आलसी थे। अपने आलसीपन में ही वे व्यस्त रहते थे। वे कलीसिया के लिए एक बोझ थे। वे दूसरों से उनकी आवश्यकताओं के पूरा किये जाने की आशा कर रहे थे।

पौलुस ने उन्हें इस तरह से जीवन न व्यतीत करने की आज्ञा दी और यह कि वे अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कुछ भी करें।

पौलुस ने इस बारे में इतना अधिक अनुभव किया था कि उसने थिस्सलुनीके की कलीसिया में उन लोगों पर ध्यान देने को कहा था जो अपने भाग को पूरा नहीं करते हुए दूसरों से अलग हो गए थे। ऐसा करने का उद्देश्य उन्हें लज्जित करना था (पद 14)। उन्हें इन लोगों के साथ शत्रु जैसा व्यवहार न करने के प्रति सावधान रहना था, परन्तु उन्हें उनके पाप और आलस के लिए चिताना था (पद 15)।

जो लोग कठिन मेहनत कर रहे थे पौलुस ने उनकी सराहना करते हुए कहा कि थके नहीं परन्तु वही करते रहें जो सही है। उसने अपने बीच से आलसी लोगों के जाने देने की चुनौती दी जो उन्हें हतोत्साहित करते थे।

सामान्यता कलीसिया का कार्य विश्वासयोग्य लोगों के एक छोटे समूह द्वारा किया जाता था। प्रत्येक समय आवश्यकता होने पर, वे वहां होते थे कि कुछ भी कर सकें। मैंने भी इन लोगों को इस कार्य में स्वयं को अकेला अनुभव कर थकते हुए देखा है। कलीसिया के दूसरे सदस्य कुछ नहीं कर रहे होते। उनके पास भी दान होते हैं परन्तु उनका प्रयोग नहीं किया जाता। पौलुस इन लोगों से आज क्या कहता?

पौलुस कलीसिया को अपनी आशीष देते हुए इस पत्र का अन्त करता है। उसकी इच्छा थी कि प्रभु की शान्ति हर तरह से उन्हें भर दे। उसने उन्हें स्मरण कराते हुए अपने हाथ से एक अन्तिम अभिवादन लिखा कि यह उसके सभी पत्रों का जाना माना चिन्ह था। उस क्षेत्र में जिस झूठे पत्र का वितरण हो रहा था उसकी रोशनी में पौलुस के लिए यह महत्वपूर्ण रहा होगा कि थिस्सलुनीके के लोग उसके हाथ की लिखाई को जानें जिससे वे यह जान पाएं कि यह पत्र उसकी ओर से था।

इस अध्याय में हम पौलुस द्वारा सुसमाचार के इस संदेश के अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने की अत्यावश्यकता को देखते हैं। पौलुस ने थिस्सलुनीके के लोगों को राज्य का कार्य करने तथा आलसी लोगों से व्यवहार करने के संबन्ध जैसे विषय में बहुत ही गंभीर होने की चुनौती दी। उन्हें आलस में अपने समय को बर्बाद नहीं करना था, परन्तु अपने समाज के उत्पादक सदस्य और राज्य के लिए विश्वासयोग्य कर्मी बनाना था।

विचार करने के लिए:

- सुसमाचार का प्रचार करने की अत्यावश्यकता के बारे में यह परिच्छेद हमें क्या सिखता है?
- प्रभु की सेवा करने में आप किन बाधाओं का सामना कर रहे हैं?
- राज्य में प्रभु ने आपको क्या भूमिका दी है? क्या आप उस कार्य में विश्वासयोग्य रहे हैं?
- एक अधिक निष्ठावान व विश्वासयोग्य कर्मी बनने में आपको कौन सी चीज़ रोकती है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर को आपको यह दिखाने के लिए कहें कि आप और अधिक उसकी सेवा कैसे कर सकते हैं?
- परमेश्वर से आपको उसके लिए संसार तक पहुंचने के कार्य की अत्यावश्यकता के गहरे भाव को देने के लिए कहें।

◀▶

12

तीमुथियुस का कार्य

पढ़ें तीमुथियुस 1:1–11

प्रेरित पौलुस की ओर से यह तीमुथियुस को एक व्यक्तिगत पत्र था। पौलुस युवा तीमुथियुस से लुस्त्रा क्षेत्र में मिला था। वह तीमुथियुस से इतना अधिक प्रभावित हुआ था कि उसने उसे अपने साथ मिशनरी यात्रा पर ले जाने का निर्णय कर लिया था। तीमुथियुस को प्रेरित का आत्मिक पुत्र बनना था। कई अवसरों पर पौलुस ने तीमुथियस को मिशन पर भेजा था। उदाहरण के लिए हम देखते हैं कि उसे सीलास के साथ थिस्सलुनीके के मिशन पर कैसे भेजा गया था (1थिस्स. 35:2)। इसी पत्र में हम देखते हैं कि उसे इफिसुस क्षेत्र के लिए भी भेजा गया था (पद 3)।

तीमुथियुस के नाम अपने पत्र का आरम्भ करते हुए वह यीशु मसीह की आज्ञा पर स्वयं का उसके प्रेरित होने के रूप में परिचय देता है। पद 1 में उसने तीमुथियुस को स्मरण कराया कि प्रभु यीशु उसकी आशा थी। पौलुस ने इस सच्चाई को कभी नहीं खोया था कि उसकी आशा प्रभु यीशु में थी। वह जहां कहीं भी गया उसने इसी संदेश का प्रचार किया था। मनुष्य को पाप के कारण परमेश्वर से अलग कर दिया गया था। उनकी एकमात्र आशा केवल प्रभु यीशु और क्रूस पर उसके द्वारा पूरा किये जाने वाले कार्य में थी।

जैसा हम पहले भी बता चुके हैं कि यह पत्र तीमुथियुस को लिखा गया था जो पौलुस के अनुसार विश्वास में एक सच्चा पुत्र था। पौलुस के साथ एक संबन्ध होने के कारण वह एक पुत्र था। पौलुस विशिष्ट रूप से तीमुथियुस से प्रेम करता था और उसे ऊंचा दर्जा देता था, तथापि इससे भी अधिक, पौलुस इस कारण से भी एक पुत्र था कि पौलुस ने किस तरह से उसे अपने अधीन प्रशिक्षित किया था। पौलुस तीमुथियुस का आत्मिक पिता रहा था। अपने मन में इस युवक के लिए उसने भला ही चाहा था। पौलुस ने तीमुथियुस के साथ यात्रा करते, परमेश्वर के साथ अपने संबन्ध में उसे निर्देश व प्रशिक्षण देते हुए अनगिनत घंटे बिताए थे।

अपनी परम्परा के अनुसार, पौलुस आशीष देने के साथ आरम्भ करता है। उसने तीमुथियुस को अनुग्रह, करुणा और शांति की आशीष दी। अनुग्रह परमेश्वर का अनर्जित समर्थन है करुणा परमेश्वर का हमारे साथ पापियों के रूप में व्यवहार करने का एक तरीका है। हम उसका समर्थन पाने के योग्य नहीं परन्तु उसने किसी भी तरह से इसे हम पर उण्डेला है। परमेश्वर की शांति का संबन्ध हमारी सामान्य भलाई से है विशेषकर जब यह परमेश्वर के साथ हमारे से संबन्धित हो।

पद 3 में पौलुस ने तीमुथियुस को उसके कार्य का स्मरण कराया। जब वह मकिदुनिया गया, तब पौलुस ने उसे उस क्षेत्र में ठहरे रहने और सेवा करने को प्रेरित किया। विशेष रूप से तीमुथियुस को पौलुस द्वारा इफिसुस में रहकर वहां के विश्वासियों की सेवा करने की चुनौती दी जाती रही थी। पौलुस ने ऐसी बहुत सी चीज़ों को अनुभव किया था जिन्हें इफिसुस में तीमुथियुस को करने की ज़रूरत थी।

झूठा सिद्धान्त

इफिसुस क्षेत्र में कुछ ऐसे लोग थे जो झूठे सिद्धान्तों की शिक्षा देते रहे थे (पद 3)। पौलुस चाहता था तीमुथियुस इफिसुस में रहकर इन लोगों की झूठे सिद्धान्त न सिखाने की आज्ञा देता रहे। इफिसुस में उसकी सेवकाई सत्य को सिखाने की सेवकाई थी। आरम्भिक कलीसिया आसानी से इन झूठे शिक्षकों का शिकार बन जाती, जो इस क्षेत्र में फैले हुए थे। तीमुथियुस को सत्य का निर्देश देते हुए कलीसिया के साथ समय बिताना था।

कहानियां व वंशावलियां

इफिसुस में कुछ ऐसे लोग भी थे जो कहानियों और वंशावलियों के प्रति समर्पित हो रहे थे। ध्यान दें कि वंशावलियों के बारे में बोलते हुए पौलुस ने ''अनन्त'' शब्द का प्रयोग किया था। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि इन कहानियों और अनन्त वंशावलियों का कोई आत्मिक महत्व नहीं था। कहानियों और वंशावलियों पर होनेवाला विचार-विमर्श केवल विवाद को उत्पन्न करता है। इन्होंने परमेश्वर के राज्य को बढ़ाया नहीं था। पौलुस इन कहानियों और वंशावलियों की प्रकृति के बारे में हमें नहीं बताता है, तौभी हम निश्चित हो सकते हैं कि ये मानव उद्भव थे ओर परमेश्वर के वचन की ओर से नहीं थे।

पद 4 में पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि परमेश्वर का कार्य ''विश्वास से संबन्धित था इस संदर्भ में यह बहुत महत्वपूर्ण है। ये झूठे शिक्षक जीवन की वास्तविकताओं और परमेश्वर के उद्देश्य व योजना को अपनी ही तरह से समझने का प्रयास कर रहे थे। पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि ये लोग प्रमुख विषय

से चूक गए थे। परमेश्वर के बारे में कुछ ऐसी चीज़े थीं जिन्हें विश्वास से लिये जाने की ज़रूरत थी।

प्राय: हम परमेश्वर के मन को समझने का प्रयास करते हैं। पौलुस हमें याद दिलाता है कि कुछ ऐसी चीज़ें है जिनकी हम तर्कसंगत रूप में व्याख्या नहीं कर सकते। परमेश्वर हमें उस पर विश्वास द्वारा भरोसा करने को बुलाता है। इफिसुस में ऐसे लोग थे जो सभी तरह के बौद्धिक विचार-विमर्श में पीछे हो रहे थे। उन्होंने विवाद व विमर्श किया परन्तु उनमें विश्वास नहीं था, इसलिए न केवल वे विश्वास से चूक गए थे परन्तु दूसरों को भी परमेश्वर के सत्य से दूर लेकर जा रहे थे। पौलुस ने तीमुथियुस को इन अनन्त विचार-विमर्श में न फंसने की चुनौती दी थी, परन्तु विश्वास द्वारा परमेश्वर के वचन को ग्रहण करने की।

पौलुस ने तीमुथियुस को स्मरण कराया कि इफिसुस में उसकी सेवकाई का लक्ष्य प्रेम था (पद 5)। ये झूठे शिक्षक बौद्धिक लोग थे। वे तर्क-वितर्क करना जानते थे परन्तु उन्होंने न तो परमेश्वर से और न ही उसके लोगों से प्रेम किया। उनके तर्कों ने कलीसिया को विभाजित कर दिया था। वे जहां कहीं भी गए, वाद-विवाद और दुर्व्यवस्था का कारण बने।

पौलुस ने तीमुथियुस पर यह स्पष्ट कर दिया था कि जिस प्रेम के बारे में वह बता रहा था वह प्रेम एक शुद्ध हृदय से आया था। यह प्रेम परमेश्वर के एक सामर्थशाली कार्य का परिणाम था। बिना किसी स्वार्थी उद्देश्य के यह शुद्ध और साफ था। यह प्रेम एक शुद्ध विवेक से आया था। अन्य शब्दों में, यह एक ऐसा प्रेम है जो परमेश्वर के साथ एक सही संबन्ध से आया है, एक ऐसे हृदय से जिसकी बड़ी इच्छा परमेश्वर के साथ एकता में रहने और प्रत्येक तरह से उसमें आज्ञाकारी बने रहने की होती है। यह निष्कपट विश्वास से भी आता है। एक निष्कपट विश्वास एक सच्चा विश्वास होता है। बहुत से हैं जो बाहरी रूप से धर्म का पालन करते हैं परन्तु जिनका हृदय परमेश्वर से दूर रहता है। पौलुस उन लोगों के बारे में बोलता है जो पूरी तरह से शुद्ध हैं। उनके उद्देश्य ईमानदार होते हैं। उनके हृदय परमेश्वर के साथ सही होते हैं।

इफिसुस में मुझे लगता है कि उनमें से अधिकांश अपने तर्क वितर्क करने की योग्यता में प्रभावी थे। उन्होंने कम महत्वपूर्ण के विवरण पर तर्क-वितर्क किया। तथापि, पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि उसका लक्ष्य ऐसे लोगों का पुनरुत्पादन करने का नहीं था जो सिद्धान्त पर तर्क वितर्क करें, परन्तु इसके विपरीत ऐसे लोग जो परमेश्वर से प्रेम करें, जिनके हृदय शुद्ध हों, जिनका विवेक साथ हो और जिनका विश्वास निष्कपट हो।

इफिसुस में परीक्षा परमेश्वर के प्रेम से भटकने की थी। लोग बेकार के तर्कों में फंसे हुए थे। ऐसे बहुत से थे जिन्हें व्यवस्था और परमेश्वर की मार्गों पर तर्क करना अच्छा लगता था। जबकि उनके तर्क सही थे, पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि वे नहीं जानते थे कि वे किसके बारे में बोल रहे थे (पद 7)

पद 8 में पौलुस ने तीमुथियुस को स्मरण कराया कि यदि व्यवस्था को सही रीति से काम में लाया जाए तो वह भली है। इसे उन लोगों को अपराध बोध कराने के लिए बनाया गया था जो परमेश्वर की इच्छानुसार जीवन नहीं बिता रहे थे। पद 9-10 में पौलुस ने तीमुथियस को स्मरण कराया कि व्यवस्था ने कैसे विद्रोह और अधर्म के बारे में बताया। यह पाप और अधर्म, हत्या, व्यभिचार, और सभी तरह की दुष्टता की निन्दा करती है। यह गुलामी के व्यापारियों, झूठों और झूठी साक्षी देने वालों के विरुद्ध बोली। इसने पाप को प्रगट किया और वह सिखाया जो सही था।

पौलुस व्यवस्था के विरुद्ध नहीं था परन्तु इफिसुस में ऐसे लोग थे जिन्होंने व्यवस्था और इसके उद्देश्यों को गलत तरह से प्रस्तुत किया था। इसके विपरीत कि व्यवस्था को मसीह की ओर इशारा करने दें, इन लोगों ने इसके सिद्धान्तों; नियमों और विधियों को घटाया। यीशु के दिनों के फरीसियों के समान, उन्होंने व्यवस्था के कठोर पहलुओं की शिक्षा दी और ऐसा उन्होंने प्रेम रहित होकर किया। उनका लक्षय परमेश्वर को एक शुद्ध हृदय, साफ विवेक और निष्कपट विश्वास से प्रेम करने का नहीं था। वे पत्रों, शब्दों, सिद्धान्तों, जीवन-शैली के प्रति अधिक चिन्तित रहते थे। उन्होंने मसीह की देह में विभाजन करने के लिए व्यवस्था का प्रयोग किया। उन्होंने नियंत्रण व छल करने के लिए इसका प्रयोग किया। उन्होंने एक जीवन शैली को प्रोत्साहन दिया, न कि मसीह के संबन्ध को। उन्होंने धार्मिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया और प्रभु परमेश्वर के लिए आराधना का बलिदान दिया।

इससे प्रगट होता है कि तीमुथियुस की सेवकाई इफीसी लोगों को परमेश्वर से प्रेम करने तथा उसके लोगों से प्रेम करने को प्रेरित करने की थी। उनका विश्वास सही सिद्धान्त, सही जीवन-शैली और सही परम्पराओं जैसा लगता था। वे परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम को खोने के खतरे में थे। प्रभु ने इसी के बारे में पौलुस को उस समय बताया जब उसने इफिसुस की कलीसिया को प्रकाशितवाक्य 26:1-5 में लिखा था:

> (2:1) ''इफिसुस की कलीसिया के दूत को यह लिखा कि जो सातों तारे अपने दहिने हाथ में लिए हुए है और सोने की सातों दीवटों के बीच में फिरता है, वह यह कहता है कि: (2) मैं तेरे काम और परिश्रम, और तेरा धीरज जानता हूं; और यह भी कि तू बुरे लोगों को तो देख नहीं सकता;

और जो अपने आप को प्रेरित कहते हैं, और हैं नहीं, उन्हें तूने परखकर झूठा पाया। (3) और तू धीरज धरता है, और मेरे नाम के लिए दुख उठाते उठाते थका नहीं। (4) पर मुझे तेरे विरुद्ध यह कहना है कि तू ने अपना पहला सा प्रेम छोड़ दिया है। (5) सो चेत कर कि तू कहां से गिरा है, और मन फिरा और पहले के समान काम कर; और यदि तू मन न फिराएगा, तो मैं तेरे पास आकर तेरी दीवट को उस स्थान से हटा दूंगा।

यद्यपि इफिसुस की कलीसिया सेवा, सत्य और दृढ़ता में समर्पित कलीसिया थी, तौभी इसने अपने प्रथम प्रेम को खो दिया था। मसीहियत प्राथमिक रूप से सिद्धान्त को बढ़ावा देने के बारे में नहीं है। यह विधि और नियमों के बारे में नहीं है। यह मसीह के साथ एक गहरे संबन्ध में प्रवेश करने के बारे में है। हमारी सेवकाई में हम ऐसे लोगों का उत्पादन कर सकते हैं जो सिद्धान्तों को लेकर दूसरों से तर्क वितर्क कर सकते हैं, परन्तु क्या वे प्रभु से प्रेम करते हैं? वे सत्य को जानते हैं परन्तु क्या वे सत्य की वास्तविकता में रह रहे हैं? वे सत्य को जानते हैं परन्तु क्या उनमें विश्वास है?

इफिसुस की कलीसिया पर धर्मी लोगों द्वारा इस कारण से प्रहार किया गया था कि एक निश्चित सिद्धान्त व जीवन शैली को बढ़ावा दिया जाए। वे ऐसे शिक्षकों द्वारा परीक्षा का सामना कर रहे थे जो स्वयं तर्क-विर्तक कर सकते थे। पौलुस ने तीमुथियुस को उन्हें यह सिखाने को भेजा कि प्रभु के लिए प्रेम से कैसे जीयें।

विचार करने के लिए:

- पौलुस किस समस्या के बारे में चाहता था कि तीमुथियुस इफिसुस में इसके बारे में बताए?
- पौलुस ने तीमुथियुस को सेवकाई में किस लक्ष्य को रखने के लिए बताया था?
- क्या यह महत्वपूर्ण है कि हम परमेश्वर और उसके उद्देश्यों से संबन्धित प्रत्येक चीज़ को जानें? परमेश्वर के साथ हमारे संबन्ध में विश्वास की क्या भूमिका है?
- सत्य को "जानने" तथा सत्य को "जीने" के बीच क्या अन्तर है?
- क्या सही सिद्धान्तों के बारे में प्रचार करना और सिखाना सही है, न कि मसीह के प्रेम करने के बारे में?
- क्या आप प्रभु यीशु से प्रेम करते हैं या उसके साथ आपका हृदय संबन्ध सिद्धान्त और परम्परा बन कर रह गया है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर से आप में यह देखने को कहें कि क्या आपका हृदय शुद्ध है, आपका विवेक साफ है और आपका विश्वास निष्कपट है।
- परमेश्वर से आपको उस पर भरोसा करने को विश्वास देने को कहें जब कि आप समझते भी न हों।
- प्रभु को ऐसे समयों के लिए आपको क्षमा करने को कहें जब आपने बिना प्रेम के सत्य को बांटा था।
- परमेश्वर से कहें कि वह आपको उसके तथा उसके लोगों के प्रति एक बड़े प्रेम से भर दे। उससे कहें कि वह आपके द्वारा उस प्रेम से वह सब प्रवाहित करे जो कुछ भी आप करते हैं।

◀▶

13

पौलुस की गवाही

पढ़ें 1 तीमुथियुस 1:12–19

प्रेरित पौलुस के बारे में एक और उद्‌भुत चीज़ यह है कि उसने कभी भी अपने उद्धार के आश्चर्य को खोया नहीं था। उसने कभी भी परमेश्वर को उसकी सेवा करने का अवसर देने के कारण धन्यवाद देना बंद नहीं किया था। वह जीवन में अपनी सेवकाई और बुलाहट को लेकर उत्तेजित था।

पद 12 में ध्यान दें कि उसने प्रभु यीशु मसीह को उसे विश्वासयोग्य समझकर एक प्रेरित के रूप में अपनी सेवा के लिए ठहराने को धन्यवाद दिया। उसने प्रभु को केवल अपने चुने जाने के लिए ही धन्यवाद नहीं दिया परन्तु उसे सामर्थ और बल देने के लिए भी। परमेश्वर ने आपको क्या करने के लिए बुलाया है? उसने आपको कौन से दान दिये हैं? क्या आप इस बुलाहट से प्रसन्न हैं? क्या आपका हृदय उस समय धन्यवाद और प्रशंसा से भर जाता है जब आप यह सोचते हैं कि परमेश्वर ने कैसे आपको यह सेवकाई दी और कैसे वह अपनी महिमा के लिए आपको सामर्थ देना चाहता है?

पौलुस को प्रभु के प्रति जिस चीज़ ने अधिक धन्यवादी बनाया था वह यह सच्चाई थी कि वह इसके योग्य नहीं था कि परमेश्वर उसे इस तरह से बुलाता। वह एक दोष लगाने वाला रहा था। उसने कलीसिया को सताया था। वह एक हिंसक पुरुष रहा था जिसने मसीहियों पर यीशु के नाम को शाप देने का दबाव डाला था (प्रेरित. 26:11)। परमेश्वर ने पौलुस पर अद्वितीय दया दिखाई थी, क्योंकि उसने जो कुछ भी किया था वह अनजाने में किया था वह न जानते हुए कि वह क्या कर रहा था।

प्रभु यीशु ने प्रार्थना की कि पिता उन सभी को क्षमा करे जिन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया था क्योंकि वे नहीं जानते थे कि क्या कर रहे थे (लूका 23:34)। उन सभी के लिए क्षमा उपलब्ध है जो अविश्वास या अनजाने में कार्य करते हैं। पौलुस पर इसी कारण दया को दिखाया गया था क्योंकि वह इसे नहीं समझता था। वह विश्वास में हमारा नेतृत्व करता है कि जो सत्य को जानने पर भी

जानबूझकर पाप करते हैं उनके लिए इस क्षमा की गारंटी नहीं होगी। इब्रानियों का लेखक इब्रानियों 10:26–27 में जो कुछ कहता है उस पर विचार करें:

> क्योंकि सच्चाई की पहचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जानबूझकर पाप करते रहें; तो पापों के लिए फिर कोई बलिदान बाकी नहीं। हाँ, परन्तु दण्ड का एक भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगा।

सत्य को जानना और उससे फिरना संभव है। अनजाने में कार्य करना एक चीज़ है और जिस सत्य को हम जानते हैं उसके विरुद्ध विद्रोह में कार्य करना दूसरी चीज़ है। बहुत से अविश्वासी अनजाने में कार्य करते हैं। वे सत्य को समझते नहीं हैं। वे अपने मनों में यह मानते हैं कि वे सही कर रहे हैं। तौभी, कुछ ऐसे हैं जिन्होंने सुसमाचार को सुना व समझा है परन्तु इसके प्रति समर्पण करने से इंकार कर देते हैं। वे सत्य के विरुद्ध विद्रोह करते हैं। वे पश्चात्ताप करने को परमेश्वर के आत्मा की बुलाहट को अस्वीकार देते हैं। एकमात्र आशा को अस्वीकार करने वाले नाश होंगे।

जब पौलुस यह समझ गया कि वह क्या कर रहा था, उसने पश्चात्ताप किया। उसे क्षमा कर दिया गया था और परमेश्वर ने एक सामर्थी तरीके से उसका प्रयोग किया था। यद्यपि उसने कलीसिया को सताया था तौभी उसने ऐसा सत्य को जाने बिना किया था। उसने ऐसा अनजाने में किया था।

पौलुस अपने उद्धार का श्रेय अपनी किसी योग्यता को नहीं देता। वह जानता था कि वह पहले एक दोष लगानेवाला और कलीसिया को सतानेवाला था। पद 14 में उसने तीमुथियुस को बताया कि परमेश्वर ने अपना अनुग्रह उस पर ब अहुतायत से उण्डेला था। पौलुस यह स्पष्ट नहीं कर सका था कि परमेश्वर ने उस पर अपना अनुग्रह इस तरह से क्यों उण्डेला था। इस अद्‌भुत क्षमा के लिए वह परमेश्वर का दोषी था। पद 14 में इस पर ध्यान दें कि परमेश्वर ने प्रेम और विश्वास को भी पौलुस पर उण्डेला था। पौलुस ने अपने विश्वास को परमेश्वर के एक दान के रूप में देखा था। जिस प्रेम ने उसके हृदय को भर दिया था वह भी परमेश्वर की ओर से एक दान था। पौलुस जानता था कि जिस विश्वास और प्रेम का अनुभव वह कर रहा था वह उसके पापी स्वभाव का भाग नहीं था। पौलुस प्रत्येक चीज़ के लिए परमेश्वर का ऋणी थाा। उसका उद्धार, उसका विश्वास, उसका प्रेम परमेश्वर की ओर से दान थे।

पौलुस को सदैव आश्चर्य होता था कि परमेश्वर एक अयोग्य पापी को लेकर अपना पवित्र आत्मा उसमें डालता है। इस सत्य को लेकर कोई प्रश्न नहीं था कि यीशु मसीह इस संसार में पापियों को बचाने के लिए आया था। पौलुस ने इस सत्य

के आश्चर्य को कभी नहीं खोया था। वह जानता था कि वह इस संसार का सबसे बुरा पापी था। प्रभु के कार्य को समाप्त करने के लिए वह हर सीमा तक गया था। उसने कलीसिया को सताया था। वह विश्वासियों की मृत्यु और बन्दी बनाए जाने का कारण था। पौलुस अपने पाप को कभी नहीं भूला था। अपने जीवन के शेष समय उसने उन लोगों की याद में बिताया था जिन्हें उसने सताया था।

इस बात की सच्चाई कि वह कितना बुरा था, वह पौलुस द्वारा परमेश्वर अनुग्रह पर आश्चर्य करते हुए दिखती है। वह जानता था कि परमेश्वर ने उसका और उसके उदाहरण का प्रयोग संसार को दिखाने के लिए किया था। परमेश्वर पौलुस को दण्ड दे सकता था। वह उससे अपना मुंह फेर सकता था। इसके विपरीत, उसने अद्भुत धीरज को दिखाया था। परमेश्वर ने उसे क्षमा कर दिया था ताकि दूसरों के लिए भी आशा हो। यदि, परमेश्वर एक दोष लगानेवाले व कलीसिया को सतानेवाले को बचा सकता है तो वह किसी को भी बचा सकता है। कितने लोगों को प्रेरित पौलुस की गवाही से प्रोत्साहन मिला है? उसकी गवाही आशा देती है। यह हमें याद दिलाती है कि परमेश्वर कठोर प्राणों तक पहुंचकर भी उन्हें अपने निकट ला सकता है।

प्रभु यीशु ने जो कुछ भी किया उसका विचार पौलुस को आशीष देता था। वह परमेश्वर की स्तुति करता व उसे धन्यवाद देता था। पद 17 में उसने इस स्तुति को व्यक्त किया था। एक अनन्त राजा के रूप में उसने परमेश्वर की आराधना की थी। जिस तरह से एक अनन्त राजा से कभी भी राज्य को नहीं लिया जाएगा। वह अमर है। वह मर नहीं सकता। इसका अर्थ है कि वह हमेशा हमारे लिए रहेगा। वह अदृश्य है। बेशक हम उसे देख न पाएं तौभी हम उस पर भरोसा कर सकते हैं। चाहे हम उसके मार्गों को न समझें तौभी हमारा भरोसा उस पर हो सकता है। यह अनन्त राजा सभी आदर, महिमा, स्तुति और आराधना के योग्य है। यह एक अनन्त राजा है परन्तु यह बुरे से बुरे पापी को भी प्रेम से सिखाता है।

पौलुस इस अध्याय में तीमुथियुस को उन लोगों से व्यवहार करने के बारे में कह रहा है जो अन्तहीन वंशावलियों और कहानियों में फंस चुके थे। उसने तीमुथियुस को स्मरण कराया कि उसे उन्हें सिखाना था कि परमेश्वर को एक शुद्ध हृदय, साफ विवेक और निष्कपट विश्वास के साथ प्रेम करें। पौलुस अपनी गवाही में अपने कहने के अभिप्राय को स्पष्ट करता है। पौलुस का विश्वास मसीह पर था। पौलुस के लिए मसीह केन्द्र था। सिद्धान्त महत्वपूर्ण थे परन्तु प्रभु यीशु के समान महत्वपूर्ण नहीं थे। पौलुस इससे बहुत उत्तेजित था कि यीशु ने उससे कितना अधिक प्रेम किया था। बदले में वह मसीह के प्रेम से भर गया था। इफिसुस के विश्वासियों को सिद्धान्त व रीति-रिवाजों की अधिक चिन्ता रहती थी। उन्होंने प्रभु यीशु के लिए जोश को खो दिया था। पौलुस चाहता था कि तीमुथियुस इस जोश को उनमें फिर से भड़काए क्योंकि मसीह इफिसुस की कलीसिया में था।

पौलुस ने इस विभाग का समापन तीमुथियुस को यह स्मरण कराते हुए किया कि उसने अपने बारे में उसे जो भविष्यवाण्यिां दीं थीं वह उनकी रखवाली करे। हमें यह नहीं बताया गया कि वे भविष्यवाणियां क्या थीं। तथापि, 1 तीमुथियुस 4:13-14 में हम पढ़ते हैं कि तीमुथियुस ने भविष्यवाणी के एक शब्द द्वारा कैसे एक विशिष्ट दान को प्राप्त किया था:

जब तक मैं न आऊं, तब तक पढ़ने, और उपदेश और सिखाने में लौलीन रह। उस वरदान से जो तुझमें है, और भविष्यद्वाणी के द्वारा प्राचीनों के हाथ रखते समय तुझे मिला था, निश्चिन्त मत रह।

पौलुस के अनुसार, तीमुथियुस उसी क्षण अपनी सेवकाई में इस भविष्यद्वाणी को पूरा होते देख रहा था। उसने उसे इसमें दृढ़ बने रहने को प्रोत्साहित किया।

तीमुथियुस के लिये पौलुस की चेतावनी इफिसुस के झूठे शिक्षकों को अपने बेकार के विमर्श को बन्द करने की आज्ञा देने की थी। उसे वचन की शिक्षा देने के साथ-साथ लोगों को परमेश्वर के प्रति एक गहरे प्रेम में लेकर जाना था जो कि शुद्ध हृदय, साफ विवेक और निष्कपट विश्वास से आता हो। पौलुस ने तीमुथियुस को स्मरण कराया कि इन निर्देशों पर चलते हुए वह एक अच्छी लड़ाई को लड़ने के योग्य हो पाएगा। तौभी, वह केवल विश्वास और साफ विवेक को थामकर ही इस अच्छी लड़ाई को लड़ सकता है। (पद 19) इफिसुस में समस्या यह थी कि कुछ ने इस दृष्टि को खो दिया था। उनके शिक्षकों ने एक निष्कपट विश्वास और साफ विवेक से परमेश्वर से प्रेम नहीं किया था। उनका विश्वास रूपी जहाज़ डूब गया था। हुमिनयुस और सिकन्दर इसके उदाहरण थे। अब वे निन्दा करनेवाले हो गए थे। हमें यह नहीं बताया गया है कि वे इस पाप में कैसे गिरे थे।

पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि उसने इन लोगों को शैतान को इसलिए सौंप दिया था ताकि वे निन्दा करना न सिखाएं। ये लोग शिक्षा पाने से दूर थे। इन्होंने अपने हृदय को कठोर कर लिया था और, इस समय में, किसी भी तरह की शिक्षा से उन्हें कोई सहायता नहीं मिलनेवाली थी। उन्हें शत्रु के हाथों सौंपे जाने की ज़रूरत थी। उन पर हमला करने में शैतान को भी खुशी होती। उन्हें कलीसियाई सहभागिता से हटा दिया गया था। परमेश्वर की आशीष, और कलीसिया से अलग किये जाने पर इन लोगों को कठोर तरीके से शिक्षा को सीखना था। वे उस प्रथम हाथ को देखने वाले थे जहां यह विद्रोह का मार्ग उन्हें लेकर जाने वाला था। उन्हें शैतान द्वारा मारा जाना था। परमेश्वर को कुछ समय के लिए शैतान को उनके जीवनों में कार्य करने देना था। अय्यूब के समान उन्होंने वह सब खो दिया होगा जो उनका था। उन्हें कुछ समय के लिए अन्धकार में

निकाल दिया गया होगा। परमेश्वर ने अपनी आशीष और अपनी उपस्थिति को कुछ समय के लिए उनसे रोककर रखा होगा ताकि इस अनुशासन के द्वारा वे उसके और उसके प्रेम के निकट लौट आएं।

ऐसे समय भी होते हैं जब लोगों के सत्य के अस्वीकारे जाने पर हमें उन्हें कठोर तरीके से सिखाने की ज़रूरत होती है। ऐसे समय भी होते हैं जब हमें उनसे अलग हो जाना चाहिए जिससे वे देह के अन्य सदस्यों को प्रभावित न कर सकें। कई बार ये विद्रोही विश्वासी गहरे पाप और व्रिदोह में गिर जाते हैं। तौभी, पौलुस इस बारे में निश्चित था कि परमेश्वर अपनी विद्रोही संतान को नहीं छोड़ेगा। यद्यपि, वे कुछ समय के लिए शैतान के हाथों में हैं, तौभी वे अब भी शुद्ध किये जाकर परमेश्वर के प्रेम में पुनःस्थापित किये जा सकते हैं।

विचार करने के लिए:

- क्या आप अभी भी अपने उद्धार को लेकर उत्साहित हैं? इस उत्साह को खोने के कारण कौन से हैं?
- पौलुस के उद्धार की गवाही में आप क्या प्रोत्साहन पाते हैं?
- क्या उस सत्य को जानना और उससे अपना मुंह फेरना संभव है? जान बूझकर किये जानेवाला पाप क्या है?
- शैतान को सौंपे जाने का क्या अर्थ है? शैतान को सौंपे जाने का उद्देश्य क्या है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर के आपके हृदय को नरम बनाने और आपको सत्य को दिखाने के लिए धन्यवाद दें।
- परमेश्वर से आपको आज्ञाकारिता में रखने के लिए कहें। उन समयों के लिए उससे आपको क्षमा करने को कहें जबकि सत्य को जानने पर भी आपने उसका पालन नहीं किया था।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि वह उन सभी को सुरक्षित रखने के योग्य हैं जो उस पर आश्रित रहते हैं।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह कठोर से कठोर पापी को भी तोड़ने और मसीह को उस पर प्रगट करने के योग्य हैं।
- क्या आप किसी ऐसे विश्वासी को जानते हैं जो इस समय विद्रोह में चल रहा हो? प्रभु से उन्हें शुद्ध करने और उसके प्रेम में उन्हें स्थापित करने को कहें।

14

ज़रूरत है : प्रार्थना करने वाले पुरुषों की

पढ़ें1 तीमुथियुस 2:1–8

तीमुथियुस को उन लोगों से बोलने की चुनौती देते हुए जो इफिसुस में व्यर्थ के विमर्श में फंसे हुए थे, पौलुस अन्य व्यावहारिक विषयों की ओर बढ़ता है। अध्याय 2 के पहले भाग में पौलुस तीमुथियुस को स्मरण कराता है कि पुरुषों (और स्त्रियों) को प्रार्थना करने के लिए बुलाए जाने की ज़रूरत है।

पद 1 में पौलुस बताता है कि विनती, प्रार्थना, निवेदन और धन्यवाद सब मनुष्यों के लिए किए जाएं। इस कथन की जांच हम एक बड़े विवरण से करेंगे। जबकि पौलुस द्वारा यहां उपयुक्त विभिन्न शब्दों की जांच करना सहायक रहा है, तौभी हमें उनके बीच अधिक भिन्नता न बनाने के प्रति सावधान रहना है। पौलुस का केन्द्र भिन्न तरह की प्रार्थनाओं को सिखाने के बारे में अधिक नहीं था क्योंकि लोग ऐसा आसानी से कर लेते हैं। ऐसा कहते हुए, आइये पौलुस द्वारा प्रयुक्त किये गए शब्दों को यहां संक्षिप्त रूप में देखें।

निवेदन

पौलुस हमें परमेश्वर के निकट निवेदन लाने की चुनौती देता है। ''निवेदन'' शब्द आवश्यकताओं और ज़रूरतों के बारे में बताता है। पौलुस हमें बता रहा है कि हमें अपनी आवश्यकताओं और ज़रूरतों को प्रभु के निकट लाना है। प्रत्येक चीज़ को स्वयं करने के विपरीत, हम अपने निवेदनों को परमेश्वर के सम्मुख रखते हुए उसे नेतृत्व व पूर्ति करने दे सकते हैं।

प्रार्थना

पौलुस यहां जिस दूसरे शब्द को प्रयोग करता है वह ''प्रार्थना'' है। यहां प्रयुक्त यूनानी शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। सर्वप्रथम, ''आगे जाने'' या ''के लिए'' शब्द निकट लाने के लिए है। दूसरा शब्द ''चाहना'' या ''इच्छा''

के लिए है। अन्य शब्दों में, प्रार्थनाएं हमारी इच्छाओं को व्यक्त करते हुए परमेश्वर के निकट आना है। यह दो लोगों के बीच होनेवाली बातचीत के समान है जो एक दूसरे के बहुत निकट होते हैं। यह हमारे हृदय की इच्छाओं और बोझ को परमेश्वर पर व्यक्त करने का समय है। यह बहुत ही पारिवारिक स्वभाव का है। यह किसी पर भी अपनी गहन इच्छाओं और अभिलाषाओं को व्यक्त करना ही नहीं है। प्रार्थना हमारे हृदयों से बोझ को हटाती, परमेश्वर की इच्छा करती और उससे प्रसन्न होती है जो कि हमसे प्रेम करता व हमारी चिन्ता करता है।

मध्यस्थता

पौलुस द्वारा अगला प्रयुक्त शब्द ''मध्यस्थता'' है। इस शब्द का अर्थ परमेश्वर से विनती करने से है। इसका उल्लेख एक ऐसी मुलाकात से किया जा सकता है जो दल एक साथ बैठकर एक विषय पर कार्य करते हैं। मध्यस्थता करने का अर्थ किसी कारण से परमेश्वर के साथ विवरण सहित कार्य करना है। इसमें केवल परमेश्वर का अपना बोझ बांटना ही नहीं आता है, परन्तु उसकी सुनना और उससे बुद्धि प्राप्त करना भी आता है।

यहां प्रयुक्त अन्तिम शब्द ''धन्यवाद'' है यह पूर्णतया स्पष्ट है। इसका अर्थ धन्यवाद देने से है। चीज़ों के सही होने पर हमें इसे करना है परन्तु चीज़ों के कठिन होने पर भी हमें इसे करना है। इसमें परमेश्वर की स्तुति और आराधना करना आता है, जो वह है जो उसने किया।

पद 1 में ध्यान दें कि इन प्रार्थनाओं को प्रत्येक के लिए करना है। इसका अभिप्राय उनसे है जो हमारे निकट हैं तथा इसके साथ-साथ वे भी जो हमारे लिए कठिनाई और समस्या उत्पन्न करते हैं।

पौलुस ने तीमुथियुस को लोगों को उनके लिए प्रार्थना करने की चुनौती दी जो उन पर अधिकारी हैं। इसमें न केवल हम पर नियुक्त आत्मिक अधिकारी ही आते हैं, परन्तु प्रशासनिक अधिकारी भी। पौलुस ने तीमुथियुस को विशिष्ट रूप से बताया कि उसे राजाओं और राजनीतिक अगुवों के लिए प्रार्थना करने की ज़रूरत है। देश पर शासन करने के लिए इन अगुवों को परमेश्वर के ज्ञान और निर्देशन की ज़रूरत है।

विशिष्ट रूप में, पौलुस ने अधिकारियों के लिए प्रार्थना करने को कहा जिससे विश्वासी धार्मिकता और पवित्रता में होकर एक शांतिपूर्ण व शांत जीवन जी सकें। विश्वासी होने के कारण, हमें हमेशा ही स्वीकार नहीं किया जाएगा। ऐसे भी देश हैं जहां एक विश्वासी होना तथा मसीही जीवन जीना बहुत कठिन होता है। विश्वासियों को उनके विश्वास के कारण सताया जाता है। पौलुस प्रार्थना करने को कहता है कि अगुवे हमारे भाइयों और बहनों को शांति तथा धार्मिक

व पवित्र जीवन जीने की योग्यता दें। अपने लोगों के लिए परमेश्वर की यही इच्छा थी (पद 3)। परमेश्वर को उनसे कोई खुशी नहीं मिलती जो उसके लोगों के जीवन को कठिन बना देते हैं। वह यह चाहता है कि उसके लोग इस संसार के सम्मुख शांति और पवित्रता में होकर अपने विश्वास को जीयें जिससे उनके जीवन सभी के लिए एक गवाही या साक्षी हों।

पद 5 में पौलुस ने तीमुथियुस को स्मरण कराया कि एक ही परमेश्वर है और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई हैं। एक बिचवई दो पक्षों को आपस में मिलाता है। केवल प्रभु यीशु ही पापी मनुष्य और परमेश्वर का मेल करा सकता है। उसने स्वयं को हमारे पापों के भुगतान के रूप में दे दिया। ध्यान दें कि पौलुस कहता है कि मसीह ने अपने आपको सभी के प्रायश्चित के लिए दे दिया। किसी को भी बहिष्कृत नहीं किया गया है। कोई भी ऐसा नहीं कह सकता कि यीशु ने उसके लिए उद्धार का प्रबन्ध नहीं किया है।

पद 7 के अनुसार पौलुस को अन्यजातियों तक उद्धार का संदेश पहुंचाने को परमेश्वर द्वारा बुलाया गया था। ये अन्यजाति अन्धकार में रह रहे थे। हमारे लिए यहां यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि जबकि ये अन्यजाति पाप में खोए हुए थे, इफिसुस के लोग वंशावलियों और कहानियों पर तर्क-वितर्क करने में व्यस्त थे। यहां एक वास्तविक तुलना पाई जाती है। पौलुस ने इफिसुस के विश्वासियों को अपने आस-पास के लोगों की आवश्यकताओं को देखने हेतु अपनी आंखों को खोलने की चुनौती दी। अध्याय एक में उसने उन्हें इन महत्वहीन विषयों पर बेकार का विचार-विमर्श न करने को बुलाया। अब वह उन्हें परमेश्वर के सम्मुख अगुवों और हर जगह के स्त्री व पुरुषों के प्राणों के लिए दोहाई देने को बुलाता है।

पद 8 में ध्यान दें कि पौलुस ने पुरुषों को बिना क्रोध और विवाद के पवित्र हाथों को ऊपर उठाकर प्रार्थना करने के लिए किस तरह से बुलाया। वे कहानियां और वंशावली पर झगड़ा करने में इतने व्यस्त हो गए थे कि सबसे महत्वपूर्ण विवरण से चूक रहे थे। इन बेकार के विषयों पर विवाद और विभाजन करने के विपरीत पौलुस ने विश्वासियों के लिए परमेश्वर के सम्मुख प्रार्थना करने की चुनौती दी जिससे वे दृढ़ बने रहने को बुद्धि व बल प्राप्त करें।

कम महत्वपूर्ण विषयों में फंसा जाना बहुत आसान है। छोटे विषयों पर कलीसियाओं का विभोजन हो जाता है। छोटे दार्शनिक विषयों में अन्तर पाए जाने पर विश्वासी मिलकर काम करने से इन्कार कर देते हैं। इसी बीच लोग अपने पाप में नाश हो जाते हैं। अन्यों की उनके विश्वास के कारण सताया जाता है। पौलुस प्रार्थना करनेवाले स्त्री व पुरुषों की खोज में था। वह हमें हमारी प्राथमिकताओं को लेने और प्रार्थना करने व परमेश्वर के राज्य के विस्तार की खोज करने को बुलाता है।

विचार करने के लिए:

- क्या आप अपनी समस्या को परमेश्वर के पास लाए बिना स्वयं उसका समाधान करने की परीक्षा में पड़े हैं? स्पष्ट करें।
- पौलुस हमें प्रार्थना करने को बुलाता है। क्या आप प्रार्थना के लिए समय निकालते हैं? यह महत्वपूर्ण क्यों है?
- प्रार्थना में सुनने का स्थान कौन सा है? परमेश्वर ने प्रार्थना में आपकी अगुवाई कैसे की है?
- सुसमाचार को फैलाने के मार्ग में आने वाले छोटे विषय कौन से हैं? ये विषय कलीसिया को आगे बढ़ने से कैसे रोकते हैं?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु से उन चीज़ों के लिए अपने हृदय को खोलने को कहें जिन्होंने आपको उन प्राथमिकताओं से अलग किया है जो परमेश्वर की आपके जीवन के लिए हैं।
- कुछ क्षण परमेश्वर को जो वह है और जो कुछ वह आपके जीवन में कर रहा है, उसके लिए धन्यवाद देने को निकालें।
- परमेश्वर से आपके समाज के आत्मिक और राजनीतिक अगुवों तक पहुंचने को कहें। परमेश्वर को इस तरह से जाने को कहें कि वह आपके क्षेत्र में एक ऐसे वातावरण की रचना करे जहां विश्वासी शांति से अपने विश्वास में जी सकें।

◀▶

15

स्त्रियों के लिए वचन

पढ़ें 1 तीमुथियुस 2:9-15

इस अध्याय के प्रथम भाग में पौलुस पुरुषों से बोला था। उसने उन्हें प्रार्थना के पुरुष बनने की चुनौती दी थी। अध्याय 2 के दूसरे भाग में वह अपना ध्यान स्त्रियों की ओर लगाता है। उनके लिए भी उसके पास कुछ कहने को है। आइये देखें कि पौलुस इस परिच्छेद में स्त्रियों से क्या कहता है।

संकोच और संयम के वस्त्र पहनना (पद 9-10)

प्रेरित स्त्रियों को यह बताते हुए आरम्भ करता है कि अपने को संकोच और संयम के साथ सुहावने वस्त्रों से संवारें (एक ऐसा तरीका जो उपयुक्त होने के साथ-साथ आदरयुक्त भी हो)। उन दिनों स्त्रियों के लिए स्वयं की ओर आकर्षित करने के लिए वस्त्र पहनने की परीक्षा थी। पद 9 में ध्यान दें कि वे आपने बाल गूंथने, सोने, और मोतियों और बहुमोल पत्थरों के गहने पहनने में समय बिताती थीं। वे लोगों को यह बताना चाहती थीं कि वे धनी हैं और समाज में उनका ऊंचा स्थान है।

पौलुस ने स्त्रियों को इस तरह के व्यवहार में न फंसने की चुनौती दी थी। इसके विपरीत, उन्हें संकोच के वस्त्र पहनने थे। हमारी संस्कृति और समाज में हम प्राय: लोगों का न्याय उनके द्वारा पहने जाने वाले वस्त्रों से या उनके दिखने के ढंग से करते हैं। अच्छा दिखने और अच्छे वस्त्र होने पर हम महत्वपूर्ण होने का अनुभव करते हैं। पौलुस ने इफिसुस की स्त्रियों को बताया कि वस्त्र और दिखावा एक स्त्री की कीमत को नहीं दिखाते हैं। पौलुस उनसे चिथड़े पहनने या बुरा दिखने का प्रयास करने को नहीं कह रहा है। वह उन्हें संसार की सुंदरता और महत्व के विषय में न फंसने को कह रहा है। परमेश्वर बाहरी रूप को देखकर एक व्यक्ति की कीमत को नहीं मापता।

कीमत के इस प्रश्न से दूर इस तरह से वस्त्र पहनने की परीक्षा थी जो पुरुषों को ठोकर खिलाए या उन्हें उनकी लालसा कराए। पौलुस इफिसुस की स्त्रियों

को सुहावने व आदरणीय वस्त्र पहनने की चुनौती देता है जिससे वे किसी के लिए भी ठोकर का कारण न बनें।

अपने बाह्य रूप पर ध्यान देने के विपरीत पौलुस स्त्रियों को भले कार्य पहनने की चुनौती देता है (पद 10)। अन्य शब्दों में, यह चिन्ता करने के बजाय कि क्या पहनें या स्वयं को बाहर से अधिक सुंदर कैसे बनाएं, उन्हें अपने आत्मिक दानों का प्रयोग दूसरों को आशीष के लिए करना था। पौलुस जिस सुंदरता के बारे में बताता है वह सुंदरता हृदय से आती है। हो सकता है कि आप इस तरह की स्त्रियों से मिले हैं। वे करुणा और प्रेम से भरी होती हैं। वे कष्ट उठाने वालों की पीड़ा का अनुभव कर उन तक पहुंचती हैं। कई बार उन पर ध्यान नहीं दिया जाता है। वे आधुनिक वस्त्र पहनने के कारण सुंदर नहीं हैं परन्तु करुणा और प्रेम से भरे होने के कारण उनकी खूबसूरती सतह से भी गहरी है। परमेश्वर इसी की खोज में रहता है।

शांति और समर्पित (पद 11-14)

इफिसुस की स्त्रियों के लिए पौलुस की दूसरी चुनौती यह थी कि उन्हें शान्त रहना व समर्पण करना सीखना है। हमें यह समझने की ज़रूरत है कि शान्त रहना केवल स्त्रियों के लिए ही आरक्षित नहीं थी। थिस्सलुनीकियों पद 11में पौलुस ने थिस्सलुनीके के लोगों को बताया कि चुपचाप या शांत रहने को अपना लक्ष्य बना लें:

और जैसी हमने तुम्हें आज्ञा दी, वैसे ही चुपचाप रहने और अपना अपना काम काज करने, और अपन हाथों से कमाने का प्रयत्न करो।''

जबकि पौलुस हम सभी से शान्त रहने की आशा करता है, इस परिच्छेद में वह विशिष्ट रूप से इफिसुस की स्त्रियों से बोलता है। ध्यान दें कि शांत और आधीनता में रहना जिसके बारे में पौलुस ने कहा वह सार्वजनिक शिक्षा के संदर्भ में आंशिक था। पौलुस ने इफिसुस की स्त्रियों को बताया कि वह उन्हें उपदेश देने और पुरुष पर आज्ञा चलाने की अनुमति नहीं देता (पद 12)। इसके विपरीत उसने उन्हें शांतिपूर्वक सुनने की चुनौती दी।

इस परिच्छेद पर बहुत तर्क-वितर्क होते रहे हैं। कुछ का मानना है कि पौलुस की शिक्षा इफिसुस के लिए है जो कि उस समय में इफिसुस की कलीसिया में पाई जानेवाली विशिष्ट समस्या से संबन्धित है। उन्हें लगता है कि जो कुछ उसने यहां कहा वह हमारी आज की कलीसिया पर लागू नहीं होता है। तथापि, इस तरह की समझ की कुछ महत्वपूर्ण समस्याएं रही हैं।

पौलुस इस परिच्छेद में स्पष्ट करता है कि स्त्रियों के उपदेश न देने और अधिकार न करने का कारण यह है कि हव्वा से पहले आदम को बनाया गया था। उन दिनों की संस्कृति में, पहलौठे को एक विशिष्ट भूमिका निभानी होती थी। उससे अपने परिवार का अगुवा होने की आशा की जाती थी। उसे पिता की मीरास दी जाती थी तथा उसे उस मीरास की देख–रेख करनी होती थी। पौलुस हमें बताता है कि आदम को पहलौठे के रूप में बनाया गया था। चूंकि वह पहलौठा था, इसी कारण परमेवर के सम्मुख उसके कुछ उत्तरदायित्व व अनिवार्यताएं थीं। परमेश्वर ने उससे उसके परिवार का अगुवा होने की आशा की थी। पहलौठा होने का अर्थ यह नहीं था कि वह बहुत महत्वपूर्ण हो जाता था। यदि कहा जाए तो उसकी भूमिका एक सेवक की भूमिका थी। अपने परिवार की देखरेख करने और उसकी आवश्यकताओं को पूरा करने का दायित्व उसी का था।

पहलौठे के इस नियम पर आधारित स्त्रियों के शांत व आधीनता में रहने की पौलुस की शिक्षा यह दिखाती है कि स्त्रियों के बारे में तीमुथियुस को दिये गए निर्देश विशिष्ट रूप से इफिसुस की कलीसिया से संबन्धित नहीं थे, परन्तु एक ऐसे सिद्धान्त से जो अदन की वाटिका में पुरुष और स्त्री की रचना तक चला गया था।

पद 14 में पौलुस तीमुथियुस को इसका दूसरा कारण देता है कि स्त्रियों को उपदेश क्यों नहीं देना या पुरुषों पर अधिकार क्यों नहीं चलाना है। उसने तीमुथियुस को स्मरण कराया कि हव्वा ही भले और बुरे के ज्ञान वाले वृक्ष के फल को खाकर शैतान के बहकावे में आई थी। फल खाने के बाद उसने इसे आदम को दिया और उसने भी इसे खाया। हव्वा का कार्य संसार में पाप को लाया। मानो, पौलुस यहां यह कह रहा हो कि ये हव्वा के पाप के परिणाम थे।

हमारे लिये यह जानना महत्वपूर्ण है कि हव्वा की आधीनता पाप का परिणाम नहीं थी। आदम का प्रभुत्व में होना शैतान की परीक्षा से उत्पन्न फल का परिणाम नहीं था। हम पहले ही देख चुके हैं कि आदम पहलौठा था। पहलौठा होने के कारण उसे प्रमुख होने की भूमिका को पूरा करना था। उत्पत्ति की पुस्तक हमें बताती है कि हव्वा को आदम की ‘‘सहायक’’ होने के लिए बनाया गया था (उत्प. 2:20–22)। सहायक होने के कारण उसे एक भिन्न भूमिका को पूरा करना था। हव्वा के पाप में गिरने से उसके अपने पति की आधीनता में रहने की परमेश्वर की योजना को नहीं बदला था।

मानों पौलुस यहां यह कह रहा हों कि हव्वा का शैतान के धोखे में आना और अपने पति को पाप में ले जाना, केवल उसके लिए ही परिणाम उत्पन करने

वाला नहीं बना परन्तु आनेवाली पीढ़ियों के लिए भी। इसके बाद से हव्वा से उत्पन्न होनेवाली प्रत्येक संतान परमेश्वर के सम्मुख दोषी होती। उसे इस जानकारी के साथ रहना होगा कि उसने परमेश्वर के साथ अपने संबन्ध में मृत्यु के लिए द्वार को खोलने के साथ साथ पाप द्वारा इस संसार के विनाश के लिए भी मार्ग को खोला। युद्ध, अकाल, विवाहों और परिवारों का टूटना, हत्या, बलात्कार, बेईमानी और इस संसार के इतिहास में किया गया कोई भी भयानक कार्य पाप के प्रवेश करने का परिणाम है। यह सब उस दिन अदन की वाटिका में होने से रोका जा सकता था जब हव्वा ने शैतान की परीक्षा के अधीन होकर पाप के लिए द्वार को खोला था। जबकि आदम ने भी वाटिका के वर्जित फल को खाया था, तौभी हव्वा को ही पाप के लिए प्रवेश द्वार खोले जाने के रूप में जाना जाता है।

जबकि कलीसिया में स्त्रियों की भूमिका को लेकर कई विचार पाये जाते हैं, हमें यह समझने की ज़रूरत है कि पौलुस का तर्क सांस्कृतिक नहीं परन्तु दार्शनिक है। वह हमें पहलौठे के नियम की ओर वापस ले जाता है। वह हमें स्मरण कराता है कि हव्वा के द्वारा पाप ने संसार में कैसे प्रवेश किया था। वह सिखाता है कि सृष्टि के सिद्धान्त के अनुसार परमेश्वर ने पुरुषों और स्त्रियों को भिन्न कार्य दिये हैं।

मेरा मानना है कि पौलुस यहां हमें जो सिखा रहा है उसे हमें आदर देने की ज़रूरत है। यह सत्य है कि हम उस समय से बहुत आगे निकल गए हैं तथा स्त्रियां सेवकाई में आ गई हैं। सामान्यता पुरुषों का सेवकाइयों पर प्रभुत्व और नियंत्रण रहा। पौलुस स्त्रियों को सेवकाई करने को प्रोत्साहित करता है। उसने उन्हें बताया कि उनकी सुन्दरता उनके सेवकाई करने वाले हृदय में ही पाई जाए। उन्हें भले कार्यों के वस्त्र धारण करने हैं। यह सब हमें दिखाता है कि हमें हमारी कलीसियाओं में स्त्रियों के विविध तरह से कार्य करने के द्वार खुले रखने की ज़रूरत है। तौभी, इसी के साथ-साथ जो कुछ पौलुस हमें यहां सिखा रहा है हमें उसे आदर देने की ज़रूरत है, पुरुषों को अगुवों के रूप में अपनी भूमिका को गंभीरता से लेने की ज़रूरत है। तथापि, उन्हें ऐसा देह में स्त्रियों को परमेश्वर प्रदत दायित्वों को पूरा करने की अनुमति देते हुए सेवक होने के नाते करना है।

इस परिच्छेद में पौलुस का केन्द्र शिक्षक/प्राचीन की भूमिका को लेकर है। वह हमें स्मरण कराता है कि परमेश्वर मन से चाहता है कि मसीही पुरुष इस शिक्षक और अगुवे के दायित्व को गंभीरता से लें। उनका यह स्तर उन्हें स्त्रियों से ऊपर नहीं उठाता है। यह उन्हें पूरी देह का सेवक बनाता है। पवित्रशास्त्र की स्पष्ट शिक्षा यह है कि अगुवे सेवक हैं। स्त्रियां को परमेश्वर द्वारा पुरुषों को दी गई सेवक / अगुवाई भूमिका को आदर देना है। दूसरी ओर पुरुषों को अपने बीच

सेवकाई करनेवाली स्त्रियों के लिए विश्वासयोग्य होना है। उन्हें उनकी आवश्यकताओं का ध्यान रखने के साथ-साथ उसी तरह से उनकी सेवा करनी है जिस तरह से यीशु ने अपनी देह-कलीसिया, की सेवा की थी।

बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाना (पद 15)

पौलुस एक बहुत ही अजीब पद के साथ इस अध्याय का समापन करता है। उसने तीमुथियुस को बताया कि यदि स्त्रियां विश्वास, प्रेम और पवित्रता में स्थिर रहें तो बच्चे जनने के द्वारा वे उद्धार पाएंगी। कुछ विवरण सहित हमें इसकी जांच करने की ज़रूरत है।

सर्वप्रथम, पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि स्त्रियां बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएंगी। पवित्रशास्त्र के शेष संदर्भ में हमें इसे समझने की ज़रूरत है पौलुस यह स्पष्ट करता है कि उद्धार पाने का कोई और रास्ता नहीं है सिवाय प्रभु यीशु मसीह और क्रूस पर उसकी मृत्यु के अतिरिक्त। ऐसा कहते हुए हमारे लिए इस पद का यह अर्थ लगाना असंभव होगा कि स्त्रियां बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएंगी। यदि ऐसा होता तो जिन स्त्रियों की संतान नहीं हो सकती, वे उद्धार नहीं पा सकती हैं। इसका दूसरा अर्थ लगाने की ज़रूरत है।

कुछ प्रभु यीशु के जन्म के संदर्भ को देखते हैं। इस अध्याय के संदर्भ में, पौलुस हमें यह स्मरण करा रहा है कि हव्वा ने इस संसार में पाप और बुराई के प्रवेश हेतु द्वार को खोला था। ऐसा दूसरी स्त्री के द्वारा भी हो सकता है जिसका परमेश्वर उद्धार करता। हव्वा संसार में पाप को लेकर आई परन्तु मरियम प्रभु यीशु मसीह को लाई। यहां प्रयुक्त ''उद्धार'' शब्द का अर्थ ''पुनः स्थापन'' या ''फिर से बनाना'' हो सकता है। क्या पौलुस हमें यह बता रहा है कि पाप के लिए द्वार खोलनेवाली लज्जा का कारण है जबकि परमेश्वर द्वारा दूसरी स्त्री को इस संसार में उद्धारकर्ता लाने को चुना गया? मरियम ने प्रभु यीशु को जन्म देने के द्वारा हव्वा द्वारा लाए उस अपमान व लज्जा को हटा दिया। प्रभु यीशु उस सभी को पुनः स्थापित करता है जो पाप के कारण मिट गया था।

पद 15 में भी ध्यान दें कि पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि यदि एक स्त्री विश्वास, प्रेम और पवित्रता में स्थिर बनी रहे तो बच्चे जनने के द्वारा वह उद्धार पाएगी या पुनःस्थापित होगी। हमारे विश्वास के असली होने की जांच यही है कि परीक्षा और जांच के समय में यह कैसे खड़ा होता है। संपूर्ण पवित्रशास्त्र में, परमेश्वर स्त्रियों और पुरुषों को अपने विश्वास, प्रेम और पवित्रता में स्थिर बने रहने को बुलाता है (देखे इब्रा. 10:23, 36; याकूब 1:12; प्रका. 2:26)। एक स्त्री के विश्वास का असली होना उसके विश्वास, प्रेम और पवित्रता में स्थिर बने रहने में पाया जाता है।

परमेश्वर का अपनी कलीसिया के लिए एक उद्देश्य है। उसने सेवक अगुवाई की भूमिका को पूरा करने के लिए पुरुषों को बुलाया है। उसने स्त्रियों को सेवा व भले कार्यों में सक्रिय बने रहने को बुलाया है। वह हमें स्मरण कराता है कि हव्वा के अपमान को मरियम की सन्तान प्रभु यीशु के जन्म लेने के द्वारा हटा दिया गया है। वह उस सब को पुनःस्थापित करने के लिए आया जो पाप के संसार में प्रवेश करने के कारण खो गया था।

विचार करने के लिए:

- क्या आपने बाह्य रूप के द्वारा सुन्दरता का न्याय किया है? इस परिच्छेद में हम सच्ची सुंदरता के बारे में क्या सीखते हैं?
- पुरुष के पहलौठा होने के बारे में पौलुस हमें क्या सिखाता है? पहलौठा होने के कारण उसका क्या दायित्व है?
- आज कलीसिया में स्त्री की क्या भूमिका है? क्या कलीसिया में स्त्रियों और पुरुषों की भूमिका में अन्तर है?
- हव्वा के अपमान की किस तरह से हटाया गया?
- कलीसिया ने स्त्रियों को सेवकाई में कैसे रोककर रखा है? स्त्रियों को महान सेवकाई में उन्मुक्त करने और पुरुषों के अपने प्रमुख होने की भूमिका को गंभीरता से लेने के बीच संतुलन क्या है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर से कहें कि वह लोगों को बाहरी रूप से परे वैसे ही देखने में आपकी सहायता करे जैसे वह उन्हें देखता है।
- परमेश्वर से आपकी उन लोगों को आदर व सम्मान देने में सहायता करने को कहे जो कलीसिया में अधिकारी हैं।
- परमेश्वर से आप पर स्पष्ट रूप से प्रगट करने को कहें कि आपकी क्या भूमिका है और उसने कलीसिया में जिस अगुवाई की स्थापना की है उसकी आधीनता में होकर आप उस भूमिका पर कैसे कार्य कर सकते हैं।

◀▶

16

अध्यक्ष

पढ़ें 1 तीमुथियुस 3:1-7

पौलुस अब अपना ध्यान कलीसियाई अगुवाई की ओर केन्द्रित करता है। इस विभाग में वह तीमुथियुस को अध्यक्ष तथा उसकी योग्यताओं के बारे में बताता है।

पौलुस तीमुथियुस को यह बताते हुए आरम्भ करता है कि यदि एक व्यक्ति अध्यक्ष होना चाहता है तो वह भले काम की इच्छा करता है। अध्यक्ष का कार्य परमेश्वर के राज्य के कार्य में एक बहुत महत्वपूर्ण काम है। इस सेवकाई को करनेवाले आदर का स्थान पाने के योग्य होते हैं। वे जिस कार्य को करते हैं उसके लिए उनका आदर किया जाना चाहिए।

अध्यक्ष के कार्य को हल्के रूप से नहीं लिया जाता था। न ही हर कोई अध्यक्ष हो सकता था। अध्यक्ष परमेश्वर के प्रतिनिधि होते थे और इसी कारण उन्हें उसके लिए जीवन व्यतीत करने और झुण्ड के लिए एक उदाहरण स्थापित करने की आवश्यकता होती थी। पौलुस ने कलीसिया का अध्यक्ष होने के लिए आवश्यक योग्यताओं को निर्धारित किया। इस विभाग में हम इन योग्यताओं की जांच करेंगे।

निर्दोष (पद 2)

''बदनामी रहित'' शब्द का अर्थ 'निर्दोष' है। वह जोकि निर्दोष होता है उसका जीवन परमेश्वर के साथ लयबद्ध होता है। किसी भी चीज़ को उसके विरुद्ध नहीं लाया जा सकता है। इसका अर्थ यह नहीं कि यह व्यक्ति कभी पाप नहीं करता है। तथापि, जब कभी वह गिरता है, वह शीघ्र ही विषय को सही कर लेता है। वह पाप और विद्रोह में नहीं रहता परन्तु परमेश्वर की क्षमा का अंगीकार करता व उसे प्राप्त करता है।

एक ही पत्नी का पति (पद 2)

पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि अध्यक्ष को एक ही पत्नी का पति होना चाहिए। इस बारे में कहने को बहुत सी चीज़ें हैं। सर्वप्रथम, हमें यह समझने

की ज़रूरत है कि यह परमेश्वर का उद्देश्य है कि पुरुषों की केवल एक ही पत्नी हो। यह सच है कि पुराने नियम के पुरुषों की प्राय: एक से अधिक पत्नियां होती थीं। परमेश्वर ने इसकी अनुमति तो दी थी परन्तु यह उसकी योजना में नहीं था। परमेश्वर ने आदम को केवल एक ही पत्नी दी थी। एक से अधिक पत्नियां रखनेवाले पुरुषों को परमेश्वर ने कुछ नियम व विधियों को दिया था, परन्तु यह स्त्रियों को किसी भी अपमान से बचाने के लिए था। पौलुस स्पष्ट करता है कि एक अध्यक्ष को एक से अधिक पत्नी नहीं रखनी थी।

एक पत्नी का पति होने के इस विषय को समझने में कठिनाई हो सकती है। क्या एक पुरुष अपनी पत्नी की मृत्यु पश्चात् पुनर्विवाह करने पर अध्यक्ष के रूप में कार्य नहीं कर सकता? जबकि वह केवल एक ही पत्नी से विवाहित है, तौभी अपने जीवनकाल में उसने एक से अधिक विवाह किये हैं। तलाकशुदा पुरुष के पुनर्विवाह करने के बारे में क्या कहा जा सकता है? पवित्रशास्त्र में तलाक एक अविश्वासयोग्य सहभागी होने या अविश्वासी सहभागी के छोड़कर चले जाने पर मान्य है। उसकी पत्नी यदि उसे तलाक दे दे और वह पुनर्विवाह कर ले तो क्या वह अध्यक्ष होने की योग्यता रखता है? उस पुरुष के बारे में क्या कहा जा सकता है जो अपनी पत्नी के प्रति अविश्वासयोग्य था परन्तु बाद में अपनी गलती का अंगीकार कर उसने अपनी पत्नी के साथ एक विश्वासयोग्य संबंध बना लिया है? प्रभु यीशु के पास आने से पूर्व एक अनैतिक जीवन बितानेवाले पुरुष के बारे में क्या कहा जा सकता है? उस पुरुष का हम क्या करें जिसकी संस्कृति में उसे एक से अधिक पत्नी रखने का अधिकार दिया गया है? क्या वह कलीसिया में अगुवाई के किसी स्थान को पाने में स्वयं को अयोग्य पाता है? यीशु हमें बताता है कि यदि एक पुरुष एक स्त्री की ओर लालसा से देखता है तो वह अपने मन में उससे व्यभिचार करता है। यदि एक पुरुष ने किसी समय दूसरी स्त्री के बारे में अपने मन में लालसा की हो, तो इस लालसापूर्ण कार्य के द्वारा, क्या वह दूसरी स्त्री को अपने हृदय मे पत्नी के रूप में रखता है? इन सभी प्रश्नों का जवाब देने के लिए एक पृथक पुस्तक की आवश्यकता होगी। मैं आपको कुछ सिद्धान्त बताता हूँ।

सर्वप्रथम, हम सभी के अतीत को खोदते हुए आरम्भ करते हैं, ऐसा कोई भी नहीं होगा जो कलीसियाई अगुवाई के लिए योग्य साबित हो। प्रेरित पौलुस को भी अपने अतीत पर कोई घमण्ड नहीं था। पतरस ने भी यीशु का अनुसरण करने के बाद उसका तीन बार इन्कार किया था। पवित्रशास्त्र में हम बार-बार ऐसे अगुवों से मिलते हैं जो परमेश्वर के मानदण्ड से गिर गए थे। परमेश्वर ने पौलुस और पतरस की अतीत की असफलता के बावजूद उन्हें अध्यक्ष होने के लिए चुना। क्षमा करने पर परमेश्वर लोगों से कभी उस चीज़ को रोककर नहीं

रखता जिसे क्षमा कर दिया गया होता है। उसकी क्षमा पूरी होती है। पौलुस जो कलीसिया को बुरी तरह से सतानेवाला था, उसे भी क्षमा कर अध्यक्ष का पद दिया गया था। अध्यक्ष का चयन करते हुए हमें यह स्मरण रखने की ज़रूरत है कि मसीह हमारी अतीत की अस्फलताओं और पाप को क्षमा कर हमें अपने साथ पूर्ण सहभागिता में स्थापित करता है। हमें यह प्रश्न करने की ज़रूरत है, क्या एक व्यक्ति वर्तमान समय में परमेश्वर के साथ लयबद्ध होकर रह रहा है? उसे परमेश्वर द्वारा क्षमा कर दिया गया है और क्या वह उस क्षमा में रह रहा है?

दूसरा, परमेश्वर जिन पुरुषों को अगुवाई में रखना चाहता है उनके प्रति निर्णय लिये जाने पर यह महत्वपूर्ण है कि हमें देह की भलाई को अपने मन में रखना है। प्रेरित पौलुस कलीसिया में दूसरे विश्वासी के लिए ठोकर का पत्थर होने के बारे में बहुत कुछ सिखाता है (रोमि. 14:15-21)। यदि यह निर्धारित हो जाता है कि अमुक व्यक्ति कलीसिया में दूसरों के लिए ''ठोकर का पत्थर'' है, तो यह अच्छा हो सकता है कि उसकी इस योग्यता के साथ उसे कलीसिया में सेवा करने का अवसर न दिया जाए। एक ऐसे व्यक्ति की कल्पना करें जो एक पापपूर्ण जीवन प्रणाली बिताने के बाद प्रभु को जानता है। संभवतः कलीसिया और समाज में ऐसे बहुत से सदस्य होंगे जो उसकी पूर्वकालिक जीवन शैली से भली-भांति परिचित हों। कलीसिया और समाज का विषय होने पर यह अच्छा होगा कि कलीसिया कुछ समय गुज़रने की अनुमति दे और वह पुरुष समाज व कलीसिया में लोगों के साथ भरोसे के एक नये संबंध का निर्माण करे, इससे पूर्व कि उसे सेवा करने की अनुमति दी जाए।

इस संदर्भ में हमें कुछ और विवरण की जांच किये जाने की ज़रूरत है। क्या एक अध्यक्ष का विवाहित होना ज़रूरी है? पौलुस हमें बताता है कि अध्यक्ष एक पत्नी का पति हो। परन्तु यदि उसकी पत्नी न हो, तो क्या वह अध्यक्ष हो सकता है? हमें यह समझने की ज़रूरत है कि पौलुस भी विवाहित नहीं था। वे विश्वासियों को प्रोत्साहित करता है कि यदि उनमें योग्यता है तो वह विवाह न करें जिससे वे स्वयं को पूरी तरह से प्रभु की सेवा के लिए दे सकते हैं (देखें 1 कुरि.7)। ऐसा होने पर, एक अध्यक्ष के विवाहित होने की आवश्यकता नहीं है।

मद्यत्यागी (पद 2)

''मद्यत्यागी'' शब्द का प्रयोग शराब के लिए किया गया है। मद्यत्यागी होने से अभिप्राय शराब से दूर रहने या सीमित रूप से इसका प्रयोग करने से है। अध्यक्ष को पियक्कड़ नहीं होना था। उसे अपनी देह और इच्छाओं पर नियंत्रण करना था। शराब पर लागू होने वाली चीज़ अन्य चीज़ों पर भी लागू होती है।

निरीक्षक को सभी चीज़ों में सीमित होने की ज़रूरत है। ऐसे बहुत से शौक और व्यसन हैं जिन्हें हमारे जीवनों में नियंत्रित किया जा सकता है। अध्यक्ष को अपनी इच्छाओं और भूख पर नियंत्रण करना चाहिए।

संयमी (पद 2)

संयम का विषय संयमी से बहुत अधिक संबन्धित है। संयम पवित्र आत्मा का एक दान है। यह दान अध्यक्ष के जीवन में दिखना चाहिए। संयम विचारों, व्यवहार और कार्य को अनुशासित करने की योग्यता है जिससे वे परमेश्वर की योजना और उद्देश्य के साथ एक हों। एक अगुवा उस समय अपनी जीभ पर संयम रखने के योग्य होता है, जब उसे रोककर रखने की ज़रूरत होती है। परमेश्वर के वचन और प्रार्थना में समय बिताने को स्वयं को अनुशासित करने के वह योग्य होता है। वह स्वयं को उन चीज़ों को देखने और उन स्थानों पर जाने से दूर रखने के योग्य होता है जो उसे परमेश्वर की योजना और उद्देश्य से दूर कर सकते हैं। वह स्वयं को धर्मी जीवन जीने के लिए अनुशासित करता और वही करता है जो परमेश्वर चाहता है।

सभ्य या आदरनीय (पद 2)

अध्यक्ष को सभ्य या आदरनीय भी होना है। आदरनीय होने से अभिप्राय इस तरह का जीवन व्यतीत करने से है जिसमें वह अपने आस-पास के लोगों से आदर व समर्थन पाता है। उसका जीवन जीने का ढंग इस तरह का होता है कि लोग उसकी सराहना करते तथा उसकी ओर अनुसरण करनेवाले उदाहरण की तरह से देखते हैं।

पहुनाई करनेवाला (पद 2)

पहुनाई करनेवाला शब्द का प्रयोग अनजान लोगों के लिए प्रेम रखने से संबन्धित है। अध्यक्ष न केवल उनकी सेवा करता है जिन्हें वह जानता है या जो उसके घनिष्ट होते हैं परन्तु वह अजनबियों तक भी पहुंचता है। पहुनाई उदारता के साथ की जाती है। अध्यक्ष के उदार होने की ज़रूरत है। उसका ध्यान अपनी रुचियों और मित्रों पर केन्द्रित नहीं होता है। उसे सभी लोगों के साथ खुले होने की ज़रूरत है चाहे वे किसी भी जाति, समाज या रंग के क्यों न हों। वह सबके पास पहुंचकर दीनता और उदारता को दिखाता है।

सिखाने में निपुण (पद 2)

अध्यक्ष को ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो सिखाने में निपुण हो। यह अध्यक्ष का सबसे प्राथमिक कार्य था। उसे उन सभी को परमेश्वर के मार्गों व उद्देश्यों को सिखाने की ज़रूरत है जो उसके अधीन हैं। यहां प्रयुक्त ''निपुण'' शब्द से

अभिप्राय प्रतिभाशाली होने से है। अध्यक्ष का कार्यभार लेने पर एक व्यक्ति ऐसा सत्य में परमेश्वर के लोगों को निर्देशित व अगुवाई देने के उद्देश्य से करता है। पौलुस स्पष्ट करता है कि अध्यक्षों का परमेश्वर के वचन के सत्य में उसके लोगों को शिक्षा व निर्देश देने का दायित्व बनता है।

इस पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि सिखाने के और भी कई तरीके हैं। सारी शिक्षा एक ही बाइबल कक्षा में नहीं दी जा सकती है। कुछ अति सामर्थी शिक्षक वे हैं जो लोगों के सम्मुख अपने विश्वास में होकर जीते हैं। अन्य बुद्धिमत्तापूर्ण परामर्श देने और परमेश्वर के वचन के सत्य में लोगों की अगुवाई करने में निपुण होते हैं। सारे प्राचीन या अध्यक्ष पुलपिट के पीछे खड़े होकर प्रचार नहीं कर सकते हैं, परन्तु केवल वे ही जो वचन या उदाहरण से शिक्षा देने में निपुण हों।

पियक्कड़ न हो (पद 3)

इस विषय पर हम पहले से ही बता चुके हैं। एक अध्यक्ष को ऐसा व्यक्ति बनने की ज़रूरत है जो अपनी इच्छाओं, आवेगों और भूख पर नियंत्रण कर सकता हो। उसे संयमी होने की ज़रूरत है। यहां विशिष्ट रूप से उसे शराब या इसी तरह के किसी अन्य पेय का प्रयोग करने में नियंत्रण रखने की ज़रूरत है। एक अध्यक्ष के लिए शराब पीना वर्जित है। अध्यक्ष को परमेश्वर के आत्मा से नियंत्रित होना है। उसे स्वयं को शराब के नियंत्रण में नहीं छोड़ देना है।

मारपीट करनेवाला न हो, वरन कोमल हो (पद 3)

अध्यक्ष को न केवल शराब या अन्य किसी व्यसन सामग्री पर नियंत्रण रखने की ज़रूरत है, उसे अपनी भावनाओं पर भी नियंत्रण रखना है। पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि अध्यक्ष को मारपीट करनेवाला नहीं होना है। प्रमुख विचार यहां यह है कि उसे झगड़ा करने का बहाना नहीं ढूंढना है। इसके विपरीत उसे कोमल, मृदु और धीरजवन्त होना है। एक अध्यक्ष के लिए दूसरों के उसकी न सुने जाने पर क्रोध करना आसान होगा। कुछ अगुवे मांग करनेवाले व कठोर भी हो सकते हैं। पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि अध्यक्ष को अपने लोगों का नेतृत्व प्रेम और दया से करना है। मैं ऐसे बहुत से मसीहियों से मिला हूं जिन्हें उन कलीसियाई अगुवों से चोट पहुंची है जिन्होंने उनके साथ दया या आदर से व्यवहार नहीं किया। इन अगुवों का उद्देश्य सही हो सकता है परन्तु उनकी विधियां गलत रही थीं। पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि अगुवों को अपनी अगुवाई के अधीन आनेवाले लोगों के प्रति कोमल व प्रेमी बनने की ज़रूरत है। सच्चा अगुवा परमेश्वर के लोगों का आदर करने के साथ-साथ उनके साथ आदर व सम्मान से व्यवहार करेगा।

न झगड़ालू हो (पद 3)

हम पहले ही देख चुके हैं कि अध्यक्ष को मारपीट करनेवाला नहीं होना चाहिए। पौलुस आगे कहता है कि अगुवे को झगड़ालू नहीं होना है। झगड़ालू व्यक्ति भिन्नताओं पर केन्द्रित होता है। उन्हें दूसरों में गलती ढूंढने से खुशी मिलती है और यह प्रमाणित करने में कि वे सही हैं। अगुवे को मेल करानेवाला होना चाहिए। न्यू अमेरिकन स्टैण्डर्ड बाइबल में ''झगड़ालू न हो'' के लिए ''मेल करानेवाला'' शब्द का प्रयोग किया गया है। प्रमुख विचार यह है कि अगुवा देह में एकता बनाए रखनेवाला हो। इसका अर्थ यह नहीं कि अगुवा कलीसिया में किसी भी चीज़ या प्रत्येक चीज़ को होने दे कुछ ऐसे सिद्धान्त और विधियां हैं जिनका मसीह की देह में कोई स्थान नहीं है। अध्यक्ष को स्पष्ट रूप में इन झूठी शिक्षाओं और विधियों से निपटना है। तथापि, दूसरी ओर, अध्यक्ष में यह स्वीकार करने की पर्याप्त दीनता होनी चाहिए कि मसीह की देह में छोटे विषयों को लेकर भिन्नता पाई जा सकती है। हम सभी ऐसे अध्यक्षों से मिले हैं जो यह आशा करते हैं कि कलीसिया में हर कोई उनके समान ही विश्वास करनेवाला हो। वे छोटे सिद्धान्तों व विधियों को लेकर तर्क करते व झगड़ते हैं, ऐसा करते हुए वे कलीसिया में होनेवाले परमेश्वर के कार्य में बाधा उत्पन्न करते हैं। पौलुस की शिक्षा यहां यह है कि अध्यक्ष को झगड़ों व तर्कों के बावजूद उन भिन्नताओं के साथ कार्य करने को तैयार रहने की ज़रूरत है। उसे देह में शांति और एकता बनाए रखने का प्रयास करना है परन्तु उसी के साथ-साथ यह भी जानना है कि इस एकता का अर्थ यह नहीं कि प्रत्येक को उसके साथ हर विषय पर सहमत होना है।

(धन का) लोभी न हो (पद 3)

अध्यक्ष को धन के प्रेम से स्वतंत्र होना चाहिए। सेवकाई का धन उसका प्रेरक स्रोत नहीं होना चाहिए। संभवतः आप ऐसे पास्टर से मिले हों जिन्होंने इस आधार पर यह निर्णय लिया कि कितना धन प्राप्त करने पर वे कलीसिया की सेवा उस माप में करेंगे। हमारा प्रेरक स्रोत हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर की बुलाहट और उसका प्रेम होना चाहिए। धन हमें उसके प्रति अंधा कर बांध सकता है जो परमेश्वर हमसे कराना चाहता है। धन बहुतों को परमेश्वर की बुलाहट से दूर रखने का कारण हो सकता है। अध्यक्ष को धन व सम्पत्ति के प्रेम से स्वतंत्र होना है ताकि वह परमेश्वर की बुलाहट को सुन सके। शैतान ने अदन की वाटिका में हव्वा को कई चीज़ों का प्रस्ताव देते हुए बहकाया था। उसने यीशु के सामने उसे संसार या राज्य दे देने की परीक्षा रखी थी, यदि वह उसके सम्मुख झुक जाए। धन और सम्पत्ति से प्रेम करने पर एक अध्यक्ष शैतान का निशाना बन जाता है।

अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो (पद 4)

अपने घर का प्रबन्ध करने के द्वारा अध्यक्ष को कलीसिया की अगुवाई करने की अपनी योग्यता का प्रदर्शन करने की ज़रूरत है। विशिष्ट रूप में, पौलुस हमें बताता है कि उसे यह देखना है कि उसके बच्चे उसकी आज्ञा का पालन करते हुए उसका उचित रूप से आदर करें। इसका अर्थ यह नहीं कि उसके बच्चों को सिद्ध होना है। तथापि, अध्यक्ष को अपने पिता होने की भूमिका को गंभीरता से लेना है। उसकी अगुवाई की योग्यताएं उसके परिवार में दिखनी चाहिएं। उसका परिवार एक अगुवे के रूप में उसका आदर करे, इसलिए नहीं कि उसने उनसे इसकी मांग की है या उन पर आज्ञापालन करने या आदर देने का दबाव डाला है, परन्तु इसलिए कि उन्होंने उसके उदाहरण को देखा और इसके लिए उसे आदर भी दिया।

यदि आप जानना चाहते हैं कि एक पुरुष किस तरह का अगुवा बनेगा तो देखें कि उसके घर में क्या होता है। क्या वह अपनी पत्नी और बच्चों से अधिक मांग करनेवाला या अति संवेदनशील है? उस समय वह क्या करता है जब उसके बच्चे सत्य की तलाश में भटकते हुए पाप में गिर जाते हैं? क्या वह बिना शर्त प्रेम दिखाते हुए उनके साथ पुनःस्थापन करना चाहता है या फिर उन्हें अस्वीकार देता है? एक मसीही अगुवे को प्रत्येक परिस्थिति में मसीह के प्रेम को प्रगट करना चाहिए।

एक पुरुष जैसा अपने परिवार में होता है वैसा ही वह कलीसियाई अगुवाई में होगा। देखें कि वह अपने स्वयं के बच्चों के साथ क्या करता है? क्या वह अधिकार दिखाता व नियंत्रण करता है? क्या वह भेदभाव करता और हर चीज़ के अपनी तरह से किये जाने की मांग करता है? क्या उसे अपने परिवार और बच्चों की आत्मिक भलाई की चिन्ता रहती है? अपने बच्चों के मार्ग से भटक जाने पर क्या वह दुखी होता है? उन्हें वापस लाने को क्या वह उन तक प्रेम के साथ पहुंचता है? यह समझने के लिए कि एक अध्यक्ष किस तरह का व्यक्ति होगा, हमें इन प्रश्नों को करने की ज़रूरत है। जो उसके परिवार में होगा वही उसकी सेवकाई में भी होगा।

हमें इसके दूसरे पहलू को भी देखने की ज़रूरत है। एक अध्यक्ष के लिए अपनी सेवकाई में व्यस्त रहना संभव होगा कि वह अपनी पत्नी और बच्चों की भी परवाह न करे। हमें इस पर ध्यान देने की ज़रूरत है। पौलुस यह स्पष्ट करता है कि अध्यक्ष को अपने परिवार का अच्छी तरह से प्रबन्ध करने की ज़रूरत है। इसका अर्थ यह है कि वह सारा समय कलीसिया के साथ बिताकर अपने परिवार को अनदेखा नहीं कर सकता। उसे परिवार और सेवकाई के बीच में संतुलन रखना होगा।

नया चेला न हो (पद 6)

एक अध्यक्ष को नया चेला (परिवर्तित) नहीं होना है। पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि अध्यक्ष को प्रभु के साथ अनुभव प्राप्त करने की आवश्यकता है। उसे ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो सत्य को जानता हो और यह प्रमाणित करता हो कि वह सत्य और विश्वासयोग्यता में प्रभु के साथ चलने में निपुण है। उसे यह प्रगट करना है कि वह उन संघर्षों और कठिनाइयों का संचालन कर सकता है जो परमेश्वर के साथ चलने से आती हैं।

यहां पौलुस जिस विशिष्ट परीक्षा को लेकर चिन्तित है वह घमण्ड की परीक्षा है। दीनता कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो यंत्रवत् रूप से आती हो। किसी के दीन न होने पर उसे अधिकार देना सबसे खतरनाक चीज़ है। एक अनुभवहीन चालक के कार चलाने की कल्पना करें। उस व्यक्ति के हाथ में कार देना बहुत खतरनाक हो सकता है जो कार चलाना न जानता हो। यही चीज़ आत्मिक अधिकार में भी लागू होती है। एक अध्यक्ष को आत्मिक अधिकार का संचालन करना आना चाहिए। उसे अपनी भूमिका को दीनता के साथ करने में सक्षम होना चाहिए। घमण्ड हमें दूसरों की आवश्यकताओं के लिए अन्धा बना देता है। यह परमेश्वर की आवाज़ के प्रति हमारे कानों का बहरा बना देगा। यह अन्ततः हमें नाश करते हुए परमेश्वर के कार्य को क्षति पहुंचाएगा। हमें यह सुनिश्चित करने की ज़रूरत है कि जिन्हें अध्यक्ष का अधिकार दिया गया है वे इस दायित्व को पूरा करने के योग्य हैं। स्मरण रखें कि शैतान का अपने घमण्ड के कारण पतन हुआ था। पद 6 में पौलुस ने तीमुथियुस को स्मरण कराया कि घमण्ड करनेवाला अध्यक्ष शैतान के समान न्याय को पाएगा। यह एक गंभीर विषय है।

उसका सुनाम हो (पद 7)

अध्यक्ष का सुनाम होना चाहिए। ध्यान दें कि यह सुनाम केवल कलीसिया में ही न हो बल्कि कलीसिया से बाहर भी। अध्यक्ष संसार में परमेश्वर के लोगों और उसके राज्य के कारण को प्रस्तुत करता है। अध्यक्ष की ओर देखनेवालों को उसमें मसीह का चरित्र दिखना चाहिए। पौलुस स्पष्ट करता है कि शैतान अध्यक्षों के लिए फंदे को लगाएगा (पद 7)। उसकी इच्छा राज्य के कार्य को अपमानित करने की है। वह ऐसा अगुवाई को निशाना बनाने और उन्हें गिराने का प्रयास करने के द्वारा करेगा। कितनी बार शुत्र को इसमें सफलता मिली है? उसने मसीही अगुवों को धन, शराब और यौन अनैतिकता के द्वारा बहकाया है। उसने घमण्ड करने और हिंसा व क्रोध करने की उनकी दैहिक प्रवृत्तियों को उकसाने के द्वारा उन्हें गिराने का प्रयास किया है। बहुत से उसके फंदे में गिरे पड़े हैं। उनके ऐसा करने पर समाज की आंखों में परमेश्वर के कार्य का अपमान होता है।

अध्यक्ष के पद की चाह रखने वाला एक आदरणीय स्थान को पाने की चाह रखता है। तौभी उसे उने जिम्मेदारियों के प्रति सतर्क रहना चाहिए जो परमेश्वर उस पर डालता है। वह शत्रु का निशाना बनता है। परमेश्वर हमें ऐसे अध्यक्ष दे जो कि इस कार्य को ऊपर उठा सकें।

विचार करने के लिए :

- क्या एक अध्यक्ष के सिद्ध बनने की ज़रूरत है? हम अतीत के पापों से क्षमा और वर्तमान समय में परमेश्वर के साथ चलने में कैसे संतुलन कर सकते हैं?
- एक अध्यक्ष के लिए अपने मनोभावों, इच्छाओं और भावनाओं पर नियंत्रण करना महत्वपूर्ण क्यों है?
- एक अध्यक्ष होने पर हमारे झूठे उद्देश्य क्या हो सकते हैं? क्या आप गलत कारणों से अध्यक्ष बनना चाहते हैं?
- निष्कपट मसीहियों के बीच अन्तर करने के लिए उदारता और आदर कितने महत्वपूर्ण हैं? यदि निरीक्षक दूसरों के विचारों के प्रति उदार और आदरयुक्त न रहें तो क्या होता है?
- आत्मिक अगुवों के नाश करने और उन्हें गिराने के लिए हम शत्रु द्वारा किये जाने वाले प्रयासों के बारे में क्या सीखते हैं?

प्रार्थना के लिये :

- अपनी कलीसिया के अगुवों के लिए प्रार्थना करने में समय निकालें। परमेश्वर से उनकी सुरक्षा करने को कहें।
- परमेश्वर से आपको एक ऐसा जीवन देने के लिए कहें जो अविश्वासी के लिए गवाही हो।
- परमेश्वर से आपको अपने मनोभावों, इच्छाओं और भावनाओं पर नियंत्रण रखने की योग्यता देने को कहें।
- अपने आत्मिक अगुवे के परिवार के लिए प्रार्थना करने को समय निकालें। परमेश्वर से उन्हें आशीष देने और सुरक्षित रखने को कहें। उससे कहें कि वह अध्यक्ष को अपने परिवार और सेवकाई के दायित्वों के बीच संतुलन रखने की योग्यता दे।

◀▶

17

डीकन

पढ़ें 1 तीमुथियुस 3:8-13

इस अध्याय के प्रथम भाग में पौलुस ने तीमुथियुस पर अध्यक्ष की योग्यताओं को स्पष्ट किया था। यहां इस अगले विभाग में वह अपना ध्यान डीकन की भूमिका पर केन्द्रित करता है। नये नियम में अध्यक्ष और डीकन की भूमिका के बीच अन्तर किया गया है। जबकि ये दोनों ही भूमिकाएं स्वभाव में आत्मिक हैं, डीकन कलीसिया के दैनिक व्यावहारिक विषयों पर अधिक कार्य करते हैं। अध्यक्ष को लोगों के आत्मिक रूप से चलने में उनका गुरू और मार्गदर्शक होना है। अध्यक्ष को आज पास्टर या प्राचीन के रूप में जाना जाता है। डीकन व्यावहारिक विषयों में अध्यक्ष की सहायता करते हैं उन्हें इस योग्य बनाते हुए कि कलीसिया के आत्मिक लाभ के लिए स्वयं को अधिक पूर्णता से दें।

डीकन को अपनी भूमिका को बड़ी गंभीरता से लेना है। पौलुस इस परिच्छेद में उन लोगों की योग्यताओं के बारे में स्पष्ट रूप से बोलता है जो डीकन बनना चाहते हैं। एक बार फिर हम इन योग्यताओं की जांच करने में समय बिताएंगे।

आदर के योग्य (पद 8)

पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि डीकन को ऐसे पुरुष होना है जो आदर के योग्य हों। ''आदर'' शब्द बताता है कि इन पुरुषों की इनके चरित्र के लिए सराहना किये जाने की ज़रूरत है। वे दूसरों के साथ व्यवहार करने में आदरणीय थे। वे ईमानदार और निष्कपट थे। लोग उनकी ओर देखकर उनमें अनुसरण करने को एक सकारात्मक उदाहरण देख सकें। डीकन बनने से पहले, इन लोगों को समाज व कलीसिया में पहले से ही आदर प्राप्त था।

दो रंगी न हो (पद 8)

डीकन को दो रंगी नहीं होना है। मूल भाषा में इसका अर्थ निष्कपट होना है। दो रंगी होने पर एक व्यक्ति धोखा देने की मंशा से एक व्यक्ति से एक चीज़

कहता है तथा दूसरे व्यक्ति से कुछ और। निष्कपट होने का अर्थ है शुद्ध, साफ व पारदर्शी होना। एक निष्कपट जैसा बाहर होता है वैसा ही भीतर होता है। डीकन को अपने हृदय से परमेश्वर से प्रेम करते हुए उसकी सेवा करनी थी।

पियक्कड़ न हो (पद 8)

डीकन की अगली विशेषता यह है कि उसे पियक्कड़ नहीं होना है। पौलुस डीकन के लिए शराब पीने को वर्जित नहीं करता परन्तु बहुत ज़्यादा पीने को। डीकन को अपनी भूख को नियंत्रण में रखना है। जिस सेवकाई के लिए उसे बुलाया गया है, एक पियक्कड़ बनकर उसे उस सेवकाई को अपमानित नहीं करना।

नीच कमाई का लोभी न हो (पद 8)

अध्यक्ष के समान, डीकन को भी धन व सम्पत्ति का प्रेमी नहीं होना है। हम पहले ही देख चुके हैं कि डीकन पर शराब का नियंत्रण नहीं होना चाहिए। न ही उस पर धन व सम्पत्ति का नियंत्रण होना चाहिए। समाज में दूसरों के साथ व्यवहार करने में उसे ईमानदार होना है। व्यवसायी होने पर, उसे व्यवसाय में अपनी ईमानदारी को प्रगट करना पड़ता था। लोगों को यह जानना है कि वे उस पर भरोसा कर सकते हैं।

सत्य को सुरक्षित रखें (पद 9)

डीकन को स्वयं को आत्मिक रूप से भी प्रमाणित करना होता है। पद 9 में पौलुस हमें बताता है कि डीकन को विश्वास के भेद को शुद्ध विवेक से सुरक्षित रखना है। इस कथन के दो पहलू हैं। सर्वप्रथम, डीकन को सत्य को सुरक्षित रखना है। यहां प्रयुक्त ''सुरक्षित रखना'' शब्द विवाह शपथ के बारे में बताता है। सुरक्षित रखना को किसी ऐसी चीज़ के साथ इस तरह से जोड़ा गया है जिसे हम कभी जाने नहीं देते। डीकन को परमेश्वर के वचन के सत्य को सुरक्षित रखना है। उसे उन सत्यों के लिए जीने व मरने को तैयार होना है। उसे अपनी आवश्यकताओं के अनुसार कभी भी उन सत्यों से समझौता नहीं करना है।

इस पद का दूसरा पहलू यह है कि डीकन को एक शुद्ध विवेक के साथ सत्य को सुरक्षित रखना है। एक शुद्ध विवेक से किसी चीज़ को सुरक्षित रखना न केवल मन से उस पर विश्वास करना है परन्तु अपने वास्तविक जीवन में उस पर कार्य करना भी। आप किसी चीज़ पर विश्वास तो कर सकते हैं परन्तु ज़रूरी नहीं कि शुद्ध विवेक के साथ आप उसके अनुसार जीयें भी। पौलुस हमें यहां बताता है कि डीकन को न केवल सत्य को जानना है परन्तु उस सत्य को प्रतिदिन जीना है। उसे अपनी जीवन शैली से किसी भी तरह से लज्जित नहीं

होना है। उसे सत्य को जानना, उसके लिए खड़े होना और प्रत्येक दिन उस पर जीना है।

परखा गया (पद 10)

डीकन को उसकी पदवी दिये जाने से पूर्व परखा जाना होता है। अन्य शब्दों में, वह ऐसा व्यक्ति होता था जिसने स्वयं को वास्तविक जीवन में प्रमाणित किया था। हमें एक जीवन का चुनाव करने में जल्दी नहीं करनी चाहिए। वह एक नया चेला (परिवर्तित) नहीं होना चाहिए। उसे परमेश्वर के वचन के सत्य को समझने की ज़रूरत है। उसे समय की ज़रूरत है, न केवल समाज में स्वयं को प्रमाणित करने के लिए, परन्तु कलीसिया में भी। उसके प्रेम के निष्कपट और सही प्रमाणित होने की ज़रूरत है।

उनकी पत्नियाँ (पद 11)

पौलुस तीमुथियुस को पद 11 में बताता है कि उनकी पत्नियों को आदर के योग्य होना है। यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि पत्नियों के लिए प्रयुक्त शब्द का स्त्रियों के लिए भी प्रयोग हुआ है। इससे कुछ कहते हैं कि पद 11 उन स्त्रियों के लिए है जो डीकन के रूप में कार्य करती थीं।

डीकन के समान स्त्री (पत्नी या स्त्री डीकन) भी आदर पाने के योग्य थी। उसे विश्वास और कार्य दोनों में ही दूसरी स्त्रियों के लिए उदाहरण होना था।

दूसरा, स्त्रियों को द्वेषपूर्ण बात करनेवाली नहीं होना था। द्वेष शब्द यूनानी का ''डायबोलो'' शब्द है। यहीं से हमें ''शैतान'' का शब्द मिला है। द्वेषपूर्ण बात करनेवाले एक दूसरे पर दोष लगाते और एक दूसरे के विरुद्ध झूठ बोलते हैं। वे अपने शब्दों का प्रयोग चोट पहुंचाने और नाश करने को करते हैं। पौलुस यहां स्पष्ट करता है कि इन स्त्रियों को अपनी जीभ पर नियंत्रण करने की ज़रूरत है। उन्हें गपशप या निन्दा नहीं करनी है।

स्त्रियों को उनके द्वारा की जानेवाली प्रत्येक चीज़ में संयमी व विश्वासयोग्य होना है। संयमी होने का अर्थ है पराकाष्ठा तक न पहुंचना। इसका उल्लेख शराब या किसी भी अन्य विधि का प्रयोग किये जाने से किया जा सकता है। एक संयमी स्त्री जो खाती, पीती कार्य करती और पहनती है उसमें वह पराकाष्ठा तक नहीं पहुंचती। वह संतुलित रहती तथा अपने द्वारा किये जानेवाले कार्यों से पहचानी जाती है।

उसे विश्वासयोग्य भी होना है। इसका अर्थ यह है कि उसका पति उस पर आश्रित हो सकता है और इसी तरह से वे भी जिनसे प्रतिदिन वह मिलती है। वह अपने पति, अपने परिवार और अपने समाज के प्रति विश्वासयोग्य रहती है।

एक पत्नी का पति (पद 12)

अध्यक्ष के समान, डीकन की भी एक ही पत्नी होनी है। हमने इस बारे में पिछले अध्याय में विचार किया था इसलिए हम अब इसे नहीं दोहराएंगे। इसका अर्थ यह नहीं कि एक डीकन के लिए विवाह करना ज़रूरी है, परन्तु यदि वह विवाहित है तो उसकी केवल एक ही पत्नी होनी है। इस पर अतिरिक्त विचार-विमर्श के लिए इस पुस्तक के अध्याय 15 में देखें।

लड़केवालों का अच्छ प्रबन्ध करना जानता हो (पद 12)

पुनः अध्यक्ष के समान, डीकन को अपने परिवार में स्वयं को प्रमाणित करना होता है। इसका अर्थ यह है सेवकाई के लिए उसे अपने परिवार की अपेक्षा नहीं करनी है। उसे अपने परिवार की सेवा करने को आवश्यक समय देना है। उसे अपने परिवार में विश्वास में होकर रहते हुए अपने बच्चों को परमेश्वर के मार्गों की ओर प्रोत्साहित करना है। इसका अभिप्राय यह नहीं कि स्वयं के बच्चों को सिद्ध होने की ज़रूरत है। प्रत्येक बच्चे को परमेश्वर के सम्मुख अपना लेखा स्वयं देना होगा। यहां यह महत्वपूर्ण है कि डीकन अपने घर का प्रबन्ध करे और अपने बच्चों का पालन-पोषण प्रभु के मार्गों में करे।

डीकन की योग्यताओं पर अपनी टिप्पणी का समापन पौलुस तीमुथियुस को यह स्मरण कराते हुए करता है कि जो डीकन अपना काम अच्छी तरह से कर सकते हैं वे अपने लिए अच्छा पद और विश्वास में बड़ा हियाव प्राप्त करते हैं। वे परमेश्वर के सम्मुख बड़े आश्वासन, अकलंकित, उसकी महिमा और आदर में रहते हुए खड़े रहने के योग्य होंगे।

विचार करने के लिए :

- क्या आपने अपने समाज के लोगों से आदर प्राप्त किया है? वे आपको कैसे देखते हैं?
- सत्य को थामना और वास्तविक जीवन में सत्य के अनुसार जीने के बीच क्या अन्तर है?
- एक अध्यक्ष या डीकन की सेवकाई में एक पत्नी की क्या भूमिका होती है? वह उस सेवकाई को कैसे आशीष दे सकती या नाश कर सकती है?
- इस अध्याय में हमने जिन विशेषताओं पर विचार किया उनके अनुसार अपने जीवन का परीक्षण करने को कुछ समय बिताएं। आप कहां कमज़ोर हैं?

प्रार्थना के लिए :

- परमेश्वर से आपको एक ऐसा आत्मिक जीवन देने को कहें जो परखा व प्रमाणित किया गया हो।

- परमेश्वर से आपके हृदय को खोजने तथा आपमें पाई जानेवाली किसी भी अनिष्ठा को प्रगट करने के लिए कहें।
- अपने परिवार के लिए प्रार्थना करने में कुछ समय बिताएं। परमेश्वर से प्रत्येक सदस्य को अपने निकट लाने को कहें।
- कलीसियाई अगुवों के परिवारों के लिए प्रार्थना करें। परमेश्वर से उनकी सुरक्षा करने और उनके सत्य में बने रहने को कहें।
- परमेश्वर को अपनी कलीसिया के अगुवों को प्रोत्साहित करने को कहें। प्रार्थना करें कि वे मसीह की देह में विश्वासयोग्य बनें।

◀▶

18

भक्ति का भेद

पढ़ें 1 तीमुथियुस 3:14-16

पौलुस ने तीमुथियुस को अपने अधीनस्थों को शिक्षा देने का कहा। पौलुस की इच्छा तीमुथियुस से जल्द मिलने की थी (पद 14) परन्तु, वह उसे निर्देश देता है ताकि यदि देर भी हो जाए तो उसे इसकी स्पष्ट समझ हो कि विश्वासियों से कैसे व्यवहार करना है।

इस पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि जबकि तीमुथियुस शिक्षक/पास्टर की भूमिका को पूरा कर रहा था वह तब भी शिक्षा पाने से दूर नहीं था। उसने स्वेच्छा से पौलुस के निर्देशों को स्वीकार किया था। यह किसी भी पास्टर/शिक्षक की विशेषता होनी चाहिए। हम परमेश्वर के वचन के शिक्षक हो सकते हैं परन्तु हमें स्वयं को भी निर्देश दिये जाने के लिए तैयार रहना चाहिए। तीमुथियुस में पौलुस की और उसके निर्देशों को सुनने की आवश्यक दीनता थी। हमें इस बारे में सजग रहने की ज़रूरत है कि निर्देश सदैव परिपक्व लोगों की ओर से ही नहीं आएंगे। आपको सिखाने के लिए परमेश्वर आपकी मण्डली में से ही किसी का प्रयोग कर सकता है। वह भक्ति के मार्ग में आपको चुनौती देने के लिए आपको बच्चों या एक अविश्वासी का भी प्रयोग कर सकता है। महत्वपूर्ण यह है कि हम तैयार रहने के साथ-साथ सुनने को तैयार रहें।

इस अगले विभाग का आरम्भ करने पर मसीह की देह के रूप में कलीसिया के बारे में हमें सिखाने को पौलुस के पास कुछ महत्वपूर्ण सत्य है (पद 15)। आइये इस पद का अध्ययन करने तथा पौलुस की शिक्षा का परीक्षण करने में कुछ समय बिताएं...

परमेश्वर का घर

पौलुस इस पद में कलीसिया के बारे में ''परमेश्वर के घर'' के रूप में बोलता है। उस घर के सदस्य एक ही परिवार के हैं या उस परिवार में गोद लिये गए हैं। उनका एक ही पिता है और वे लहू द्वारा एक दूसरे के साथ बंधे हुए हैं। वे उस घर में दायित्वों को बांटते व एक दूसरे की सुरक्षा और देखभाल करने को मिलकर कार्य करते हैं। कलीसिया को ऐसा ही होना चाहिए। यह एक परिवार है। जो लोग

इस कलीसिया के भाग हैं, प्रभु परमेश्वर उनका पिता है। वे उसके अधिकार के अन्दर हैं और उसके प्रमुख होने के कारण उसका आदर व सम्मान करने को बाध्य हैं। एक ही पिता की सन्तान होने के कारण, हमें उसी तरह से एक दूसरे की देख-रेख करनी है जैसे हम अपने परिवार के सदस्यों की करते हैं।

जीवते परमेश्वर की कलीसिया

पौलुस ''जीवते परमेश्वर की कलीसिया'' के रूप में कलीसिया के बारे में भी बोलता है। हमारे लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर एक जीवित परमेश्वर है। वह आज भी जीवित व क्रियाशील है। बहुत सी कलीसियाएं उस परमेश्वर की आराधना तो करती हैं जो इब्राहीम और पौलुस के जीवन में जीवित था परन्तु वे यह नहीं देखतीं कि वह आज भी जीवित व क्रियाशील है। परमेश्वर कोई सिद्धान्त या विचार नहीं है। वह कोई परम्परा या धारणा नहीं है। वह एक जीवित प्राणी है। उसकी सामर्थ्य समय के साथ-साथ धुंधली नहीं हुई। वह आज भी उतना ही जीवित है जितना वह पौलुस के दिनों में था। इसी कारण, हमें परमेश्वर से बड़ी चीज़ों के होने की आशा करनी है। वह हमारे बीच में जीवित है इसी कारण हमें आनन्दित होना चाहिए। मसीह की देह होने के कारण कलीसिया सामर्थी व अद्वितीय है क्योंकि परमेश्वर इसमें रहता है।

सत्य का खंभा और नीवं

पद 15 में पौलुस तीमुथियुस को स्मरण कराता है कि कलीसिया सत्य का खंभा और नीवं है। नीवं पर एक घर का निर्माण किया जाता है। खंभा घर को थामे रखता है। पौलुस हमें बता रहा है कि कलीसिया के दो अनुबन्ध हैं। सर्वप्रथम, इसे सत्य की नीवं होना है। अन्य शब्दों में, इसका पवित्रशास्त्र में वर्णित परमेश्वर के सत्य पर निर्माण होना चाहिए। दूसरा, खंभा होने के कारण, इसे उस सत्य को थामना व सहारा देना है। कलीसिया परमेश्वर के वचन के सत्य पर खड़ी होती है और यह संसार के सामने उस सत्य का प्रचार करती और उसे थामे रखती है।

भक्ति की सेवकाई

पौलुस पद 16 की ओर बढ़ता है जिसमें वह भक्ति का भेद कहता है। मानवता के पाप में गिरने और परमेश्वर से अलग हो जाने के कारण, जीवन का सबसे बड़ा भेद यह है कि मनुष्य परमेश्वर के सम्मुख सही कैसे हो सकते हैं? पापी प्राणियों का परमेश्वर से कैसे मेल कराया जा सकता है? पुराने नियम में अनगिनत बलिदान चढ़ाए गए और तौभी, मनुष्य अब तक परमेश्वर के साथ सही नहीं हुए हैं। केवल प्रभु यीशु के आने पर ही इस भेद का जवाब प्रगट होगा। यीशु वह मार्ग है जिसके द्वारा मनुष्य परमेश्वर के साथ मेल कर सकते हैं। ध्यान दें कि पौलुस भक्ति के भेद के रूप में प्रभु यीशु के बारे में हमें क्या बताता है।

वह शरीर में प्रगट हुआ

हमारे पाप का दण्ड मृत्यु था। क्षमा को संभव बनाने के लिए एक बलि चढ़ाने की ज़रूरत थी। न्याय ने मांग की कि पाप को शरीर में दण्डित किया

जाए। प्रभु यीशु इस पृथ्वी पर मानव देह धारण करते हुए एक मनुष्य के रूप में आए। वह हमारे बीच रहे और हममें जाने गए।

आत्मा में धर्मी ठहरा

'धर्मी ठहराने' शब्द का यूनानी भाषा में अर्थ है सही ठहराना या सही किया जाना। यीशु के निर्दोष होने पर भी उस पर गलत कार्य करने का दोष लगाया गया। उन्होंने एक सामान्य अपराधी के समान उसे क्रूस पर ठोंका। सभी के देखने के लिए उसे ऊंचा उठाया गया था। वह मरा और उसे कब्र में रखा गया। आत्मा की सामर्थ में होकर वह मृतकों में से जी उठा। वह आत्मा में धर्मी ठहराया गया। मृतकों में से उसके पुनरुत्थान ने यह प्रमाणित कर दिया कि उसका बलिदान परमेश्वर ने स्वीकार किया था।

स्वर्गदूतों को दिखाई दिया

न केवल परमेश्वर के आत्मा ने हमारे प्रभु यीशु को "धर्मी ठहराया" परन्तु वह स्वर्गदूतों को भी दिखाई दिया। विषय की वास्तविकता यह है कि स्वर्गदूत जिस तरह से हमें हमेशा देख सकते हैं उसी तरह से वे प्रभु को भी देख सके। तथापि, इस तरह से, स्वर्गदूतों ने यीशु को उसकी सेवा करने के उद्देश्य से देखा। वे उसके दुख में उसकी सेवा करने को आए। जब यीशु स्वर्ग पर चढ़ा इन स्वर्गदूतों ने झुककर उसकी आराधना और सराहना परमेश्वर के विश्वासयोग्य मेमने के रूप में थी, जो उसके लोगों के लिए उद्धार को लाया।

अन्यजातियों में उसका प्रचार हुआ

यीशु उद्धार देने को आया। उसने एक सिद्ध जीवन जीया और कलवरी की क्रूस पर हमारे स्थान पर मरने के द्वारा उस उद्धार को लेकर आया। जब वह अपने पिता के पास लौटा, उसने अपने शिष्यों को संपूर्ण संसार में अपने उद्धार के संदेश को बांटने का कार्य दिया। उन शिष्यों ने मसीह के उद्धार का प्रचार किया। प्रत्येक जाति के लोग यीशु द्वारा लाई जाने वाली आशा और उसके द्वारा दिये जानेवाले अद्‌भुत उद्धार के बारे में सुन रहे हैं।

जगत में उस पर विश्वास किया गया

न केवल संसार में प्रभु यीशु का प्रचार किया परन्तु पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा, बहुत से उसके नाम में विश्वास करने को आ रहे हैं। संसार भर में पुरुष, स्त्रियां और बच्चे उसे प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण कर रहे हैं। वे अपने जीवन उसे सौंप रहे हैं तथा परमेश्वर के घर से जुड़ रहे हैं।

महिमा में ऊपर उठाया गया

मसीह भक्ति का भेद, महिमा में ऊपर उठाया गया। हमारे पापों के लिए वह इस पृथ्वी पर रहा और मरा। अपने पिता के साथ रहने को वह जिलाया गया।

पिता की उपस्थिति में उसे आदर दिया गया। अब वह राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के रूप में अपने पिता के साथ स्वर्ग में रहता है। वह ब्रह्माण्ड का प्रधान शासक है। चूंकि उसने पाप और कब्र पर जय प्राप्त की, हमारे लिए भी आशा हो सकती है।

पापियों के लिए प्रभु यीशु के रहस्यमयी कार्य का यह संदेश हमारे लिए अद्भुत आशा और भरोसे को लाता है। उसके अद्भुत कार्य के कारण हम पापों की क्षमा के अनुभव को प्राप्त कर अपने स्वर्गीय पिता की उपस्थिति में अनन्त निवास के लिए आगे देख सकते हैं।

विचार करने के लिए :

- क्या आपके पास सिखानेवाली आत्मा है?
- पौलुस कलीसिया को परमेश्वर का घर कहता है। एक घर में किस तरह का संबन्ध होना चाहिए? क्या आपकी कलीसिया प्रेम का एक उदाहरण है?
- पौलुस कलीसिया को ''जीवते परमेश्वर की कलीसिया'' कहता है। क्या परमेश्वर आपकी कलीसिया में जीवित है? क्या परमेश्वर व्यक्तिगत रूप से आपके लिए जीवित है? इसका क्या प्रमाण है?
- कलीसिया सत्य की नीवं और खंभा है। इसका क्या अर्थ है? हम सत्य की नीवं और खंभे कैसे हैं?
- भक्ति का भेद क्या है? हमारे परमेश्वर की उपस्थिति में रहने के लिए मसीह कैसे द्वार खोलता है? वह कैसे हमारी आशा है?

प्रार्थना के लिए :

- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि उसने संसार तक जाने को प्रयोग करने के लिए हमारा चुनाव किया।
- इस सच्चाई के लिए प्रभु को धन्यवाद देने का समय निकालें कि उसने आपको एक अद्भुत परिवार में रखा है। उससे कहें कि विश्वास में आपके भाइयों और बहनों की सेवा करने में आपकी सहायता करे।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह हमारी पाप की समस्या के लिए समाधान को लाया और इस भेद को कि हम कैसे परमेश्वर की उपस्थिति में भक्ति के लोगों के रूप रह सकते हैं।
- परमेश्वर से कहें कि आपकी कलीसिया को सत्य की नीवं और खंभा बनाने को वह आपको तैयार व समर्थ करे।

19

भरमानेवाली आत्माएं

पढ़ें 1 तीमुथियुस 4:1-6

अपनी पत्री के इस अगले विभाग में, पौलुस तीमुथियुस को झूठी शिक्षा के बारे में बताता है। उसने उसे इफिसुस में झूठी शिक्षा पर बोलने को प्रोत्साहित किया ताकि उसके साथ सेवा करनेवाले दुष्ट की योजना से सतर्क हो जाएं। इससे हम समझते हैं कि दुष्ट की एक योजना सत्य को विकृत करने की है।

पद 1 आरंभ पौलुस तीमुथियुस को यह स्मरण कराते हुए करता है कि आत्मा ने यह स्पष्ट रूप से प्रगट कर दिया है कि अन्तिम दिनों में लोग विश्वास से बहक जाएंगे। यह प्रभु यीशु की भी स्पष्ट शिक्षा है। मत्ती 24:5 में हम पढ़ते हैं "क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे, कि "मैं मसीह हूं" और बहुतों को भरमाएंगे। यीशु मत्ती 24:23-25 में यह भी कहता है :

उस समय यदि कोई तुम से कहे, कि देखो, मसीह यहां है' या वहां है तो प्रतीत न करना। क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े चिन्ह, और अद्भुत काम दिखाएंगे कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें। देखो, मैंने पहले से तुम से यह सब कुछ कह दिया है।

अन्त निकट आने पर हम आश्वस्त हो सकते हैं कि झूठी शिक्षा में वृद्धि होगी। पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि बहुत से उस समय अपने विश्वास से बहक जाएंगे। परमेश्वर इसका प्रयोग सत्य से संबन्ध रखनेवालों को उनसे अलग करने के लिए करेगा जो नाम के विश्वासी हैं। यह झूठी शिक्षा महान चमत्कारों और चिह्नों के साथ होगी। लोग इन सामर्थी अभिव्यक्तियों को देखेंगे और भरमाए जाएंगे। यह सत्य है कि पवित्रशास्त्र में बताए गए चिन्ह सत्य की पुष्टि करते हैं परन्तु सभी चमत्कारिक चिह्न परमेश्वर की ओर से नहीं हैं।

पद 1 में झूठी शिक्षा की शक्ति के स्रोत पर ध्यान दें। पौलुस यह स्पष्ट करता है कि ये झूठी शिक्षाएं और चिह्न भरमानेवाली आत्माओं और दुष्टात्माओं की ओर से आते हैं। ये दुष्टात्माएं अपने झूठे सिद्धान्तों और रीतियों का प्रसार

करने को स्त्रियों व पुरुषों का प्रयोग करती हैं। पद 2 में पौलुस तीमुथियुस को बताता है कि ये झूठे शिक्षक कैसे दिखते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि पौलुस इस परिच्छेद में जो बताता है हम उसकी जांच करें ताकि हम उनकी पहचान करने के योग्य हो सकें जो सत्य का प्रचार नहीं कर रहे हैं।

कपटी

झूठे शिक्षक कपटी थे। कपटी होने के कारण वे लोगों को बहकाने को तैयार रहते थे। वे सत्य को छिपाने में निपुण थे। शैतान को कपटी लोगों का प्रयोग करना अच्छा लगता है। वह झूठ और धोखे का स्वामी है। उसे उन व्यक्तियों की ज़रूरत है जो उसके इस खेल में खेलना चाहते हैं। ये झूठे शिक्षक झूठे शिक्षकों के समान नहीं दिखते थे। वे भले मसीही दिखते थे। पौलुस ने तीमुथियुस को उनके रूप और कार्यों से धोखे में न आने को कहा। वह बाह्य रूप ही शैतान का हथियार था।

झूठे

दूसरे, ध्यान दें कि ये लोग झूठे हैं (पद 2)। शैतान किसी सच्चे व्यक्ति को प्रयोग नहीं कर सकता। वह झूठे में कार्य करता है। वह झूठा का पिता है (यूह. 8:44)। अपनी झूठी शिक्षा को फैलाने के लिए उसे किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता होगी जो झूठ बोलने और सत्य को घुमाने के लिए तैयार हो।

दागा गया विवेक

झूठे शिक्षकों का दागा गया विवेक भी होता है। दागने से अभिप्राय बहुत गर्म चीज़ से जलाना है। इससे वस्तु कठोर हो जाती है। ऐसा लगता है कि इन झूठे शिक्षकों को उस बारे में इतनी बार नकार दिया गया होता है जो उनका विवेक उन्हें बताता है कि जब वे कुछ गलत करते हैं तो इससे उन्हें कोई परेशानी नहीं होती। एक जानवर को चिह्नित करने के लिए उसकी चमड़ी पर जलने का चिन्ह लगाया जाता है। वह चिन्ह एक स्थायी निशान छोड़ जाता है जिससे उस जानवर को उसके स्वामी के साथ जाना जाता है। इन झूठे शिक्षकों के विवेक को दुष्ट द्वारा उसके अपने लोग होने के रूप में चिह्नित किया गया है।

इन झूठे शिक्षकों के सिद्धान्तों पर ध्यान दें। प्रथम, उन्होंने लोगों को विवाह करने से मना किया। हमें यहां यह बताया नहीं गया है कि उन्होंने विवाह करने को वर्जित क्यों किया। यहां महत्वपूर्ण शब्द ''वर्जित'' है। वे नियंत्रण और छल करते हैं। वे लोगों पर हर तरह की अपेक्षाओं को डालते हैं जिसे वे स्वयं पूरा नहीं कर सकते। प्रेरित पौलुस ने लोगों को विवाह न करने को प्रोत्साहित किया परन्तु यह भी सिखाया कि हर कोई अविवाहित रहने में सक्षम नहीं है। इन झूठे शिक्षकों ने दुष्टात्माओं से प्रेरित होकर विवाह को वर्जित किया था। निस्संदेह यह बहुतों के लिए वास्तव में तनाव का कारण रहा होगा।

इन झूठे शिक्षकों ने जिस दूसरी चीज़ की मांग की थी वह यह कि उनके अनुयायी भोजन की कुछ वस्तुओं से दूर रहें। पुनः हमें यह जानने की ज़रूरत

है कि पुराने नियम में भी भोजन के नियम थे। परमेश्वर का एक मानदण्ड था और उसके लोगों को इसे बनाए रखने की आज्ञा दी गई थी। ये झूठे शिक्षक तथापि एक कदम आगे बढ़ गए थे। उन्होंने अपने अनुयायियों को उस भोजन से भी दूर रहने को कहा जिसे परमेश्वर ने धन्यवाद के साथ खाने को बनाया था। इसका परिणाम यह हुआ कि जिसे परमेश्वर ने अच्छे के रूप में बनाया था वह अब दूषित हो गया था। जिसे धन्यवाद के साथ खाने को उसने बनाया था उसे अब अस्वीकार दिया गया था।

पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि परमेश्वर की रची हुई हर वस्तु अच्छी थी। नये नियम में किसी भी वस्तुओं को अस्वीकृत नहीं किया जा सकता था, यदि उसे धन्यवाद के हृदय से ग्रहण किया जाए। वास्तव में, जो चीज़ें कभी अशुद्ध मानी जाती थीं वे अब परमेश्वर के वचन से पवित्र हो गई थीं। अन्य शब्दों में, पुराने नियम के भोजन का नियम नये नियम के विश्वासियों पर लागू नहीं होता। पौलुस रोमियों 14:20 में यह कहते हुए इसे स्पष्ट करता है।

> भोजन के लिए परमेश्वर का काम न बिगाड़: सब कुछ शुद्ध तो है, परन्तु उस मनुष्य के लिए बुरा है, जिसको उसके भोजन करने से ठोकर लगती है।

ध्यान दें कि पौलुस ने सिखाया कि सारा भोजन शुद्ध है। पौलुस तीमुथियुस को बता रहा है कि परमेश्वर का वचन अब घोषित करता है कि सारा भोजन शुद्ध है और प्रार्थना द्वारा पवित्र किये जाने पर खाया जा सकता है। धन्यवाद के साथ अपने भोजन को परमेश्वर के प्रति समर्पित करने पर परमेश्वर हमारे धन्यवाद को स्वीकार करता है। वह उस भोजन को हमारे प्रयोग के लिए आशीषित करता है चाहे वह भोजन कैसा भी हो।

परमेश्वर ने जो कुछ सृजा था झूठे शिक्षक लोगों को उसकी उपेक्षा करने को कह रहे थे। ध्यान दें कि वे कुछ सत्य के घटकों के बारे में बोल रहे थे। पौलुस ने लोगों को विवाह न करने को प्रोत्साहित किया परन्तु यह जाना कि हर कोई ऐसा नहीं कर सकता था। झूठे भविष्यद्वक्ताओं ने सभी के लिए विवाह को वर्जित कर दिया था। पुराने नियम में यह आज्ञा दी गई थी कि विश्वासियों को कुछ खाने की वस्तुओं से दूर रहना है परन्तु इन झूठे भविष्यद्वक्ताओं ने एक कदम आगे बढ़ाते हुए लोगों को उन खाने की वस्तुओं को भी खाने से मना कर दिया था जिन्हें परमेश्वर ने अच्छा कहा था। उन्होंने सत्य का घुमा दिया था। उन्होंने लोगों के साथ छल करते हुए उन पर नियंत्रण किया। उनका ध्यान मसीह पर नहीं परन्तु नियम और बाहरी चीज़ों पर था।

इसके साथ ही इन झूठे शिक्षकों ने लोगों को यह विश्वास दिलाया कि उनकी चमत्कारिक शक्ति परमेश्वर की ओर से थी। पवित्रशास्त्र के घटकों को लेकर उन्होंने इन घटकों को अपनी आवश्यकता के अनुसार घुमाया था। वे अनैतिकता की शिक्षा नहीं दे रहे थे। वे खुले रूप से प्रभु यीशु का इन्कार नहीं

कर रहे थे। तथापि, वे मसीह से अलग एक वैधानिक विश्वास को बढ़ावा दे रहे थे। वे छली और नियंत्रक थे। पौलुस ने दावा किया कि शैतान की बुरी और भरमानेवाली आत्माएं इन पुरुषों के पीछे थीं।

क्या ये झूठे शिक्षक हमारे बीच भी हो सकते हैं? क्या वे मसीह से ध्यान हटाकर अपनी ओर लगाने का प्रयास कर सकते हैं? क्या ऐसा हो सकता है कि वे शैतान की शक्ति में बड़े चमत्कारों और चिह्नों को दिखाएं व प्रचार करें? हमें कितना अधिक सावधान रहने की ज़रूरत है। परमेश्वर ने हमें अपना वचन हमारा मार्गदर्शक होने के लिए दिया है। हमें उन लोगों से सावधान रहने की ज़रूरत है जो अपनी स्वयं की आवश्यकताओं के अनुसार इसे तोड़ते और मरोड़ते हैं।

पद 6 में पौलुस ने तीमुथियुस को परमेश्वर के लोगों को इन चीज़ों को बताने की चुनौती दी। तीमुथियुस का पालन-पोषण विश्वास के सत्य में होकर किया गया था और उसने अच्छी शिक्षा पाई थी। अब उसे हर उस व्यक्ति से सावधान रहने की चुनौती दी गई थी जो दृढ़ता से उस सत्य पर खड़ा नहीं होता। शत्रु परमेश्वर के लोगों को भरमाने तथा गलत मार्ग पर ले जाने के लिए किसी भी एक अवसर की तलाश में था। हमारे दिनों में हमें बड़ी पहचान रखनेवाले उन स्त्री पुरुषों की कितनी अधिक ज़रूरत है जो इन झूठों को जानने के साथ-साथ उनके विरुद्ध दृढ़ता से खड़े रहें।

विचार करने के लिए :

- अन्तिम दिनों में जो कुछ होगा उस बारे में पौलुस हमें क्या बताता है?
- यह परिच्छेद हम शत्रु के धोखे के बारे में क्या सिखाता है?
- हमारे लिए अपने विवेक की आवाज़ को सुनना महत्वपूर्ण क्यों है?
- पौलुस झूठे शिक्षकों की विशिष्टताओं के बारे में हमें क्या सिखाता है?
- क्या छल व नियंत्रण करना परमेश्वर की ओर से है? परमेश्वर का आत्मा कैसे कार्य करता है?
- **प्रार्थना के लिए :**
- परमेश्वर से कहें कि वह आपको सत्य के लिए एक बड़ी इच्छा दे।
- बड़ी पहचान/परख करने हेतु प्रार्थना करें जिससे आप शत्रु के धोखे में न आएं।
- प्रार्थना करें कि परमेश्वर आपके बीच में झूठे शिक्षकों को प्रगट करे।

20

भक्त बनने का प्रशिक्षण

पढ़ें 1 तीमुथियुस 4:7-16

इस परिच्छेद में पौलुस तीमुथियुस से जो कि प्रभु में उसका पुत्र है, के एक आत्मिक परामर्शदाता और सलाहकार के रूप में बोलता है। आत्मिक पिता होने के कारण वह अब तीमुथियुस को भक्ति की साधना करने की चुनौती देता है। ध्यान दें कि भक्त होने का अर्थ है—एक ऐसी चीज़ जिसके लिए हमें स्वयं को प्रशिक्षित करना है। जिस शब्द का यहां प्रयोग हुआ वह उस खिलाड़ी के लिए प्रयुक्त शब्द के समान है जो खेल के लिए प्रशिक्षण लेता है। इसमें अनुशासन और प्रयास आते हैं। एक भक्त व्यक्ति बनने के लिए बहुत अधिक कार्य व प्रयास करने की आवश्यकता होगी। पौलुस तीमुथियुस को सलाह देता है कि भक्त होने के लिए स्वयं को कैसे प्रशिक्षण दे।

अशुद्ध कहानियों से दूर रह

पद 7 में पौलुस तीमुथियुस को यह बताते हुए आरम्भ करता है कि अशुद्ध और बूढ़ियों की सी कहानी से अलग रह। हमें यह नहीं बताया गया कि ये कहानियां किस तरह की थीं परन्तु पौलुस उन्हें अशुद्ध कहता है। ये कहानियां संभवतः मानव कल्पना की खोज थीं। वे परमेश्वर के वचन के सत्य पर आधारित नहीं थीं। हमारे दिनों में भी इस तरह की बहुत सी कहानियां हैं। संभवतः आप ऐसे लोगों से मिले होंगे जो यह सिखाते हैं कि परमेश्वर इतना प्रेम का परमेश्वर है कि वह कभी भी एक व्यक्ति को नरक जाने का दण्ड नहीं देगा। संभवतः आप किसी ऐसे से मिले हों जो इस कहानी पर विश्वास करता हो कि यदि वे एक अच्छा जीवन जीयें तो परमेश्वर उन्हें अपने राज्य में ग्रहण करने को बाध्य होगा। संसार में परमेश्वर के बारे में सभी तरह के विचार हैं परन्तु उनमें से सभी परमेश्वर के वचन की शिक्षा पर आधारित नहीं हैं। वे भक्तिहीन कहानियाँ हैं। इसी तरह पौलुस द्वारा वर्णित "बूढ़ी कहानियाँ" वे अन्धविश्वास और विचार हैं जो संस्कृति में जड़ पकड़े हुए थे, परन्तु परमेश्वर के वचन के सत्य के आधार पर नहीं थे।

पौलुस तीमुथियुस पर यह स्पष्ट करता है कि उसे स्वयं को इन सभी कहानियों से अलग करने की ज़रूरत है। यदि वह परमेश्वर का जन बनना चाहता है जैसी मंशा उसके होने को की गई थी, तो यह परमेश्वर के सत्य वचन के आधार पर होगा। उसे मनुष्यों के विचारों से अपने ध्यान को भंग नहीं करना था। भक्त बनने के लिए उसे स्वयं को झूठी और भक्तिहीन शिक्षा से अलग करने की ज़रूरत होगी जो उसके समाज में भरी हुई थी। भक्तिपूर्ण जीवन बिताने के लिए परमेश्वर के वचन को उसका आधार और नीवं बनना था। उसे दार्शनिकों या प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा अपने मार्ग से भटकना नहीं था। जीवन और भक्ति के लिए उसे जिस चीज़ की भी ज़रूरत थी वह परमेश्वर के वचन में पाई जाती थी।

पद 8 में पौलुस ने तीमुथियुस को स्मरण कराया कि जबकि शारीरिक व्यायाम का कुछ महत्व है, तो भक्त बनने का प्रशिक्षण उससे भी अधिक महत्व का होगा। शारीरिक व्यायाम इस जीवन में सहायक है, परन्तु भक्तिपूर्ण जीवन का महत्व आनेवाले जीवन में भी है।

तीमुथियुस के स्वयं को भक्त बनने को प्रशिक्षित किये जाने पर उसे परमेश्वर के वचन के सही सत्य की पहचान करने की ज़रूरत होगी। उसका मानवीय कहानियों और विचारों से कोई लेना देना नहीं था, परन्तु उस प्रत्येक चीज़ के आधार से अवश्य था जिसे उसने परमेश्वर के वचन की स्पष्ट और प्रेरक शिक्षा पर किया था।

अपनी आशा जीवित परमेश्वर पर रख (पद 10)

पौलुस ने तीमुथियुस को दूसरा सिद्धान्त जीवित परमेश्वर और सभी के उद्धारकर्त्ता पर अपनी आशा रखने का दिया (पद 10)। इस पद में पौलुस परमेश्वर के बारे में दो चीज़ों को बताता है। सर्वप्रथम, वह जीवित परमेश्वर है। परमेश्वर होने के कारण वह सर्वसामर्थी और प्रधान है। जीवित परमेश्वर होने के कारण हम जानते हैं कि वह अभी भी उतना ही सामर्थी व प्रधान है जितना वह हमेशा से था। हम अतीत में उसके द्वारा किये गए सामथी कार्यों के उदाहरणों को देखते हैं। वह कभी भी बदलता नहीं है। वह आज भी वही परमेश्वर है।

पौलुस ने तीमुथियुस को यह भी बताया कि यह परमेश्वर सभी लोगों का उद्धारकर्त्ता है विशेषकर विश्वास करनेवालों का। यह परमेश्वर को उसके लोगों से जोड़ता है। परमेश्वर होने के कारण, उद्धारकर्त्ता की अपनी सृष्टि की आवश्यकताओं में रुचि होती है। वह उन्हें समर्थ करने, सुरक्षा देने और तैयार करने को उन तक पहुंचता है। जिन्होंने उसे अपने उद्धारकर्त्ता के रूप में ग्रहण किया है वे गहन रूप से उसकी सामर्थ और समर्थ किये जाने के बारे में जानते हैं। उन्होंने उसके प्रबन्ध, सुरक्षा, मार्गदर्शन व शक्ति का अनुभव पाया होता है।

यदि हम स्वयं को भक्ति में प्रशिक्षित करना चाहते हैं, तो हमें इसका आरम्भ हमारे उद्धारकर्त्ता जीवित परमेश्वर पर स्थापित करते हुए करना है। परमेश्वर को उन सभी का उद्धारकर्त्ता बनने में खुशी मिलती है जो उस पर भरोसा करते हैं। इस आरम्भिक स्थान से ही हम भक्ति में किसी भी तरह की प्रगति कर सकते हैं। हम अपने स्वयं के प्रयासों द्वारा कभी भी अपने को भक्त नहीं बना सकते हैं। हमें पाप को हटाने तथा स्वयं को शुद्ध करने के लिए जीवित परमेश्वर के द्वारा समर्थ किये जानेवाले कार्य की ज़रूरत है। तीमुथियुस का भरोसा परमेश्वर में होना था, न कि अपनी स्वयं की योग्यता पर।

एक आदर्श बन जा (पद 12)

पौलुस समझ गया था कि युवा होने के कारण तीमुथियुस को इफिसुस में समस्या थी। उसके अधिक युवा होने के कारण कुछ लोग उसे निम्न रूप में देखते थे। पौलुस ने तीमुथियुस से इस डर को एक ओर रखते हुए सभी के लिए एक आदर्श बनने को कहा। पौलुस के इस कथन पर मैं बहुत सी टिप्पणियां करना चाहूंगा।

सर्वप्रथम, तीमुथियुस ने स्वयं को किसी को भी निम्न दृष्टि से नहीं देखने दिया था। अन्य शब्दों में, उसे लोगों को अपने बारे में कुछ भी ऐसा नहीं सोचने देना था जिससे उसके कार्यों पर प्रभाव पड़े। हमारा लोगों द्वारा प्रभावित होना कितना आसान है। हमारी आत्मिकता के मानदण्ड को प्राय: उस आत्मिक संस्कृति द्वारा निर्धारित किया जाता है जिसमें हम रहते हैं। हम इस चीज़ की केवल एक विषय सूची बनकर रह जाते हैं कि हम से क्या आशा की जाती है। कई बार हमारे भाई बहन उसकी आशा करते हैं जिसकी आशा परमेश्वर भी नहीं करता। आत्मिकता से बाहर रहनेवालों को गलत समझा जाता है। कई बार लोग उन्हें ध्यान आकर्षित करनेवालों के रूप में देखते हैं। उन्हें उग्र सुधारवादी के रूप में देखा जाता है। पौलुस तीमुथियुस को बता रहा था कि तीमुथियुस को दूसरे लोगों को अपनी भक्ति की साधना को प्रभावित नहीं करने देना था। तीमुथियुस को बोली, जीवन, प्रेम, विश्वास और शुद्धता में एक आदर्श बनने को स्वयं को समर्पित करना था। यदि आप स्वयं को एक भक्त बनने के लिए प्रशिक्षित करना चाहते हैं तो आपको इस पर विजय प्राप्त करनी होगी कि दूसरे क्या सोचते या आशा करते हैं। आपको भीड़ से अलग होकर खड़े होने को तैयार होना होगा और भिन्न बनना होगा, अपने आस-पास के लोगों की अपेक्षाओं से पहले परमेश्वर की इच्छा को अपने जीवन में पहले रखते हुए।

दूसरी चीज़ जिसे हमें समझना है वह यह कि हम भी भक्तिपूर्ण जीवन में बाधक हो सकते हैं। तीमुथियुस के अपनी मण्डली के लोगों की सुनते हुए कल्पना करें। उसके यह कहने की कल्पना करते हुए ''वे सही हैं। मैं बहुत युवा

व अनुभवहीन हूं। मैं क्या कर सकता हूं?'' पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि उसकी जवानी और अनुभवहीन होने के बावजूद उसे सभी के लिए आदर्श बनना है। इसके लिए परमेश्वर में विश्वास व भरोसा रखने की ज़रूरत होगी। एक भक्त के आदर्श बनने के लिए उसे यह विश्वास करने की आवश्यकता होगी कि उसका उद्धारकर्त्ता परमेश्वर उसकी सुरक्षा करने के साथ साथ एक आदर्श बनने को उसे बल भी देगा। यदि आप भक्त बनने के लिए स्वयं को प्रशिक्षित करना चाहते हैं तो आपको अपने विश्राम क्षेत्रों को छोड़ने को लिए तैयार होना होगा। जो आप को स्वयं को करते नहीं देख सकते हैं उसके करने के लिए आपको परमेश्वर पर भरोसा करना होगा। आपको अपनी सारी असुरक्षाओं को एक ओर रख परमेश्वर पर आपको वह बनाने के लिए भरोसा करना होगा जो वह आपको बनाना चाहता है।

स्वयं को सार्वजनिक रूप से पढ़ने को समर्पित कर (पद 13)

पद 13 में पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि भक्ति के इस प्रशिक्षण में उसे सार्वजनिक रूप से पवित्रशास्त्र पढ़ने, प्रचार करने और सिखाने के प्रति स्वयं को समर्पित करना था। सार्वजानिक रूप से पढ़ना और प्रचार करना कहां हुआ था? यह विश्वासियों के एक साथ मिलने पर होता था। अन्य शब्दों में, तीमुथियुस को सहभागिता के एक ऐसा भाग होने की ज़रूरत थी जहां पवित्रशास्त्र को आदर दिया जाता था और वचन को विश्वासयोग्यता के साथ प्रचार किया जाता व सिखाया जाता था। भक्ति अकेले रहने में नहीं पाई जाती है परन्तु परमेश्वर के वचन के साथ परमेश्वर के लोगों की सहभागिता में।

अपने वरदान से निश्चिन्त मत रह (पद 14)

पद 14 में पौलुस तीमुथियुस को यह बताने के लिए आगे बढ़ता है कि भक्ति के इस प्रशिक्षण में उसे अपने आत्मिक वरदान की उपेक्षा नहीं करनी थी। इस विशिष्ट वरदान को भविष्यद्वाणी के एक संदेश के द्वारा उसे दिया गया था। हमें यह नहीं बताया गया है कि वह वरदान क्या था। तथापि, हमारे लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर हम से अपने वचन में पढ़ने और सीखने की आशा ही नहीं करता परन्तु अपनी महिमा के लिए हमारे वरदानों का प्रयोग करने की भी। पौलुस तीमुथियुस को बता रहा है कि परमेश्वर के वचन का अध्ययन, बेशक महत्वपूर्ण होते हुए भी पर्याप्त नहीं है। हमें हमारी आत्मिक मांसपेशियों को व्यायाम कराने की आवश्यकता है। भक्ति केवल सत्य को जानना ही नहीं है, यह सत्य पर कार्य करना भी है। प्रेरित याकूब इसे याकूब 1:27 में इस तरह से रखता है :

> "हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है कि अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उनकी सुधि लें, और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें।"

एक खिलाड़ी के नियम पुस्तिका के अध्ययन करने की कल्पना करें जो कभी खेलता न हो। बहुत से लोग अपना समय बाइबल अध्ययन में बिताते हैं परन्तु कभी भी वे उसे कार्यरूप में नहीं लाते जिसे वे अपने अध्ययन में सीख रहे होते हैं। भक्ति में बढ़ने के लिए आपको "खेल को खेलना" होगा। परमेश्वर हमसे सेवा में विश्वासयोग्य होने की आशा करता है। हमारे आत्मिक वरदान न केवल दूसरों को तैयार करने के लिए हैं, वे ऐसे साधन भी हैं जिनके द्वारा परमेश्वर हमें भक्ति में प्रशिक्षित करता है।

पौलुस तीमुथियुस को इन विषयों में उद्यमी बनने की चुनौती देता है। उसे स्वयं को उन्हें पूर्ण हृदय से देना था। पौलुस ने उससे प्रतिज्ञा की कि जिन चीज़ों के बारे में उसने उसे बताया था यदि वह उनमें उद्यमी बना रहे तो लोग उसकी प्रगति को देखेंगे (पद 15)। उसके जीवन और सिद्धान्त को देखने के द्वारा, और इस शिक्षा में दृढ़ बने रहते हुए, तीमुथियुस अपने साथ-साथ उन्हें भी बचाएगा जो उसकी सुनते हैं।

जब पौलुस यहां तीमुथियुस के अपने को बचाने के बारे में बोल रहा है तो वह न्याय के बारे में बोल रहा है। पास्टर होने के कारण, तीमुथियुस का परमेश्वर के साथ अनुबन्ध था। तीमुथियुस का उद्धार निश्चित था, परन्तु तौभी उसे अपने जीवन और कार्यों का लेखा परमेश्वर को देना होगा। अपने उदाहरण और शिक्षा के द्वारा तीमुथियुस बहुतों को पाप और विद्रोह से बचाएगा।

विश्वासी होने के कारण हम परमेश्वर की अद्‌भुत आशीष से चूक सकते हैं, हम ऐसा भक्त न होने और मसीह तक अपने संभावना में न पहुंचने का प्रशिक्षण करते हुए कर सकते हैं। एक दिन हम परमेश्वर के सामने खड़े होंगे और परमेश्वर को अपने जीवनों का लेखा देंगे। यदि हम स्वयं को भक्त होने के लिए प्रशिक्षित न करें तो बहुत हानि उठानी होगी।

विचार करने के लिए :

- अनुशासन और कठिन श्रम के बिना क्या भक्त बनना संभव है?
- भक्त बनने के लिए हमारे अनुशासन और हमें भक्त बनाने के लिए हममें मसीह के कार्य के बीच क्या संयोजन है?
- अधिक भक्त होने के लिए आपको क्या करने की ज़रूरत है?

- भक्त बनने के हमारे प्रशिक्षण में दूसरों के शब्द और व्यवहार कैसे बाधक हो सकते हैं? दूसरों के एक भक्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करने में क्या आप प्रोत्साहक रहे हैं? क्या आप कभी दूसरों द्वारा निराश हुए हैं?
- भक्त बनने के हमारे प्रशिक्षण में परमेश्वर के वचन के साथ-साथ दूसरों के साथ सहभागिता की क्या भूमिका है?
- यह कितना महत्वपूर्ण है कि हम परमेश्वर प्रदत्त आत्मिक वरदानों का प्रयोग करें। परमेश्वर ने आपके भक्ति में बढ़ने को सहायता करने के लिए आपके आत्मिक वरदानों का कैसे प्रयोग किया है?

प्रार्थना के लिए :

- भक्ति में बढ़ने के लिए आवश्यक अनुशासन को देने हेतु परमेश्वर से कहें।
- परमेश्वर से आपसे उन चीज़ों के बारे में स्पष्ट रूप से बोलने को कहें जो आपके भक्ति के प्रशिक्षण में बाधक हैं।
- भक्ति में नवीन रूप से रहने को स्वयं को समर्पित करने के लिए कुछ समय बिताएं।

21

विधवाएं

पढ़ें 1 तीमुथियुस 5:1-16

अध्याय 5 के पहले भाग में पौलुस तीमुथियुस को कलीसिया में विधवाओं की समस्या से निपटने के लिए कुछ निर्देश देता है। तथापि, विस्तृत रूप से विषय को संबोधित करने से पूर्व, पौलुस ने मसीह की देह में संबन्धों को लेकर कुछ सामान्य टिप्पणियां की हैं।

पौलुस तीमुथियुस को किसी बूढ़े को न डांटने को कहते हुए आरम्भ करता है। वह उसे पिता जानकर समझाने को प्रोत्साहित करता है। पौलुस तीमुथियुस से यह नहीं कह रहा है कि उसे एक बूढ़े व्यक्ति के गलत होने पर चुनौती नहीं देनी थी। तथापि, उसे ऐसा उसकी आयु को ध्यान में रखते हुए करना है। तीमुथियुस को एक बूढ़े व्यक्ति के साथ दीनता से व्यवहार करना था, यह जानते हुए कि उसने जीवन में अधिक अनुभव पाया है। उसे एक बूढ़े व्यक्ति को आदर देने के साथ-साथ उसकी आयु के अनुसार उसे आदर देना है।

बूढ़ी स्त्रियों के साथ भी उनकी आयु के कारण इसी तरह का व्यवहार करना है। उन्हें कलीसिया में आदर का स्थान दिया जाए। तीमुथियुस को उन्हें जल्द ही डांटना नहीं था। इन बूढ़ी स्त्रियों के साथ उसी तरह से व्यवहार किया जाना था जिस तरह से एक प्रेम करनेवाला पुत्र अपनी बूढ़ी माँ के साथ करता है।

जवान पुरुषों से भाई जानकर व्यवहार करना है। एक भाई सहायता करता, प्रोत्साहित करता, सहारा देता व सुरक्षा देता है। एक भाई सुनता है तथा चाहे कैसी भी परिस्थिति हो वह साथ खड़ा होता है। भाइयों के बीच एक अनुबन्ध होता है जिसे आसानी से तोड़ा नहीं जा सकता।

जवान स्त्रियों के साथ बहन जानकर व्यवहार करना है। कौन अपनी बहन से गलत व्यवहार करने के बारे में सोच सकता है? हम अपनी बहनों की सुरक्षा करते हैं। हम उनके लिए खड़े होते हैं। हम उनका अनादर नहीं करते और यदि कोई और ऐसा करता है तो हम इसे गंभीरता से लेते हैं।

मसीह की देह में संबन्धों के बारे में सामान्य निर्देश दिये जाने पर, पौलुस अधिक विशिष्टता से विधवाओं के बारे में बोलता है। आरम्भिक कलीसिया में विधवाओं का विषय महत्वपूर्ण था। इन स्त्रियों की और इनके परिवार की देख-रेख करन वाला प्राय: कोई नहीं होता था। सामान्यता परिवार ही उनकी आय का स्रोत होता था। एक ऐसा संसार जहां पुरुष काम करते थे और स्त्रियां घर में रहती थीं, इन स्त्रियों की वास्तविक आवश्यकताएं हुआ करती थीं, विशेषकर यदि उनके छोटे बच्चे हों कि उनकी देखभाल करें।

इफिसुस की कलीसिया ने विधवाओं की आवश्यकताओं को जानकर उनके लिए वह किया था जो वह उन्हें सहारा देने के लिए कर सकती थी। पौलुस ने कलीसिया को ऐसा ही करते रहने को प्रोत्साहित किया था। हमारे लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि कलीसिया का कार्य केवल सुसमाचार का प्रचार करना ही नहीं है परन्तु उसी के साथ-साथ देह की व्यावहारिक आवश्यकताओं को पूरा करने का भी है। यीशु ने दरिद्रों व ज़रूरतमंदों के लिए अद्वितीय चिन्ता को प्रगट किया था। वह अपने अनुयायियों से ऐसा ही किये जाने की आशा रखता है।

इस विभाग के शेष भाग में पौलुस तीमुथियुस को कुछ मार्गदर्शिकाएं देता है कि वह विधवाओं के लिए अपनी सेवकाई में उनका अनुसरण करें।

यदि किसी विधवा के सन्तान हो (पद 4)

पौलुस तीमुथियुस को यह बताते हुए आरम्भ करता है कि यदि किसी विधवा के लड़केवाले और नाती पोते हों तो उन्हें अपनी मां की देखभाल करनी है। उन्हें उन वर्षों को याद करना है जो उसने उन्हें अपने बच्चों के रूप में दिये और उसकी देखभाल करते हुए उसकी आवश्यकताओं को पूरा कर उसे आदर देना है। प्रमुख विचार यह है कि ये बच्चे अब इतने बड़े हो गए हैं कि अपनी माँ की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कुछ कर सकें। परमेश्वर बच्चों से अपने माता-पिता की उनके ज़रूरत के समय पर देखरेख किये जाने की आशा रखता है। यदि एक विधवा की सन्तान हो जो उसकी देख-रेख कर सकते हों तो कलीसिया को इस दायित्व का बोझ नहीं लेना है।

दो तरह की विधवाएं (पद 5-6)

सभी विधवाएं एक समान नहीं थीं। कुछ ऐसी स्त्रियां थीं जिनका भरोसा परमेश्वर पर था, जबकि अन्य प्रभु की चीज़ों के लिए मर चुकी थीं। ऐसा लगता है कि पौलुस तीमुथियुस से कह रहा था कि कलीसिया को विधवा की परख करने की ज़रूरत है, यह देखने को कि वह आत्मिक है या नहीं। क्या वह भोग-विलास या सांसारिक चीज़ों के लिए जीती है या वह अपना भरोसा परमेश्वर पर रखते हुए उसके लिए जीती है? कलीसिया को उन लोगों को देखभाल करने का बोझ नहीं लेना था जो परमेश्वर के साथ कोई संबन्ध नहीं

रखना चाहते थे और जो एक पापपूर्ण जीवन शैली को जीते हुए उन्हें दिये जानेवाले स्रोतों को केवल व्यर्थ ही करेंगे।

पौलुस ने तीमुथियुस को इफिसुस के लोगों को सांसारिक भोग विलास में जीवन बिताने के खतरों को स्मरण करने को कहा (पद 7)। उसे उन्हें इस बारे में निर्देश देना था ताकि वे इस फंदे में न गिरें। इसके विपरीत उन्हें परमेश्वर के उद्देश्यों की खोज करते हुए परमेश्वर को पुकारना थी।

परिवार के लिए एक वचन (पद 8)

पौलुस विधवाओं के परिवारों के लिए भी कहता है। उसने उन्हें बताया कि यदि वे अपने संबन्धी की आवश्यकताओं को पूरा नहीं करते तो वे विश्वास से मुकर गए हैं। वे परमेश्वर के वचन की अनाज्ञाकारिता में रह रहे हैं और अविश्वासी से भी बुरे हो गए हैं। अविश्वासी भी अपने परिवार की देखरेख करने तथा उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने की ज़रूरत को पूरा करते हैं। कलीसिया को उन विश्वासियों से निपटना था जो अपने परिवार की देखरेख नहीं करते थे। ये परिवार परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह में रह रहे थे और उन्हें अनुशासित किये जाने की ज़रूरत थी।

साठ वर्ष से ऊपर की विधवाएं (पद 9)

पद 9 में पौलुस ने तीमुथियुस को निर्देश दिया कि सूची में उन साठ वर्ष से अधिक आयु की विधवाओं का नाम न लिखा जाए यदि उनके जीवन में कुछ योग्यताएं न हों। सर्वप्रथम, उसे अपने पति के प्रति विश्वासयोग्य होना था। विधवा को अपने भले कार्यों, दया और करुणा को दिखाना था। उसने अपने बच्चों का पालन-पोषण भी विश्वासयोग्यता से किया हो। उसे अतिथि-सत्कार करना तथा धर्मी जनों के पांव भी धोना था। अन्य शब्दों में, उसे एक नम्र व सेवक समान रवैये को रखना था। विधवा को एक ऐसा व्यक्ति बनना था जो अपने आस-पास के लोगों के संकट में सहायता के लिए आया हो। साठ वर्ष से कम आयु की स्त्रियों को केवल तब ही कलीसिया की ओर से सहायता मिल सकती थी यदि उन्होंने इन योग्यताओं का प्रदर्शन किया हो।

जवान विधवाएं (पद 11)

साठ वर्ष से कम आयु की विधवा का नाम कलीसिया की ओर सहायता मिलने वाली सूची में नहीं लिखा जाना था। पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि इसका कारण उसने बताया कि अपनी इच्छाओं के वश होकर वे पुनर्विवाह करना चाहेंगी। ध्यान दें कि पौलुस ने यहां तीमुथियुस को बताया कि इन विधवाओं के पुनर्विवाह किये जाने पर वे परमेश्वर के प्रति अपने समर्पण को एक ओर रख कर अपने प्रथम प्रण को तोड़ने के द्वारा स्वयं पर न्याय को लाती हैं। इस कथन से पौलुस का क्या अभिप्राय था?

पौलुस हमें यह नहीं बता रहा कि पुनर्विवाह करना गलत है। वह रोमियों 7:2–3 में स्पष्ट करता है कि एक स्त्री जिसका पति मर जाता है वह पुनर्विवाह करने को स्वतंत्र है :

> ''क्योंकि विवाहिता स्त्री व्यवस्था के अनुसार अपने पति के जीते जी उस से बन्धी है, परन्तु यदि पति मर जाए, तो वह पति की व्यवस्था से छूट गई। सो यदि पति के जीते ही वह किसी दूसरे पुरुष की हो जाए, तो व्यभिचारिणी कहलाएगी, परन्तु यदि पति मर जाए, तो वह उस व्यवस्था से छूट गई, यहां तक यदि किसी दूसरे पुरुष की हो जाए तौभी व्यभिचारिणी न ठहरेगी।''

हमें यहां यह समझने की ज़रूरत है कि कलीसिया द्वारा सहायता पानेवाली स्त्रियां भिन्न क्षमताओं से कलीसिया की सेवा करती थीं। वे कलीसिया की भलाई के लिए भले कार्य करती थीं। इसी कारण पौलुस विवश करता है कि इन स्त्रियों का समाज में एक अच्छा स्थान हो। पौलुस ने यह मांग की कि ये विधवाएं कलीसिया से सहायता प्राप्त करने से पूर्व अपनी कुछ योग्यताओं का प्रदर्शन करें क्योंकि वे समाज में इसका प्रतिनिधित्व करने जा रही थीं। यह परिच्छेद पौलुस के अध्यक्ष तथा डीकन की योग्यताओं के बारे में विचार–विमर्श करने के संदर्भ में आता है। पौलुस विधवाओं के बारे में बोलता है क्योंकि अध्यक्षों, डीकन और प्राचीनों के समान विधवाओं को भी उन दिनों की कलीसिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका को पूरा करना था।

पौलुस हमें बताता है कि कलीसियाई सेवा में रहनेवाली विधवाएं पुनर्विवाह करने का निर्णय लेने पर कलीसिया में प्रभु के लिए की जानेवाली अपनी इस विशिष्ट सेवकाई से फिर रही थीं। उन्होंने स्वयं को इस सेवकाई के लिए सौंप दिया था परन्तु अपनी शारीरिक अभिलाषाओं के कारण इसे छोड़ने की परीक्षा में थीं। तथापि, इस संदर्भ में वह उन विधवाओं की खोज में था जो अविवाहित रहने और पूरा समय प्रभु की सेवकाई करने के लिए स्वयं को मसीह के प्रति समर्पित कर सकें।

इसी कारण पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि साठ वर्ष से अधिक आयु की विधवाओं को ही कलीसिया के पूर्णकालिक सेवकाई करने की वचनबद्धता को लेना था। जवान स्त्रियों को ऐसी कोई प्रतिज्ञा नहीं करनी थी जिसे वे पूरा न कर सकती हों। उनके लिए परमेश्वर की सेवा करने की शपथ लेकर उसे तोड़ने से अधिक पुनर्विवाह करना अच्छा होगा।

पौलुस द्वारा यह अनुभव किये जाने का दूसरा कारण भी है कि जवान स्त्रियों के लिए पुनर्विवाह करना अच्छा है। उनमें सारी जवानी की शक्ति है। उन जवान स्त्रियों द्वारा एक घर से दूसरे घर तक आलस, बकबक करना और दूसरों के कामों में हाथ डालना जैसी परीक्षा में भी विस्तार होगा। स्मरण रखें कि इस सांस्कृतिक संदर्भ में स्त्रियां कार्य करने के लिए पुरुषों के समान स्वतंत्र नहीं थीं। कोई भी काम और पति न होने पर उन पर आलसी होने की परीक्षा तो आएगी। यह कलीसिया और समाज को संकटों की ओर ही लेकर जाएगा।

पौलुस ने जवान विधवाओं को विवाह करने, परिवार संभालने का परामर्श दिया जिससे शत्रु को उन्हें परीक्षा में डालने का अवसर न मिले। आलस हमारे जीवनों में शत्रु के लिए एक खुला द्वार हो सकता है।

पद 15 में पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि इनमें से कुछ विधवाएं परमेश्वर के प्रति अपने समर्पण से पहले से ही फिर चुकी थीं। वे शत्रु की परीक्षा में गिर गई थीं। पौलुस ने उन विश्वासियों को प्रोत्साहित किया जिनके परिवार में कोई विधवा थी कि उनकी देखरेख करे जिससे कलीसिया पर इसका बोझ न हो।

विचार करने के लिए :

- पौलुस कलीसिया द्वारा सहायता पानेवाली विधवाओं के लिए इन सारी योग्यताओं को क्यों रखता है? क्या इसका अर्थ यह है कि हमें अविश्वासियों की व्यावहारिक आवश्यकताओं को पूरा नहीं करना है? इस परिच्छेद में पौलुस किस तरह विधवाओं के बारे में बता रहे हैं?
- समाज में व्यावहारिक तरह से कलीसिया की आवश्यकता को पूरा करने के बारे में हम क्या सीखते हैं?
- हमारे लिए अपने परिवारों की देखरेख करना कितना महत्वपूर्ण है? आप ऐसा कैसे कर रहे हैं?
- आलस का क्या खतरा है?
- परमेश्वर के प्रति अपनी शपथ को पूरा किये जाने के संबन्ध में हम क्या सीखते हैं?
- क्या आप एक विधवा या विधुर हैं? क्या आप अपने समय का प्रयोग कर रहे हैं? यह परिच्छेद आपको क्या चुनौती देता है?

प्रार्थना के लिए :

- अपने परिवार की आवश्यकताओं को आपको दिखाने को परमेश्वर से कहें।
- अपने समाज की आवश्यकताओं के लिए आपकी आंखों को खोलने के लिए परमेश्वर से कहें।
- क्या आपकी कलीसिया में विधवाएं हैं? कुछ समय उनके लिए प्रार्थना करने में बिताएं। परमेश्वर से आपको व्यक्तिगत रूप से दिखाने को कहें कि आप उनकी सेवा कैसे कर सकते हैं?
- क्या आप एक विधवा या विधुर हैं? परमेश्वर से पूछें कि आप अपने समय का प्रयोग उसकी अधिक सेवा करने में कैसे कर सकते हैं।

22
प्राचीन

पढ़ें 1 तीमुथियुस 5:17–25

तीमुथियुस को लिखी अपनी पत्री के अगले विभाग में, प्रेरित पौलुस उससे कलीसिया के प्राचीनों के बारे में बात करने में कुछ समय बिताता है। वह यह चाहता था कि कलीसिया प्राचीनों का आदर और सम्मान परमेश्वर के लोगों के रूप में करे। पौलुस को प्राचीनों के संबन्ध में तीमुथियुस को बहुत से निर्देश देने थे। वह इन निर्देशों को आगे उन तक पहुंचाने का कार्य तीमुथियुस को देता है जिन्हें वह प्रचार कर रहा था।

प्राचीन दो गुने आदर के योग्य हैं

पौलुस तीमुथियुस को यह स्मरण कराते हुए आरम्भ करता है कि कलीसिया का प्रबन्ध करनेवाले प्राचीन दोगुने आदर के योग्य हैं। पौलुस के अनुसार यह विशेषकर उनके लिए सत्य था जो सिखाने और वचन सुनाने की सेवकाई से जुड़े थे।

''दोगुने आदर'' से पौलुस का क्या अभिप्राय है? पद 18 जवाब देता है। पद 18 में पौलुस ने तीमुथियुस को पुराने नियम का दांवनेवाले बैल के संबन्ध में नियम को स्मरण कराया। दांवने की इस प्रक्रिया में दाने को भूसी से अलग किया जाता था। व्यवस्थाविवरण 25:4 में दिया गया नियम स्पष्ट रूप से बताता है कि जिस समय एक बैल को अनाज दांवने के लिए प्रयोग किया जाता था उस समय काम करते समय वह जितना चाहे खा सकता था। बैल का न तो मुंह बान्धा जाता था और न ही उसे उस अनाज को खाने से रोका जाता था जिसे वह दांव रहा होता था। पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि मज़दूर अपनी मज़दूरी का हकदार है। प्राचीन को आदर देते हुए उसकी दैनिक आवश्यकताओं का प्रबन्ध भी करना था। एक प्राचीन को मज़दूरी दी जानी थी ताकि वह स्वयं को सिखाने व प्रचार करने की सेवकाई के प्रति समर्पित कर सके।

विशेष रूप से रोचक यह है कि पौलुस ने स्वयं वेतन पाने की चाह नहीं की थी। उसने प्रचार करने और सिखाने के लिए आवश्यक धन को प्राप्त करने

के लिए कार्य करने का चुनाव किया था। पौलुस यह नहीं कह रहा है कि प्रत्येक को वैसा ही करने की ज़रूरत है। तौभी वह यह स्पष्ट करता है कि प्रचार करने व सिखाने की सेवकाई करनेवालों का भुगतान किया जाना ज़रूरी है जबकि कुछ प्रचारक व शिक्षक पौलुस के उदाहरण का अनुसरण करना चाहते थे, तौभी कलीसिया को अपने आत्मिक अगुवों की आवश्यकताओं का प्रबन्ध करते हुए उन्हें उनको आदर देना था।

ध्यान दें कि पौलुस कहता है कि प्राचीन दोगुने आदर के योग्य हैं। पौलुस कलीसिया को यह नहीं बता रहा है कि प्राचीन को कलीसिया में किसी से भी अधिक दो बार भुगतान करना था। तथापि, वह कह रहा है कि उनकी सेवकाई का एक अद्वितीय महत्व था। ये लोग उनके प्राणों की चिन्ता में रहते थे। उनकी सेवकाई के महत्व के कारण उन्हें विशेष आदर दिया जाना था।

मैंने एक कलीसिया में कुछ वर्ष पहले सेवा की थी, जहां सदैव मिशनरी पास्टर सेवा करते थे। एक अवसर पर एक बाइबल स्कूल से प्रशिक्षित राष्ट्रीय विश्वासी ने परमेश्वर की बुलाहट का अनुभव किया कि अपने गृहनगर एक पास्टर के रूप में लौट जाए। कलीसिया ने यह कहते हुए उसके वेतन के संबन्ध में कोई भी सहयोग देने से इन्कार कर दिया कि यदि वह पास्टर होने के लिए वेतन पाना चाहता है तो उसकी सेवा संदेहास्पद थी। अन्ततः उस व्यक्ति ने वहां से जाकर किसी और कार्य में प्रशिक्षण प्राप्त किया ताकि अपनी जीविका कमा सके। अतः प्रभु की सेवा में कुछ ऐसे लोग भी हैं जो ''धन के खोजी'' हैं। तथापि, पौलुस इसे स्पष्ट करता है कि वचन की सेवकाई किसी भी अन्य कार्य की तुलना में आर्थिक सहायता पाने की अधिक हकदार है। अपनी आत्मिक अगुवाई को इस तरह से आदर देने के द्वारा हम परमेश्वर को भी आदर देते हैं।

दोषारोपण और प्राचीन (पद 19)

अगुवे सिद्ध नहीं हैं। वे किसी भी दूसरे व्यक्ति के समान गलतियां कर सकते हैं और पाप में गिर सकते हैं। ऐसे भी समय होते हैं जब एक प्राचीन को परमेश्वर के लोगों के सामने अपने कार्यों का लेखा देने को बुलाया जाता है। पौलुस यह स्पष्ट करता है कि एक प्राचीन के विरुद्ध दोषारोपण गंभीरतापूर्ण है।

एक प्राचीन के विरुद्ध किसी भी तरह का दोषारोपण उसके विरुद्ध लगाए जाने से पूर्व प्रमाणित किया जाना चाहिए। सच्चाई की पुष्टि करने के लिए दो या तीन गवाहों की ज़रूरत होती थी। यदि प्राचीन के विरोध में लगाया गया दोष गलत हो तो वह उसकी सेवकाई को नकारा कर सकता है। झूठ फैलाने वालों को ज़िम्मेवार ठहराया जाएगा। कलीसियाई अगुवाई के विरोध में बोलना

या उस पर दोष लगाना बहुत आसान है। इसके विनाशकारी परिणाम हो सकते हैं। जबकि हमें कलीसिया में किसी भी पाप के न पाए जाने के प्रति सावधान रहना है, हमें एक प्राचीन को प्रतिष्ठा और सेवकाई को नाश करने से पूर्व अपने विवरण की पुष्टि कर लेनी है। हमें अपनी कलीसिया के प्राचीनों के विरुद्ध जल्दबाज़ी में या बिना सोचे समझे कोई दोष लगाते हुए उन्हें आदर देना है। हम छोटी चीज़ों में आलोचना करने, बकबक करने के द्वारा एक प्राचीन की प्रतिष्ठा को नाश करने के दोषी हो सकते हैं। हमारी कलीसिया की अगुवाई आदर पाने के योग्य है। जो कुछ भी हम उनके बारे में कहते हैं उसके द्वारा हमें उनकी सेवकाई में बाधक न बनने के प्रति सावधान रहना है।

पद 20 में पौलुस तीमुथियुस को निर्देश देता है कि एक प्राचीन के विरोध में लगाए गए आरोपों के सत्य साबित होने पर क्या करना है। पाप करनेवाले प्राचीन को सबके सामने डांटा जाना चाहिए। सार्वजनिक रूप से प्राचीन को डांटा जाना यह स्पष्ट कर देता है कि इस विषय पर कलीसिया कहां खड़ी है। यह पूरी कलीसिया और समाज के लिए एक गवाही होगी। यह अन्य प्राचीनों को स्मरण कराएगी कि उन पर अपने कार्यों से परमेश्वर को आदर देने का दायित्व है। यह समाज के लिए भी एक गवाही थी। समाज देखेगा कि इस विषय पर कलीसिया कहां खड़ी है। कलीसिया को प्राचीन के पाप को ढांकना नहीं था। उन्हें इसे अनावृत्त कर खुले रूप से इससे निपटना था। तथापि, स्मरण रखें, कि यह प्राचीन तब भी आदर पाने के योग्य था। इसका अर्थ यह है कि उसे अनुशासित करते हुए उसके साथ तब भी आदर, सम्मान और प्रेम से व्यवहार किया जाए। पौलुस ने तीमुथियुस को यह भी निर्देश दिया कि उसे भेदभाव किये बिना इन निर्देशों का पालन करने के प्रति सावधान रहना था। कलीसिया को पक्षपात नहीं दिखाना था। आवश्यकता पड़ने पर प्रत्येक प्राचीन को अनुशासित किया जाना था।

हाथ रखने में शीघ्रता (पद 22)

आगे पौलुस कहता है कि कलीसिया को हाथ रखने में जल्दबाज़ी नहीं करनी थी (पद 22)। कलीसिया में एक प्राचीन को उसके स्थान पर नियुक्त करने के उद्देश्य से हाथों को रखा जाता था। पौलुस तीमुथियुस को यहां यह कहना चाह रहा है कि प्राचीनों को नियुक्त करने में उसे जल्दबाज़ी नहीं करनी थी। यह महत्वपूर्ण था कि इन व्यक्तियों ने स्वयं को सही प्रमाणित किया हो। हम लोगों को एक ऐसे स्थान पर बैठा सकते हैं जहां उन्हें नहीं होना चाहिए। अगुवों का चयन करने में हमें कुछ समय लेने की ज़रूरत है जिससे हम आश्वस्त हो सकें कि कलीसिया के लिए वे परमेश्वर का चुनाव हैं।

अध्याय 5 के इस अन्तिम विभाग में पौलुस तीमुथियुस को प्रभु में अपना पुत्र होने के कारण कुछ सलाह देना चाहता है। पद 22 में पौलुस तीमुथियुस को दूसरों के पापों में भागी न होकर स्वयं को पवित्र बनाए जाने की चुनौती देता है। तीमुथियुस को अपना ध्यान प्रभु पर रखते हुए पूरे मन से उसकी सेवा करनी थी। चाहे कोई कुछ भी कर रहा हो, उसे स्वयं को पवित्र रखते हुए वह करना था जो सही था। कई बार जब हम दूसरों को अपने विश्वास से समझौता करते हुए देखते हैं तब हमें लगता है कि हम भी अपने मानदण्डों को निम्न कर सकते हैं। हम अपने विश्वास और आत्मिकता को इस तरह से मापते हैं कि यह दूसरे विश्वासियों की तुलना में कैसा है, न कि परमेश्वर के वचन की तुलना में।

पद 23 हमें तीमुथियुस के बार बार बीमार होने के बारे में बताता है। पौलुस ने बहुत बार तीमुथियुस के लिए प्रार्थना की थी परन्तु तौभी तीमुथियुस बीमार रहता था। पौलुस तीमुथियुस को उसकी बीमारी के कारण थोड़ा दाखरस पीने की सलाह देता है। दाखरस तीमुथियुस के लिए दवा के समान कार्य करता। पौलुस तीमुथियुस को दाखरस को दवा के रूप में लेने को कह रहा था। यह महत्वपूर्ण है।

पौलुस ने परमेश्वर को लोगों को बिना दवा के चंगा करते देखा था। परमेश्वर के चंगा करने को लेकर उसके मस्तिष्क में कोई प्रश्न नहीं था। इसी के साथ-साथ वह यह भी जानता था कि ऐसे भी समय होते थे जब परमेश्वर ''देह में कांटा'' छोड़ देता था ताकि विश्वासी नम्र होने के साथ-साथ उस पर भरोसा करते रहें। पौलुस दवा लेने के विरोध में नहीं था। उसने तीमुथियुस को यह सुझाव देते हुए नियमित रूप से दाखरस लेने को कहा कि हो सकता है कि इसी तरह से परमेश्वर ने उसे आराम देने का चुनाव किया हो।

पौलुस तीमुथियुस को यह स्मरण कराते हुए समापन करता है कि कितने मनुष्यों के पाप प्रगट हो जाते हैं (पद 24)। इन पापों के प्रगट हो जाने के कारण उनका जल्द ही न्याय हो जाता है। कुछ के पाप प्रगट नहीं होते। उन्हें गुप्त रूप से उस समय किया गया होता है जब लोगों का ध्यान नहीं होता हो। इन पापों का न्याय उस समय होगा जब लोग परमेश्वर के सम्मुख खड़े होंगे।

यही सिद्धान्त भले कार्यों पर भी लागू होता है। कुछ कार्य प्रगट हो जाते हैं। हर कोई इन कार्यों को देखता है। तथापि, कुछ के कार्य छिपे रहते हैं। वे अपने भले कार्य गुप्त रूप से करते हैं उनके आस-पास के लोग इस बारे में जान नहीं पाते। इसी तरह से हमारे पाप भी एक दिन उसी तरह से अनावृत्त होंगे जिस तरह से हमारे भले कार्य। परमेश्वर के सम्मुख खड़े होकर हम विश्वासयोग्य सेवा के प्रतिफल को प्राप्त करेंगे। परमेश्वर हमारे पापों के प्रति अन्धा नहीं है। वह हमारे

भले कार्यों के प्रति भी अन्धा नहीं है। इसी कारण हमें विश्वासयोग्य बने रहने की ज़रूरत है। प्रतिफल देने का वह दिन आ रहा है जब प्रत्येक चीज़ को उघाड़ा जाएगा।

विचार करने के लिए :

- क्या आपकी कलीसिया के प्राचीन या आत्मिक अगुवे उस आदर को प्राप्त करते हैं जिसके वे योग्य हैं?
- कलीसिया और समाज में आत्मिक अगुवे की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है?
- पौलुस इस विभाग में एक प्राचीन के विरुद्ध आरोप लगाने के बारे में हमें क्या सिखाता है?
- पौलुस के चंगाई के दृष्टिकोण से हम क्या सीखते हैं? परमेश्वर के चंगाई के उद्देश्यों में दवा की क्या भूमिका है?
- यह परिच्छेद हमें प्रतिफल और न्याय के बारे में क्या सिखाता है?

प्रार्थना के लिए :

- अपने आत्मिक अगुवों के लिए प्रार्थना करने में कुछ समय बिताएं। परमेश्वर से कहें कि शत्रु के हमलों से वह उनकी सुरक्षा करे।
- परमेश्वर से कहें कि आपकी कलीसिया को उसके अगुवों के प्रति गहन आदर का भाव दे। उससे कहें कि अपने आत्मिक अगुवों के पीछे खड़े होने में वह आपकी कलीसिया की सहायता करे।
- परमेश्वर से कहें कि आपके आत्मिक अगुवों को प्रभावी रूप से सेवा करने को तैयार करे जैसी सेवा परमेश्वर उनसे कराना चाहता हो।
- परमेश्वर से अपने जीवन के किसी भी छिपे पाप को अनावृत्त करने को कहें ताकि आप उससे उसी समय निपट सकें।

◀▶

23

दास

पढ़ें 1 तीमुथियुस 6:12

पौलुस तीमुथियुस को लिखे अपने प्रथम पत्र का समापन कई विषयों पर टिप्पणियों की श्रृंखला के साथ करता है। वह मसीही दासों के लिए कुछ महत्वपूर्ण शिक्षाओं के साथ आरम्भ करता है। पौलुस की शिक्षा को हमारे दिनों में भी व्यावहारिक रूप से लागू किया जा सकता है।

हमारे लिए यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि दासों के बारे में बोलते हुए पौलुस गुलामी को प्रोत्साहित नहीं करता है। 1 तीमुथियुस 1:9-10 में वह स्पष्ट करता है कि दास प्रथा परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्य के प्रतिकूल थी:

> यह जानकर कि व्यवस्था धर्मीजन के लिये नहीं, पर अधर्मियों, निरंकुशों, भक्तिहीनों, पापियों, अपवित्रों और अशुद्धों, माँ-बाप के घात करनेवालों, हत्यारों, व्यभिचारियों, पुरुषगामियों, **मनुष्य के बेचनेवालों,** झूठों, और झूठी शपथ खानेवालों और इनको छोड़ खरे उपदेश के सब विरोधियों के लिए ठहराई गई है'' (इन बातों पर बल दिया है)।

जबकि परमेश्वर का उद्देश्य यह नहीं था कि लोग दास बनें, तौभी उन दिनों की संस्कृति में गुलामी विस्तृत रूप से फैली हुई थी। पौलुस ने इस अध्याय में यह बताया है कि जो पहले से ही दास हैं उन्हें कैसे जीवन व्यतीत करना चाहिए। उनकी स्थिति न तो एक आदर्श स्थिति थी न ही यह परमेश्वर की सिद्ध इच्छा थी, परन्तु वे गुलाम थे और अपने बन्धन से स्वतंत्र नहीं हो सकते थे। विश्वासी होने के कारण उन्हें क्या करना था? अपनी वर्तमान स्थिति में उन्हें कैसे रहना था? पौलुस इन प्रश्नों को संबोधित करना चाहता था।

पौलुस मसीही दासों को यह निर्देश देते हुए आरम्भ करता है कि वे अपने स्वामियों को पूरा आदर देने पर विचार करें। उन्हें ऐसा इसलिए करना था ताकि परमेश्वर के नाम की निन्दा न हो। एक मसीही दास की तुलना करें जिसने यह निर्णय लिया हो कि चूंकि गुलामी परमेश्वर की सिद्ध योजना और उद्देश्य

में नहीं थी, इसी कारण वह अपने स्वामी से भागकर अपने मार्ग पर चला जाता है। यह किस तरह की गवाही होगी? उसके स्वामी को उससे खुशी नहीं होगी। अपने स्वामी के प्रति उसके विश्वासयोग्य न रहने के कारण समाज में उसकी प्रतिष्ठा को धब्बा लगेगा। उसे उस व्यक्ति के रूप में देखा जाएगा जिसने अपने दायित्वों को छोड़ दिया हो। यह प्रभु के लिए एक अच्छी गवाही नहीं होगी। जो उसे एक मसीही के रूप में जानते थे उसके कार्यों के कारण परमेश्वर के नाम की निन्दा करेंगे।

यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि सभी स्वामी नम्र और दयालु नहीं होते थे। उनमें से कुछ कठोर और क्रूर होते थे। भले और बुरे दोनों ही स्वामियों को आदर के योग्य समझना था। उनके कार्यों के कारण ही उन्हें महत्व नहीं देना था, परन्तु उनके स्थान के कारण।

पौलुस सिखाता है कि मसीहियों को अपने ऊपर नियुक्त अधिकारियों को आदर देना है। यह दासों के लिए सत्य होने के साथ-साथ प्रशासनिक अधिकारियों के लिए भी सही बैठता है (देखें रोमियों 13:1-21)। चाहे हमारे अगुवे, स्वामी या बॉस क्रूर हों या प्रेमी, हमें कार्यकर्त्ताओं और नागरिकों के लिए भी विश्वासयोग्य होने की ज़रूरत है। हम ऐसा अपनी गवाही के कारण करते हैं और इसलिए भी क्योंकि हम प्रभु के नाम का प्रतिनिधित्व करते हैं।

दास को कठिन कार्य और विश्वासयोग्यता के द्वारा अपने स्वामी को आदर देना होता था। उसे इस तरह से रहना होता था कि उसका स्वामी उस पर पूरा भरोसा कर सके। युसुफ को मिस्र में गुलामी में बेचा गया था। पोतीपर के घर में एक दास के रूप में, उसने इतना कठोर कार्य किया था कि उसके स्वामी को उस पर पूरा भरोसा था। उत्पत्ति 39:4 में हम पढ़ते हैं:

> ''तब उसकी अनुग्रह की दृष्टि उस (यूसुफ) पर हुई, और वह उसकी सेवा टहल करने के लिए नियुक्त किया गया : फिर उसने उसको अपने घर का अधिकारी बना कर अपना सब कुछ उसके हाथ में सौंप दिया।''

यूसुफ ने अपने स्वामी के अनुग्रह को प्राप्त किया था। बाद में जब उस पर झूठा आरोप लगाकर जेल में डाला गया, यूसुफ को पुन: अपनी विश्वासयोग्यता को प्रमाणित करना था। उसने जेल के दारोगा के अनुग्रह को भी प्राप्त कर लिया था जिसने यूसुफ पर इतना अधिक भरोसा किया था कि उसने उस पर बन्दीगृह का कार्यभार सौंप दिया था।

> ''सो बन्दीगृह के दारोगा ने उन सब बन्धुओं को, जो कारागार में थे, यूसुफ के हाथ में सौंप दिया; और जो जो काम वे वहां करते थे, वही उसी की आज्ञा से होता है। बन्दीगृह के दारोगा के वश में जो कुछ था; क्योंकि उसमें

से उसको कोई भी वस्तु देखनी न पड़ती थी; इसलिये कि यहोवा यूसुफ के साथ था; और जो कुछ वह करता था, यहोवा उसको उसमें सफलता देता था'' (उत्पत्ति 39:22-23)।

यूसुफ के लिए कड़वा बनना आसान रहा होगा। वह इस कारण से कार्य करने से इन्कार कर सकता था कि वह दास या एक बन्दी बनाए जाने के योग्य नहीं था। वह विद्रोह या विरोध कर सकता था, परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। इसके विपरीत, उसने अपने स्वामी को आदर देने तथा उसके लिए वह सब करने का चयन किया जो वह उसके लिए कर सकता था। उसने अपने पूरे हृदय से सेवा की, परमेश्वर को आदर दिया, और अपने को शाप देनेवालों को आशीष दी। और परमेश्वर ने इसके लिए उसे पुरस्कृत किया।

ऐसा ही दाऊद के साथ भी हुआ था जिसके पीछे शाऊल पड़ा था। शाऊल ने कई अवसरों पर उसे मारने का प्रयास किया था। दाऊद ने शाऊल के विरुद्ध बोलने से इन्कार कर दिया था। उसने एक राजा और प्रभु के एक अभिषिक्त के रूप में उसका आदर किया था। यद्यपि उसे शाऊल के विरुद्ध अपना हाथ उठाने से इन्कार कर दिया था। इस सब में दाऊद ने प्रभु और राजा को आदर दिया था।

यिर्मयाह, परमेश्वर की ओर से उनसे बोला जिन्हें बाबुल से निर्वासित कर दिया गया था, उसने कहा :

''परन्तु जिस नगर में मैंने तुम को बंधुआ कराके भेज दिया है, उसके कुशल का यत्न किया करो, और उसके हित के लिये यहोवा से प्रार्थना किया करो। क्योंकि उसके कुशल से तुम भी कुशल के साथ रहोगे'' (यिर्मयाह 29:7)।

ध्यान दें कि यिर्मयाह ने अपने लोगों को शत्रु राज्यों को संपन्न बनाने की खोज करने को कहा जिसमें वे गुलाम थे। उन्हें अपने शत्रुओं के शहर में संपन्नता लाने को सब कुछ करना था। शत्रु के क्षेत्र में उन्हें एक आदर्श नागरिक बनना था।

इन सबका आज हमसे क्या लेना-देना है? संभवत: आप एक अविश्वासी से विवाहित हैं या आपका विवाह कठिन स्थिति में है। आपके समक्ष चुनौती अपने सहभागी को आदर देने की है। संभवत: आप एक ऐसी कार्य स्थिति में हों जो आपको पसंद न हो। संभव है कि आपका बॉस सही न हो। आपके समक्ष चुनौती एक सर्वोत्तम कर्मी बनने की है। हो सकता है कि आप पर यूसुफ के समान झूठा दोष लगाया गया हो। आपको अपने सतानेवालों को आशीष देनी है। हमें शैतान के क्षेत्र पर कभी भी युद्ध नहीं करना चाहिए। शैतान को हमें क्रोधी व कटु बनाना अच्छा लगता है। जो कुछ हमारे साथ हुआ है उसके लिए हममें कड़वाहट उत्पन्न करना उसे अच्छा लगता है। हम शैतान की चाल अथवा

रणनीति का प्रयोग कर उसे कभी भी परास्त नहीं कर पाएंगे। क्रोध के विपरीत हमें प्रेम और क्षमा करने का चुनाव करना है। भर्त्सना करने या बदला लेने की चाह रखने के विपरीत हमें आशीष व आदर देना है।

अपने दिनों के दासों के लिए यह पौलुस की चुनौती है। उसने जान लिया था कि उनमें से कुछ बहुत ही कठिन स्थिति में रह रहे थे, परन्तु तौभी उसने उन्हें इसे परमेश्वर को आदर देने, अवसर के रूप में लेने को कहा। आपकी परीक्षा क्या है? यह महत्व नहीं रखता कि हम इस स्थिति में क्यों हैं? हो सकता है कि आप यूसुफ के समान वहां हों क्योंकि किसी ने आप पर झूठा आरोप लगाया है। आपको चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं है। आपको यह चिन्ता करनी है कि आप किस तरह से ऐसा जीवन व्यतीत करें जिससे आपकी परिस्थिति के द्वारा आपके जीवन में परमेश्वर को बड़ी महिमा मिले।

पौलुस इस परिच्छेद में एक दूसरे विषय पर दासों से बोलता है। कुछ ऐसे दास थे जिनका अपने स्वामियों पर भरोसा था। संभवत: दास और स्वामी मिलकर आराधना करते हों। मसीह में वे भाई बहन थे। इन दासों के लिए अपनी स्थिति का लाभ उठाने की परीक्षा थी। उन्हें लगा कि उनके अब मसीही होने के कारण उनके साथ भिन्न तरह से व्यवहार किया जाना चाहिए। पौलुस ने इन दासों को बताया कि उन्हें अपने विश्वासी स्वामियों का लाभ नहीं उठाना है। उन्हें अब से भी अधिक विश्वासयोग्यता के साथ उनकी सेवा करनी थी, क्योंकि उन्होंने उनसे उनके स्वामी होने के साथ-साथ उनके सह-विश्वासी होने पर भी उनसे प्रेम किया था।

पुन: हमें यह स्पष्ट करने की ज़रूरत होगी कि पौलुस गुलामी को प्रोत्साहित नहीं कर रहा है। इनमें से कुछ दासों के लिए यह उनकी जीविका का एकमात्र साधन था। वे अपने स्वामी की सेवा करते और वह उनकी देखभाल करने के साथ-साथ उनकी आवश्यकताओं का प्रबन्ध करता था। विश्वासी स्वामी को अपने दासों को वह सब देना होता था जो वह उन्हें दे सकता था।

जीवन की कुछ परिस्थितियां आदर्श नहीं होती हैं। हम एक असिद्ध या अपूर्ण संसार में रहते हैं। कई बार हम स्वयं को कठिन परिस्थितियों में पाते हैं। अन्याय, झूठ और क्रूरता इस पृथ्वी पर व्याप्त हैं। ये चीज़ें परमेश्वर की योजना और उद्देश्य में नहीं हैं, परन्तु हमें उनके साथ इस तरह से जीना सीखना है जिससे परमेश्वर के नाम को महिमा मिले। यीशु ने हमें इसे किसी और से अधिक अच्छे तरीके से प्रगट किया। वह एक पाप से भरे संसार में रहता था। उस पर झूठा आरोप लगाया गया था। उसके अपने अनुयायियों में से एक ने उसका इन्कार किया तथा दूसरे ने उससे विश्वासघात किया। यीशु ने इन पुरुषों के साथ कार्य

किया था। एक पापी संसार में रहते हुए भी उसने अपने पिता को आदर दिया था। वह हमें अपने उदाहरण के पीछे चलने को बुलाता है।

विचार करने के लिए :

- इस परिच्छेद में हमें इस बारे में सिखाने को क्या है कि अपने ऊपर नियुक्त अधिकारियों का आदर करें।
- आपके कार्यस्थल में आपका किस तरह का उदाहरण है?
- क्या आपका एक कठोर बॉस है? क्या आप स्वयं को एक बहुत कठिन कार्य या जीवन की परिस्थिति में पाते हैं? इस परिच्छेद में आपके लिए चुनौती क्या है?

प्रार्थना के लिए :

- क्या आप स्वयं को एक कठोर बॉस या चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में पाते हैं? परमेश्वर से उन लोगों को आशीष देने को कहें जो आपके लिए चीज़ों को कठिन बना रहे हैं। उससे कहें कि वह आपको आपकी परिस्थिति में उसे आदर देने का अनुग्रह दे।
- क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो एक कठिन समय से होकर गुज़र रहा है? प्रभु के प्रति उन्हें समर्पित करने को कुछ समय लें। परमेश्वर से कहें कि उनकी समस्याओं में उनकी सहायता करते हुए वह अपने नाम को आदर दे।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि उसने स्वेच्छा से देह धारण की और हमारे लिए प्रेम होने के कारण वह एक पापी संसार में रहा।

24

झूठे शिक्षक

पढ़ें 1 तीमुथियुस 6:3-10

पौलुस अध्याय 6 के इस अगले विभाग में अपना ध्यान झूठे शिक्षकों के विषय पर लगाता है। पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि झूठे सिद्धान्त सिखानेवाले घमण्डी थे। इन झूठे शिक्षकों और घमण्ड के बीच क्या संबन्ध था?

प्रभु यीशु परमेश्वर है। यह उन सभी पर स्पष्ट है जो उसे देखने के लिए अपनी आंखों को खोलते हैं। यीशु ने बीमार को चंगा किया तथा अंधे को आंखें दीं। वह एक अधिकारी के रूप में बोला था। अधिकार दिखता था क्योंकि दुष्टात्माएं भी उसका नाम सुनकर भाग जाती थीं। प्रत्येक को अपने खुले मन और हृदय से यह स्वीकार करना था कि यीशु वह सब कुछ था जिसका होने का उसने दावा किया था। जो लोग उसके प्रगट चिह्नों को अस्वीकृत करते और उसकी शिक्षा का इन्कार करते हैं, ये वे घमण्डी लोग हैं जिन्होंने प्रभु के सम्मुख स्वयं को दीन करने और उसे व उसकी शिक्षा को ग्रहण करने से इन्कार कर दिया था। झूठे शिक्षकों ने स्वयं को प्रभु यीशु की शिक्षा के विरुद्ध करते हुए इसके विपरीत लोगों को उन पर विश्वास करने को बुलाया था।

हम सभी एक या दूसरे तरीके से घमण्ड में गिर सकते हैं। किसी भी समय प्रभु की शिक्षा से मुंह फेरकर हमें लगता है कि हमारे पास इससे भी अच्छा तरीका है, ऐसा करके हम घमण्ड में कार्य कर रहे होते हैं। यह प्रभु यीशु के लिए कितना ही अपमानजनक है। विश्वासी होने के कारण हमें यह जानने की ज़रूरत है कि प्रभु जानता है कि क्या सही है। उसके मार्ग सिद्ध हैं। हमें स्वयं को दीन करने और उसके उद्देश्य व शिक्षा के प्रति समर्पण करने की ज़रूरत है। झूठे शिक्षक इस कारण अभिमानी थे क्योंकि उन्होंने यह माना व सिखाया कि उनका तरीका परमेश्वर से अच्छा है। उन्होंने परमेश्वर के वचन की स्पष्ट शिक्षा के प्रतिकूल अपने स्वयं के विचारों को रखा।

इस परिच्छेद में पौलुस झूठे शिक्षकों के बारे में कुछ और भी कहना चाहता है। पद 4 में उसने तीमुथियुस को बताया कि उनकी वाद-विवाद और झगड़ों

में रुचि थी। यह उनके घमण्ड का परिणाम था। ये झूठे शिक्षक स्वयं को बुद्धिमान व ज्ञानी दिखाना चाहते थे। इन्होंने शब्दों व विचारों पर तर्क किया। उनकी शिक्षाएं देह और दुष्ट से प्रेरित थीं। यह सब परिणाम में दिखाता था। जहां कहीं भी वे गए उन्होंने वाद-विवाद और झगड़ों के लिए उकसाया। वे एक दूसरे से बढ़कर होने का प्रयास करते। वे सही होना चाहते थे और अपनी बात को सही ठहराने के लिए वे प्रेम और दया को भी छोड़ देते थे। इसका परिणाम बैर, झगड़े और संदेह के रूप में निकला। जहां कहीं भी ये शिक्षक गए, बुराई का फल परिणाम बना।

ये झूठे शिक्षक कलीसिया को विभाजित कर रहे थे। उन्होंने अपनी झूठी शिक्षाओं से भ्रम और फूट को बोया। वे मसीह की देह की एकता के लिए खतरा थे। पद 5 में पौलुस ने तीमुथियुस को स्मरण कराया कि इन झूठे शिक्षकों की बुद्धि विकृत हो गई थी। उनके मस्तिष्क घमण्डी, प्रेम रहित, विभाजन करनेवाले और बुरे थे।

पद 5 में आगे पौलुस कहता है कि इन झूठे शिक्षकों ने विश्वास किया कि भक्ति कमाई का द्वार है। परमेश्वर की महिमा में उनकी कोई रुचि नहीं थी। उनकी रुचि धन और व्यक्तिगत लाभ में थी। शिक्षा देने के बदले उन्होंने धन प्राप्त करने की आशा की थी। इन लोगों के लिए धर्म आर्थिक और व्यक्तिगत लाभ का साधन था। अपने आर्थिक लाभ के लिए उन्होंने मसीह के नाम का भी प्रयोग किया। पौलुस इस सच्चाई में दृढ़ विश्वास रखता था कि सत्य को सिखाने व प्रचार करनेवालों को उनकी सेवा के लिए भुगतान किया जाना चाहिए। पौलुस यह नहीं कह रहा है कि परमेश्वर के सेवकों के रूप में अपनी सेवकाई के लिए हमें कभी कोई आर्थिक पुरस्कार ग्रहण नहीं करना चाहिए। तथापि, वह यह कह रहा है कि इन झूठे शिक्षकों की धन तथा व्यक्तिगत लाभ पाने में गलत रुचि थी। उनके प्रचार और शिक्षा में यह एक प्रेरक घटक बन गया था। उन्होंने धन कमाने का प्रचार किया, न कि परमेश्वर के राज्य का निर्माण करने का।

पद 6-8 में पौलुस हमें स्मरण कराता है कि संतोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है। ध्यान दें कि उसने भक्ति के साथ संतोष शब्द का प्रयोग कैसे किया है। जो कुछ परमेश्वर देता है संतोष उसे ग्रहण करता है। जो कुछ दिया जाता है यह उससे अधिक पाने के पीछे नहीं भागता। यह आनन्द करता तथा परमेश्वर के प्रबन्ध से संतुष्ट रहता है। यह अधिक पाने के लिए संघर्ष नहीं करता परन्तु जो कुछ उसके पास होता है उसमें आनन्दित रहता है।

संतोष रखना या संतुष्ट होना कितना अद्भुत है। अधिक से अधिक पाने का प्रयास करनेवाले कभी भी अपनी इच्छा से संतुष्टि नहीं पाते। एक विश्वासी के

लिए यह कितना भिन्न है जो परमेश्वर द्वारा दी जाने वाले प्रत्येक चीज़ को ग्रहण करता और उसमें आनन्दित रहना सीखता है। यह स्वतंत्रता को लेकर आता है। परमेश्वर की शांति हमें भर देती है। और हम इस भरोसे में विश्राम करने के योग्य हो जाते हैं कि वह वही करता है जो अच्छा होता है, और सारी ज़रूरतों को पूरा भी करता है।

पौलुस हमें परमेश्वर के प्रबन्ध में विश्राम करने की चुनौती देता है। पद 7 में वह हमें स्मरण कराता है कि न तो हम इस जगत में कुछ लाएं हैं और न ही यहां से कुछ लेकर जाएंगे। धन और सम्पत्ति के पीछे हमारा भागना बेकार है। पद 8 में पौलुस तीमुथियुस के निर्देश देता है कि यदि खाने और पहनने को हो तो इन्हीं पर संतोष करना चाहिए। उसका केंद्र इस संसार की चीज़ों पर नहीं होना था।

परन्तु परमेश्वर के राज्य पर। धनी होने का प्रयास करना अन्ततः एक विश्वासी को परीक्षा में गिराने का कारण होगा (पद 9)। यदि हम देह की अभिलाषाओं को तृप्त करने का चुनाव करें तो हम पाएंगे कि इसकी भूख भयंकर है। यह कभी भी संतुष्ट नहीं होगी। इसकी अभिलाषाएं शीघ्र ही हमें परास्त कर देंगी और अन्ततः हमें उजाड़ देंगी।

रुपये का प्रेम इस संसार में पाई जाने वाली सभी तरह की बुराईयों का आधार रहा है। हत्या, अनैतिकता और सभी तरह के अपराध प्रेम और धन पाने के कारण होते रहे हैं। अनगिनत लोग विश्वास से भटक गए हैं। जिसका कारण धन की की लालसा है। कुछ अपने जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट से फिर गए हैं। कुछ ऐसे हैं जिन्होंने अधिक पाने की चाह के कारण अपने विश्वास और गवाही से समझौता कर लिया है। पौलुस यहां हमें सांसारिक संपत्ति की अनुचित खोज में फंसने के खतरे से सावधान करता है।

इस परिच्छेद में पौलुस तीमुथियुस को बता है कि झूठे शिक्षक घमण्डी लोग थे जो मसीह की स्पष्ट शिक्षा को चुनौती देने तथा अपने स्वयं के विचारों को आगे बढ़ाने से भी नहीं हिचकते थे। उन्होंने मसीह की देह में भ्रम और फूट की रचना की थी। विश्वासियों में विभाजन कर वे कलीसिया में विभाजन का कारण बने। उन्होंने धन और सम्पत्ति से प्रेम किया। उनका केन्द्र मसीह की देह का निर्माण करने पर नहीं परन्तु अपनी व्यक्तिगत रुचियों का निर्माण करने पर था।

वचन के सच्चे विश्वासी और प्रचारक होने के कारण हमारे लिए मसीह की स्पष्ट शिक्षा को बिना प्रश्न किये ग्रहण करने की चुनौती है। प्रभु ऐसे लोगों को खोज रहा है जो उस पर और उसके वचन पर पूरी तरह से भरोसा करें। वह ऐसे लोगों को बुला रहा है जो न केवल उस पर विश्वास करेंगे जो वह कहता है

परन्तु उसके द्वारा किये जाने वाले प्रबन्ध से संतुष्ट भी होंगे। वह उन्हें ढूंढ रहा है जिनमें उसके प्रति गहरा प्रेम होने के साथ–साथ उसके राज्य का निर्माण करने की निष्कपट रुचि भी हो।

विचार करने के लिए :

- पौलुस का यह कहने से क्या अभिप्राय है कि झूठा शिक्षक घमण्डी होता है?
- क्या आपने कभी परमेश्वर के वचन की शिक्षा पर प्रश्न किया या उसका कभी पुनः अर्थ लगाने का प्रयास जो स्पष्ट प्रतीत होता है, कि आपकी ज़रूरत के अनुसार सही बैठे? यह हमें इस बारे में क्या सिखाता है कि हम मसीह और उसके वचन के बारे में क्या सोचते हैं?
- प्रभु की सेवा करने में आपका प्रेरक कौन है? क्या आप कभी इस संसार की चीज़ों के पीछे जाने की परीक्षा में पड़े हैं?
- मसीही जीवन में संतोष कितना महत्वपूर्ण है? संतोष के क्या फायदे हैं?

प्रार्थना के लिए:

- क्या आपने कभी परमेश्वर के वचन पर प्रश्न किया है? परमेश्वर से आपके विश्वास को बढ़ाने और उस पर भरोसा करने को कहें।
- आप स्वयं को इस समय जिस परिस्थिति में पाते हैं उसमें परमेश्वर को आपको संतोष देने को कहें। परमेश्वर से कहें कि आपको आनन्द करने और भरोसा करने का अनुग्रह दे, उसके लिए जिसका प्रबन्ध उसने पहले से ही आपके लिए कर दिया है।
- क्या आपके बीच में झूठे शिक्षक हैं? परमेश्वर से कहें कि वह स्वयं को उन पर एक स्पष्ट तरीके से प्रगट करे।

25

तीमुथियुस के लिए एक शब्द

पढ़ें 1 तीमुथियुस 6:11–21

तीमुथियुस को लिखे अपने पहले पत्र के इस अन्तिम विभाग में, पौलुस के पास विश्वास में अपने पुत्र के लिए कहने को कुछ शब्द हैं। पौलुस को तीमुथियुस और उसकी आत्मिक चाल को लेकर अधिक चिन्ता थी। इस अन्तिम विभाग में, पौलुस अपने पुत्र तीमुथियुस को ईश्वरीय परामर्श और सलाह देता है।

पद 11 में पौलुस तीमुथियुस को यह चुनौती देते हुए आरम्भ करता है कि जिन चीज़ों के बारे में वह इस अध्याय के प्रथम भाग में बता रहा था अर्थात् झूठे शिक्षकों का घमण्ड और उन्होंने कैसे कलीसिया का विभाजन किया व धन से प्रेम किया, उसे इन सब चीज़ों से भागना है। पौलुस ने तीमुथियुस से बड़ी चीज़ों की आशा की थी।

''भाग'' शब्द के प्रयोग पर ध्यान दें। घमण्ड, विभाजन और रुपये का प्रेम विनाशकारी शत्रु हैं। वे अपने शिकार को फंसाते व नाश कर देते हैं। पौलुस ने तीमुथियुस को उनकी पकड़ से बचने का प्रोत्साहित किया। तीमुथियुस को इसके विपरीत धार्मिकता, भक्ति, प्रेम, धीरज और नम्रता का पीछा करना था। हम व्यक्तिगत रूप से इन योग्यताओं की जांच करने में कुछ समय बिताएंगे।

धार्मिकता एक व्यक्ति की वह दशा है जिसमें वह परमेश्वर के साथ सही संबन्ध में होता है। ऐसा केवल प्रभु यीशु के कार्य द्वारा ही संभव है। उसके कार्य के द्वारा सभी अवरोधों को तोड़ा गया है तथा जिन्होंने उसके कार्य पर भरोसा किया है उन्हें परमेश्वर द्वारा धर्मी घोषित किया गया है। हमें भी इसी धार्मिकता का पीछा करना चाहिए।

पौलुस यहां तीमुथियुस को यह चेतावनी दे रहा है कि परमेश्वर कोई भी चीज़ उसे मसीह के लिए जीने और उसके साथ गहरी घनिष्ठता का पीछा करने से अलग न करने पाए। ''पीछा करना'' का अर्थ किसी चीज़ के लिए संघर्ष करना या लड़ने से है। किसी भी चीज़ का पीछा करने के लिए कठोर कार्य, अनुशासन और प्रयास की आवश्यकता होती है। तीमुथियुस को परमेश्वर के साथ

बनाए गए इस नये संबन्ध की रक्षा करनी थी। उसे किसी भी चीज़ को अपने और उद्धारकर्ता के बीच में नहीं आने देना था।

तीमुथियुस को भक्ति का भी पीछा करना था। भक्ति का पीछा करने के लिए तीमुथियुस को हर उस चीज़ से निपटना था जो उसके भक्त बनने में बाधा उत्पन्न करती। इसका अर्थ यह है कि उसे अपने जीवन से पाप और बुराई को हटाना होगा। उसे अपने अधर्मी कार्यों, आदतों और विचारों से निपटना होगा। उसे उस परमेश्वर के समान अधिक से अधिक होने का प्रयास करना था जिसने चरित्र और कार्यों में उसकी रचना की थी।

जिस विश्वास का तीमुथियुस को पीछा करना था वह परमेश्वर और उसके वचन में पूरा भरोसा रखने का है। शत्रु–परमेश्वर और उसके वचन पर तीमुथियुस के विश्वास को डगमगाने का पूरा प्रयास करेगा। वह उसमें परमेश्वर के प्रबन्ध व समर्थ किये जाने के प्रति संदेह उत्पन्न करने का प्रयास करेगा। ऐसा ही उसने अदन की वाटिका में हव्वा के साथ किया था। विश्वास भरोसा करता है जबकि तर्क हमें बताता है कि कोई आशा नहीं है। यह परमेश्वर की विश्वासयोग्यता का एक विश्वस्त आश्वासन है। परमेश्वर का सच्चा जन बनने के लिए तीमुथियुस को परमेश्वर तथा उसके वचन में पूरा–पूरा भरोसा करना होगा।

तीमुथियुस को प्रेम करने के लिए भी बुलाया गया है। जो कुछ भी उसने किया था, यह प्रेम उसकी प्रेरणा था। उसे परमेश्वर से प्रेम करने के साथ–साथ उसकी सेवा प्रेम से प्रवाहित होने वाले हृदय से करनी थी। उसे मसीह में अपने बहन भाइयों से प्रेम करने के साथ–साथ उनके साथ उस आदर से व्यवहार करना था जिसके वे योग्य थे। प्रेम में कोई छिपे कार्यक्रम नहीं होते हैं। प्रेम इस कारण सेवा नहीं करता कि उसे क्या मिल सकता है। इसकी मंशा आदरनीय होती है। प्रेम के हमारे प्रेरणा स्रोत होने पर ही हम परमेश्वर को तथा उन्हें आदर दे सकते हैं जिनकी हम सेवा करते हैं।

पौलुस की सूची की अगली विशिष्टता धीरज है। तीमुथियुस को एक लक्ष्य रखने तथा उससे जुड़े रहने की ज़रूरत है। उसे उस उद्देश्य से अलग नहीं होना था। धीरज में संघर्ष और कष्ट आते हैं। भक्त बनने का अर्थ यह नहीं कि कभी कठिनाईयां नहीं आएंगी। सभी ओर से विरोध होगा– आत्मिक रूप से, शारीरिक रूप से और भावनात्मक रूप से। पौलुस तीमुथियुस को यह सभी कष्ट सहने और भक्ति, विश्वास, प्रेम व धार्मिकता का पीछा किसी भी कीमत पर करने को बुलाता है।

पौलुस द्वारा वर्णित अन्तिम विशिष्टता नम्रता है। पौलुस ने तीमुथियुस से उसकी सेवकाई में नम्रता का पीछे करने की आशा की थी। उसे न तो कठोर होना था और न ही लोगों पर स्वयं को डालना था। जिनके साथ उसने सेवा की

थी उसे उनके साथ आदर व सम्मान के साथ व्यवहार करना था। उसे मसीह में अपने भाइयों और बहनों के रूप में उन्हें आदर देना व प्रेम करना था।

पौलुस ने तीमुथियुस को विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़ने को कहा था (पद 12)। यह रोचक है कि पौलुस ने ''कुश्ती'' शब्द का प्रयोग किया है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि मसीही जीवन सरल नहीं होता। शैतान अपनी शक्ति से हमें परास्त करने को सब कुछ करेगा। हमें युद्ध करने के लिए तैयार रहना चाहिए। वह हमारी शारीरिक अभिलाषाओं के द्वारा हमें परीक्षा में डालेगा। वह हमें निराश करने के कारण उत्पन्न करेगा। वह संदेह और भ्रम लाने का पूरा प्रयास करेगा। हममें से किसने शत्रु की परीक्षाओं और प्रहारों का सामना नहीं किया है? भक्त होने से अभिप्राय परमेश्वर के विश्वास के वचन और उसके द्वारा समर्थ किये जाने से कुश्ती को लड़ना है।

तीमुथियुस को अनन्त जीवन पर अधिकार लेना था। यहां विचार इस अनन्त जीवन की वास्तविकता में रहने का है। बहुत से विश्वासी इस अनन्त जीवन की वास्तविकता में नहीं रहते हैं। वे इस संसार के लिए अकेले रहते हैं। उनका केन्द्र इस संसार की चीज़ें होती हैं। अनन्त जीवन पर अधिकार ले लेने पर हमारी प्राथमिकताएं बदल जाती हैं। इस संसार ने अपने आकर्षण को खो दिया है। इसका हमारे सेवा करने और रहने पर भी प्रभाव पड़ता है। तीमुथियुस को अपनी दृष्टि में अनन्तता के साथ रहना था।

पद 12 में पौलुस ने तीमुथियुस को स्मरण कराया कि उसने पहले से ही उस जीवन पर अधिकार कर लिया था जब उसने बहुत से गवाहों के सामने अंगीकार किया था। हमें इस अंगीकार की परिस्थितियों के बारे में नहीं बताया गया है। यह स्पष्ट नहीं होता है कि पौलुस एकमात्र घटना के बारे में बता रहा था या फिर वह तीमुथियुस की गवाही के बारे में हर जगह जाते हुए बता रहा है, जो उसने हर जगह दी थी। उसने प्रभु यीशु पर भरोसा किया तथा उसके लिए जीने को स्वयं को सौंप दिया था। तीमुथियुस को जीवन में इस पर ध्यान देना था।

पद 13 में पौलुस ने परमेश्वर और प्रभु यीशु की दृष्टि में होकर तीमुथियुस को आज्ञा दी कि वह उसे दी गई आज्ञा को पूरा करे। उसने उसे स्मरण कराया कि परमेश्वर ने ही जीवन दिया था। वह जीवन ले लेने में भी सक्षम थ। तीमुथियुस को एक उपयुक्त भय के साथ रहना था और उसे इस जीवन देनेवाले परमेश्वर का भय मानना था, जिसके समक्ष वह इफिसुस की कलीसिया के पास्टर के रूप में ज़िम्मेदार था।

पौलुस ने तीमुथियुस को प्रभु यीशु के समक्ष अपनी आज्ञाओं को मानने की आज्ञा दी थी जिसने कि अपने पर दोष लगाने वाले पीलास के समक्ष एक अच्छा

अंगीकार किया था। यीशु मृत्यु तक विश्वासयोग्य रहा था। उसने स्वेच्छा से अपने जीवन को अपने लोगों के लिए न्योछावर कर दिया था। हम भी अब उसके समक्ष ऐसा ही करने को बाध्य हैं। उसने हमारे लिए एक उदाहरण को रख दिया। उसने हमें किसी भी ऐसी चीज़ को करने के लिए नहीं बुलाया है जिसे वह स्वयं हमारे लिए करने को तैयार न हुआ हो।

इन सच्चाइयों की रोशनी में, पौलुस ने तीमुथियुस के आगे धीरज धरने और परमेश्वर के वचन के सत्य में बने रहने की चुनौती दी थी, चाहे कितनी भी बाधाएं उसके मार्ग में क्यों न आएं। उसे प्रभु यीशु की वापसी तक स्वयं को निर्दोष और निष्कलंक बनाए रखने की ज़रूरत थी। ऐसा करना सरल नहीं था। इसका अभिप्राय दुख, कष्ट, परीक्षा और सताव से था।

पद 15-16 में पौलुस प्रभु परमेश्वर और उसके अद्भुत कार्य के लिए स्तुति से भरा है। वह हमें स्मरण कराता है कि यीशु ही धन्य है और वही एकमात्र शासक है। वह राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है। उससे ऊपर कोई नहीं है। वह सभी चीज़ों पर शासन व नियंत्रण करता है। वह मर नहीं सकता। वह सदा के लिए राज्य करेगा। हम अपना भरोसा उस पर रख सकते हैं।

यह परमेश्वर एक अप्राप्त रोशनी में रहता है। वह अद्भुत व पवित्र परमेश्वर है कि हम कभी भी उस तक अपने आप नहीं पहुंच सकते हैं। अपने पाप में उस तक पहुंचना नाश होने का कारण होगा। पुराने नियम के दिनों में जो कोई भी उस पहाड़ तक पहुंचता था जिस पर परमेश्वर उतरता था, वह तत्काल ही मर जाता था। वह ऐसा परमेश्वर है जिसका आदर करने के साथ-साथ भय भी माना जाना चाहिए। किसी ने भी कभी परमेश्वर को नहीं देखा है। वह अदृश्य है और उसका कोई रूप नहीं है।

परमेश्वर के बारे में यह विचार मानो पौलुस के हृदय में भरे हुए थे। वह परमेश्वर की उसके लिए स्तुति करता व धन्यवाद देता है जो वह है। जो वह है इसकी रोशनी में, कौन उसका आदर व सेवा करना नहीं चाहेगा? पौलुस तीमुथियुस को परमेश्वर के इस अद्वितीय चरित्र को परावर्तित करने की चुनौती देता है। उसे स्मरण रखना था कि परमेश्वर के पुत्र ने उसके लिए क्रूस पर क्या किया था। अनन्त जीवन की रोशनी में रहने के लिए उसे इन विचारों से स्वयं को प्रेरित करने देना था।

पौलुस ने तीमुथियुस को धनी लोगों से बोलने और उन्हें यह बताने का परामर्श दिया कि अभिमानी न हों (पद 17-19)। धनी लोगों के लिए परीक्षा स्वयं को दरिद्रों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण होने के रूप में देखने की थी। तीमुथियुस को उन्हें चुनौती देनी थी कि वे अपने धन पर भरोसा और आशा न

रखें। उनका धन अनिश्चित था और किसी भी क्षण उनसे इसे लिया जा सकता था। इसके विपरीत, उन्हें अपनी आशा प्रभु परमेश्वर पर रखनी थी जो उनके सुख के लिए हर चीज़ दे सकता था। यहां इस पद में हमें दो चीज़ों को देखने की ज़रूरत है।

सर्वप्रथम, हमें यह समझने की ज़रूरत है कि हमारे लिए परमेश्वर की तुलना में धन पर भरोसा रखना कितना सरल है। जब कोई मार्ग दिखाई न दे तब उस दशा में हम अनुभव कर सकते हैं कि हमें परमेश्वर की ज़रूरत है। प्रायः परमेश्वर ही हमारा अन्तिम आश्रय होता है। हम उस समय प्रार्थना करते हैं जब हमारे पास परमेश्वर पर भरोसा करने के अतिरिक्त और कुछ करने का चुनाव नहीं होता। यह धनी लोगों के लिए परीक्षा थी। तौभी, पौलुस ने उन्हें चुनौती दी कि इस आत्मनिर्भरता को उतार कर परमेश्वर पर भरोसा करें। चाहे हमें परमेश्वर पर अभी भी कितना ही भरोसा करने की ज़रूरत क्यों न हो। अभी भी हमें उसके प्रति समर्पण करने की ज़रूरत है।

दूसरी चीज़ जो पौलुस हमें यहां बताता है कि परमेश्वर हमारे सुख के लिए हमें हर चीज़ देगा इसे विशिष्ट रूप से रोचक पाता हूं। कितनी ही बार हम यह कहने के फंदे में गिर जाते हैं कि परमेश्वर केवल हमारी आवश्यकताओं को ही पूरा करेगा। परमेश्वर कठोर नहीं है। वह अपनी आशीषों को रोककर नहीं रखता है। वास्तव में वह अपनी आशीषों को हम पर उण्डेलने के द्वारा आनन्दित होता है। वह गहराई से हमारी और हमारी आवश्यकताओं की चिन्ता करता है परन्तु वह हमारे लिए सुख और नवीनता का भी प्रबन्ध करता है।

पौलुस ने तीमुथियुस को धनी लोगों को यह आज्ञा देने को कहा कि वे भले कामों में धनी बनें और जो कुछ भी वे परमेश्वर से प्राप्त करते हैं उसमें उदार बनें। उन्हें ऐसा यह जानते हुए करना था कि परमेश्वर उनकी आवश्यकताओं की भी चिन्ता करेगा।

ध्यान दें कि यदि वे उदारता से दें तो परमेश्वर न केवल उनकी आवश्यकताओं की चिन्ता करेगा, परन्तु देने के द्वारा वे अपने लिए स्वर्ग में खज़ाना जमा करने के योग्य हो पाएंगे। यह उसका एक भाग था जो पौलुस कहना चाहता था, जब उसने तीमुथियुस को अनन्तता की रोशनी में बने रहने की चुनौती दी थी। इस जीवन के लिए सम्पत्ति एकत्रित करने के विपरीत, धनी लोगों को आनेवाले जीवन पर विचार करना था। अपने दुनियावी बैंक खाते का निर्माण करने के विपरीत, उन्हें परमेश्वर प्रदत्त उन स्रोतों का प्रयोग करते हुए जो परमेश्वर ने उन्हें दूसरों की सेवा करने के लिए दिये थे, उन्हें अपने स्वर्गीय बैंक खाते का निर्माण करना था।

तीमुथियुस को पौलुस के परामर्श देने का अन्तिम भाग उसकी सुरक्षा करने का था जिसे उसकी देखरेख में सौंपा गया था। इस पद का संदर्भ यह संकेत देने वाला है कि पौलुस सत्य के वचन के बारे में बोल रहा है। उसने उसे इस सत्य की रक्षा अशुद्ध बकवाद और विरोधी बातों से दूर रहने के द्वारा करने को कही। बहुत से लोग मानव तर्कों में विचारों का विरोध करने के शिकार हो जाते हैं। ऐसा करते हुए वे सत्य से भटक जाते हैं। पौलुस ने तीमुथियुस को सत्य की रक्षा करने हेतु अपना सर्वोत्तम करने को कहा जिस उसे सौंपा गया था। उसे इसका प्रचार करना, इस पर विश्वास करना और इसमें रहना था। उसे सत्य से लड़कर उन लोगों से दूर होना था जो दूसरे सिद्धान्त की शिक्षा देते हैं।

परमेश्वर के अनुसार जीवन व्यतीत करना सरल नहीं होता। इसके लिए हमें प्रयास करने व धीरज रखने की ज़रूरत होगी। यदि हम परमेश्वर के स्त्री पुरुष बनना चाहते हैं, तो हमें तीमुथियुस को दी गई पौलुस की सलाह को गंभीरता से लेना होगा।

विचार करने के लिए :

- आज आपको किस विशिष्ट परीक्षा से भागने की ज़रूरत है?
- इस विभाग में हम मसीही जीवन के एक युद्ध होने के बारे में क्या सीखते हैं? क्या हम अपने लिए चीज़ों के सरल होने की आशा कर सकते हैं? आपको किन विशिष्ट युद्धों का सामना करना पड़ा है?
- अनन्त जीवन पर अधिकार करने का क्या अर्थ है? क्या आप अपने हृदय और मन से अनन्तता में रह रहे हैं?
- हम इस बारे में क्या सीखते हैं कि परमेश्वर कैसे देता है? क्या वह हिचकिचाहट के साथ देता है?
- क्या आपने कभी स्वयं को परमेश्वर की अपेक्षा अपने स्वयं के स्रोतों पर भरोसा करते पाया है? पौलुस हमें यहां कौन सी चुनौती देता है?

प्रार्थना के लिए :

- परमेश्वर से आपको उसके तथा उसके वचन के प्रति सच्चा बने रहने को कहें।
- परमेश्वर से आपके मन को अनन्तता पर रखने तथा आपको केवल इस संसार के लिए जीवन बिताने से दूर रखने को कहें।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि वह उदारता से देता है। परमेश्वर से आपको भी उस उदार आत्मा को देने को कहें।
- परमेश्वर से आपको अन्त तक धीरज धरने और विश्वास की अच्छी लड़ाई लड़ने की शक्ति देने के लिए कहें।

26

लज्जित न हो

पढ़ें 2 तीमुथियुस 1:1-18

यह तीमुथियुस को लिखा पौलुस का दूसरा पत्र है, जो कि विश्वास में उसका पुत्र था। तीमुथियुस के लिए पौलुस की चिन्ता प्रगट थी क्योंकि उसने उसे सुसमाचार में आगे बढ़ने की चुनौती दी थी।

पौलुस अपना परिचय देने के द्वारा अपने पत्र का आरम्भ करता है। इसका कारण यह नहीं था कि तीमुथियुस को किसी परिचय की ज़रूरत थी। हमारे लिये यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि पौलुस को अपनी बुलाहट पर गर्व था। उसने तीमुथियुस को स्मरण कराया कि वह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार मसीह का एक प्रेरित था। इस सेवकाई के लिए पौलुस को परमेश्वर द्वारा चुना गया था। पौलुस परमेश्वर द्वारा इस भूमिका को पूरा किये जाने के लिए अद्वितीय विशेषाधिकार व आदर दिये जाने को कभी भूला नहीं था। ध्यान दें कि वह जीवन की प्रतिज्ञा के अनुसार जो कि मसीह यीशु में थी, एक प्रेरित था। पौलुस ने इसी जीवन की प्रतिज्ञा का प्रचार किया था। प्रभु यीशु पापों की क्षमा द्वारा जीवन देने को आए। पौलुस को संसार के साथ इस प्रतिज्ञा को बांटने हेतु परमेश्वर के एक सेवक के रूप में चुना गया था।

पौलुस ने यह पत्र तीमुथियुस को लिखा था, जिसको वह प्रिय पुत्र के रूप में मानता था। तीमुथियुस का आत्मिक पिता होने के कारण, पौलुस चाहता था कि तीमुमियुस प्रभु में वह सब बने जो वह बन सकता था। पद 2 में ध्यान दें कि पौलुस की व्यक्तिगत इच्छा यह थी कि तीमुथियुस परमेश्वर के अनुग्रह, दया और शांति का अनुभव करे।

पद 3 में पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि उसके शुद्ध विवेक से प्रार्थना करने के कारण, दिन रात उसे अपनी प्रार्थनाओं में स्मरण करते हुए उसने परमेश्वर को धन्यवाद दिया था। यहां हमें दो चीज़ों पर ध्यान देने की ज़रूरत है।

सर्वप्रथम, पौलुस ने एक शुद्ध विवेक से प्रभु की सेवा की थी। प्रभु की सेवा करने के कारण वहां कोई झूठे उद्देश्य नहीं थे। उसके और परमेश्वर के

बीच में कुछ नहीं था। वह एक साफ पात्र था जिसके द्वारा प्रभु प्रवाहित हो सकता था।

दूसरा, पौलुस ने तीमुथियुस को दिन और रात अपनी प्रार्थनाओं में स्मरण किया था। तीमुथियुस के प्रभु की सेवा करने के कारण, पौलुस ने उसके लिए परमेश्वर की दोहाई दी थी। तीमुथियुस के लिए यह कितना प्रोत्साहित करनेवाला रहा होगा। उसके लिये यह जानना कितना ही आशीषपूर्ण रहा होगा कि महान प्रेरित पौलुस ने दिन और रात प्रभु से उसके लिए प्रार्थना की थी। यह प्रेरित के विश्वास में अपने पुत्र के लिए गहन चिन्ता को दिखाता है।

इस परिच्छेद में बताए गए तीमुथियुस के लिए पौलुस के प्रेम पर ध्यान दें। पद 4 में पौलुस तीमुथियुस के आंसुओं के बारे में बोलता है। हमें यह नहीं बताया गया कि तीमुथियुस ने कब वे आंसू बहाए थे। यह उस समय हो सकता है जब उसने पौलुस को इफिसुस में सेवा करने के लिए छोड़ा था। निस्संदेह उसके इन आंसुओं ने पौलुस को छू लिया था और वह उससे अधिक मिलने की इच्छा करने लगा था।

तीमुथियुस का पालन-पोषण घर में परमेश्वर से प्रेम करनेवाली नानी के साथ हुआ था। यह विश्वास तीमुथियुस की मां तक आ गया था। अब स्वयं तीमुथियुस उस विश्वास की ज्वाला को लेकर आगे बढ़ रहा था।

पौलुस ने तीमुथियुस को परमेश्वर द्वारा उसे दिये इस दान की ज्वाला को हवा देने को कहा था। यह दान उसे हाथ रखने के द्वारा दिया गया था। इस दान के द्वारा ही तीमुथियुस अपना विश्वास दूसरों तक आगे बढ़ा सकता था।

हमारे आत्मिक दानों के विकसित होने की ज़रूरत है। ये दान सुलगाने वाली ज्वाला के समान हैं। उनका प्रयोग न किये जाने पर उनके चले जाने की भी संभावना होती है। दूसरी ओर, उन्हें ज्वाला के रूप में होने को हवा भी दी जा सकती है और यह परमेश्वर के राज्य के लिए बहुत उपयोगी हो सकता है। इन दानों को परमेश्वर के राज्य के लिए सामर्थ के साथ प्रयोग किया जा सकता है या फिर आप उनका प्रयोग न करने का भी चुनाव कर सकते हैं। आप उन्हें चमकने दे सकते हैं या फिर आप ज्वाला को धीरे-धीरे मरने दे सकते हैं। परमेश्वर ने किसी कारण से आपको आत्मिक दान दिया है। उसने आपको एक विशिष्ट तरह से सेवा करने को अद्वितीय रूप से तैयार किया है। वह आपको आपके दान क्षेत्र में प्रयोग करना चाहता है। आपकी अद्वितीय सेवकाई होगी। यह किसी और की सेवकाई के समान नहीं दिखेगी। मसीह की देह में आपको एक विशेष भूमिका को पूरा करना है। यह कितना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर ने हमें जिन दानों को दिया है उन्हें हम ज्वाला बनने की हवा दें जिससे परमेश्वर के राज्य का विस्तार हो।

ऐसा लगता है कि तीमुथियुस कई बार विश्वास में कदम उठाने से हिचकता था। तौभी, पौलुस ने उसे स्मरण कराया कि परमेश्वर ने उसे भय का आत्मा नहीं दी है। इसके विपरीत उसने उसे सामर्थ प्रेम और संयम की आत्मा दी है।

हम कितनी बार विश्वास में कदम बढ़ाने से हिचकिचाते हैं? परमेश्वर ने जिस कार्य के लिए हमें बुलाया है हम उसके लिए स्वयं को अयोग्य या असमर्थ पाते हैं। शत्रु का हमारा कोने में छिपना अच्छा लगता है। उसे भयभीत मसीहियों को सेवा करने से इन्कार करते हुए देखना अच्छा लगता है क्योंकि वे स्वयं को अयोग्य या अपर्याप्त अनुभव करते हैं। भय की आत्मा हमें आगे बढ़ने से रोकती है। यह आत्मा परमेश्वर की ओर से नहीं है।

परमेश्वर ने जो आत्मा हमें दी है वह सामर्थ की आत्मा है। परमेश्वर का आत्मा हम में एक विजयी आत्मा है। परमेश्वर का आत्मा हममें होने के कारण हम शत्रु का सामना करने से नहीं डरते क्योंकि हम जानते हैं कि हम विजेता से बढ़कर हैं। परमेश्वर असंभव का परमेश्वर है। पौलुस ने तीमुथियुस को सर्वसामर्थी परमेश्वर पर भरोसा रखने की चुनौती दी थी। बहुत से विश्वासी इस कारण असफल हो जाते हैं क्योंकि वे उस सामर्थ के स्रोत का भी प्रयोग नहीं कर पाते जो मसीह में उनका है। इसके विपरीत, वे शक्तिहीनता और अपर्याप्तता के भाव में पकड़े जाते हैं। यह परमेश्वर की ओर से नहीं है। उसने हमें अपना सामर्थ्य का आत्मा दिया है।

परमेश्वर ने न केवल हमें हमें सामर्थ्य का आत्मा दिया है परन्तु प्रेम का भी। प्रेम के बिना सामर्थ बहुत खतरनाक होती है। पूरे इतिहास में ऐसे सामर्थी अगुवे रहे हैं जिन्होंने प्रेम का प्रगटीकरण नहीं किया है। उनका ध्यान केवल अपनी ओर था, न कि दूसरों की ओर। प्रेम हमें दूसरों की आवश्यकताओं को देखने और उन्हें अनुभव करने के योग्य बनाता है। प्रेम स्वेच्छा से उनके लिए सब कुछ बलिदान करने को तैयार हो जाता है जिनकी वह सेवा करता है। परमेश्वर ने हमें प्रेम का आत्मा दिया है। कोई भी मसीही जो प्रेम में होकर सेवा नहीं करता वह परमेश्वर की मांग के अनुसार सेवा करने में असफल हो जाता है।

इस पर भी ध्यान दें कि परमेश्वर ने जो आत्मा हमें दिया है वह संयम का आत्मा है। यह आत्मा हमारे मनोभावों और इच्छाओं को नियंत्रित करने की अनुमति देता है जिससे हमारे जीवन परमेश्वर की महिमा के लिए प्रयोग किये जा सकें। यह आत्मा प्रभु यीशु की इच्छा और नियंत्रण में समर्पण कर देता है। पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 9:27 में यह कहते हुए इस संयम को प्रगट किया था, ''परन्तु मैं अपनी देह को मारता-कूटता और वश में लाता हूं, ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके, मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूं।''

विश्वासी होने के कारण परमेश्वर जो आत्मा हमें देता है वह संयम का आत्मा है। यह एक त्याग करनेवाला आत्मा है। यह वह आत्मा है जो परमेश्वर के राज्य के लिए स्वयं को, अपने समय को और अपने प्रयासों को दे देता है। यह वह आत्मा है जिसका एकमात्र केंद्र होता है।

परमेश्वर ने तीमुथियुस को सामर्थ, प्रेम और संयम की आत्मा दी है। इसी कारण वह प्रभु यीशु की गवाही देने से लजाता नहीं था। वहां ऐसे लोग थे जिन्होंने पौलुस के जीवन की ओर देखकर आश्चर्य किया कि उसके परमेश्वर ने उसे सेवकाई में इतना दुख क्यों उठाने दिया। उन्होंने प्रभु यीशु के बारे में भी यही प्रश्न किया। उन्होंने यीशु से कहा कि यदि वह परमेश्वर का पुत्र है तो क्रूस से नीचे आ जाए (मत्ती 27:40)।

पौलुस ने तीमुथियुस को स्मरण कराया कि दुख संसार के पाप और बुराई का परिणाम था। पुरुषों और स्त्रियों ने प्रभु यीशु के और उसके उद्धार के संदेश को अस्वीकार कर दिया था। तथापि, यह लज्जित होने का कारण नहीं था। युद्ध में लड़नेवाले सैनिक जानते हैं कि उन्हें दुख उठाना होगा। वे अपने दुख से लज्जित नहीं होते, परन्तु दुख को आदर के साथ सह लेते हैं। उन्हें सही और उचित कारण से दुख उठाने में गर्व होता है। पौलुस ने तीमुथियुस को सुसमाचार के कारण दुख उठाने के लिए सम्मिलित होने को आमंत्रित किया था।

पौलुस ने तीमुथियुस को स्मरण कराया कि प्रभु यीशु ने क्या किया था। प्रभु यीशु ने हमें बचाया और एक पवित्र जीवन के लिए हमें बुलाया भी (पद 9)। हम अनन्तकाल के लिए परमेश्वर से अलग कर दिये गए थे। प्रभु यीशु ने हमें शत्रु के हाथों से छुड़ाया। उसने हमें क्षमा कर अपनी संतान बनाया। हमें एक पवित्र जीवन जीने के लिए अलग कर दिया गया था। पवित्र जीवन जीने के बुलाए जाने के कारण हमें हमारे पाप के बेकार के जीवन से अलग कर दिया गया था।

न केवल यीशु हमें पिता के पास लाने को आया परन्तु वह मृत्यु को नाश करने के लिए भी आया। मृत्य का हम पर अधिकार नहीं हो सकता। हमें इसकी जंज़ीरों से स्वतंत्र कर दिया गया है। इसका अर्थ यह नहीं कि हम कभी नहीं मरेंगे। तौभी, इसका अर्थ यह है कि मृत्यु हमारे लिए अनन्त नहीं है। जिन्होंने प्रभु यीशु को ग्रहण किया है, सुसमाचार के संदेश द्वारा उसकी उपस्थिति में उनके लिए अनन्त जीवन की आशा है।

पौलुस को परमेश्वर द्वारा प्रचारक, प्रेरित और उपदेशक होने के लिए नियुक्त किया गया था (पद 11)। परमेश्वर ने इस सुसमाचार के समाचार को फैलाने के लिए उसे बुलाया था। जहां कहीं भी वह जाता उसे इसके बारे में बताना था।

उसे इसके बारे में सिखाना और इस सुसमाचार के सत्य में परमेश्वर के लोगों के रहने को नेतृत्व करना था। पौलुस अपने जीवन पर इस बुलाहट से लज्जित नहीं हुआ था। हर किसी सुननेवाले को इस संदेश को बांटने पर उसे मसीह का राजदूत होने पर गर्व था।

इस अद्‌भुत संदेश को सभी ने ग्रहण नहीं किया था। वास्तव में, लोगों ने सत्य को न केवल अस्वीकृत किया, वे इसका प्रचार करनेवालों के भी बैरी थे। इसी कारण, पौलुस को बन्दीगृह में डाला गया था। पौलुस इस कारण से बन्दीगृह में जाने से भी नहीं लजाया था। उसने जो प्रचार किया उस पर विश्वास भी किया। उसने स्वीकार किया कि प्रभु यीशु उसे बन्दीगृह में भी नहीं छोड़ेंगे। उसने विश्वास किया कि प्रभु ने उसमें जिस कार्य का आरम्भ किया था वही उसको पूरा भी करेगा। उसने अपने दुख को परमेश्वर पर अपने भरोसे के कारण अलग करने की अनुमति नहीं दी।

पौलुस ने पूर्णतया यह मान लिया था कि चाहे उसकी परिस्थितियां कितनी ही बुरी क्यों न हों, उसका परमेश्वर नियंत्रण में है। परमप्रधान परमेश्वर के उद्देश्य और योजना को कोई भी चीज़ रोक नहीं सकती है। यही उसके सिर ऊंचा करने व गर्व करने का कारण था। शत्रु ने चाहे उसके साथ जो कुछ भी किया हो, पौलुस जानता था कि अपने प्रभु से जुड़े रहने और उस पर भरोसा करने के द्वारा से ही वह युद्ध को जीतेगा।

पद 13 में पौलुस ने तीमुथियुस को सावधानीपूर्वक उस शिक्षा पर चलने की चुनौती दी जिसे उसने उसे विश्वास व प्रेम के साथ दिया था। सही सिद्धान्त पर विश्वास करना और प्रभु यीशु पर कभी विश्वास न करना संभव है। एक विश्वासी होना–शिक्षाओं को थामने और एक विशिष्ट जीवन बिताने से कहीं अधिक है। ऐसे बहुत से लोग हैं जो केवल नाम के ही मसीही होते हैं। वे मसीह की शिक्षाओं पर चलते और वह उसकी इच्छा के अनुसार ही जीवन बिताते हैं, परन्तु वे अपने उद्धार के लिए उस पर कभी पूरा भरोसा नहीं करते हैं। पौलुस तीमुथियुस को बताता है कि उसे मसीह के विश्वास में होकर शिक्षाओं को मानना था।

दूसरा ध्यान दें कि तीमुथियुस को उस संपूर्ण शिक्षा को भी मानना था जिसे उसने प्रेम के साथ प्राप्त किया था। मैंने उन कलीसियाओं को देखा है जो सत्य में बहुत मज़बूत तो होती थीं, परन्तु उनके प्रति बहुत कम ही सहनशील होती थीं जो उनके समान ही विश्वास नहीं करते थे। मैं ऐसी कलीसियाओं में रहा हूं जिनमें सभी सही सिद्धान्त थे, परन्तु उन्होंने आपस में बहुत कम प्रेम का ही प्रदर्शन किया। सत्य स्वयं में पर्याप्त नहीं है। पवित्रशास्त्र इसे स्पष्ट करता है कि सबसे बड़ी आज्ञा अपने परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी शक्ति और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखना तथा अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना है।

(लूका 10:27) आप सत्य को जान सकते हैं परन्तु आप अपने मसीह जीवन में इस कारण बुरी तरह से असफल हो सकते हैं कि आप वैसा प्रेम नहीं करते हैं जैसा प्रेम करने के लिए मसीह ने आपको बुलाया है।

पौलुस तीमुथियुस को उस अच्छी थाती की भी रखवाली करने को कहता है जिसे उसे सौंपा गया था (पद 14)। संदर्भ से हम समझते हैं कि यह थाती वही सत्य था जिसे स्थापित करने के लिए प्रभु यीशु आया था। जिस थाती के बारे में यहां पौलुस बताता है ऐसा लगता है कि मानो वह सुसमाचार तथा इसके द्वारा लाए जानेवाले नये जीवन की आशा है। पौलुस ने तीमुथियुस को इस अद्‌भुत सत्य को कभी भी दृष्टि से ओझल न करने को कहा। उसे यीशु और उसके कार्य पर अपनी आंखों को केंन्द्रित रखना था। उसमें रहनेवाला परमेश्वर का आत्मा ऐसा करने को उसे भी समर्थ करेगा। (पद 15)

तीमुथियुस को सौंपी गई थाती की रखवाली न किये जाने के खतरे के बारे में चेतावनी देने के तरीके से पौलुस पद 15 में उसे बताता है कि एशिया क्षेत्र में कुछ ऐसे लोग थे जिन्होंने उसे छोड़ दिया था। वह फ़ूगिलुस और हिरमुगिनेस का नाम लेकर बताता है। हमें बताया नहीं गया कि उन्होंने पौलुस को क्यों छोड़ दिया था। संभव है कि इसका कारण यह भी रहा हो कि वे पौलुस की जंज़ीरों और दुख से लज्जित थे, जिसका सामना उसे सुसमाचार के लिए करना था। शायद वे एक ऐसे परमेश्वर पर विश्वास करना चाहते थे जो उन्हें संकट से बचाकर रखे, परन्तु उनके लिए एक ऐसे परमेश्वर को ग्रहण करना कठिन हो रहा हो जो अपने सेवकों को सत्य का प्रचार करने में दुख सहने देता है।

पद 16 में पौलुस उनेसिफुरूस और उसके घराने के बारे में बताता है। उसने तीमुथियुस को बताया कि इस व्यक्ति तथा इसके परिवार ने कैसे उसके दुख में उसको ताज़गी प्रदान की थी। पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि उसका परिवार उसकी जंज़ीरों से लज्जित नहीं हुआ था। पौलुस उनेसिफुरूस के प्रति बहुत ही आभारी था, क्योंकि जब उसने सुना कि पौलुस को रोम लाया जा रहा था, उसने उसकी सेवा करने के उद्देश्य से उसकी खोज की थी।

उनेसिफुरूस इफिसुस में प्रेरित के लिए एक अद्‌भुत आशीष के रूप में रहा था (पद 18)। जब पौलुस उसके इस कार्य का बदला न दे सका, उसने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसके प्रयासों पर ध्यान दे तथा उसे बहुतायत से आशीष दे जबकि वह न्याय के दिन उसके सामने खड़ा हो।

ऐसा लगता है कि पौलुस निराशा के भाव में होकर लिख रहा था। उसने अपने जांच किये जाने व बंदीगृह में डाले जाने के समय में बहुत से लोगों को स्वयं को छोड़ते हुए देखा था। बहुत से लज्जा के कारण उससे फिर गए थे जब

उसे पकड़कर बन्दीगृह में डाला गया था। क्या हम सुसमाचार के लिए दुख उठाने को तैयार हैं? क्या हम हमें परमेश्वर द्वारा दिये गए दानों की ज्वाला को हवा देंगे और मसीह तथा उसके कार्य का समाचार फैलाने को सामर्थ, प्रेम और संयम में होकर कदम बढ़ाएंगे, चाहे किसी भी तरह से हमें ऐसा करना पड़े या क्या हम लज्जित होकर अलग हो जाएंगे और एक कोने में डरकर छिप जाएंगे? यह विभाग हमें प्रभु यीशु और उसके कार्य के लिए दृढ़ खड़े रहने और लज्जित न होने को प्रोत्साहित करता है।

विचार करने के लिए :

- पौलुस और तीमुथियुस के बीच संबन्ध से हम क्या सीखते हैं?
- परमेश्वर ने आपको कौन से दान दिये हैं? आप ज्वाला के रूप में उन्हें कैसे हवा देते रहे हैं?
- सुसमाचार के लिए दुख उठाने के बारे में पौलुस हमें क्या सिखाता है? आपने सुसमाचार के लिए कैसे दुख उठाया है?
- पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि परमेश्वर ने उसे सामर्थ, प्रेम और संयम की आत्मा दी है। क्या आप अपने जीवन और सेवकाई में इस आत्मा के प्रमाण को देखते हैं?
- क्या सत्य को जानना तथा उद्धारकर्त्ता को न जानना संभव है? स्पष्ट करें।

प्रार्थना के लिए :

- परमेश्वर से कहें कि वह आपको भी एक ''तीमुथियुस'' दे जिसे आप प्रोत्साहन व बल दे सकें!
- परमेश्वर से आपको उन दानों को दिखाने को कहें जो उसने आपको दिये हैं। उससे आपको दिखाने को कहें कि उन दानों का प्रयोग परमेश्वर के राज्य के लिए कैसे किया जाता है।
- परमेश्वर से उन समयों के लिए आपको क्षमा करने को कहें जब आप उससे लज्जित हुए और उसके नाम के लिए खड़े नहीं रहे।
- क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो कठिनाइयों के कारण सत्य से फिर गया है? कुछ समय उसके लिए प्रार्थना करने को निकालें।
- परमेश्वर से कहें कि वह आप में अपने सामर्थ, प्रेम और संयम की आत्मा को एक बड़े तरीके से प्रगट करे।

27

सैनिक, खिलाड़ी, गृहस्थ

पढ़ें 2 तीमुथियुस 2:1–7

अध्याय 1 में पौलुस ने तीमुथियुस को सुसमाचार के लिए उठाए जानेवाले दुख से लज्जित न होने को कहा। कुछ इस कारण प्रभु से फिर गए थे, जब उन्होंने जाना कि उन्हें उसके नाम के कारण दुख उठाना होगा। वे पौलुस से तथा इस सच्चाई से लज्जित थे कि उसे उसके विश्वास के कारण बंदीगृह में डाला गया था।

इस अध्याय में पौलुस तीमुथियुस को मसीह के अनुग्रह में बलवन्त होने को कहता है। मसीह का अनुग्रह हमारे लिए कार्य करता है। इसे कई तरह से प्रगट किया गया है। इसे उन दानों में दिखाया गया है जो वह हमें देता है तथा उसके द्वारा हमें दी जाने वाली शक्ति में। तीमुथियुस को अपना हृदय खोलकर उस सबको प्राप्त करना था जो परमेश्वर उस पर उण्डेलना चाहता था जिससे वह सुसमाचार की सेवकाई में प्रभावी हो सके।

तीमुथियुस को न केवल मसीह के अनुग्रह में बलवन्त होना था परन्तु उसे दूसरों को वह भी सिखाना था जो उसने पौलुस से सुना था। उसका उत्तरदायित्व भरोसेमन्द पुरुषों को तैयार व प्रशिक्षित करने का था, जिससे वे दूसरों को भी तैयार कर सकें। तीमुथियुस को एक विश्वासयोग्य कार्यकर्त्ताओं के दल को प्रशिक्षित करना था जो उसके साथ खड़ा हो सके। करने को बहुत कुछ था। तीमुथियुस इस स्वयं नहीं कर सकता था। उसे ऐसे भरोसेमन्द विश्वासियों को ढूंढने की ज़रूरत थी जो उसके प्रयासों में उसके साथ खड़े हो सकें।

हमें उन दानों की ज़रूरत है जो परमेश्वर ने मसीह में हमारे बहनों और भाइयों को दिये हैं। कोई भी सेना एक सैनिक के साथ कार्य नहीं कर सकती। हम सभी को एक भूमिका पूरी करनी है। प्रत्येक व्यक्ति ज़रूरी है। पौलुस ने तीमुथियुस को इसे इस तरह से देखने की चुनौती दी मानो उसका उत्तरदायित्व एक ऐसे विश्वासियों के सैनिक के दल का निर्माण करना था जो सुसमाचार के लिए उसके साथ खड़े हो सकें। घमण्ड हमें दूसरों के साथ मिलकर कार्य करने से दूर रखेगा। शत्रु को विश्वासियों को आपस में संघर्ष करते हुए देखना अच्छा

लगता है। एक अकेले अधिक कार्य करने वाले विश्वासी को उसकी तुलना में परास्त करना अधिक सरल है जो अपने भाइयों और बहनों के साथ घनिष्ठ सहभागिता में है। तीमुथियुस को अपने आस-पास ऐसे लोगों को एकत्रित करने का प्रयास करना था जो सेवकाई में उसके साथ खड़े हो सकें।

अगले कुछ पदों में पौलुस प्रतिदिन के जीवन से तीमुथियुस को दिखाने के लिए उदाहरणों का प्रयोग करता है कि उसे परमेश्वर के लिए सच्चे सेवक के रूप में कैसे रहना था। इसमें हम पौलुस के पिता समान हृदय को विश्वास में उसके पुत्र तीमुथियुस के प्रति देखते हैं। इन उदाहरणों में वह तीमुथियुस को अपनी सेवकाई और मसीही जीवन के लिए तीन महत्वपूर्ण सिद्धान्तों को देता है। हम इस संदर्भ में इन सिद्धान्तों को केवल संक्षिप्त रूप से ही छू सकते हैं परन्तु इसके लिए हमें ध्यानपूर्वक विचार करने की ज़रूरत है।

अनुशासन और केन्द्र

पद 3 में पौलुस ने एक सैनिक के उदाहरण का प्रयोग किया है। उसने तीमुथियुस को बताया कि उसे मसीह यीशु के अच्छे योद्धा अथवा सैनिक की नाईं दुख उठाना है। एक अच्छा सैनिक सामान्य जन-जीवन से जुड़ा नहीं रहता। उसका जीवन अपने अधिकारी को प्रसन्न करने हेतु समर्पित होता है (पद 4)। सैनिक की एक विशेषता अनुशासन और केन्द्र है।

एक अच्छा सैनिक युद्ध की गंभीरता को जानता है। उसके पास दैनिक जीवन की व्यावहारिकताओं की चिन्ता करने का समय नहीं होता। वह अपनी सुरक्षा को गिरने नहीं दे सकता जबकि शत्रु चारों ओर हों।

एक क्षण के लिए भी सुरक्षा से बाहर आना नाश हो जाना होगा। उसे सभी समयों में अनुशासित, केन्द्रित और सतर्क रहने की आवश्यकता होती है।

पौलुस तीमुथियुस को उसकी सेवकाई में उसी तरह से अनुशासित और केन्द्रित होने को कहता है जैसे एक सैनिक युद्ध के बीच में होता है। उसे सांसारिक और नगण्य चीज़ों में फंसने की ज़रूरत नहीं है परन्तु परमेश्वर को प्रसन्न करने तथा उसकी इच्छा को पूरा करने की। राज्य के लिए आप कौन से बलिदान करने को तैयार हैं? क्या चीज़ आपको उस सेवकाई से अलग करती है जो परमेश्वर ने आपको दी है? क्या आप एक अनुशासित और केन्द्रित सैनिक के रूप में प्रभु की सेवा कर रहे हैं?

सम्पूर्ण आज्ञाकारिता

जबकि पहला उदाहरण युद्ध व संग्राम के बारे में बताता है, दूसरा उदाहरण खेल के बारे में बताता है (पद 5)। पौलुस ने तीमुथियुस को एक ऐसे खिलाड़ी

के बारे में बताया जो खेल में प्रतिस्पर्द्धा करता है। विजेता मुकुट को जीतने के लिए एक खिलाड़ी को विधि के अनुसार खेलना होगा। छल करनेवाला खिलाड़ी योग्य नहीं होगा। जीतने का एकमात्र तरीका नियम के अनुसार खेलना है। पौलुस तीमुथियुस को मसीही जीवन में आज्ञाकारिता के महत्व को दिखा रहा है। कई बार हम पूर्ण आज्ञाकारिता के महत्व को भूल जाते हैं। हम किनारा काटकर समय के साथ समझौता कर लेते हैं। पौलुस हमें स्मरण कराता है कि जिस तरह से खेल के नियमों का पालन न करने से खिलाड़ी को अयोग्य ठहराया जा सकता है, उसी तरह से हम भी परमेश्वर के साथ पूर्ण आज्ञाकारिता में न चलने पर उसके साथ हमारे चलने में अयोग्य ठहराए जा सकते हैं।

परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए हमें अपने विचारों को एक ओर रखकर परमेश्वर के तरीके से चीज़ों को करना होगा। इसका अर्थ उस सबके साथ कठोर आज्ञाकारिता में रहना है जो परमेश्वर का वचन सिखाता है। इसका अर्थ हमारे जीवन के हर उस पाप से निपटना और प्रभु से इसका अंगीकार करना है। इसका अभिप्राय हमारे सभी व्यवहारों में पूर्ण निष्कपट और ईमानदार होने से है। यदि हम परमेश्वर की सेवा करना और ईनाम पाने की आशा रखना चाहते हैं तो हमें चीज़ों को उसके तरीके से करने के साथ-साथ पूर्ण आज्ञाकारिता में रहना होगा।

परिश्रम

पौलुस का तीसरा उदाहरण पद 6 में एक किसान (गृहस्थ) का है। किसान को परिश्रम करना पड़ता है। वह प्रातः जल्दी उठता और कई बार देर रात तक कार्य करता है। रात को घर वापस आने पर वह भूखा और थका हुआ होता है। उसकी मासंपेशियां दुखती हैं तथा उसके हाथ कठोर हो जाते हैं। कई बार अस्वस्थ होने पर भी उसे कार्य करना पड़ता है। क्योंकि वह जानता है कि उसके परिश्रम पर एक अच्छी फसल निर्भर करती है। कार्य थका देनेवाला होता है परन्तु गृहस्थ यह भी जानता है कि अन्त में इनाम मिलना है। वह परिश्रम करनेवाला किसान अपनी फसल के पहले भाग को प्राप्त करनेवाला होगा। अन्य शब्दों में, वह दिन आएगा जब उसे उन फसलों पर कार्य करने के लिए प्रतिफल मिलेगा जिसे प्राप्त करने के लिए उसने इतना कठिन श्रम किया था। उसके प्रयास बेकार नहीं जाएंगे। कार्य कठिन था और उसके लिए बहुत से त्याग भी किये गए थे, परन्तु परमेश्वर उसके हाथों के प्रयासों को आशीषित करेगा।

पौलुस तीमुथियुस को बता रहा है कि सेवकाई का कार्य एक कठिन कार्य था। इसमें कई बलिदान करने थे तथा परिश्रम के कई घण्टे भी बिताने थे, परन्तु उन प्रयासों का फल प्रभु अवश्य देगा। तीमुथियुस को कठिन कार्य करने से नहीं डरना था। वह सदैव समझा नहीं जाएगा। जीवन और सेवकाई में उसे कई निराशाओं का सामना करना होगा। लम्बा समय और कई बाधाएं भी होंगी, परन्तु परमेश्वर उसके विश्वासयोग्य प्रयास का प्रयोग अपने राज्य के विस्तार के लिए करेगा।

पौलुस इस विभाग का समापन तीमुथियुस को उन चीज़ों पर प्रतिबिम्बित होने की चुनौती देते हुए करता है जो वह उसे सीखा रहा था। उसने उसे स्मरण कराया कि परमेश्वर उसके मन को खोलकर उसे इस बारे में महान अन्तर्दृष्टि देगा कि यह शिक्षा उस पर व्यक्तिगत रूप से किस तरह से लागू होती है।

परमेश्वर के राज्य का कार्य एक सामूहिक प्रयास है जिसके लिए सैनिक के ध्यान और अनुशासन; खिलाड़ी की आज्ञाकारिता और किसान के परिश्रम की ज़रूरत है। इस तरह से विश्वासयोग्यता के साथ सेवा करने पर हम आश्वस्त हो सकते हैं कि परमेश्वर हमारा प्रयोग उसके लिए एक फसल को लाने में करेगा।

विचार करने के लिए :

- एक समूह के रूप में कार्य करने के महत्व के बारे में हम क्या सीखते हैं? हमें सेवकाई में दूसरों की ज़रूरत क्यों है?
- आपकी सेवकाई में आपको प्रोत्साहित करने और आपके साथ प्रार्थना करने को कौन है?
- क्या आपके जीवन में कुछ ऐसा है जिसका आप परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिये त्याग करने को तैयार नहीं हैं? क्या कोई ऐसी चीज़ है जो आपको परमेश्वर का अधिक प्रभावी सेवक होने से रोकती है।
- प्रभु के प्रति आज्ञाकारिता कितनी महत्वपूर्ण है? क्या कुछ ऐसे तरीके हैं जिनमें आपने परमेश्वर के साथ चलने और सेवा करने में समझौता किया है?
- इस विभाग में दिये गए तीन उदाहरणों (सैनिक, खिलाड़ी और गृहस्थ अथवा किसान) पर विचार करें। इनमें से कौन सा उदाहरण आपसे विशिष्ट रूप से बोलता है और क्यों?

प्रार्थना के लिए :

- आपको सेवकाई में घेरने के लिए परमेश्वर से आपको भाई और बहन देने को कहें।
- परमेश्वर से आपके हृदय की खोज करने को कहें कि आपके जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र तो नहीं है जहां आप परमेश्वर के वचन के प्रति उसकी पूर्ण आज्ञाकारिता में न रह रहे हों।
- परमेश्वर से आपकी सहायता करने को कहें कि आप राज्य के कार्य से अलग न हों परन्तु एक सैनिक के समान अनुशासित व केन्द्रित हों।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि हमारे सभी कठिन कार्य के पश्चात् वह फसल की प्रतिज्ञा देता है। आप जिस फसल को देख चुके हैं उसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें।

28

सुसमाचार के लिए दुख उठाना

पढ़ें 2 तीमुथियुस 2:8-15

पौलुस तीमुथियुस को मसीही जीवन में दृढ़ बने रहने के बारे में बोल रहा है। उसने उसे स्मरण कराया कि मसीही जीवन सरल नहीं होगा। पौलुस को सुसमाचार प्रचार करने के लिए बन्दी बनाया गया था। उसने तीमुथियुस को स्मरण कराने के लिए लिखा कि उसे यह देखकर आश्चर्य नहीं करना चाहिए कि उसे दुख उठाना पड़ा था। जबकि पौलुस तीमुथियुस को दुख उठाते हुए नहीं देखना चाहता था, तौभी उसने किसी भी कीमत पर उसे परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी बनने को देखना चाहा। इस विभाग में पौलुस ने तीमुथियुस को उसके मार्ग में सभी तरह की रुकावटों के बावजूद दृढ़ बने रहने की चुनौती दी।

इस विभाग का आरम्भ प्रभु यीशु को स्मरण करने की चुनौती के साथ होता है। पौलुस तीमुथियुस को प्रभु यीशु के बारे में बहुत सी चीज़ों को स्मरण कराना चाहता था। वह उसे सर्वप्रथम यह स्मरण कराना चाहता था कि वह मृतकों में से कैसे जी उठा था।

प्रभु यीशु एक बहुत ही विशिष्ट कारण से मारा गया था। वह हमारे पापों के लिए मारा गया था। हमें परमेश्वर के पास लाने को वह बलिदान का मेम्ना बना था। सच्चाई यह है कि उसका मृतकों में से जी उठना इस बात का संकेत है कि उसकी मृत्यु पिता को स्वीकार्य थी। वह शैतान, मृत्यु और पाप पर विजय पाते हुए जी उठा था। सर्वप्रथम, वह आज भी जीवित है। यह हमारी आशा है। दूसरे, हम भी उसके कारण पाप, कब्र और दुष्ट पर जय पा सकते हैं। जीवन की रुकावटों और परीक्षाओं के बीच में यह हमें कितनी अद्‌भुत आशा देता है। मृत्यु स्वयं में हमारे लिए कोई अन्त नहीं है। चाहे हमें अपने जीवन ही क्यों न देने पड़ें, तौभी हमारे पास अद्‌भुत आशा है। यह तीमुथियुस को कठिन समय में भी जीवन में चलते रहने को प्रोत्साहित करने के लिए था।

पौलुस तीमुथियुस को पौलुस के बारे में जिस दूसरी चीज़ को स्मरण कराना चाहता था, वह यह थी कि वह दाऊद का वंशज था। दाऊद का वंशज होने के कारण,

प्रभु यीशु पूरी तरह से मनुष्य था। वह हमारे साथ मानवता में जाना गया था। वह उस सब में से होकर गया जिसमें से होकर हम जाते हैं। जो दुख हम उठाते हैं उसने भी वही दुख उठाया। इसका अर्थ यह है कि प्रभु यीशु तीमुथियुस द्वारा उठाए जानेवाले दुख को पूरी तरह से समझता था। उसके द्वारा प्रस्तुत किये गए कारण के लिए उसने दुख उठाया और मारा गया। पुनः यह तीमुथियुस को उन चुनौतियों का सामना करने को प्रोत्साहित करने के लिए था जो उसके मार्ग में आनेवाली थीं।

सुसमाचार का सम्पूर्ण संदेश इन दो महत्वपूर्ण सत्यों पर टिका हुआ है। यीशु ने स्वयं को दीन किया तथा मनुष्य का रूप धारण किया। वह जीया, दुख उठाया और क्रूस पर हमारे पापों के लिए मारा गया। वह विजयी रूप में कब्र से उठा। उसके जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान के कारण वह हमारी आशा है।

इन सत्यों के कारण ही पौलुस दुख उठा रहा था (पद 9)। सत्य का सुसमाचार एक अद्‌भुत सत्य है, परन्तु हर कोई इसे ग्रहण करने को तैयार नहीं है। यह सरल सा सत्य बंधुओं को स्वतंत्र कर सकता है। इसमें पापी को शैतान की पकड़ से मुक्त करने की शक्ति है। इसी कारण, शत्रु इसका प्रचार करने वालों के विरुद्ध हिंसक रूप से प्रतिक्रिया देता है। पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि प्रभु यीशु के शुभ संदेश का प्रचार करने के लिए उसे सामान्य अपराधी के समान जंज़ीरों से जकड़ा गया था। सेवकाई की यही प्रकृति है जिसके लिए हमें बुलाया गया है। हमें उन लोगों को सत्य के बारे में बताने को बुलाया गया है जो शत्रु के झूठ की बंधुआई में रहे हैं। यह सत्य है कि वह लोगों को उनके पाप के बंधन और आशाहीनता से स्वतंत्र करेगा। शत्रु इस सत्य से घृणा करता है और इसे उन लोगों के कानों तक पहुंचने से रोकने के लिए जिन्हें इसे सुनने की ज़रूरत है। वह जो कुछ भी कर सकता है उसे करेगा।

पौलुस को दुख और उसके बंदी होने की अवस्था में जिस एक चीज़ से आराम मिला था, वह यह थी कि उसे तो जंज़ीरों में जकड़ा जा सकता है, परन्तु परमेश्वर के वचन को कभी भी ज़ंज़ीरों से जकड़ा नहीं जा सकता है। शत्रु पौलुस पर तो नियंत्रण कर सकता था। कलीसिया के इतिहास ने इसे बार-बार दिखाया है। अत्यंत सताव के समयों में भी कलीसिया का विकास हुआ है। परमेश्वर का वचन उनके हृदयों और जीवनों में कार्य करता रहता है जिनको यह स्पर्श करता है। शैतान कभी भी पमेश्वर के वचन को फैलाने से रोकने के योग्य नहीं हो सका है। पौलुस बन्दीगृह में था परन्तु परमेश्वर का आत्मा निरन्तर अपना कार्य कर रहा था। इससे पौलुस को बड़ी आशा मिली थी। परमेश्वर का वचन अन्ततः शत्रु की सेना पर विजय प्राप्त करता है।

इस पर भी ध्यान दें कि पौलुस जानता था कि यदि उसे मसीह और उसके कारण मरने को बुलाया गया था, तो वह उसके साथ जीयेगा भी। अपने प्रभु की उपस्थिति में उसे अनन्तकाल की एक अद्‌भुत आशा थी। मरना मसीह के साथ

होना था (पद 11) सबसे बुरी चीज़ जो शैतान उसके साथ कर सकता था वह यह कि उसे सीधे उसके प्रिय उद्धारकर्त्ता की बाहों में पहुंचा सकता था।

मसीह के साथ धीरज से सहने पर वह उसके साथ राज्य भी करेगा (पद 12)। दृढ़ बने रहनेवालों के लिए एक प्रतिफल भी है। वे महिमा में मसीह के साथ होंगे। वहां मसीह की उपस्थिति में वे विजयी संतों के समान जीयेंगे। वे मसीह की उपस्थिति में वहां उसके नाम में विजयी होने पर राजा और रानियों के समान रहेंगे। इस जीवन के दुख अस्थायी हैं। मरना सदा के लिए जीना है। धीरज धरना मसीह के साथ राज्य करना है।

हमारे पराजित होने का एकमात्र मार्ग प्रभु से मुंह मोड़ने का है। पौलुस ने पद 12 में तीमुथियुस को स्मरण कराया कि यदि हम प्रभु का इंकार करेंगे तो वह भी हमारा इंकार करेगा परन्तु हमारे अविश्वासयोग्य होने पर भी प्रभु विश्वासयोग्य बना रहेगा क्योंकि वह स्वयं का इंकार नहीं कर सकता (पद 13)।

पद 12 में प्रयुक्त शब्द ''इंकार'' का प्रयोग करने से अभिप्राय ''नहीं'' कहने से है, जिसका अर्थ इंकार करने या अस्वीकार करने से है। पौलुस यह स्पष्ट कर रहा है कि प्रभु यीशु का इंकार करने पर हम नाश होंगे। यदि हमने उसे अपने उद्धारकर्त्ता के रूप में नहीं स्वीकार किया हो तो उस दिन प्रभु के सामने खड़े होने पर, वह हमसे मुंह फेर लेगा। हमारे लिए अपने हृदयों और जीवनों को उसके लिए खोलना कितना महत्वपूर्ण है। प्रभु यीशु को अस्वीकृत करना अपने भाग्य पर मुहर लगाना है। यदि हम उसका इंकार करें या इस जीवन में उसके साथ करने को हमारे पास कुछ न हो तो हमें यह आशा नहीं करनी चाहिए कि आनेवाले जीवन में वह हमें ग्रहण करेगा।

पौलुस आगे कहता है कि हमारे अविश्वासयोग्य होने पर भी परमेश्वर विश्वासयोग्य बना रहेगा। पौलुस यहां जो कुछ भी कह रहा है उसे समझने के लिए हमें स्वयं से एक महत्वपूर्ण प्रश्न पूछने की ज़रूरत है। क्या और किसके लिए परमेश्वर विश्वासयोग्य है? एक व्याख्या यह है कि परमेश्वर अपने वचन और अपने चरित्र के प्रति सदैव विश्वासयोग्य बना रहेगा। अपने वचन में वह स्पष्ट करता है कि वह पाप को दण्डित करेगा। यदि हम अविश्वासयोग्य हैं, तो हम आशा कर सकते हैं कि वह अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार हमारा न्याय करेगा। यही उसका वचन सिखाता है और हम आश्वस्त हो सकते हैं कि परमेश्वर सदैव अपने वचन के प्रति विश्वासयोग्य रहेगा। वह किसी तरह की कोई भी धारणा नहीं बनाएगा। उसका इंकार करना नाश होना है। अविश्वासयोग्य होना उसके वचन की स्पष्ट शिक्षा के अनुसार परिणामों से दुख उठाना है।

पद 14 में पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि उसे अपने लोगों को इस बार में चिताना था। परमेश्वर के वचन का सत्य बहुत सरल था। प्रभु यीशु का

इंकार करना नाश होना था; अविश्वसयोग्य होना परिणामों का दुख उठाना था। विद्वानों ने इस सत्य के लिए सभी तरह की चीज़ों को कर लिया है। तीमुथियुस के दिनों में भी ऐसे लोग थे जो शब्दों पर तर्क करते हुए इस सत्य के चारों ओर घूमने का प्रयास कर रहे थे। उन्होंने सरल सत्य को भी जटिल बना दिया था परन्तु उन्होंने इस पर अपनी ज़रूरत के अनुसार तर्क और व्याख्या की थी। पौलुस ने तीमुथियुस को इन लोगों के बारे में चिताया था। वे लोगों को सुसमाचार की सरलता से दूर ले जाकर विनाश की ओर ले जा रहे थे।

पौलुस ने तीमुथियुस को इन लोगों को इस बारे में चेतावनी देते रहने की कहा कि वे क्या कर रहे थे। वे मसीह की देह के लिए खतरा बने हुए थे। वे लोगों को सत्य से दूर ले जा रहे थे। अदन की वाटिका में वापस ले जाकर जहां शैतान ने हव्वा से उस बारे में प्रश्न किया था जो परमेश्वर ने उससे कहा था। परमेश्वर ने उससे कहा था कि वाटिका के बीच के वृक्ष के फल को न खाना। शैतान ने इस सरल आज्ञा के बारे में उसे चुनौती देते हुए कहा था कि परमेश्वर वास्तव में उससे कुछ छिपा रहा था। उसने सरल से सत्य को जटिल बना दिया था और ऐसा करके वह उसे अनाज्ञाकारिता की ओर लेकर गया। बहुत से लोग इस फंदे में गिर चुके हैं।

संभवत: आप ऐसे लोगों से मिले हों, जो सरल सत्य को ग्रहण करने की अपेक्षा उसका अपनी आवश्यकता के अनुसार ही अर्थ लगाते हैं। पद 15 में पौलुस ने तीमुथियुस को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करने की चुनौती दी जिसे ग्रहण किया गया हो। उसके परमेश्वर द्वारा ग्रहण किये जाने का एकमात्र तरीका सत्य का प्रचार करने और उसके अनुसार रहने के द्वारा था। उसे एक ऐसा काम करनेवाला बनना था जो लज्जित न होने पाए क्योंकि वह सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाया था। उसे उसी तरह से सत्य को आगे बढ़ाना था जिस तरह से उसने इसे ग्रहण किया था। उसके आस-पास झूठे शिक्षक अपने स्वयं के विचारों की शिक्षा दे रहे थे। वे सुसमाचार के सरल सत्य का इंकार कर रहे थे। वे शब्दों और विचारों पर तर्क कर रहे थे। उनके इन शास्त्रीय वाद-विवादों में सत्य खो चुका था। विश्वासियों में फूट पड़ गई थी।

शब्द का अभिप्राय सरल होने से था। शैतान इसे जटिल बनाने के लिए जो कुछ भी कर सकता है, करेगा। तथापि, सरल वास्तविकता यह है कि यदि हम प्रभु का इंकार करते हैं तो वह भी हमारा इंकार करेगा। प्रभु हमें अपनी संतान के रूप में ग्रहण करने को कितना अधिक तैयार है। यदि हम उसकी ओर फिरें तो वह अपनी खुली बांहों से हमें ग्रहण करेगा। तौभी, उसका इंकार करना अनन्तकाल के लिए नाश होना है। प्रेरित पौलुस का यह एक सरल संदेश था और तौभी यह एक बहुत महत्वपूर्ण संदेश था। पौलुस इस संदेश को उन व्यक्तियों तक पहुंचाने के लिए दुख उठाने को भी तैयार था जो अपने पाप में भटके हुए थे। इस सत्य को फैलाने के लिए वह अपने जीवन को भी दे देने को तैयार था।

तीमुथियुस ने स्वयं को ऐसे बहुत से लोगों के मध्य में पाया था जो दूसरे ही सुसमाचार की शिक्षा दे रहे थे। यह पूर्णतया संभव है कि ये लोग प्रखर व दार्शनिक मस्तिष्क वाले थे। अदन की वाटिका में शैतान के समान, तथापि, उन्होंने परमेश्वर के वचनों पर प्रश्न किया था। उन्होंने इस सरल सत्य को उस एक जटिल गलती से परिवर्तित कर दिया था जो लोगों को विनाश की ओर लेकर गई। पौलुस ने तीमुथियुस को सुममाचार की सरलता को स्मरण कराया और उसे उसके प्रति विश्वासयोग्य बने रहने की चुनौती दी जो कुछ भी उसने सुना था।

विचार करने के लिए :

- पौलुस इस विभाग में सुसमाचार के बारे में एक ऐसे संदेश के रूप में बोलता है कि मसीह दाऊद के वंशज के रूप में मृतकों में से जी उठा था। इन दोनों सत्यों में सुसमाचार कैसे पाया जाता है?
- पौलुस को हमें यह बताने से क्या अभिप्राय है कि यदि हम प्रभु का इंकार करेंगे तो वह भी हमारा इंकार करेगा? इस संदेश को दूसरों तक पहुंचाना क्यों महत्वपूर्ण है?
- यह परिच्छेद हमें आशा के बारे में क्या सिखाता है जो पौलुस के पास मृत्यु होने तक थी?
- शत्रु के सत्य पर हमला करने और इसे जटिल बनाने का प्रयास करने और इसे भ्रमित करने के बारे में हम क्या सीखते हैं? क्या आपने अपने समाज में इसका प्रमाण देखा है?

प्रार्थना के लिए :

- परमेश्वर से आपको एक ऐसा काम करनेवाला बनाने में सहायता करने को कहें जो परमेश्वर के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि उसने सत्य को इतना सरल बनाया है कि हर कोई इसे समझ सकता है।
- परमेश्वर को सभी लोगों को सुसमाचार की अद्भुत आशा को देने के लिए धन्यवाद करें, जिसे वह इस पर विश्वास करनेवालों को देता है। परमेश्वर से आपको एक ऐसा जीवन जीने के लिए अनुग्रह देने को कहें जो इस सुसमाचार के लिए आपकी बुलाहट के योग्य हो।
- सुसमाचार के इस सरल सत्य के प्रति परमेश्वर से आपके मित्रों और पड़ोसियों की आंखें खोलने को कहें।

◀▶

29

उत्तम पात्र

पढ़े 2 तीमुथियुस 2:16-26

परमेश्वर की संतान होने के कारण हमें संसार को उस भिन्नता को दिखाना है जो प्रभु यीशु हमारे जीवनों में कर सकता है। तीमुथियुस को लिखे अपने पत्र के इस अगले विभाग में पौलुस अपने विश्वास के पुत्र को अपने आस-पास के लोगों के लिए एक आदर्श बनने की चुनौती देता है। आइये इस संबन्ध में पौलुस को तीमुथियुस को दी गई सलाह की जांच करें।

अशुद्ध बकवाद से बचा रह

पौलुस द्वारा तीमुथियुस को दी गई सलाह के पहले शब्द अशुद्ध बकवाद से बचने के बारे में है। अशुद्ध बकवाद क्या है? संदर्भ से हमें कुछ सहायता मिल सकती है। पौलुस तीमुथियुस को उन दो व्यक्तियों के बारे में बता रहा है जो इस गलती में गिरे थे। पद 18 के अनुसार हुमिनयुस और पिफलेतुस यह सिखा रहे थे कि पुनरूत्थान हो चुका है। अपने विचारों की शिक्षा देने के लिए वे परमेश्वर के वचन के सत्य से पिफर गए थे। पौलुस के अनुसार, वे अशुद्ध बकवाद करनेवाले थे। जिन चीज़ों की शिक्षा इन लोगों ने दी थी उससे मसीह की देह को कोई आशीष नहीं मिली थी और न ही इसने परमेश्वर के सत्य में उसके लोगों की अगुवाई की थी। अपने सोच-विचारों को बताने के कारण वे पवित्रशास्त्र से भटक गए थे। वे कितने ही लोगों को बरबादी की ओर लेकर जा रहे थे। (पद 18)। पौलुस के अनुसार, अशुद्ध बकवाद मानवीय सोच-विचारों की शिक्षा से संबन्धित है जो कि परमेश्वर के वचन की स्पष्ट शिक्षा के प्रतिकूल हैं। यह इस कारण से अशुद्ध है क्योंकि यह परमेश्वर और उसके वचन की ओर से नहीं है और न ही यह मसीह की देह का निर्माण करता है।

इस अशुद्ध बकवाद के संबन्ध में तीमुथियुस को दी गई पौलुस की चेतावनी पर ध्यान दें। प्रेरित ने तीमुथियुस को बताया कि इससे जुड़े लोग अधिक से अधिक अभक्ति में बढ़ते जाएंगे। जब तक हम परमेश्वर के वचन की ओर नहीं देखते हैं हम स्वयं को सभी तरह के गलत और झूठे सिद्धान्तों के लिए खुला

रखते हैं। परमेश्वर ने हमें अपना वचन उसके और उसके उद्देश्यों के सत्य को जानने के बारे में दिया है।

संपूर्ण कलीसियाई इतिहास में हमने पुरुषों और स्त्रियों को अपनी आवश्यकता के अनुसार परमेश्वर के वचन को घुमाते हुए अपने विश्वास से समझौता करते देखा है। वचन में जोड़ने के साथ-साथ उन्होंने अपने दिनों की संस्कृति के अनुसार उस वचन का गलत अर्थ भी निकाला है। हमारे दिनों में भी ऐसी कलीसियाएं हैं जो कार्यक्रमों तथा तकनीकों के पीछे पीछे चलते हुए अपनी कलीसिया के विकास के लिए इन पर पूरा भरोसा रखती हैं। कुछ तो निर्धारित बाइबल विषयों पर प्रचार न करने को कहते हुए और भी आगे निकल गए हैं क्योंकि वह संभवत: उनकी कलीसिया में आनेवाले लोगों के लिए उचित न हों। ऐसा करने पर हम यह मानते हैं कि परमेश्वर का वचन विश्वास और धीरज के लिए पर्याप्त मार्गदर्शक नहीं है। ये कलीसियाएं संख्या में तो बढ़ सकती हैं परन्तु उनमें परिपक्वता नहीं होती। सच्चा विश्वास वचन के सुनने से आता है। (रोमि. 10:17)। जब हम परमेश्वर के वचन के स्थान पर मानवीय विचारों और सिद्धान्तों को रखते हैं, तो इसका परिणाम अधर्म ही होगा।

ध्यान दें कि हुमिनयुस और फिलेतुस की अधर्मी शिक्षा सड़े घाव के समान फैला गई थी। (पद 17) ऐसे लोग भी सदैव ही होंगे जो झूठी शिक्षा और अशुद्ध बकवाद के शिकार बनते हैं। यह शिक्षा एक ऐसे सड़े घाव के समान होती है जो देह को खा जाती है। पौलुस के अनुसार अशुद्ध बकवाद एक ऐसे सड़े घाव के समान था जिसके समस्त देह में फैलने से पूर्व काटे जाने की ज़रूरत थी। इस झूठी शिक्षा में समस्त कलीसिया का नाश करने की शक्ति थी।

पौलुस ने तीमुथियुस को परमेश्वर के वचन में बने रहने की चुनौती दी थी। परमेश्वर का वचन ही परमेश्वर के साथ हमारे चलने में हमें शुद्ध करता व परिपक्व बनाता है। पवित्रशास्त्र हमारा मार्गदर्शक और अधिकारी होना चाहिए। हमें इसमें बने रहकर मानवीय विचारों और सांसारिक सिद्धान्तों के अशुद्ध बकवाद का शिकार नहीं बनना है।

बुराई से बचा रह

संसार में बहुत से मानवीय विचार और सिद्धान्त पाए जाते हैं। प्रतिदिन हम पर मीडिया या हमारे आस-पास के लोगों की बातचीत के द्वारा इन विचारों की बमबारी होती है। परीक्षा की घड़ी में केवल एक ही सत्य टिकने पाएगा। मानवीय सिद्धान्त और विचार आए व चले गए। बना रहने वाला सत्य परमेश्वर के वचन का सत्य है। पौलुस इस सत्य की तुलना एक पक्की नीवं से करता है। परमेश्वर का वचन दृढ़ खड़ा रहता है। परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं पूर्णतया विश्वसनीय हैं। जो

कुछ वह कहता है हम उस पर भरोसा कर सकते हैं। यह हमारा मार्गदर्शन करेगा और हमें सुरक्षित रखेगा।

पौलुस ने तीमुथियुस को स्मरण कराया कि प्रभु अपने लोगों को जानता है। उसके लोग वही हैं जो उसके नाम का अंगीकार करते और बुराई से फिर जाते हैं। हम यह कैसे जान सकते हैं कि बुराई क्या है और परमेश्वर क्या मांग करता है? क्या इसे हमारे लिए परमेश्वर के वचन में नहीं लिखा गया है? हमें बुराई से फिरकर परमेश्वर के वचन के लोग बनना है। हमें इसका अध्ययन करना और इस पर मनन करना है ताकि उस सत्य को चिन्हित कर सकें जिसकी मांग परमेश्वर करता है।

पद 20 में पौलुस एक घर के उदाहरण का प्रयोग करता है। उसने तीमुथियुस को बताया कि एक बड़े घर में दो तरह के बर्तन होते हैं। कुछ बरतन सोने चांदी के होते हैं। घर में लकड़ी और मिट्टी के भी बरतन होते हैं। कुछ बरतन साफ होते हैं तथा कुछ गन्दे होते हैं। उदाहरण के लिए, अपने घर आए अतिथियों को गन्दी प्लेटों में भोजन देने की कल्पना करें। हमारी अतिथियों या किसी भी अन्य व्यक्ति के लिए इन प्लेटों का प्रयोग किये जाने से पूर्व सर्वप्रथम इनका साफ होना ज़रूरी है। यही चीज़ हमारे आत्मिक जीवनों में भी सत्य है। पद 21 में पौलुस हमें स्मरण कराता है कि यदि हम अपने को साफ करें तो हम उत्तम उद्देश्यों के लिए प्रयुक्त किये जानेवाले पात्र होंगे। हम पवित्र होने के साथ-साथ स्वामी के उपयोग के लिए होंगे। इसी कारण हमें बुराई से दूर भागने की ज़रूरत है। यदि हम चाहते हैं कि हमारा प्रयोग हो तो हमें अपनी पूरी शक्ति से परमेश्वर के साम्मुख शुद्ध पात्र बनने के लिए हमे संभव प्रयास करना चाहिए।

परमेश्वर के हाथों का पात्र होने पर, हमें अपनी देह की बुरी अभिलाषाओं से दूर भागना है (पद 22)। हमें अपने भीतर पाई जाने वाली पापी अभिलाषाओं के लिए प्रतिदिन मरना है। पद 22 में प्रयुक्त शब्द ''भाग'' पर ध्यान दें। हमारा शरीर संतुष्टि चाहता है। यह बुराई की ओर आकर्षित होता है। पौलुस हमें बताता है कि हमें शरीर पर नियंत्रण करने तथा इसका इंकार करने की ज़रूरत है। परमेश्वर के साथ चलने में हमें इन बुरी अभिलाषाओं को शत्रु के रूप में देखना है। हमें इससे उसी तरह से भागना चाहिए जिस तरह से यूसुफ पोतीपर की पत्नी से भागा था जो उसे भ्रष्ट करना चाहती थी (उत्प. 39:11-12)।

शरीर को तृप्त करने के बजाय हमें धार्मिकता, विश्वास, प्रेम और शांति का पीछा करना है। हमारा शरीर धार्मिकता के विपरीत बुराई का पीछा करना चाहता है। शरीर विश्वास पर कार्य करने के विपरीत बुद्धि द्वारा संदेह को उत्पन्न करता है। जहां प्रेम होना चाहिए वहाँ शरीर कड़वाहट, ईर्ष्या और झगड़े को रखता है।

जहां शांति की ज़रूरत होती है वहां यह झगड़े और विभाजन को लाता है। परमेश्वर के हाथों का उत्तम पात्र बनने के लिए हमें शरीर की बुरी अभिलाषाओं से भागने और स्वयं को परमेश्वर तथा उसके उद्देश्यों के प्रति समर्पित करने को अपना लक्ष्य बनाना चाहिए।

देह का महत्व

पद 22 में हमारे लिए इस पर ध्यान देना महत्त्वपूर्ण है कि हमारा धार्मिकता, विश्वास, प्रेम और शांति का पीछा करना अकेले में नहीं होता है। पौलुस स्पष्ट करता है कि हमें उन लोगों के साथ मिलकर इन चीज़ों का पीछा करना है जो शुद्ध मन से प्रभु का नाम लेते हैं। दूसरे विश्वासियों के साथ रहने और सेवा करने पर हम कुशाग्र होने के साथ-साथ प्रोत्साहित भी होंगे। यदि हम चाहते हैं कि हम ऐसे पात्र बनें जो परमेश्वर हमें बनाना चाहता है तो हमें ऐसा मसीह की विशाल देह के संदर्भ में करने की ज़रूरत है।

एक ठीक तरह से लगाई गई आग अच्छी तरह से जलती है। परन्तु यदि एक जलते कोयले को हटाकर अलग रख दिया जाए तो वह बुझ जाएगा। परमेश्वर अपने लोगों को एक देह कहता है। यदि हम देह में प्रभावी सेवकाई करना चाहते हैं तो इसके लिए हमें अन्य विश्वासियों के वरदानों को प्रोत्साहन और चुनौती देने की ज़रूरत होगी। यदि हम चाहते हैं कि हम वो हर चीज़ बनें जो परमेश्वर हमें बनाना चाहता है तो इसके लिए हमें एक दूसरे की ज़रूरत होगी। यदि आप परमेश्वर के हाथों का एक उत्तम पात्र बनना चाहते हैं तो आपको स्वयं को अन्य ईमानदार और भक्त विश्वासियों से घेरे रखने की ज़रूरत है जो आपको विश्वास में प्रोत्साहित करने के साथ-साथ चुनौती भी दें।

उदारता

पद 23 में पौलुस तीमुथियुस को स्मरण कराता है कि उसे मूर्खता और अविद्या के विवादों से अलग रहना है। इसका कारण पूर्णतया स्पष्ट है। ये मूर्खतापूर्ण विवाद केवल झगड़े ही उत्पन्न करते हैं। पद 24 में पौलुस कहता है कि प्रभु के सेवक को झगड़ालू नहीं होना चाहिए। इसके विपरीत वे लोग भी हैं जो परमेश्वर के सत्य का प्रयोग दूसरों के सिरों पर हथौड़े का प्रहार करने के समान करते हैं। उनमें उन लोगों के लिए बहुत कम धीरज होता है जो चीज़ों को उनके ढंग से नहीं देखते हैं। ऐसा लगता है कि पौलुस तीमुथियुस को बता रहा है कि परमेश्वर का सच्चा सेवक अलग तरह से कार्य कर है। वह सच्चे विश्वासियों को परमेश्वर की संतान और अपने भाई व बहनों के रूप में ग्रहण करता है। उनके समझ और आत्मिक चाल में बढ़ने पर वह दूसरों के साथ धीरज को दिखाता है।

अपने दिनों के झूठे शिक्षकों ने उन लोगों को उत्तेजित कर दिया था जिन्हें उन्होंने शिक्षा दी थी। वे शब्दों पर तर्क करते और सिद्धान्तों पर झगड़ते थे। उनकी शिक्षा में आत्मा के फल का प्रदर्शन बहुत ही कम होता था। प्रेम, दया और धीरज वहां नहीं थे। पौलुस ने तीमुथियुस को उदारता के साथ उन्हें निर्देश देने की चुनौती दी थी जो उसकी इस आशा से सुनते थे कि परमेश्वर उन्हें पश्चात्ताप और सत्य के ज्ञान में लेकर जाएगा।

सत्य का बचाव करना एक चीज़ है, और ऐसा ईश्वरीय तरीके से करना दूसरी चीज़ है। हममें से कुछ शत्रु की युक्तियों का प्रयोग करते हुए सत्य का बचाव करते हैं। हम तर्क, विवाद करने के साथ-साथ छल भी करना चाहते हैं। यह परमेश्वर का तरीका नहीं है। पौलुस हमें बता रहा है कि हमें उदारता के साथ सत्य को सिखाना चाहिए। हमारे लिए ऐसा करना कितना सरल है कि दूसरों पर वचन की अपनी व्याख्या को थोपें। हमें पवित्र आत्मा की भूमिका को पूरा नहीं करना है। विवश करना उसका काम है। पौलुस ने तीमुथियुस को उदारता के साथ सिखाने की चुनौती दी थी। उसे सत्य के लिए खड़ा होना और सावधान रहना था जिन्हें वह प्रचार करता था कि वह प्रेम और आदर के साथ प्रचार करें।

यह पवित्र आत्मा का दायित्व है कि लोगों को होश में लाकर उन्हें शत्रु के फंदे से छुड़ाए (पद 26)। हम प्रायः पवित्र आत्मा के कार्य को करने का प्रयास करते हैं। हमें लगता है कि लोगों को बाध्य करने व बदलने का कार्य हमारा है। इस विषय की वास्तविकता यह है कि हमारा कार्य केवल सत्य को बताना है और बाकी का कार्य परमेश्वर का है।

परमेश्वर के हाथों के उत्तम पात्र बनने के लिए हमें वचन के लोग बनने को प्राथमिकता बनाना है। हमें उन लोगों की सभी अधर्मी और झूठी धारणाओं से बचना है जिन्हें लगता है कि उनका तरीका परमेश्वर की तुलना में श्रेष्ठ है। परमेश्वर से हमें दूर करने वाले हरेक पाप से निपटते हुए हमें परमेश्वर के हाथों का उत्तम पात्र बनने को हर संभव प्रयास करना है। हमें विशाल देह के सुधार, प्रोत्साहन और चुनौतियों के लिए अपने हृदय को खोलना तथा उदारता व प्रेम के साथ सेवा करनी है।

विचार करने के लिए:

- अपने आत्मिक विकास में हम परमेश्वर के वचन के महत्व के बारे में क्या सीखते हैं?
- पौलुस इस परिच्छेद में झूठी शिक्षा की तुलना सड़े घाव से करता है। यह हमें झूठी शिक्षा के खतरे के बारे में क्या बताता है?
- हमारे आत्मिक विकास में दूसरे विश्वासियों की क्या भूमिका है? मसीह की

देह ने आपके परिपक्व होने में कैसे सहायता की है?

- प्रेम रहित सत्य का खतरा क्या है?
- क्या विश्वासियों के लिए पवित्र आत्मा की भूमिका को कर पाना संभव है? पवित्र आत्मा की क्या भूमिका है? हमारी क्या भूमिका है।

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर से कहें कि वह आपमें देखे कि कहीं कोई पाप या विद्रोह का क्षेत्र तो नहीं है जो कि आपको उसके हाथों का शुद्ध पात्र बनने से रोककर रखता है।
- परमेश्वर से आपको उन लोगों के लिए प्रेम देने को कहें जो सिद्धान्त और रीति में आपसे भिन्न हैं।
- उनके लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें जिन्होंने आपकी सेवा की तथा विश्वास में परिपक्व होने में भी आपकी सहायता की है।
- परमेश्वर से आपको आपकी सेवकाई में दूसरों के साथ उदारता देने को कहें। उन समयों के लिए उससे आपको क्षमा करने को कहें जब आपने पवित्र आत्मा के कार्य को स्वयं करने का प्रयास किया था।

30

कठिन समय

पढ़े 2 तीमुथियुस 3:1–9

पौलुस इस अगले विभाग में अपना ध्यान अन्त समयों के बारे में विचार–विमर्श करने पर बदलता है। अध्याय 3 के पहले विभाग में उसने तीमुथियुस को बताया कि प्रभु के वापसी के दिन के निकट आने पर क्या होगा।

प्रेरित पद 1 में तीमुथियुस को यह बताते हुए आरम्भ करता है कि कठिन समय आएंगे। ''कठिन'' शब्द का अर्थ हिंसक होने, कठिनाई से सहन करने, खतरनाक या कठोर होने से है। प्रभु की वापसी के दिन के निकट आने पर हम विश्वासियों और अविश्वसियों के लिए चीज़ों के अधिक कठिन होने की आशा कर सकते हैं। पौलुस आगे के पदों में इसके अर्थ को स्पष्ट करता है।

पौलुस ने तीमुथियुस को चेतावनी दी कि अन्तिम दिनों में लोग स्वयं से प्रेम करनेवाले अर्थात् स्वार्थी हो जाएंगे। वे स्वयं को प्रसन्न रखने तथा अपने लाभ के लिए बढ़ने को जीयेंगे। पड़ोसियों, मित्रों और परिवार की चिंता करना समाप्त हो जाएगा। लोग अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए एक दूसरे पर हाथ डालने से भी नहीं हिचकेंगे। आत्म–केन्द्र का प्रभुत्व होगा। इसका कलीसिया और समाज पर भी प्रभाव पड़ेगा।

दूसरा, ध्यान दें कि लोग धन के प्रेमी हो जाएंगे। इसके साथ साथ उन चीज़ों के प्रेमी, जिन्हें धन से खरीदा जा सकता है। अन्तिम दिनों में हम लोगों को सांसारिक चीज़ों पर अधिक ध्यान केन्द्रित करते हुए देख सकते हैं। जो कुछ उनके पास होगा उससे वे संतुष्ट नहीं होंगे। वे इस संसार की संपत्ति व प्रसन्नता का पीछा करेंगे। वे अपनी सारी शक्ति अधिक से अधिक प्राप्त करने में खर्च कर देंगे। मुझे एक कार पर लिखे शब्द स्मरण हैं, ''अधिक खिलौनों के साथ मरने वाला जीतता है।'' पौलुस यहां इसी दार्शनिकता के बारे में बता रहा है। इसके अनुसार सफल व्यक्ति वही है जो इस जीवन में अधिक धन व सम्पत्ति को एकत्रित कर पाता है। प्रभु की वापसी के दिन के निकट आने पर हम

अधिक से अधिक लोगों को इस लक्ष्य का पीछा करते देखेंगे। धन और सम्पत्ति परमेश्वर को एक ओर धकेल देंगे।

पौलुस हमें आगे बताता है कि लोग डींगमार और घमण्डी हो जाएंगे। जीतने व दृढ़ बने रहने के लिए मानवीय क्षमता पर अधिक भरोसा किया जाएगा। संसार की समस्याओं का समाधान करने को विज्ञान, दवा और राजनीति पर भरोसे में वृद्धि होगी। लोगों की आंखें परमेश्वर से फिरकर स्वयं पर केन्द्रित होंगी। लोग परमेश्वर की आवश्यकता को अनुभव नहीं करेंगे। इसके विपरीत, घमण्ड और अकड़ के कारण, वे अपनी क्षमता व उपलब्धियों पर डींग मारेंगे। फिर से परमेश्वर को एक ओर धकेल दिया जाएगा।

हम निन्दा में वृद्धि को भी देखेंगे। यहां प्रयुक्त यूनानी शब्द बुराई करने व बुरा बोलने के बारे में बताता है। अन्य शब्दों में, लोगों के बीच संबन्ध अस्वाभाविक हो जाएंगे। पुरुष और स्त्री एक दूसरे के बारे में बुरा बोलेंगे। वे एक दूसरे का प्रयोग करेंगे। पुनः एक ऐसे लोगों के समाज की कल्पना करें जिनकी केवल अपने में ही रुचि होती है। उन्हें बुरा बोलने, अपने मित्र या सहकर्मी की प्रतिष्ठा को नष्ट करने में कोई हिचाकिचाहट नहीं होगी; यदि ऐसा करते हुए उनकी स्वयं की उन्नति होती हो।

बच्चे भी इन कठिन समयों के अधीन होंगे। पद 2 में पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि बच्चे अपने माता-पिता के आज्ञाकारी नहीं होंगे। माता-पिता के लिए आदर समाप्त हो जाएगा। माता-पिता के लिए आदर न होने पर हम यह भी जान सकते हैं कि शिक्षकों और अधिकारियों के प्रति भी कोई आदर नहीं होगा। अधिकारियों के लिए आदर समाप्त हो जाएगा। प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुसार ही कार्य करेगा। अधिकारी वर्ग इस अनादर के साथ निपटने में असक्षम होगा। पुनः समाज पर पड़ने वाले इसके प्रभाव की कल्पना करें।

पौलुस द्वारा तीमुथियुस को बताई जानेवाली अगली चीज़ कृतघ्नता है जिसको वह प्रभु की वापसी के दिन के निकट आने पर देखने की आशा कर सकता है। लोग प्रत्येक चीज़ को अपनी चीज़ के रूप में देखना आरम्भ कर देंगे। वे सब कुछ प्राप्त कर लेंगे, परन्तु इसके लिए सराहना का कोई शब्द न कहेंगे। धन्यवाद के साथ ग्रहण करने के बजाय, वे अपने अधिकारों की भी मांग करेंगे। ऐसे ही प्रभु की वापसी का दिन निकट आने पर, लोग अपनाी सेवा किये जाने की मांग तो करेंगे ही, परन्तु उसके प्रति कभी धन्यवादी भी नहीं होंगे जो वे प्राप्त करेंगे।

अधर्म की भी वृद्धि होगी। लोग अपने लिए परमेश्वर की आवश्यकता को नहीं देखेंगे। वे उससे और उसके वचन से फिर जाएंगे। वे वही करेंगे जो उन्हें अच्छा लगता है। देश में पाप की वृद्धि होगी। अनैतिकता, बेईमानी और कई तरह की बुराई अधिक संभावित हो जाएगी।

पौलुस पद 3 में आगे कहता है कि लोगों में प्रेम नहीं होगा। अन्य शब्दों में, वे दूसरों के साथ अपने संबन्धों में प्रेम से नहीं चलेंगे। वे दूसरों की नहीं परन्तु अपनी ही चिन्ता करेंगे।

प्रेम में कार्य न करने के कारण वे उन्हें हानि पहुंचाने वाले लोगों को क्षमा नहीं करेंगे। इसके विपरीत, वे कड़वाहट और क्रोध को थामें रखेंगे। इसका परिणाम हर तरह की बुराई के बढ़ने के रूप में होगा। लोग एक दूसरे को हर तरह की बुरी बात कहने के द्वारा घात करेंगे। उनकी जीभ अपने शिकार को काटने व हत्या करनेवाली तलवार के समान होगी।

अन्तिम दिनों में लोग नियंत्रण से बाहर होंगे। हम देख चुके हैं कि वे अपवित्र होंगे तथा अधिकारियों का आदर नहीं करेंगे। वे क्षमा न करनेवाले और प्रेम रहित होंगे। वे जब चाहे तब पीयेंगे। वे क्रोध और प्रतिशोध में आकर प्रहार करेंगे। पौलुस पद 3 में उन्हें असभ्य कहता है।

पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि अन्तिम दिनों में लोग भरोसा करने के लायक नहीं होंगे। वे भलाई को नहीं चाहेंगे। वे बुराई की चाह रखेंगे। भलाई के सिद्धान्तों या प्रभु की व्यवस्था के प्रति आदर न होने के कारण वे झूठ, छल तथा चोरी जैसे कार्य करेंगे। लोग विश्वासघात करेंगे (पद 4)। वे स्वेच्छा से अपने प्रियजनों या मित्रों से मुंह मोड़ लेंगे। वे सिद्धान्त रहित लोग होंगे।

अन्तिम दिनों के लोगों के बारे में बताने को परमेश्वर ने ठीक से शब्द का प्रयोग किया है। वे अपने कार्यों और निर्णयों में उतावली करेंगे। वे अपने कार्य के परिणामों की चिन्ता नहीं करेंगे। वे लापरवाह हो जाएंगे। वे अभिमानी और परमेश्वर के प्रेमी होने से अधिक सुखविलास ही के चाहनेवाले होंगे, तथा एक अनैतिक जीवन शैली का चुनाव करेंगे। परमेश्वर के सिद्धान्तों की उन्हें कोई चिन्ता न होगी। उनकी एकमात्र इच्छा देह की लालसा को पूरा करने की होगी। वे लोग परमेश्वर और अधिकारियों के प्रति कोई आदर न दिखाते हुए स्वयं के लिए ही जीयेंगे। इस तरह के लोगों से भरे एक समाज की कल्पना करें।

इन सभी चीज़ों को बुरा बनाने वाली चीज़ यह सच्चाई है कि इन लोगों का रूप भक्त का होता है। अन्य शब्दों में, आत्मिक दिखेंगे परन्तु वास्तव में परमेश्वर से बहुत दूर होंगे। उनका विश्वास परमेश्वर के साथ संबन्ध में न रहने के कारण शक्तिहीन होगा।

पद 5 में ध्यान दें कि वे परमेश्वर के आत्मा से मुंह फेरते हुए परमेश्वर की शक्ति का इंकार करेंगे। वे उनमें पाए जानेवाले उसके कार्यों का सामना करेंगे। पौलुस ने तीमुथियुस को इस तरह के लोगों से कोई व्यवहार न करने को कहा।

निस्संदेह पौलुस के दिनों में भी इस तरह के लोग थे। तथापि, उसने तीमुथियुस को स्मरण कराया कि प्रभु की वापसी के दिन के निकट आने पर इस तरह के लोग बहुत अधिक होंगे।

अन्तिम दिनों के अधर्मी लोग अपनी बुराई और विद्रोही हृदय को रोक नहीं पाएंगे। (पद 6)। वे दूसरों पर भी इसका प्रभाव डालने का प्रयास करेंगे, विशेष रूप से उन पर जो अधिक संवेदी हैं। लोग इन बुरे भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षा के पीछे चलने के लिए सत्य से दूर हो जाएंगे।

जबकि ये लोग ऐसे लोगों की खोज में होंगे जिन्हें आसानी से धोखा दिया जा सकता है, इसका अर्थ यह नहीं है कि ये बुद्धिमान लोग नहीं हैं। पद 7 में पौलुस हमें बताता है कि ये झूठे शिक्षक हमेशा सीखते ही रहते हैं। ये बुद्धिमान लोग थे जो ज्ञान को एकत्रित करते रहते थे। एक व्यक्ति में अधिक ज्ञान तो हो सकता है परन्तु ज़रूरी नहीं कि वह परमेश्वर के वचन के सत्य और मसीह के कार्य को समझे।

पद 8 में पौलुस ने इन लोगों की तुलना यन्नेस और यम्ब्रेस से की है। ये संभवत: वे जादूगर हैं जिन्हें फिरौन ने मूसा द्वारा दिये गए चिन्हों की नकल करने के लिए बुलाया था (निर्ग 7:11)। ये लोग अपने सुनने वालों को धोखा देने के लिए चिन्ह और चमत्कार करेंगे। मिस्र के इन दो जादूगरों के समान ये बहुत सामर्थी दिखेंगे परन्तु ये भ्रष्ट और पापी व्यक्ति हैं जो सत्य से दूर हैं तथा जिनका परमेश्वर के राज्य में कोई स्थान नहीं है।

इस परिच्छेद की प्रोत्साहक चीज़ वह है जो पौलुस पद 9 में हमें बताता है। उसने तीमुथियुस को स्मरण कराया कि ये लोग अधिक दूर तक नहीं जा पाएंगे। जबकि यन्नेस और यम्ब्रेस ने मूसा के दिनों में कुछ समय के लिए लोगों को धोखा दिया था, तौभी सत्य अन्त में प्रगट हो गया था, और विजय परमेश्वर की हुई थी। एक ऐसा समय भी आया जब वे अधिक समय तक चिन्हों को दिखा नहीं सके। अन्तत: पूरा मिस्र देश अपने घुटनों पर लाया गया। मूसा को परमेश्वर का सच्चा भविष्यद्वक्ता दिखाया जाना था। इन लोगों के साथ भी ऐसा ही होगा। वह दिन आ रहा है जब उनका झूठ प्रगट हो जाएगा। परमेश्वर के सत्य का ही राज होगा।

विचार करने के लिए

- यीशु के आने से पूर्व अन्तिम दिनों का वर्णन करें। प्रभु के दिन के आने पर किस तरह के समाज को देखने की आशा की जा सकती है?

- प्रभु के दिन के निकट आने पर हम अपने समाज में किस तरह के प्रमाण को देखते हैं?
- शैतान के धोखे के बारे में हम क्या जान पाते हैं?
- हमारा चिन्हों व ज्ञान द्वारा भटक जाना कितना आसान है? क्या सभी सामर्थी चिन्ह परमेश्वर की ओर से हैं? हम धोखा खाए जाने से कैसे बच सकते हैं?
- सत्य का ज्ञान और समझ होने के बीच क्या अन्तर है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर से आपको शत्रु और उसके झूठे शिक्षकों से बचाए रखने को कहें।
- परमेश्वर से आपको उसके वचन में बने रहने तथा उस संसार के समक्ष एक उदाहरण बनने में सहायता करने को कहें जो कि सत्य से दूर जा रहा है।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि जिस तरह से उसने मूसा के दिनों में सत्य को प्रगट किया था, उसी तरह से वह आने वाले दिनों में शत्रु के झूठ को भी प्रगट करे। उसके बुराई और झूठ पर विजयी होने के लिए धन्यवाद दें।

◀▶

31

सताव और वचन

पढ़ें 2तीमुथियुस 3:10–17

अन्तिम मनन में हमने देखा कि पौलुस ने तीमुथियुस को किस तरह से स्मरण कराया कि अन्तिम दिनों में बहुत से झूठे शिक्षक होंगे। प्रभु की वापसी से पहले के दिन वे कठिन दिन होंगे जो बुराई और पाप से भरे होंगे। लोग परमेश्वर तथा उसके उद्देश्यों से फिर जाएंगे। वे वही करेंगे जो उन्हें अच्छा लगेगा। वे स्वयं से प्रेम करने वाले, धन और सम्पत्ति के प्रेमी होंगे। वे परमेश्वर तथा उसके दासों को ग्रहण नहीं करेंगे। इसका अर्थ यह होगा कि जो लोग प्रभु की सेवा करना चाहते हैं उन्हें आगे दुख उठाना होगा। इस अगले विभाग में पौलुस तीमुथियुस को इन कठिन समयों में वचन के प्रति सत्य बने रहने के महत्व के बारे में स्मरण कराता है।

आने वाले कठिन समयों की रोशनी में पौलुस ने तीमुथियुस को कई चीज़ों को स्मरण करने की चुनौती दी। पद 10 में ध्यान दें कि उसे सबसे पहले परमेश्वर के वचन की शिक्षा को स्मरण करना था। पहले से ही बहुत से झूठे शिक्षक दूसरे संदेशों का प्रचार कर रहे थे। और बहुत से लोग उनके धोखे में आ भी चुके थे। पौलुस ने तीमुथियुस को सत्य को स्मरण रखने को प्रोत्साहित किया जिससे वह इन धूर्त शिक्षकों के धोखे में न आएं। तीमुथियुस को उस सत्य की शिक्षा देनी थी जिसे उसने पौलुस से सीखा था, जिससे अन्य लोग वहां वितरित किये जानेवाले झूठे सिद्धान्तों के धोखे में न आएं।

तीमुथियुस को न केवल प्रेरित पौलुस की शिक्षा को स्मरण करना व आगे बढ़ाना था, परन्तु उसे पौलुस के उदाहरण को भी स्मरण रखना था। सत्य केवल सिखाने के लिए ही नहीं था, परन्तु इसे जीवन का एक मार्ग होना था। पौलुस प्रभु और उसके कार्य के लिए उमंग व जोश से भरा एक व्यक्ति था। पाप से फिरते हुए तथा जो कुछ भी उसने किया उसमें प्रभु को खोजते हुए उसने एक धर्मी जीवन जीया। तीमुथियुस को पौलुस के उदाहरण का अनुसरण करने को आश्वस्त होना था, जिसने सामान्यता दुख उठाया था, परन्तु कभी भी सत्य से भटका नहीं और परमेश्वर के साथ चलने में न ही कभी कोई समझौता किया।

पौलुस ने तीमुथियुस को अपने उद्देश्य को भी स्मरण रखने की चुनौती दी थी (पद 10)। पौलुस का क्या उद्देश्य था? यह प्रभु को आदर देना व जानना था। एक अवसर पर प्रेरित पौलुस ने इस ओर देखकर जिसे उसने अपने जीवन में पूरा किया था, कहा कि मसीह को जानने की तुलना में सभी चीज़ें कूड़ा हैं। आने वाले सताव और जांच की रोशनी में, पौलुस ने तीमुथियुस को अपनी आंखें प्रभु की ओर केन्द्रित करने को प्रोत्साहित किया। उसे किसी भी चीज़ को मसीह पर से अपनी आंखें हटाने की अनुमति नही देनी थी। उसे प्रभु यीशु को जानना तथा पूरी ईमानदारी के साथ अपने हृदय से उसकी सेवा करने को अपने जीवन का लक्ष्य बनाना था।

आनेवाले दिन कठिनाई से भरे होंगे। इन दिनों में तीमुथियुस को विश्वास में होकर चलना था। विश्वास से चलना उस समय में भरोसा रखना है जब हम अपनी आंखों से देख नहीं सकते या अपने कानों से सुन नहीं सकते या अपने मस्तिष्क से समझ भी नहीं सकते हैं। यह ऐसा भरोसा रखना है कि चाहे जो कुछ भी हो, परमेश्वर नियंत्रण में है, और वह अपने उद्देश्यों को पूरा करेगा। यह उसे ग्रहण करना है जो कुछ भी परमेश्वर कर रहा है, बेशक हमें अपना रास्ता नज़र भी न आ रहा हो। शत्रु प्रभु परमेश्वर के चरित्र और उद्देश्य पर संदेह उत्पन्न कराने को हर संभव प्रयास करेगा। उन समयों में जबकि हर चीज़ अंधेरी और अस्पष्ट दिख रही हो, हमें प्रभु और उसके वचन पर भरोसा करना है।

विश्वास के इस विचार का निकट संबन्धी धीरज है। धीरज एक दबाब या परीक्षा की घड़ी में हिम्मत हारे बिना बने रहने की योग्यता है। धीरज धरने और सहन करने को लगातार बढ़ते जाना है जबकि प्रत्येक चीज़ हमें रोकना चाहती हो। यह तब तक तनाव और दर्द में बने रहने की योग्यता है जब तक कि परमेश्वर अपने उद्देश्यों की पूर्ति न कर ले। इसका विश्वास से निकट का संबन्ध है क्योंकि हम केवल तब ही सहन कर सकते और धीरजवन्त हो सकते हैं जब हम परमेश्वर पर यह जानते हुए विश्वास करते हैं कि वह नियंत्रण में है और जिसमें से होकर हम जा रहे हैं उसका प्रयोग वह हमारी भलाई हेतु महान उद्देश्यों को पूरा करने के लिए करेगा।

तीमुथियुस को प्रेम को भी स्मरण रखना था। परीक्षा और पीड़ा के समय में प्रेम की दृष्टि को खोना बहुत आसान है। कड़वा और क्रोधी होना सरल है। पौलुस ने तीमुथियुस को परमेश्वर तथा उसके लोगों के लिए प्रेम को कभी न खोने की चुनौती दी। चाहे कुछ भी क्यों न हो उसे केवल प्रेम करना था। उसके सभी कार्य और प्रतिक्रियाएं प्रेमपूर्ण होनी चाहिए थीं। अपमानित होने व सताए जाने पर उसे प्रेम से प्रतिक्रिया देनी थी। जिस तरह से यीशु ने उन्हें क्षमा किया जिन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया था, उसी तरह से तीमुथियुस को अपने द्वारा की जाने वाली प्रत्येक चीज़ में प्रेम को दिखाना था।

पद 11 में ध्यान दें कि पौलुस ने सताव और दुखों के बीच में इन विशेषताओं का प्रदर्शन किया था। जब सब कुछ अच्छा चल रह हो और लोग हमारा आदर कर रहे हों, ऐसे समय में धीरज रखना और प्रेम करना सरल होता है। परन्तु उनके हमसे घृणा करने और हमें अधिक दुख देने पर ऐसा करना सरल नहीं होता है।

पौलुस ने तीमुथियुस को उन सतावों व दुखों का स्मरण कराया जिन्हें उसने अपनी मिशनरी यात्राओं में सहा था और उसको प्रभु परमेश्वर ने किस तरह से उन सभी को बचाया था। पौलुस का उदाहरण हमारे लिए एक वास्तविक चुनौती है। उसने अन्य प्रेरितों की तुलना में अधिक दुख सहा था। उस पर पत्थरवाह किया गया, पीटा गया और उसे कि अपमानित किया गया। तौभी, पौलुस हमें बताता है कि प्रभु ने उसे उसके सभी दुखों से छुड़ाया था। इसका अर्थ यह नहीं था कि पौलुस को दर्द से अलग किया गया था। उसकी देह पर पत्थर के पड़ने पर उसने एक टीस का अनुभव किया था। उसने अपमान किये जाने और अपने संदेश का इन्कार किये जाने के दुख को सहा था। परमेश्वर ने उसे समस्याओं से बचाकर नहीं रखा था, परन्तु उसने उसमें से हर एक को अपने ऊपर उठाया था।

पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि जो कोई भक्ति का जीवन जीना चाहता है उसे सताव का सामना करना होगा (पद 12)। इसकी कोई अवधारणा नहीं है। शैतान परमेश्वर की चीज़ों से घृणा करता है। यदि हम एक भक्तिपूर्ण जीवन बिताना चाहते और प्रभु यीशु की सेवा करना चाहते हैं तो हमें शत्रु का सामना, सामने आकर करना होगा। इन समयों में हमें उसे स्मरण रखना है जो पौलुस तीमुथियुस को इस परिच्छेद में सिखाता है। परमेश्वर के वचन पर विश्वास करते हुए और उसकी प्रतीक्षा करते हुए हमें विश्वास, धीरज और प्रेम में दृढ़ बने रहना है।

पौलुस के अनुसार बुरे लोग और बहकानेवाले बढ़ते जाएंगे और बहुत से लोगों को धोखा देंगे (पद 13)। हमें पहले से ही इस बारे में बता दिया गया है, अतः ऐसा होने पर हमें साहस नहीं खोना है। अन्तिम दिनों में, बहुतों का विश्वास परखा जाएगा। हम कलीसिया के एक बहुत बड़े सताव को देखेंगे। हम शैतान के राज्य को बढ़ता देखेंगे, परन्तु हमें हिम्मत न हारने को प्रेरित किया गया है।

मसीह की वापसी के दिनों के निकट आने पर, यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि हम उसमें बने रहें जो कुछ भी हमने सीखा और विश्वास से ग्रहण किया है (पद 14)। पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि पवित्रशास्त्र उसे उसके मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिए बुद्धिमान बना सकता है (पद 15)। पवित्रशास्त्र के ये पद वे स्रोत हैं जिनसे वह प्रभु यीशु के विश्वास में आया था और परमेश्वर के साथ अपने चलन में बढ़ा था।

जो पवित्रशास्त्र हमारे पास है वह मात्र एक कहानियों की पुस्तक और सिद्धान्त ही नहीं है। पौलुस पद 16 में हमें बताता है कि हर एक पवित्रशास्त्र

परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है। अर्थात् यह पमरेश्वर के मुंह और हृदय से निकलता है। पवित्रशास्त्र के शब्द चाहे मानवीय हाथों से लिखे गए हैं, ये परमेश्वर के वे शब्द हैं जो झूठे नहीं हो सकते। उसका वचन पूर्णतया भरोसेमन्द और विश्वसनीय है।

पवित्रशास्त्र के ये पद विश्वासी के चार क्षेत्रों के लिए उपयोगी हैं। पौलुस सर्वप्रथम हमें बताता है कि पवित्रशास्त्र सिखाने के लिए उपयोगी है। अर्थात् यह पवित्रशास्त्र सत्य में हमरी अगुवाई करेगा। यह सही और ईश्वरीय चीज़ों में हमारी अगुवाई करेगा। यह जीवन के अर्थ और उद्देश्य को हमें बताएगा। परमेश्वर और उसके उद्देश्यों को जानने में यह सच में विश्वसनीय है।

दूसरा, पवित्रशास्त्र सुधारने के लिए भी उपयोगी है। अन्य शब्दों में, इस वचन की शिक्षा को ग्रहण करने के कारण यह हमारे जीवन की गलतियों को प्रगट करेगा। यह हमारे जीवनों के अंधकारमय क्षेत्रों को सही करेगा। यह बुराई को प्रगट करने के द्वारा हमारे पाप के लिए हमें दोषी ठहराएगा।

न केवल पवित्रशास्त्र हमारा सुधार करेगा परन्तु यह हमें सही मार्ग पर वापस लायेगा, पवित्रशास्त्र न केवल हमें यह दिखाता है कि हम कहां गलत जा रहे हैं परन्तु यह हमें यह भी सिखाता है कि जहां हमें होना चाहिए हम वहां कैसे जा सकते हैं। यह हमें वह दिखाने के बजाय कि हम खोए हैं, हमारे लिए अधिक कार्य करता है। पवित्रशास्त्र हमें यह भी दिखाता है कि परमेश्वर तथा उसके उद्देश्यों के मार्ग पर फिर से कैसे जाया जा सकता है।

अन्त में इस पर ध्यान दें कि यह वचन धार्मिकता में भी हमें प्रशिक्षित करेगा। यह प्रशिक्षण उन्हीं गलतियों में गिरने से हमें बचाकर रखेगा। परमेश्वर का वचन शत्रु के हमलों के विरुद्ध हमें बल देगा। जब वह हमें परखने और हमें धोखा देने को आता है तब हम इस वचन के द्वारा उसका सामना कर सकते हैं। यीशु ने भी शैतान द्वारा जंगल में उसकी परीक्षा लिये जाने के समय ऐसा ही किया था। शैतान ने उसे धोखा देने का प्रयास किया था। प्रभु यीशु ने बार-बार परमेश्वर के वचन से तब तक शैतान का सामना किया जब तक कि वह पीछे नहीं हट गया।

पद 17 में ध्यान दें कि ''पवित्रशास्त्र हमें उपदेश देने, समझाने, सुधारने और धर्म की शिक्षा देने के लिए उपयोगी है ताकि हम हर भले काम के लिए तैयार हो जाएं।'' इस पद में दो शब्दों पर ध्यान दें।

इन शब्दों का प्रयोग करते हुए पौलुस हमें क्या बता रहा है? पहला शब्द ''हर'' है तथा दूसरा ''एक।'' वह हमें बता रहा है कि बाइबल में वह सभी

पाया जाता है जो हमें उस किसी भी कार्य को करने के लिए पूरी तरह से तैयार करने के लिए ज़रूरी है जिसे करने को परमेश्वर हमें बुलाता था किसी भी परीक्षा का सामना करने के लिए जिसका वह हमें सामना करने देता है।

पौलुस ने तीमुथियुस को आनेवाले कठिन दिनों की रोशनी में वचन का जन बनने की चुनौती दी। परमेश्वर का वचन झूठी शिक्षा, पाप और गलतियों से भरे इस संसार में उसे सांत्वना, मार्गदर्शन और शिक्षा देगा। अन्तिम दिनों के आने पर हमें अधिक से अधिक वचन के लोग बनने की ज़रूरत है।

विचार करने के लिए

- आने वाले कठिन दिनों की रोशनी में पौलुस ने तीमुथियुस को उसकी शिक्षा, जीवन के ढंग, उद्देश्य, विश्वास, धीरज और प्रेम को स्मरण रखने की चुनौती दी। इन सिद्धान्तों की रोशनी में अपने जीवन की पुनः जांच करें कि किस क्षेत्र में आपको कार्य करने की ज़रूरत है?
- हमारी परीक्षाओं में परमेश्वर का वचन हमारे लिए कैसे उपयोगी है? इसने आपको कैसे प्रोत्साहित किया व व्यक्तिगत रूप से आपको कैसे बचाए रखा है?
- परमेश्वर के वचन ने आपको कैसे प्रभावित किया है इसने आपको कैसे बदला है? विशिष्ट उदाहरण दें।
- प्रभु की वापसी का दिन निकट आने पर परमेश्वर का वचन कैसे महत्वपूर्ण होगा?
- परमेश्वर के वचन के सत्य को जानने और उस सत्य के अनुसार जीवन जीने के बीच क्या अन्तर है?
- पौलुस हमें बताता है कि परमेश्वर का वचन हमें उपदेश देने, समझाने, सुधारने और धर्म की शिक्षा देने के लिए लाभदायक है। अपने शब्दों में स्पष्ट करें कि पौलुस का इससे क्या अभिप्राय था।

प्रार्थना के लिए

- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि उसने हमें अपना वचन सिखाने, समझाने, सुधारने और प्रशिक्षित करने के लिए दिया है।
- परमेश्वर से आपको उसके वचन के लिए बड़ा जोश देने को कहें।
- आगामी सताव की रोशनी में पौलुस ने तीमुथियुस को उसकी शिक्षा, जीवन के ढंग, उद्देश्य, विश्वास, धीरज और प्रेम को स्मरण रखने की चुनौती दी थी। परमेश्वर से आपके जीवन के किसी ऐसे विशिष्ट भाग को दिखाने के लिए कहें जिस पर कार्य करने की ज़रूरत है।

32

तीमुथियुस के लिए एक कार्य

पढ़ें 2 तीमुथियुस 4:1-8

इस अन्तिम अध्याय में प्रेरित पौलुस तीमुथियुस को दो-तरफा कार्य देता है, जो कि वास्तव में उसका एक सारांश है जो उसने पूरे पत्र में उसे बताया है।

पौलुस द्वारा तीमुथियुस को परमेश्वर और यीशु मसीह की उपस्थिति में कार्य दिया गया था। अर्थात् इसे परमेश्वर के अधिकार से दिया गया था। ध्यान दें कि पौलुस को प्रभु यीशु के बारे में दो चीज़ों को बताना है।

सर्वप्रथम, प्रभु यीशु जीवितों व मृतकों का न्याय करने को आनेवाले हैं। तीमुथियुस के लिए यह अनिवार्य किया गया था कि उसे उन्हें चेतावनी देनी है जिनका न्याय परमेश्वर के द्वारा किया जाएगा। तीमुथियुस को इस समझ के साथ सेवा करनी थी कि एक न्याय आने वाला था।

पौलुस ने तीमुथियुस को यीशु के बारे में जिस दूसरी चीज़ के विषय बताया वह यह थी कि वह अपने अन्तिम राज्य की स्थापना करने को फिर से आनेवाला था। कोई भी उसके समक्ष खड़ा नहीं रह पाएगा। वह शत्रु की शक्ति को परास्त कर उसके राज्य पर प्रभु के रूप में राज करेगा। विजय प्रभु की है। यह आनन्द करने का कारण था। यह उस समय आगे बढ़ने का कारण था जब चीज़ें कठिन हो गई हों। सुसमाचार का विरोध करनेवाली सेनाओं का नाश होगा। सभी पर परमेश्वर का राज होगा। तीमुथियुस विजय की ओर था। वह पराजित नहीं हो सकता था। उसे इस विजय की वास्तविकता में रहना था, परमेश्वर हार नहीं सकता। शैतान वही कर सकता है जो परमेश्वर उसे करने की अनुमति देता है परन्तु वह जीत नहीं सकता। प्रभु अपने राज्य की स्थापना करेगा और शैतान ऐसा कुछ नहीं कर सकता कि इसमें बाधा उत्पन्न करे। इन दो महान सत्यों की रोशनी में पौलुस तीमुथियुस को दो-तरफा चुनौती देता है।

वचन का प्रचार कर

तीमुथियुस का पहला कार्य वचन का प्रचार करना है। उसे वचन की इस सेवकाई में दृढ़ बने रहना था। ऐसे भी समय होते हैं जब हम निराश हो सकते

हैं। यहां तक कि इन टिप्पणियां को लिखते हुए भी शत्रु ने बार–बार मुझे आश्चर्य में डालते हुए कहा कि जो कुछ मैं कर रहा हूं क्या उसे करना जरूरी है। तौभी, विषय की वास्तविकता यह है कि हमारे समाज को किसी भी अन्य चीज़ की तुलना में परमेश्वर के वचन की अधिक आवश्यकता है। हमारे समाज में कुछ ऐसी समस्याएं हैं जिनका समाधान विज्ञान, दवा और राजनीति के पास नहीं है। ये ऐसी समस्याएं हैं जिनका समाधान केवल परमेश्वर ही कर सकता है। यदि हमारा समाज परमेश्वर के वचन की स्पष्ट शिक्षा की ओर लौट आए तो आज हमारे द्वारा सामना की जानेवाली बहुत सी समस्याओं का सामाधान हो जाएगा। अनाज्ञाकारिता हमारे समाज के लिए शाप को लाती है। केवल परमेश्वर के वचन की ओर लौटने पर ही उस आशीष को स्थापित किया जा सकता है। पौलुस ने तीमुथियुस को वचन का प्रचार करते रहने की चुनौती दी थी।

ध्यान दें कि पौलुस को समय और असमय तैयार रहना था। अन्य शब्दों में, उसे सभी समयों में परमेश्वर के वचन को बोलने के लिए तैयार रहना था। ऐसे समय भी होंगे जब लोग उसे ग्रहण करने को तैयार होंगे जो कुछ वह उनसे कहेगा। ऐसे समय भी होंगे जब वे उसकी शिक्षा को स्वीकार नहीं करेंगे। तीमुथियुस को लोगों की प्रतिक्रिया की चिन्ता नहीं करनी थी। उसे केवल प्रचार करना था, चाहे लोग उसके साथ सहमत हों या न हों।

पद 2 में ध्यान दें कि उसकी शिक्षा उलाहना देने, डांटने और समझाने के लिए थी। उसे प्रत्येक परिस्थिति में परमेश्वर के वचन पर कार्य करना था। कई बार यह वचन उलाहना देता है। यह गलती, पापी कार्यों और व्यवहार की ओर इशारा करेगा। कई बार वचन सुधारता है। यह लोगों को दिखाता है कि परमेश्वर तथा उसके मार्गों पर कैसे जाएं। अन्य अवसरों पर यह उनके संघर्षों और परीक्षाओं में उन्हें प्रोत्साहित करता है। इन सभी मामलों में प्रचार किया गया वचन देह का निर्माण करने और उन्हें प्रभु परमेश्वर और उसके उद्देश्यों के निकट लाने को था।

तीमुथियुस को प्रचार करने पर उस पर विशेष ध्यान देना था जो कुछ भी वह कह रहा होता था। उसे अपने निर्देशों में बहुत सावधान रहना था। अपने द्वारा सिखाए जानेवाले सत्य के लिए उसे परमेश्वर को लेखा देना था। न केवल तीमुथियुस को अपने निर्देशों के प्रति सावधान रहना था, परन्तु उसे बड़े धीरज के साथ शिक्षा भी देनी थी (पद 2)। हर कोई सत्य को सही ढंग से ग्रहण करने वाला नहीं होता है। कई बार लोगों को समझने और ग्रहण करने में समय लगता है। कुछ ऐसी चीज़ें थीं जिनकी उनके जीवनों में तोड़े जाने की ज़रूरत थी। परमेश्वर का आत्मा अपना कार्य करता है परन्तु कई बार स्त्री और पुरुष उस कार्य का विरोध करते हैं। इन मामलों में, तीमुथियुस को धीरज रखना था। उसे परमेश्वर के आत्मा को कार्य करने देना था। उसे उन लोगों के प्रति धीरजवन्त होना था जो सुनने व सीखने में धीमे थे।

वह दिन आ रहा था जब एक बड़े धीरज की ज़रूरत होगी। प्रभु के दिन के आने पर, पुरुष और स्त्रियां सुसमाचार के सत्य का अत्यधिक विरोध करेंगे। वे परमेश्वर और उसके वचन से फिरेंगे। वचन के सच्चे शिक्षकों का स्थान वे ले लेंगे जो लोगों को उनकी इच्छा के अनुसार बताएंगे (पद 3)। लोग सत्य से फिरकर शत्रु के झूठ को ग्रहण करेंगे।

दुख उठा

पौलुस द्वारा तीमुथियुस को दिया जानेवाला दूसरा कार्य दुख उठाने का था। पौलुस ने स्पष्ट किया कि जो प्रभु यीशु की सेवा करना चाहेंगे उन्हें दुख और सताव को सहना होगा। हमें सदा ही ग्रहण नहीं किया जाएगा। शत्रु हमारे द्वारा परमेश्वर के लिए किये जानेवाले कार्य में बाधा उत्पन्न करने को हर संभव प्रयास करेगा। यदि हम प्रभु के सेवक के रूप में गंभीर हैं तो हमें विरोध का सामना करना पड़ेगा।

तीमुथियुस को इन कठिन समयों में स्वयं को रखना था। अन्य शब्दों में, उसे प्रभु, उसके उद्देश्यों और उसकी योजना पर भरोसा रखना था। उसे कटु और क्रोधी नहीं होना था। इसके विपरीत, उसे धीरजवंत व भरोसा रखनेवाला होना था।

इस सच्चाई के बावजूद कि लोगों ने उसे ग्रहण नहीं किया था, तीमुथियुस को सुसमाचार प्रचारक के कार्य को पूरा करना था। (पद 5)` ऐसा करना सरल नहीं होगा। अविश्वासी उसका विरोध करेंगे। पौलुस यह समझ गया था कि उनके लिए एक सुसमाचार प्रचारक बनने का क्या अर्थ था जो उसके संदेश को सुनना नहीं चाहते थे। उस पर पत्थरवाह किया गया व उसे पीटा गया था। उसे अपमानित किया गया व डराया गया था। इन समयों में सुसमाचार प्रचारक के रूप में कार्य करना कठिन होगा, परन्तु तीमुथियुस को यह स्मरण रखना था कि प्रभु इसे उसके लेखे में लिखेगा। उसे साहस रखते हुए दृढ़ बने रहना था। उसे अपने कर्तव्यों में ढील नहीं होना था। चीज़ों के कठिन होने पर भी उसे आगे बढ़ते जाना था। चाहे कुछ भी क्यों न हो उसे विश्वासयोग्य और आश्रित रहना था।

पद 6 में पौलुस ने तीमुथियुस को स्मरण कराया कि प्रभु यीशु का एक प्रेरित होने के कारण उसे एक पेय पदार्थ के समान उण्डेला गया था। उसका समय पूरा हो रहा था। वह नहीं जानता था कि पृथ्वी पर उसका कितना समय रह गया था। किसी तरह से पौलुस अपनी सेवकाई तीमुथियुस को सौंप रहा था। वह उसे बता रहा था कि उसका मरने का समय निकट था और वह प्रभु के साथ होगा और तीमुथियुस का यह दायित्व होगा कि जो कुछ उसने उससे सीखा था, उसे दूसरों तक पहुंचाए।

पौलुस के लिए जीवन सरल नहीं रहा था। उसने बहुत अधिक दुख उठाया था। युद्ध कठोर रहा था। कई बार वह ज़ख्मी हुआ था। तथापि, अपने पिछले जीवन की ओर देखने पर, पौलुस को यह भरोसा था कि वह एक अच्छी लड़ाई लड़ा था। उसने हिम्मत नहीं हारी थी। उसने वह सब किया जो वह कर सकता था। शत्रु का सामना करने पर भी वह दृढ़ बना रहा था। उसने अपने भाग को पूरा कर दौड़ को समाप्त किया था। वह अब अपने आगे-आगे की समापन रेखा को देख सकता था। वह जानता था कि उसके समापन रेखा पर पहुंचने पर, वह अच्छी तरह से दौड़ा था। उसने विश्वास को बनाए रखा था। उसने प्रभु का इंकार नहीं किया था। वह अपने प्रभु से प्रतिफल को प्राप्त करेगा। उसने आगे की ओर उस मुकुट को देखा था जिसे उसके लिए रखा गया था। पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि यही मुकुट उन सभी के लिए भी है जो प्रभु यीशु के प्रगट होने की इच्छा रखते हैं। आप प्रभु के प्रगट होने की केवल तब ही इच्छा रख सकते हैं जब आप उसके वापस आने के लिए तैयार होते हैं। अविश्वासयोग्य व्यक्ति प्रभु के प्रगट होने की इच्छा नहीं रखता, क्योंकि वह जानता है कि उसकी अविश्वासयोग्यता का पता लग जाएगा। जिसने अपने समय और वरदानों को व्यर्थ गंवाया है वह भी प्रभु की वापसी की इच्छा नहीं रखता। केवल उसकी अच्छी तरह से सेवा करनेवाले ही इस इच्छा और उसके प्रगट होने की तैयारी का अनुभव कर सकते हैं।

इस परिच्छेद में पौलुस ने तीमुथियुस को सुसमाचार प्रचार करने और दुख उठाने की चुनौती दी थी। हममें से प्रत्येक के लिए यह परमेश्वर की बुलाहट है। इन दिनों में हमें ऐसे बहुत से लोगों की ज़रूरत है जो हमारे समाज में सत्य का प्रचार करें। हमें ऐसे लोगों की ज़रूरत है जो विरोध और कठिनाई का सामना करने से डरते नहीं हैं। क्या आप सत्य के लिए खड़े होने को तैयार हैं? क्या आप सत्य के लिए दुख और कष्ट उठाने को तैयार हैं? पौलुस की तीमुथियुस के लिए यही चुनौती है। यह आज हमारे लिए भी उसकी चुनौती है।

विचार करने के लिए:

- यह कैसे जाना जाता है कि एक दिन प्रभु यीशु न्याय करेंगे, हमारे सेवा करने और रहने में परिवर्तन करेंगे?
- क्या आप प्रभु की विजय की रोशनी में रह रहे हैं? यह आपको आपके प्रयासों में हतोत्साहित होने से कैसे बचाती है?
- यदि हमारा समाज परमेश्वर के वचन की स्पष्ट शिक्षा के प्रति आज्ञाकारी रहता तो उसमें कैसा बदलाव आता? आप कौन से परिवर्तन देखने की आशा करते हैं?

- क्या आपको भरोसा है कि आपने एक अच्छी लड़ाई लड़ी है? क्या आपके जीवन में कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जिन पर कार्य किये जाने की ज़रूरत है? वे कौन से हैं?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु को युद्ध जीतने के लिए धन्यवाद दें।
- परमेश्वर से आपको आपके मार्ग में आनेवाले सताव व परीक्षाओं का सामना करने को साहस देने के लिए कहें। उससे आपको एक बड़ी निर्भीकता देने को कहें।
- परमेश्वर से आपमें ऐसी किसी चीज़ को देखने के लिए कहें जिसने आपको उस दौड़ में दौड़ने से रोक रखा है, जिसे परमेश्वर ने आपके लिए निर्धारित किया है।
- प्रभु को उसके वचन के लिए धन्यवाद दें। जीवनों और समाजों को बदलने वाली उसकी शक्ति में आपको उस पर अधिक भरोसा करने में सहायता करने को कहें।

◀▶

33

मेरे पास आ

पढ़ें 2 तीमुथियुस 4:9–22

तीमुथियुस को लिखे इस दूसरे पत्र के अंतिम विभाग में, प्रेरित पौलुस ने अपने अकेलेपन की भावनाओं को व्यक्त करने के साथ–साथ तीमुथियुस को जितना जल्द हो सके उसे देखने आने को उत्साहित किया है। हमें मानवीय सहचारिता की आवश्यकता के साथ बनाया गया था। अदन की वाटिका में पुरुष को बनाने के बाद उसने कहा कि उसका अकेला रहना अच्छा नहीं। अतः उसने उसके साथ संगति करने के लिए एक स्त्री को बनाया। यह ध्यान देना रोचक है कि उस समय आदम परमेश्वर के साथ सहभागिता में था। जबकि वह परमेश्वर की सहभागिता में था, उसे दूसरे मानव के साथ सहभागिता रखने की आवश्यकता में बनाया गया था। जब हमारी यह सहभागिता नहीं होती, बेशक हम परमेश्वर के साथ सही क्यों न हो, तब हम यहां पौलुस द्वारा बताए गए अकेलेपन का अनुभव करेंगे। तीमुथियुस को लिखे अपने इस पत्र के अन्तिम विभाग में पौलुस क्या कहना चाहता है, आइये उस पर कुछ समय के लिए विचार करें।

पद 9 में पौलुस तीमुथियुस से जितना जल्द हो सके उसके पास आने के लिए कहता है। यह पौलुस के अन्तिम दिनों के निकट आने के बारे में बताने के बाद का विषय है। पौलुस ने एक अच्छी लड़ाई लड़ी थी। वह एक अच्छी दौड़ दौड़ा था। अब उसका समय निकट आ रहा था। पौलुस यह नहीं जानता था कि इस पृथ्वी पर उसे कितने समय तक जीना था, अपनी मृत्यु से पहले, वह आत्मिक पुत्र को फिर से देखना चाहता था। उसने तीमुथियुस से कहा कि मेरे पास शीघ्र आने का प्रयत्न कर।

पौलुस के अकेलेपन के भाव को इस सच्चाई के साथ जाना गया है कि बहुत से लोगों ने उसे छोड़ दिया था। पद 10 में पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि देमास उसे छोड़कर थिस्सलुनीके चला गया है। देमास को उसको छोड़कर चले जाने का कारण और भी पीड़ादायक था, उसने संसार को प्रिय जानकर पौलुस को छोड़ दिया था। उसने न केवल पौलुस से मुंह मोड़ा था परन्तु सुसमाचार से भी। इसने पौलुस को दुगनी पीड़ा दी थी।

केवल देमास ने ही पौलुस को नहीं छोड़ा था। क्रेसकैंस गलतिया को और तीतुस दलमतिया को चला गया था। उस समय केवल लूका ही उसके साथ था। पौलुस ने दूसरों के साथ कार्य किया था। उनकी मिशनरी यात्रा में उसके साथ प्राय: दूसरे लोग दिखाई देते थे। यीशु ने 12 शिष्यों के एक समूह के साथ कार्य किया था। प्रेरित पौलुस ने भी प्रभु के उदाहरण का अनुसरण करते हुए एक समूह के साथ कार्य किया था। हमें सेवकाई में दूसरों की ज़रूरत होती है। हमें उनकी सुरक्षा, प्रोत्साहन और सहारे की ज़रूरत होती है। पौलुस इन धर्मी जनों की सहभागिता को याद कर रहा था।

पद 11 में ध्यान दें कि पौलुस ने तीमुथियुस से कहा था कि जब वह आए तो अपने साथ मरकुस को लेकर आए क्योंकि वह सेवकाई में बहुत सहायक था। मरकुस जिसे यूहन्ना मरकुस के रूप में भी जाना जाता था, वह पौलुस और बरनबास के बीच विवाद का कारण भी रहा था (देखें प्रेरित. 15:36-38)। पौलुस उसके साथ इसलिए काम करना नहीं चाहता था क्योंकि उसने उसे पहली मिशनरी यात्रा में छोड़ दिया था। तथापि, अब पौलुस और मरकुस के बीच मेल हो गया था। उसने तीमुथियुस को अपने साथ मरकुस को इसलिए लाने को कहा था क्योंकि वह सेवकाई में बहुत ही उपयोगी था। मरकुस को शिक्षा मिल गई थी और वह अपने विश्वास में भी बढ़ा था। पौलुस ने अपनी बाहों को पूरी तरह से उसके लिए खोला था और अब वह उसे देखना चाहता था।

तुखिकुस, जो पौलुस की मिशनरी यात्राओं में उसके साथ रहा था (देखें प्रेरित. 20:4), उसे इफिसुस में विश्वासियों की सेवा करने को भेजा गया था। निस्संदेह यह पौलुस की ओर से एक बलिदान था, परन्तु वह उसका एक भाग होना चाहता था जिससे इफिसुस भी आशीषित हो।

पद 13 में पौलुस ने तीमुथियुस को उस बागे को लाने को कहा जिसे वह करपुस में छोड़ आया था। हमें यह नही बताया गया कि उसने अपना बागा वहां क्यों छोड़ दिया था। संभवत: वह इसे भूल गया होगा या संभव है कि जल्दी बाज़ी में यह वहां रह गया हो। पौलुस की बागे को प्राप्त करने की इच्छा हमें उसकी स्थिति के बारे में बताती है जिसमें वह रह रहा था, संभवत: उसके गिरते स्वास्थ्य के बारे में। संभवत: उसके पास इतना धन न हो कि वह दूसरा खरीद सके। यह भी संभव है कि जिस बन्दीगृह में वह था वहां ठण्ड होने के कारण स्वयं को गर्म रखने के लिए उसे इसकी ज़रूरत थी। सबसे स्पष्ट बात यह है कि परमेश्वर का सेवक एक दरिद्र दशा में रहा रहा था। जीवन की मूल आवश्यकताओं के प्रति वह ज़रूरतमंद था। परमेश्वर हमसे सदैव बड़े धन और संपन्नता को देने की प्रतिज्ञा नहीं करता है। कई बार उसके सेवक दुख उठाते तथा बहुत कम ही प्राप्त कर पाते हैं। पौलुस तीमुथियुस को चर्मपत्रों को भी लाने

को कहता है—वह कागज़ात जिन्हें वह त्रोआस में छोड़ आया था। हमें यह नहीं बताया गया है कि इन चर्मपत्रों में क्या लिखा था।

पद 14 में पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि सिकन्दर ठठेरे ने उसके साथ बहुत बुराइयां कीं हैं। वह उसे इस बात का विवरण नहीं देता कि सिकन्दर ने उसके साथ क्या किया था। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि हम देखें पौलुस उससे कैसे निपटा था। पौलुस ने तीमुथियुस को सिकन्दर से सावधान किया जिससे वह उससे अपनी रक्षा कर सके (पद 15)।

प्रभु परमेश्वर हमारी अपने बच्चों के समान चिन्ता करता है। वह हमारे द्वारा अनुभव किये जानेवाले दर्द को जानता है। दूसरे लोग जो हमारे साथ करते हैं उसके प्रति वह अंधा नहीं हुआ है। चीज़ों को अपने हाथों में लेने के विपरीत हमें इन लोगों को प्रभु के निकट लाने और उनसे उसे व्यवहार करने देने की आवश्यकता है। इसका अर्थ बदला लेने की अपनी इच्छा को मारने से है। शत्रु ने जो हमारे मनों में किया था, उसे ही शत्रु लेकर आएगा। हमें बदला लेने की खोज में नहीं रहना है। हमें प्रेम करना, क्षमा करना, और विषय को प्रभु के हाथ में देना है।

पौलुस सभी तरह के झूठे आरोपों का सामना करता रहा था। लोग या तो उसे छोड़ रहे थे या उसके संदेश का विरोध कर रहे थे। इस समय में उसे सहारे और प्रोत्साहन की ज़रूरत थी। कोई भी उसकी सहायता के लिए नहीं आया था। तथापि, पद 16 में ध्यान दें कि पौलुस ने इसे प्रभु को सौंपने का चुनाव किया। उसने प्रभु से कहा कि इसे उसके मित्रों से रोक कर न रखे। इसमें से होकर जाने के लिए उसने प्रभु की शक्ति का अनुभव किया। प्रभु ने इस समय सुसमाचार के संदेश को बांटने में उसका प्रयोग किया। परमेश्वर ने न केवल पौलुस को शक्ति देते हुए उसका प्रयोग किया परन्तु उसने उसे छुड़ाया भी। उसे शेर के मुंह से बचाया गया था। ये दोष लगानेवाले इससे अधिक और कुछ नहीं चाहते थे कि पौलुस को शेरों के बीच छोड़कर मरवा दिया जाए। परमेश्वर ने उसकी रक्षा की तथा उस स्थिति से उसे बचाए रखा। पौलुस को भरोसा था कि प्रभु उसे बुरे हमले से बचाकर उसे सुरक्षित स्वर्ग पहुंचाएगा। पौलुस यह जान गया था कि चाहे उसे मरना ही क्यों न पड़े, प्रभु मृत्यु में भी उसे संभालेगा। इसके लिए पौलुस ने परमेश्वर की स्तुति की।

अपने पत्र का समापन करते हुए पौलुस ने प्रिजसका और अक्विला को अपनी शुभकामनाएं भेजीं, जिन्होंने उसके मिशनरी प्रयासों में उसके साथ कार्य भी किया था। उसने उनेसिफुरूस का भी अभिवादन किया (पद 19)। वह तीमुथियुस को इरास्तुस के बारे में बताता है जो कुरिन्थ में रह गया था और

त्रुफिनुस जो मीले तुमस में बीमार था (पद 20)। उसने पूबूलुस, पूदेंस, लीनुस, क्लौदिया और सब भाइयों की ओर से भी शुभकामनाएं भेजीं। ये वे लोग थे जिन्हें पौलुस और तीमुथियुस दोनों ही जानते थे या जिन्हें सेवकाई में कार्य करने का अवसर मिला था।

पद 21 में पौलुस तीमुथियुस को जाड़े से पहले आने का प्रयत्न करने को कहता है। शायद इसी कारण उसने अपना बागा भी मांगा था। उसने प्रार्थना करते हुए समापन किया कि प्रभु तीमुथियुस के साथ रहे तथा उसके आत्मा को प्रोत्साहित करता रहे।

तीमुथियुस के लिए पौलुस के हृदय में हम एक व्यक्तिगत प्रेम की झलक को पाते हैं। उसने तीमुथयुस से अपने पुत्र के समान प्रेम किया और उसके साथ रहने तथा उसे व्यक्तिगत रूप से देखने की अपने हृदय की गहरी आवश्यकता का अनुभव किया। यह जानते हुए कि उसकी मृत्यु निकट थी, यह विशिष्ट रूप से महत्वपूर्ण था कि पौलुस अपने पुत्र को विश्वास में देखे। 2 तीमुथियुस का पूरा पत्र तीमुथियुस को ही समर्पित है। इसमें पौलुस उसे प्रोत्साहित करता और आशीष देता दिखता है। वह उसे निर्देश देता है कि विश्वास में उसे कैसे बने रहना है तथा सुसमाचार की सेवा करने के कार्य को कैसे आगे बढ़ाना है जिसे पहले से उसे सौंपा गया था।

विचार करने के लिए:

- एक विश्वासी होने के कारण क्या आपने कभी अकेलेपन का अनुभव किया है? यह परिच्छेद हमें देह में एक दूसरे को हमारी आवश्यकता के बारे में क्या सिखाता है?
- इस परिच्छेद में हम देखते हैं कि पौलुस और यूहन्ना मरकुस का कैसे मेल हुआ था। क्या कुछ ऐसे लोग हैं जिनसे आपको मेल करने की ज़रूरत है?
- पौलुस द्वारा अपने बारे में बताए जाने की सच्चाई क्या हमें उसकी दशा के बारे में बताती है जिसमें वह रहा था? क्या परमेश्वर हमसे सदैव यह प्रतिज्ञा करता है कि हम जीवन में किसी संघर्ष का सामना किये बिना सम्पन्नता में जीयेंगे?
- पौलुस ने सिकन्दर ठठेरे के साथ कैसा व्यवहार किया था? क्या आप उन लोगों को प्रभु के प्रति सौंपने के योग्य हैं जिन्होंने प्रभु के कारण आपकी हानि की है?
- आज आपके आस-पास क्या कोई अकेले मसीही हैं? इन विश्वासियों के लिए परमेश्वर आपसे या आपकी कलीसिया के द्वारा क्या कराने की आशा रखता है?

प्रार्थना के लिए

- प्रभु को धन्यवाद दें कि जबकि हर कोई हमें छोड़ सकता है, परन्तु प्रभु हमेशा हमारे साथ रहेगा।
- क्या आज आप एक परीक्षा का सामना कर रहे हैं? उस परीक्षा में प्रभु को आप पर अपनी उपस्थिति प्रगट करने को कहें।
- परमेश्वर से आपकी उन्हें उसके प्रति सौंपने में सहायता करने को कहें जिन्होंने आपको हानि पहुंचाई थी। उससे कहें कि प्रेम करने और क्षमा करने में वह आपकी सहायता करे तथा शेष के साथ वह स्वयं व्यवहार करे।
- परमेश्वर से आपके हृदय में खोज करने को कहें कि क्या कोई ऐसा है जिसे आज आपको क्षमा करने या मेल करने की ज़रूरत है।
- क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो आज अकेला है? परमेश्वर से आप पर यह प्रगट करने को कहें कि आप उसकी सेवा कैसे कर सकते हैं?

'लाईट टू माई पाथ' पुस्तक वितरण

'लाईट टू माई पाथ' पुस्तक वितरण (LTMP) एक पुस्तक लेखन व वितरण सेवकाई है जो एशिया, लेटिन अमेरिका और अफ्रीका के ज़रूरतमंद मसीहियों तक पहुंच रही है। विकासशील देशों के अधिकांश मसीहियों के पास बाइबल प्रशिक्षण लेने या अपनी सेवकाई व व्यक्तिगत प्रोत्साहन के लिए बाइबल अध्ययन सामग्री को खरीदने के संसाधन होते हैं। एफ वॉयन मैक लियोड 'एक्शन इंटरनेशनल मिनिस्ट्री' के सदस्य हैं तथा इन पुस्तकों को इस लक्ष्य के साथ लिख रहे हैं कि संसार भर के ज़रूरतमंद पास्टरों और मसीही कर्मियों को नि:शुल्क या कम कीमत मूल्य पर वितरित कर सकें।

आज की तिथि तक पचास से भी अधिक देशों में स्थानीय विश्वासियों के प्रोत्साहन और सुसमाचार प्रचार व शिक्षा के लिए हज़ारों पुस्तकों का प्रयोग किया जा चुका है। पुस्तकों को अब कई भाषाओं में अनुवादित किया गया है। प्रमुख लक्ष्य इन पुस्तकों को अधिक से अधिक विश्वासियों तक पहुंचाने का है।

एटीएमपी सेवकाई एक विश्वास पर आधारित सेवकाई है, और हम संसार भर के लोगों को बल व प्रोत्साहन देने को इन पुस्तकों का वितरण करने के लिए ज़रूरी संसाधनों के लिए परमेश्वर पर भरोसा करते हैं। क्या आप इन पुस्तकों के अनुवाद तथा आगामी वितरण के लिए प्रभु से द्वार खोले जाने के लिए प्रार्थना करेंगे?